बुन्देली दरसन

अंक - 5

2012

बुन्देली दरसन

अंक - 5

2012

सम्पादक

डॉ. एम.एम. पाण्डे

संपर्क सूत्र : 07604-262611
09893976936

नगर पालिका परिषद्, हटा, जिला-दमोह

सम्पादकीय

बुन्देली दरसन ने लोक साहित्य की पत्रिकाओं के मध्य अपना स्थान निर्धारित किया है। अपनी इस संक्षिप्त सी यात्रा में बुंदेली दरसन की यह कम उपलब्धि नहीं है। किंतु इसके लिए लिये बुंदेली दरसन के लेखकों और पाठकों को ही मैं श्रेय देना चाहता हूं। बुंदेली गद्य में बहुत कम रचा जा रहा है। इसलिये बुंदेली गद्य का लिखित रूप में अभाव सा है। फिर भी इधर कुछ लेखक गद्य-रचना में प्रवृत्त हुये हैं। कहानी, निबंध, नाटक आदि विधाओं में बुंदेली गद्य की बांकी बनक प्राप्त होने लगी है - इस अंक में इस तरह की रचनाओं को बुंदेली बखरी स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। गद्य में निबंध का व्यक्तित्व एक महिमामय व्यक्तित्व है। यात्रा विवरण, पत्र लेखन, आत्मकथा, रिपोर्ताज, समीक्षा, शोध निबंध, ललित निबंध आदि को हम निबंध के परिवार में शामिल करते हैं। बुंदेली गद्य की उजास को यदि हम चतुर्दिक विकास करना चाहते हैं तो बुंदेली में निबंध लेखन के कौशल का विस्तार जरूरी है। हमारा निवेदन बुंदेली के लेखकों से है कि वे इन विधाओं में अधिक से अधिक लिखें, तो हमारी बुंदेली बखरी का वाक् वैभव बढ़ेगा।

मैं यहाँ एक कटु सत्य भी आप तक पहुँचाना चाहता हूं, आपके साथ इसे बांटूगा तो शायद मेरी पीड़ा भी कम होगी। इधर जो भी बुंदली में पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं कमोवेश शब्द का कलेवर एक-सा रहता है - वे ही लेखक वैसी ही रचनायें-यहाँ तक कि कुछ रचनायें तनिक हेरफेर के साथ सभी पत्रिकाओं की प्रकाशन परिक्रमा करती रहती हैं। इससे हमारी रचनात्मक समृद्धि का सिंहद्वारा नहीं खुल पाता है अप्रकाशित एवं मौलिक रचना ही हमारे लिये अभीष्ट होती है, किंतु हमें कभी-कभी इस निश्चय को तोड़ना पड़ता है। हमारे रचनाकार हमारी विवशताओं को समझकर हमें अपने .... से उपकृत करेंगे तो हमारी प्रसन्नता बढ़ेगी। अंक पर आपकी प्रतिक्रियायें प्रतीक्षित हैं।

– डॉ. मनमोहन पाण्डे

बुंदेली अटारी

बुंदेलखंड परिक्षेत्र अपनी सांस्कृतिक समशीलता में एक संपूर्ण इकाई है। बुंदेली जन-जीवन को समझने के लिए उसके विभिन्न सांस्कृतिक उपादानों को जानना, समझना जरूरी है। कुछ महत्वपूर्ण आलेख इसी हेतु एक क्रम में नियोजित किये जा रहे हैं। इन आलेखों के माध्यम से आप बुंदेली लोक संस्कृति के साधन-पक्ष और व्यवहारिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।

शोध आलेख

बुंदेलखंड का आर्थिक विकास : विश्लेषण

प्रो. डॉ. शरदनारायण खरे

भारतवर्ष के मध्य में उत्तरप्रदेश के दक्षिण में, यमुना के दक्षिण किनारे तथा मध्यप्रदेश के केंद्र में नर्मदा, बेतवा, धसान, केन और चम्बल के कछारों में फैला भू-भाग बुंदेलखण्ड के नाम से जाना जाता है। बुंदेलखंड का सम्पूर्ण क्षेत्र उत्तरप्रदेश के झांसी, ललितपुर, हमीरपुर, जालौन, महोबा तथा बांदा जिलों एवं मध्यप्रदेश के सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ एवं दतिया जिलों में फैला हुआ है। इस क्षेत्र की भाषा बुंदेली है, जिसे बुंदेलखंडी भी कहा जाता है।

इस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है। औसतन न्यूनतम तापमान 26 डिग्री एवं अधिकतम तापमान 35 डिग्री के आसपास रहता है। औसत वर्षा 800 से 1300 मिमी. के आसपास होती है। लगभग 80 प्रतिशत वर्षा जून से सिंतबर के मध्य होती है।

परंतु यह एक विडंबना है कि एक गौरवशाली अतीत के बाद भी सम्पूर्ण बुंदेलखंड क्षेत्र कतिपय कारणों से अन्य क्षेत्रों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से शासन ने इस क्षेत्र के त्वरित सामाजिक एवं आर्थिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया है, फिर भी इस क्षेत्र के विकास हेतु अभी और प्रयास अपेक्षित हैं।

वस्तुत: किसी भी क्षेत्र विशेष के योजनाबद्ध विकास हेतु दो प्रकार से विकास योजनाओं का बनाना और उनका सफल क्रियान्वयन आवश्यक होता है। प्रथम अनेक योजनाएं कार्यान्वित करने वाले विभागों की समान्य गतिविधियों हो जाती हैं। द्वितीय त्वरित विकास के लिए गति लाने और क्रियान्वयन में हर स्तर पर लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक हो जाता है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को विकास के उद्देश्य एवं लक्ष्यों के बारे में तनिक भी भ्रम न हो।

किसी भी अल्प-विकसित देश में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेपता जो सामान्यत: पाई जाती है, वह अत्यधिक जनसंख्या ही है। यही बढ़ती हुई जनसंख्या विकास में निश्चित रूप से बाधक बन रही है।

वर्तमान में बुंदेलखंड के विकास के परिप्रेक्ष्य में अग्रलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए -

- सामुदायिक विकास को विकास का माध्यम बनाया जावे।
- विकास हेतु आवश्यक जन-सहयोग जुटाया जावे।
- जनसंख्या को निकटस्थ क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराया जावे।
- श्रम-गहन तकनीक अपनाई जावे।
- विकास केंद्रों को विकसित किया जावे।
- शिक्षा का प्रसार किया जाए।
- वनोपजों को अर्थोपार्जन का समुचित एवं सुव्यवस्थित साधन बनाया जावे।
- प्राकृतिक संसाधनों का भलीभांति दोहन किया जाए।
- हस्तशिल्प को विकसित कर व्यापक बनाया जाए।
- इस क्षेत्र में औद्योगिकरण पर बल दिया जाए। नवीन कारखाने स्थापित किए जाएं।
- अतीत के संस्कारों एवं समृद्धता को नवीन तकनीकों से जोड़कर विकास को स्थायी एवं ठोस रूप प्रदान किया जाए।
- निर्धनता को नियंत्रित करने हेतु समुचित प्लान बनाया जाए।
- जनसंख्या की दर सीमित की जाए।
- बचत एवं पूंजी-निर्माण हेतु प्रयत्न किए जाएं।

- जातिगत पेशों की जटिल रूढ़िवादिता पर अंकुश लगाया जाए।
- कृषकों को पर्याप्त, ऋण उपलब्ध कराया जाए।
- कृषि को वैज्ञानिक तकनीकों से सम्बद्ध किया जाए।
- सिंचाई की व्यापक व समुचित व्यवस्था की जाए।
- ग्रामीणों को सूदखोरों व महाजनों के शोषण से मुक्ति दिलाई जाए।
- पंचायती राज को वास्तविक अर्थों में जनकल्याणकारी व वैकासिक बनाया जाए।
- बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं को कारगर बनाया जाए।

चंदेरी का साड़ी उद्योग - ललितपुर से 34 किमी. दूर स्थित चंदेरी अपने वैभवशाली इतिहास, पुरातत्व व संस्कृति के लिए तो जाना ही जाता है, पर यहां के साड़ी उद्योग की कभी अच्छी-खासी शान थी। यद्यपि चंदेरी में 'चंदेरी साड़ी' के निर्माण का कार्य अभी भी काफी विशिष्टता से संपन्न होता है, परंतु अतीत में तो यह कार्य अपने गौरवशाली स्वरूप में था।

यहां महीन एवं कलात्मक साड़ियों का निर्माण होता है। यहां लगभग 1000 से अधिक हथकरघे इस उद्योग में संलग्न हैं। साड़ी बनाना यहां का प्रमुख कार्य है। साड़ी बनाने के लिए 80 से 120 अंक तक का सूत तथा 13-15 रेशम का प्रयोग किया जाता है। प्राय: साड़ियों में ताना रेशम का तथा बाना सूत का होता है। पक्की जरी इनकी प्रमुख विशेषता है। वर्तमान में 200 रु. से लेकर 10000 रु. तक की साड़ी बनाई जाती है। यहां की बनी साड़ी महानगरों। देश के कोने-कोने सहित विदेशों में भी लोकप्रिय है।

साड़ी निर्माण का कार्य निजी व्यापारियों एवं वस्त्र-उद्योग विभाग (शासकीय) दोनों के द्वारा संपन्न कराया जाता है। इस उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए शासन की ओर से यहां तक प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र खोला गया है। बुनकरों की सहायतार्थ यहां तक तक बुनकर सहकारी समिति भी है। परंतु शनैः शनैः न केवल इस गौरवशाली उद्योग का महत्व घट रहा है, बल्कि बुनकरों एवं इस व्यवसाय से जुड़े कारीगरों की आर्थिक स्थिति भी खराब हो रही है। साड़ी व्यवसायी तो इस कार्य में अधिकाधिक धन कमा रहे हैं। शासन भी पर्याप्त लाभान्वित हो रहा है पर लाभ का समुचित अंश हितग्राहियों तक नहीं पहुंच रहा है, अतएव -

- साड़ी उद्योग का कार्य संपूर्ण व्यवस्था, समुचित प्लान, व सुनियोजित ढंग से शासन द्वारा कराया जाए, जिससे इससे जुड़े कारीगरों की हालत अच्छी हो सके।
- चंदेरी साड़ी से महत्व को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनरस्थापित किया जाए, जिससे इसकी मांग बढ़ सके। स्पष्ट है कि इसकी मांग (खपत) बढ़ने से इससे जुड़े व्यवसायी/शासन/बुनकर/कारीगर अधिक लाभान्वित हो सकेंगे। जिससे उनका आर्थिक स्तर सुधर सकेगा।
- वस्तुत: इस हेतु एक त्रुटिहीन समुचित कार्ययोजना की आवश्यकता है।

निष्कर्ष यही है कि बुंदेलखंड की धरा आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक सभी तरह से समृद्ध है। केवल प्राकृतिक वरदानों के दोहन, साक्षरता के प्रसार, समुचित आर्थिक योजनाओं के क्रियान्वयन भर की देर है। आवश्यकता इस बात की भी है कि यहां का राजनैतिक प्रतिनिधित्व विधानसभा एवं संसद में क्षेत्रीय हितों के पक्ष में सशक्ततापूर्वक प्रयास कर सके और अपनी बात क्षेत्रीय विकास के संदर्भ में मनवा सकें, व इस हेतु पर्याप्त राशि का आवंटन करा सकें।

विभागाध्यक्ष इतिहास

शासकीय महिला महाविद्यालय

मंडला - 481651 (म.प्र.)

मो. 9425484382

भारत माता ग्राम वासिनी

डॉ. रामशंकर द्विवेदी

सुमित्रा नन्दन पंत ने ग्राम्या (1940) में भारत माता का करुण चित्र खींचते हुए लिखा था-

भारत माता ग्राम वासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला-सा आंचल
गंगा यमुना में आंसू जल
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी।
दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग युग के तमसे विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी।

इसमें ग्रामवासिनी भारतमाता का करुण चित्र खींचा गया है। तब देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था। इसलिए कवि ने भारतमाता को घर में होते हुए भी प्रवासिनी लिखा था। कवि ने उसे पद-तल-लुण्ठित, चिन्तित, सहिष्णु के साथ अन्त में आशादायिनी भी चित्रित किया था। इस कविता पर गांधी जी के व्यक्तित्व की भी छाप है। गांव के और चित्र भी पंत जी ने खींचे हें, गांव के लड़के कैसे हैं, मिट्टी से भी मटमैले तन, अधफटे, कुचैले जीर्ण बलन। ज्यों मिट्टी के हो बनें हुए। ये गंवई लड़के भू के धन। गांव के इन युवकों को पंत जी ने भू के धन कहा है। फिर गांव का एक और चित्र दृष्टव्य है - यहाँ नहीं है चहल-पहल वैभव-विस्मित जीवन की। यहाँ डोलती वायु म्लान, सौरभ मर्मर ले वन की। यहाँ नहीं विद्युत दीपों का दिवस निशा में निर्मित/अंधियाली में रहती गहरी अंधियाली भय कल्पित। यह तो मानव लोक नहीं रे यह है नरक अपरिचित/यह भारत का ग्राम, सभ्यता, संस्कृति से निर्वासित।

पंत के गांव में प्रकृति तो प्रफुल्लित है सिर्फ यहां का मनुष्य ही विषण्ण जीवन जी रहा है।

यह गांव का एक चित्र है। इसे 1939 तथा 1940 के आस-पास एक कवि ने आंका था। दर-असल आज गांवों की जो साम्प्रतिक दशा है उसे विविध कालों में रचे गये साहित्य के माध्यम से तुलना करते हुए देखा जा सकता है। शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' से लेकर गोदान, मैला आँचल अलग-अलग वैतरणी, राग दरबारी से लेकर नागार्जुन के रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक में ग्रामीण जीवन के विकसमान रूप को देखा जा सकता है। गोदान में गांव के जिस रूप का चित्रण है। वह मैला आँचल में चित्रित गांव से भिन्न है। स्वतन्त्रता के बाद गांव में जो बदलाव और जन-चेतना का विकास हुआ है उस दृष्टि से रेणु के उपन्यास महत्वपूर्ण हैं। अगर इस दृष्टि से भारतीय भाषाओं के उपन्यासों को देखा जाए तो विभूतिभूषण बंधोपाध्याय का पथेर पांचाली, आरण्यक, ताराशंकर बंद्योपाध्याय का गण देवता, समरेश वसु का गंगा महत्वपूर्ण उपन्यास है।

लेकिन क्या आज के गाँव वैसे ही हैं जैसे देहाती दुनिया या गोदान के समय थे, या वैसे हैं जैसा इनका चित्रण मैला आंचन या अलग-अलग वैतरणी अथवा नागार्जुन के उपन्यासों में मिलता है। ग्रामीण जीवन के विकास की चिन्ता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी थी जो उनके श्री निकेतन संस्था के द्वारा किये गये ग्राम विकास-सम्बन्धी कामों से पता चलता है। अब तो उनकी पल्ली चिन्ता पर एक बड़ी पुस्तक ही निकल गयी है। गांधी जी का लक्ष्य तो भारत के गांवों का विकास करना प्राथमिकता के तौर पर था। उन्होंने अपने हिन्द स्वराज और ग्राम सुधार विषयक लेखों में गांव के विकास का पूरा खाका खींचा है। लेकिन आज गांवों के जीवन पर विचार किया जाए तो निःसन्देह स्वतन्त्रता के बाद इन वर्षों में गांवों में बदलाव आया है। ऐसी फसलें

उगायी जाने लगी हैं जिन्हें कैस क्राप कहते हैं। अधिकतर गांव पक्की सड़कों से जुड़ गये हैं। वहाँ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पंचायत घर, प्राथमिक शालाएं, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कहीं-कहीं इंटर कालेज और रोड के किनारे बसे कसबा बनने की होड़ लगाने वाले गांवों में वित्त विहीन डिग्री कालेज के विशाल भवन खड़े दिखायी देने लगे हैं। जिन गांवों की संख्या 5 हजार से लेकर 10 हजार है इनमें नियमित बाजार, डाकघर सरकारी प्राथमिक पाठशाला, थाना, अस्पताल देखने को मिलेंगे, एक सर्वेक्षण के अनुसार अधिकतर गाँवों में पेजयल व्यवस्था, बिजली आदि की सुविधायें मुहैया करा दी गयी हैं। जन-संचार के साधनों की दृष्टि से टी.वी., रेडियो, ट्रान्जिस्टर, की सुविधाएँ तो आम बात है, घरों में मोटर साइकिल, कार, जीप, ट्रेक्टर भी देखने में आने लगे हैं। शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े-से-पिछड़े गांवों में अखबार पहुंचने लगे हैं। हर गांव में स्नातक, स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त कुछ नव युवक निकल ही आएंगे। स्त्री शिक्षा का भी गांवों में प्रचार हो रहा है। लड़कियों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जाग गयी है। लड़कियों के हाथों में साइकिल तो अब आम बात हो गयी है। गांवों से लगे शहरों के स्कूलों में बच्चे उच्च शिक्षा के लिए प्रतिदिन आते हैं। इससे गांवों में भी शहरीकरण की हवा फैल रही है।

यह सब होते हुए भी गांव आज भी समस्याओं से उवर नहीं पाए हैं। समस्याएं कुछ सुलझी हैं, कुछ सुविधायें मिली हैं, किन्तु कुछ नयी समस्यायें पैदा भी हुई हैं। जिसे राजनीति कहते हैं उसके कारण गांव में भी दलबन्दी, गुटबन्दी, मन-मुटाव, पार्टी बन्दी पैदा हो गयी है। अब गांव में मिल-बैठकर अपनी समस्याएं सुलझाने वाला वातावरण समाप्त हो गया है। भारत के आधुनिक गांव अब बिखर रहे हैं। भय अपराधीकरण, जुएबाजी, नशीले पदार्थों का सेवन, बेकारी, आलस्य इतना फैल गया है कि आपको वहाँ जगह-जगह जुए के अड्डे नजर आएंगे। अब शाम को आग के आसपास जमने वाली बैठकें, कथा-कहानियां समाप्त हो गयी हैं। गांव से निश्चिन्तता गायब हो गयी है। नयी समृद्धि आयी है किन्तु अमन चैन और शान्ति को अपने साथ ले गयी है। इन सबका परिणाम यह हुआ है कि गांव में शहरीकरण और पलायन की प्रवृत्ति बढ़ गयी है। गांव खाली हो रहे हैं। वहां पुरखों की बनवायी हुई हवेलियां खाली, भग्न अवस्था में पड़ी हुई है। इसका सुन्दर चित्र साहित्यकार अजित कुमार ने अपने एक संस्मरण में इस प्रकार खींचा है :

कस्बे के भीतर घुसते ही नजर आने लगी उजड़ी हुई विशाल हवेलियां, पचास-साठ वर्ष पहले बड़े शौक से जो बनाई गयी थीं, लेकिन आज बिल्कुल खाली पड़ी, सांय-सांय कर रही थीं। उनके मालिकान उन्हें छोड़कर लखनऊ कानपुर या दूसरे शहरों में जा बसे थे और अपने पीछे छोड़ गये थे, केवल एक विराट सूनापन (सफरी झोले में कुछ और .... पृष्ठ 85)

किन्तु गांव का परिदृश्य अब वह नहीं है। क्या बदलाव आया है इसे उन्नाव के मौरावॉ कस्बे में देखा जा सकता है: घर की ओर आगे बढ़ते ही सामने नुक्कड़ पर दिखा चाय का छोटा सा-स्टाल और भारत भर में सर्वत्र अनिवार्य रूप से मौजूद कोकाकोला की लाल पेटी, प्लेट पर उलटकर रखे प्याले, सुलगती अंगीठी पर, अल्युमिनियम की केतली में उबलता पानी, दो-तीन बेंचें और मेंजें, शीशे के मर्तवानों में मीठे, नमकीन बिस्कुट, टॉफियां, पापड़ी और पैर मेज पर उठाए ... पीठ बेंच पर टिकाए चाय की चुस्की लेते दो-एक बाबू साहब (वही पृष्ठ 84-85)।

लेकिन इसी कस्बे के छोर पर जो गांव शहरीकरण से बचा रह गया था उसका यथार्थ चित्र गांव की दुर्दशा का बखूबी बयान कर रहा था, आखिर अपने को झटक कर हम गांव वाले हिस्से की ओर निकल ही गए। वहाँ था सदियों से एक ही ढर्रे पर चलता आता जीवन! कच्चा मकान, फूस के छप्पर, गोबर से लिपा फर्श, काले झुर्रियों भरे चेहरे, निवृत्त होने के लिए लुटिया लेकर तलैया की तरफ जाना।... फिर दूसरी निगाह में लगा, वे आज उतने भूखे नहीं दिखे, उनके तन पर कपड़े भी थे। बिजली जरूर अभी इस हिस्से में पूरी तरह नहीं आई थी, लेकिन अधिकतर घरों में ट्रांजिस्टर थे

और आज, गांवों की जिन्दगी की वह दूसरी अनिवार्य वस्तु, साइकिल भी। कितने ही लोग दिखे, साइकिलों पर जाते, कंधे पर ट्रांजिस्टर लटकाए टेरेलीन पहने (वही पृष्ठ 89)।

गांव में यह बदलाव आया है किन्तु सूखा, बाढ़, अतिवर्षा से गांव आज भी जूझ रहे हैं। जिला प्रशासन की ओर से आपदा प्रबन्धन की घोषणाएं तो है किन्तु समय पर बाढ़ पीड़ितों को सहायता नहीं मिल पाती। गांवों में बैंक भी पहुंच गये हैं। पेंशन, खाद, मनरेगा के अन्तर्गत बी.पी.एल. कार्ड धारकों को एक सौ दिन की मजदूरी की गारंटी यह सब है लेकिन एक बिचौलिया वर्ग भी पैदा हो गया है जिसके बिना किसान को न खाद मिल सकती है, न बैंक से लोन, न वृद्धावस्था पेंशन, न तकाबी, न आपदा सहायता यहां तक कि बिना सुविधा शुल्क दिये बी.पी.एल. कार्ड भी नहीं बन सकता है। फलत: भ्रष्टाचार गाँव की नशों में भी फैल गया है। पेट्रोल और डीजल के दामों में हो रही बेतरह बढ़ोत्तरी से किसानों की कमर टूट गयी है। जिस मनरेगा योजना को बड़ा लाभकर घोषित किया गया है। वास्तविकता यह है कि यह पूर्ण रूप से किसान विरोधी और किसी हद तक श्रमिक विरोधी भी है। किसान विरोधी इसलिए है कि गांवों में अब सस्ता श्रम मिलना बन्द हो गया है श्रमिक विरोधी इसलिए है कि मनरेगा योजना के कारण श्रमिकों ने अब मेहनत करना छोड़ दिया है। आए दिन मनरेगा के तहत होने वाले भुगतान के नये-नये घोटाले प्रकाश में आ रहे हैं। इनके आकड़े मेरे ही जैजे जिले में करोड़ों में है। खण्ड विकास अधिकारी या ऐसे ही कुछ अधिकारी कभी-कभी फर्जी मस्टररोल तैयार कर लाखों रुपया का फर्जी भुगतान दिखाकर अपने कागज पत्तर चाक-चौबन्द बनाकर रखते हैं फिर भी अन्ना हजारे के आन्दोलन से जो जन-चेतना जागी है उसके कारण ऐसे घोटाले उजागर हो रहे हैं। जांच बैठायी जा रही है किन्तु तभी जब मण्डलायुक्त स्तर से ऐसे घोटालों के विरुद्ध आदेश दिये जाएँ अन्यथा इनका ठण्डे बस्ते में जाना तो आम बात है।

गोदान से लेकर रागदरबारी या उसके बाद तक हिन्दी में ग्रामीण जीवन पर जो उपन्यास लिखे गये हैं या विश्वनाथ त्रिपाठी ने नंगा तलाई का गांव में ग्रामीण जीवन का जो चित्रण किया है अगर उसको मद्दे नजर रखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि अब गांवों के बारे में 'अहा ग्राम जीवन भी क्या है' जैसी उक्ति निर्विवाद रूप से नहीं कही जा सकती है। गांव अब वे गांव नहीं रहे है जो लोग समृद्ध हैं उन्होंने गांव छोड़कर नजदीक के कस्वों, शहरों में अपने आवास बना लिये हैं। अगर खेती है, पुश्तैनी मकान है, मां-बाप, दादा-दादी वहाँ रहते हैं तो फसल के समय, त्यौहार पर गांव पहुंच जाते हैं और दो-तीन दिन रहकर लौट आते हैं और यदि किसी नवयुवक की बड़े शहर में नौकरी लग गयी तब वह वहीं का होकर रह जाता है। वह जिस छोटे फ्लैट में रहता है उसमें बूढ़े माता-पिता या दादा-दादी के लिए कोई जगह ही नहीं होती।

दूसरे गांव में पलायन की समस्या बढ़ रही है। यह पलायन दो प्रकार का है एक स्थायी, दूसरा अस्थायी। मजेदार बात यह है कि यह पलायन गरीब, मजदूर तबका ही अधिक कर रहा है। यह पलायन छोटे-छोटे शहरों और बड़े-बड़े महानगरों की दिशा में अधिक होता है। कुछ वहीं जाकर बस जाते हैं। कुछ साल-छह महीने में काम कर गांव लौटते हैं। मकान बनवाते हैं, उसकी मरम्मत करवाते हैं, माता-पिता को आर्थिक सहायता देते हैं छोटे भाइयों को पढ़ाते हैं। बहनों की शादी करते हैं। और फिर कमाने के लिए शहर चले जाते हैं। इनके बोलने-चालने, पहनावे-उढ़ावे में भी आधुनिकता की छाप दिखाई देने लगती है। ये मोबाईल रखते हैं, अखबार पढ़ते हैं, टी.वी. देखते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जो अहमदाबाद, सूरत, महाराष्ट्र, बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता जैसे शहरों में जाकर किसी फैक्ट्री में काम करने लगते हैं और वहीं बस जाते हैं। इस पलायन का परिणाम यह हुआ कि गांव सूने हो रहे हैं। शहरों में जनसंख्या का अनुपात बिगड़ रहा है वहां झुग्गी-झोपड़ियों का विकास हो रहा है। स्वास्थ्य और सफाई की समस्याएँ पैदा हो रही हैं। सरकार के सामने भी प्रश्न है कि इस पलायन को कैसे रोका जाए।

मनरेगा में सभी को काम नहीं मिल पाता है। इधर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न नहीं हो रहे हैं। बेरोजगारी दूर करने के आंकड़े कागजी हैं। काम कराया जाता है मशीनों से दिखाया जाता है मंजदूरों के द्वारा कराया गया है। फर्जी मस्टर रोल तैयार कराया जाता है मिट्टी की खुदाई होती है, सड़क पर मिट्टी डलवाई जाती है, बालू-पत्थरों का उत्खन्न होता है। ये बस भारी भरकम जे.सी.बी. मशीनों के द्वारा कराए जा रहे हैं। दूसरी ओर यहां बुन्देलखण्ड में पहाड़ियों को विस्फोट द्वारा उड़ाकर उनसे जो गिट्टी बनाई जा रही है उससे उड़ी रेतीली धूल एक ओर मजदूरों में टी.बी. कैंसर जैसी बीमारियां हो रही है। दूसरी ओर आस-पास की उपजाऊ जमीन बंजर हो रही है। धीरे-धीरे यह धूल खेतों में जमते-जमते मोटी परत का रूप ले रही है। फिर एक व्यावसायिक उपयोग ठेकेदारों ने इस बालू का यह निकाला है कि वे सड़कों पर पड़ने वाली गिट्टी में इसी धूल को मिला देते हैं बालू की जगह, जिससे सड़क कमजोर बनती है क्योंकि यह बालू सीमेन्ट या कोलतार को नहीं पकड़ती है। इसलिए गांव का मजदूर और गरीब होता जा रहा है और अमीर और अमीर।

बुन्देलखण्ड के गांवों में एक समस्या किसानों द्वारा बैंकों के कर्ज के बोझ के कारण होने वाली आत्महत्यायें हैं। इनके आंकड़े भयावह और चौंकाने वाले हैं। कृषक ऋण माफी की घोषणाएं कागजी हैं। आत्महत्याएं भी सीमान्त किसान अधिक करते हैं या गरीब किसान इसके आंकड़ आने अभी शेष हैं।

इस तरह गांवों के दोनों चित्र हैं गांव में विकास भी हो रहा है और गांव सूने भी हो रहे हैं। रोजमर्रा की सुविधाएं न होने के कारण अब कोई गांव में रहना नहीं चाहता। क्या गाँव बेचिरागी गांव में परिवर्तित हो जाएंगे? पंजाब है, हरियाणा है, पश्चिमी पूर्वी उत्तर प्रदेश है इनके गांवों में जागृति के कारण कुछ अधिक विकास हुआ है। किन्तु बुन्देलखण्ड के गांव आज भी विशेष रूप से पिछड़े हैं। एक लोक कवि ने बुन्देलखण्ड के गांवों का एक मार्मिक चित्र खींचा है :-

जो गांव हमाओ वो नैयाँ
जीकी धरती में उपजे, घुटुअन चले भगे पैंया-पैंया।
है ठौर ठिकाने सब बेई,
नदियां बई है टेढ़ी-मेढ़ी
महरू बाबा को पीपर है,
बूढ़ी इमली मोटी पेंढ़ी।
हरदौल चौंतरा, बड़ो कुआं,
माता मैया की बनी मठी
वा हती चिन्हारी राजन की,
जाने विलाय गई किते गढ़ी।
दालुद्दर भरो तलैंअन में
कैसे सपरे बैला गैयां।
जो गांव हमाओ बौ नैंया।।

अब बदलाव क्या आ गया है -

जा धरती पै वे पुरुष हते,
जो परस्वारथ में लीन रहे।
धनवान हते, बलवान हते,
पर संयम के अधीन रहे।
लहरात प्रेम को तला हतो।

अब क्या हो गया -

ईरखा डाह की धन्धर में
सद्भाव मोम अब पिघलैंया।।

गांव में परिवर्तन की आहट ने कैसा प्रभाव डाला है-

अब न गांव की बिटियां सबकी बहनें हैं।
अब न गांव के लरका उनके भैया है।
कढ़न न पावें हार खेत बहुएं बिटियां
अपुन तुपुन के ऐसे चरित उभाड़े हैं।
(शिवानन्द मिश्र बुन्देला, उरई)

एक दूसरे लोक कवि ने तो आधुनिकता की दौड़ और भूमंडलीकरण, शहर की हवा के चलते गांवों ने अपने किन-किन रूपों को खो दिया है इस पर एक खंड काव्य-सा ही लिख डाला है। ठेठ बुन्देली में उसकी उक्तियों में मिट्टी की महक के साथ वेदना का गहरा स्वर भी झंकृत हो रहा है-

कितै हिरागए वे नोंनेदिन भैया अपने गांव में
बूंदें गिरीं झलैंयन खेलत सबकों संग सकेलत।
रेता में घरघूला बनरए कोउ मिटाराए ठेलत।।
अपनो काम करत ते सबही रत ते भले सुभाव में।
पहले कैसा साहित्यिक वातावरण था गांव में -
सदा विरछ सारंगा गा रए कउं, बेताल पचीसी,
गाजे-बाजे ढोला मारू सिंघासन बत्तीसी।
जीजाजू फूफाजू कोनउं घर के आवे,
पुरा पड़ोसी जनी मांस हलके बड्डे बतरावे।।

सामाजिक सम्बन्धों का निर्वाह पहले इस तरह होता था। अब वे दिन पता नहीं कहा विलीन हो गये हैं (लोक कवि पं. बाबू लाल द्विवेदी, मानस मधुप छिल्ला (वानपुर) जिला ललितपुर)।

रेणु का मैला आंचल है तो गरीब प्रान्तर की गाथा किन्तु आख्यान में आए पात्र मैले नहीं हैं। उनका मन उजला है। ओस की बूंद की तरह। इन्हीं में एक पात्र डाग्दर बाबू हैं। उन पर पूर्णिया जनपद के इस आंचल का क्या प्रभाव पड़ा-देखिए-उस पर यहां की मिट्टी कर मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है यह अपनी मिट्टी है। नदी तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीव-जानवर, कीड़े-मकौड़े, सभी में वह एक विशेषता देखता है (मैला आंचल, परिच्छेद छत्तीस का प्रारंभ)।

इसी गांव को वह क्या बनाना चाहता है, कौन-सा सपना देख रहा है, यहां की मिट्टी में बिखरे, लाखों-लाख इंसानों को बटोरकर अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहां के प्राणी के जीवकोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इंसान हिमालय की कंदराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरुण, तिमुर और सुणकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वततोड़ परिश्रम कर रहे हैं। लाखों एकड़ बंध्या धरती, कोषी-कवलित, मरी हुई मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी। कफन जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिन्दगी के बेल लग जाएंगे। मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हंस पड़ेंगी ... मोती जैसे सफेद दांतों की चमक ... ! (परिच्छेद वही)

इस सपने के साथ 'मैला आँचल' के डॉक्टर ने तो अपना रिसर्च पूरा कर लिया पर नंगातलाई के गाँव के विसनाथ ने बिसकोहर में जो कुछ देखा वह कितना बदरंग है; अब विश्वनाथ जब गांव जाते हैं तो कुछ बातें ऐसी हैं जो बहुत निराशा पैदा करती है। बड़की बगिया अब नहीं रह गयी है। लोग धरम का काम समझकर बाग लगाते थे, चारों तरफ बाग-ही-बाग थे, आम के तो बहुत थे। अब लोग उन बागों को बेच रहे हैं, कटवा रहे हैं। गांव में बहुत कम पेड़ बचे हैं। पोखरे बहुत थे। वे भी खत्म हो रहे हैं या पाटे जा रहे हैं। सब लोग घर या दुकानें बना रहे हैं।

लेकिन स्कूल, अस्पताल खुल रहे हैं। टेलीफोन आ गया हैं। दलित पहले से ज्यादा सीना तान कर चल रहे हैं। उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधर रही है। (नंगातलाई का गांव, पृष्ठ 146)

फिर भी मैला आंचल के डॉक्टर का संकल्प डिगा नहीं है। वह आज भी सपना देख रहा है। मैं फिर काम शुरू करूँगा यहीं इसी गांव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आंसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहराएंगे। में साधना करूँगा ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आंचल तले। कम-से-कम एक ही गांव से कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूं, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूं। क्या अन्ना हजारे ने रेणु के मैला आंचल को पढ़ रखा था जो उन्होंने लाखों-लाख हृदयों में आशा की, परिवर्तन की लौ जगा दी है। गांव भी अब जगेंगे। लेकिन भूमण्डलीकरण, उदारवादी अर्थव्यवस्था के कारण जो महंगाई बढ़ती जा रही है इससे गांव की जनता को, गरीब जनता को कौन बचाएगा? कौन?

1260, नयारामनगर, उरई
पिनकोड - 285001
मो.नं. - 09839617349

बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति में चित्रकला

डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी
प्राध्यापक हिन्दी

वैभव एवं कला से सम्पन्न भारत के वक्ष स्थल पर अवस्थित मध्य भू भाग को अनेक नामों से समय-समय पर विभूषित किया गया। जैसे जैजाकभुक्ति, जुझौति, जुझारखण्ड, चेदि दशार्ण, विन्ध्यप्रदेश एवं बुन्देलखण्ड आदि। किन्तु यमुना, नर्मदा, चंबल और टोंस से परिवेष्ठित यह समस्त भू भाग भाषा, बोली और रीति रिवाज के कारण युग परम्परा से एक प्रदेश ही माना जाता है। मनुस्मृति में इस भू-भाग का उल्लेख इस प्रकार किया गया है -

हिमवत् विंध्यर्योमध्ये यत् प्राक विनशनादाये।
प्रत्यमेव प्रयागश्च मध्यप्रदेश: प्रकीर्तित:।।

(मनुस्मृति,212।)

इन पंक्तियों में हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य स्थित भू-भाग को मध्यप्रदेश कहा गया है। यह भू-भाग पूर्व में प्रयाग तक और पश्चिम में विनशन (सरस्वती) तक विस्तृत था।

समयानुसार इस भू-भाग की सीमायें परिवर्तित होती रही हैं। बुन्देल केशरी छत्रसाल के समय में इस भू-भाग की सीमाओं का विस्तार निम्नानुसार था -

इत जमुना उत नर्मदा इत चम्बल उत टौंस।
छत्रसाल सौ लरन की रही न काहूं हौंस।।

दीवान प्रतिपाल सिंह जी द्वारा स्वरचित छन्द से भी इस भूखण्ड की सीमाओं का ज्ञान होता है -

उत्तर समथल भूमि गंग जमुना सुवहित है।
प्राची दिस के मूर सोन कासी सुलसित है।।
दक्खिन रेवा विन्ध्याचल तन सीतल करनी।
पश्चिम में चम्बल चंचल सोहति मन हरनी।
तिनि मधि राजे गिरि वन सरिता सरित मनोहर।
कीर्ति स्थल बुन्देलन को बुन्देलखण्ड वर।।

डॉ. जार्ज गियर्सन ने 'गजेटियर ऑफ इण्डिया' के आधार पर बुन्देलखण्ड की सीमाओं का उल्लेख करते हुये लिखा है - ''बुन्देलखण्ड वह भू भाग है जो उत्तर में यमुना, उत्तर पश्चिम में चम्बल, दक्षिण में मध्यप्रदेश के जवलपुर जिले और सागर सम्भाग तथा दक्षिण और पूर्व में रीवा अथवा बघेलखण्ड के मध्य स्थित है। जिसके दक्षिण और पूर्व में मिर्जापुर की पहाड़ियां हैं। राजकीय दृष्टि से इस क्षेत्र में अंग्रेजी राज्य के बांदा, हमीरपुर, जालौन और झांसी जिले, ग्वालियर एजेंसी जिसमें ग्वालियर है पूर्ण बुन्देलखण्ड तथा बघेलखण्ड एजेंसी का कुछ भाग सम्मिलित है।''

इन विभिन्न मतों के आधार पर बुन्देलखण्ड की सीमायें इस प्रकार निर्धारित की जा सकती हैं। उत्तर में यमुना नदी तथा एक ओर आगरा और दूसरी और कानपुर जिले की दक्षिणी सीमायें, दक्षिण में नर्मदा नदी, पूर्व में टोंस नदी तथा बघेलखण्ड की पश्चिमी सीमा और पश्चिम के पश्चिमोत्तर भाग में चंबल (चर्मवती) नदी एवं शेष पश्चिमी सीमा और पश्चिमी भाग में मालव प्रदेश की पूर्वी सीमा। इस भू-भाग के अन्तर्गत उत्तरप्रदेश के झांसी, जालौन, हमीरपुर, और बांदा जिला ग्वालियर संभाग के भिण्ड, मुरैना, गुना और शिवपुरी जिले, भोपाल सम्भाग के सिहोर, रायसेन, विदिशा और होशंगाबाद जिले, जबलपुर संभाग के जबलपुर, सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिले तथा रीवा संभाग के टीकमगढ़, दतिया, छतरपुर और पन्ना जिले हैं। वर्तमान में यह उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश राज्यों में क्रमश: चार और तेईस जिलों में विभाजित है।

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक अलग संस्कृति होती है क्योंकि संस्कृति ही मनुष्य के जीवन के क्रियाकलापों का लेखा-जोखा है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार ''संस्कृति मनुष्य के भूत वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांगपूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है। संस्कृति हवा में नहीं रहती उसका मूर्तिमान रूप होता है। जीवन के नाना विधरूपों का समुदाय ही संस्कृति है।'' भारत के इस विशाल भू-भाग बुन्देलखण्ड की अपनी विशिष्ट संस्कृति है। जिसके दर्शन हमें इस भूखण्ड के कण-कण में

होते हैं। इस सम्बन्ध में जगदीश प्रसाद जी चतुर्वेदी का निम्न कथन विशेष उल्लेखनीय है - ''बुन्देलखण्ड ने साहित्यिक और कलात्मक प्रवृत्तियों की परम्परा निरन्तर कायम रख ली। चाहे देवगढ़ का मंदिर हो, खजुराहो की मंदिर नगरी हो या ओरछा की राजधानी और पड़ोसी दतिया, हमें स्थापत्य और शिल्प के ऊंचे से ऊंचे प्रतिमान यहां मिलते हैं। ये सारे उदाहरण हमें बताते हैं कि यहां पर ऐसे लोग रहते हैं जो शस्त्र और शास्त्र दोनों में समान गति रखते हैं। और जो कोमलता और वीरता एक साथ बरतना जानते हैं। उन्हें वीरता और शालीनता, कला और साहित्य तथा इतिहास और संस्कृति सभी से अनुराग है। श्रद्धा सम्मान है। बुन्देलखण्ड का यह सौभाग्य.है कि उसकी उत्तरी सीमाओं को अपनी अन्य सहायक नदियों चम्बल, सिन्ध, पहूज और क्वांरी द्वारा सिंचित करती हैं। इस वैविध्य ने इस संस्कृति को जन्म दिया है जिसमें बुन्देलखण्ड ने भारत की विशाल संस्कृति का श्रेष्ठतम भाग आत्मसात करते हुये अपनी ओर से कुछ वृद्धि कर ही उसे देश के लिये प्रस्तुत किया है।'' भारत की विशाल संस्कृति के श्रेष्ठतम भाग को आत्मसात करने वाली यह बुन्देलखण्ड की श्रेष्ठ गौरवमयी लोक संस्कृति अत्यन्त ही प्राचीन है जैसा कि डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त लिखते हैं - ''बुन्देली लोक संस्कृति बहुत ही प्राचीन है। उसमें वन्य अनार्य, आर्य आदि सभी के मूल्यों का समन्वय हुआ है। विशेषता यही है कि उन सबको आत्मसात कर बुन्देली संस्कृति में एक निजता बना ली है। बाहरी प्रभावों को पचाते हुये उसने नये मूल्यों की स्थापना की है। जैसे पुराने भौजी देवर के सम्बन्धों को नया मापदण्ड देने वाले हरदौल को लोक देवता के रूप में प्रतिष्ठित करना। इससे सिद्ध है कि बुन्देली संस्कृति निरंतर गतिशील रही है। बुन्देली भाषा, लोक साहित्य, लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक कलाये और लोक धर्म सभी समृद्ध और सामर्थ्य से परिपूर्ण रहे हैं।''

बुन्देली संस्कृति में चित्रकला विषय पर विचार करने से पूर्व कला शब्द पर विचार करना आवश्यक है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण है उसी प्रकार कला संस्कृति का दर्पण है क्योंकि संस्कृति का बिम्बकला के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। भारतीय संस्कृति में कला को अनेक आयामों से देखा गया है। कला सामाजिक आयामों से गुजरती हुई अन्तत: आध्यात्मिक आयामों में विलीन होती है। रामदास गौड़ के मतानुसार, ''जिस संस्कृति का इतिहास अत्यंत प्राचीन हो, धार्मिक, साहित्य अत्यन्त विशाल हो, सामाजिक विकास दीर्घकालिक हो उसमें विविध कलाओं का विकास भी उच्च कोटि का होना चाहिए।'' इसी प्रकार डॉ. राधाकमल मुखर्जी मानते हैं कि - ''कला उन सामाजिक प्रतीकों, बिम्बों तथा परम्परागत विश्वासों को जन्म देती है जो मानव जीवन को ऊंचा उठाकर समाज का इस प्रकार निर्देशन करते हैं। जिससे सत्यं शिवम् तथा सुंदरम् मनुष्य के भय त्रास और भ्रम का हरण कर लेते हैं।'' लेंजर के अनुसार ''मन की अनुभूतियों को भौतिक जगत की वस्तुओं पर प्रक्षेपित करने के फलस्वरूप जो बिम्ब निर्मित होते हैं उनको प्रतीकों की संज्ञा दी जाती है। कला भी एक प्रकार का प्रतीक है। जिसका प्रस्फुटन महत्वपूर्ण आकारों में होता है।'' कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना गया है। भारतीय परम्परानुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिसमें कौशल अपेक्षित हो।''

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में प्रचलित समस्त कलाआं में यहां की चित्रकला स्वयं में अनूठी एवं सर्वश्रेष्ठ है। बुन्देलखण्ड में चित्रकला का वैभव उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन मानव जीवन का इतिहास है। आदि मानव अनेक आस्थाओं एवं विश्वासों से ओत-प्रोत रहा है। आदिम युग में प्रकृति का प्रत्येक प्रकोप किसी अज्ञात शक्ति का ताण्डव समझा जाता था। ये अज्ञात शक्तियां किसी का सर्वनाश कर सकती थीं तो किसी पर वैभव वर्षा कर सकती थीं। शनै:शनै मनुष्य विकसित हुआ और उसका बुद्धि पक्ष सबल होने लगा। परिणामस्वरूप उसकी आस्थाओं और विश्वासों में गहरी श्रद्धा होती गई जो उसकी संतुष्टि का अवलम्ब बनी। बुन्देलखण्ड तो आस्था और विश्वासों की पावन धरा है। इस सम्बन्ध में निम्न पंक्तियां विख्यात हैं ''अति आस्तिक बुन्देलखण्ड आराध्य भूमि है।'' यहां मंगल एवं सुखपूर्ण गृहस्थ जीवन के लिये अनेक विधि विधान, पूजा पाठ, व्रत, उत्सव एवं चित्र लिखने की ऐसी व्यवस्था है जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। जीवन का प्रतिफल उनसे

आप्लावित है। वर्ष भर यहां कोई न कोई पर्व या उत्सव मनाया जाता है। इसी कारण यहां का जनजीवन अनेक मानसिक उलझनों एवं तानावों से मुक्त है। इस सम्बन्ध में देवीलाल सामर का यह कथन विशेष महत्वपूर्ण है वे लिखते हैं - "हमारे देश की संस्कृति ने अनेक मौलिक उपाय सुझाए हैं जो शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण शहरी सभी के लिए कारगर सिद्ध हुये हैं। केवल, स्वरूप एवं प्रकारों में अन्तर है। शिक्षित एवं शहरी लोगों की आस्थाओं में जहां उच्च कोटि के साहित्य संगीत को जन्म दिया। उससे ऊंची से ऊंची स्थापत्य कला एवं चित्रकला का उदय हुआ। वहीं ग्राम्य जीवन में वहीं विश्वास इतने व्यापक न होने पर भी उनके प्रतीक मनुष्य की मौलिक अनुभूतियों के साथ जुड़कर जीवन के अंग बन गये हैं। ये प्रतीक गांवों के चौराहों पर प्रतिष्ठित मिट्टी पत्थर के देवरों दीवालों पर अंकित गोबर, गेरू, रामरज के भित्ति चित्रों में मौजूद हैं और उन्होंने जीवन के प्रत्येक दिन को पर्व एवं उत्सव में बदल दिया है।"

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में विविध प्रकार के मांगलिक चौकों, दीवालों पर बनी कलाकृतियों, त्यौहारों पर लिखे जाने वाले चित्रों आदि का अपना विशिष्ट महत्व है। विद्वानों का तो यहां तक मानना है कि बुन्देलखण्ड में स्त्रियों द्वारा चित्रित ये कलाकृतियां चतुर मंगल अर्थात चारों और शुभ और खुशहाली तथा कलियुग में सतयुग लाने की कामना से अंकित की जाती हैं। जिन घरों में ये मंगल चित्र प्रतिष्ठित किये जाते हैं उन घरों में सदैव सुख, समृद्धि और मंगल का वास रहता है। "रामचरित मानस" में कहा गया है "मंगल भवन अमंगल हारी" ये मंगल चित्र मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष प्रदान करने वाले होते हैं। ये कल्याणकारी कलाकृतियां विविध मांगलिक अवसरों पर अंकित की जाती हैं। घर में शिशु जन्म के अवसर पर उसके स्वागत में गाय के गोबर से आंगन लिपवाना और मुतियन चौक पुरवाना अनिवार्य है। सोर के पश्चात् पच देने के समय दीवार पर बेमाता की पुतरिया अंकित की जाती है। घर की जेठी सयानी महिला कूंकू कुमकुम रंग से दीवाल पर एक गुणाकार बनाती हैं। इस गुणा की रेखाओं को ऊपर एवं नीचे सीधी आड़ी रेखा से मिलकर शीर्ष भाग में मुख की आकृति एवं नीचे दो सीधी रेखाओं से पैर बना दिये जाते हैं। बगल में दोनों ओर दो सीधी कोणाकार रेखाओं से पैर बना दिये जाते हैं। बगल में दोनों ओर दो सीधी कोणाकार रेखाओं से दो हाथ बनाये जाते हैं बेमाता की पुतरिया का रेखांकन से मानव शरीर का चौकस अनुपात अपने आप बन जाता है।

इसी प्रकार विवाह के शुभ अवसर पर कुटुम्व के समस्त दरवाजों पर गेरू की मोरतें रखने का प्रचलन हैं। मोरतें कुल देवता की प्रतीक मानी जाती हैं। घर के अलावा ये मोरतें देवी जी के मन्दिर आदि पर भी रखी जाती हैं तथा विवाह सम्पन्न होने तक प्रतिदिन घर की वयोवृद्ध महिला द्वारा इनका पूजन किया जाता है। पुत्र के विवाह में बारात लौटने पर इन मोरतों का पूजन वर वधु द्वारा कराया जाता है। एवं वर वधु के हाथ हल्दी में भिगोकर उनके बीचों बीच हाथ अंकित करवाये जाते हैं। इस रस्म में वधु दोनों हाथों में हल्दी लगाकर हाथ रखती है तथा वर एक हाथ में हल्दी लगाता है। इन मोरतों मो बनाने के पीछे घर में सुख समृद्धि की कामना का उद्देश्य निहित होता है।

हमारे धर्मानुसार वर्ष में दो बार नवरात्रि पर देवी पूजन होता है। जिसमें विभिन्न परिवारों में अपनी पारिवारिक परम्परानुसार संयुक्त चौक बनाकर कुल देवता का पूजन होता है। संयुक्त चौक के चारों तरफ से सीमा बनाई जाती है ये चौक ऐपन या आटे से बनाये जाते हैं। चौक बनाने के पश्चात् पूरा परिवार पूजा करता है यह पूजा किसी के यहां नवमी तिथि को तो किसी के यहां अष्टमी तिथि को सम्पन्न होती है। इसमें कुटुम्ब के लोग ही सम्मिलित होते हैं। लड़कियां दूसरे कुल की मानी जाती हैं अत: वे इस पूजा को नहीं देखती हैं।

कार्तिक मास में चौथ के दिन करवा चौथ का व्रत रखते हुये सौभाग्यवती स्त्रियां करवा चौथ का पूजन करती हैं। करवा चौथ बनाने के लिए सर्वप्रथम दीवाल को गोबर से लीपा जाता है तत्पश्चात सूख जाने पर पीसे हुये चावल के ऐंपन एवं विविध रंगों से चांद, सात भाई, एक बहिन, सीढ़ी, वृक्ष एवं भाइयों द्वारा चलनी के अन्दर से दीपक दिखाने आदि के चित्र अंकित किये जाते हैं। करवा चौथ के

इस चित्र में सम्पूर्ण कथा प्रतिबिम्बित हो उठती है। यह दिन सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए विशेष महत्वपूर्ण होता है। पति की दीर्घायु की कामना करती हुयी महिलायें चन्द्र दर्शन के पश्चात ही जल ग्रहण करती हैं।

कार्तिक मास में बनाये जाने वाले विशिष्ट पर्व दीपावली पर भी प्रत्येक घरों में सुरैती या सुरामती बनाई जाती है। सुरेती या सुरामती में किसी छवि या सूरत को उभारा जाता है। इनमें विशेषत: गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा आदि देवी-देवता के चित्र अंकित किये जाते हैं। बुन्देलखण्ड में सुरेती पूजन स्थल की दीवालों पर ही खीचीं जाती है जो हल्दी रोरी, गेवरी, सेंदुर, चावल का ऐंवन और माहुर आदि रंगों से बनाई जाती है। ये सुरतियां शुभ मंगल चिन्हों को अंकित करते हुये गोल चौमुखी तथा चक्राकार होती हैं।

दीपावली के दूसरे दिन अर्थात प्रतिपदा को बुन्देलखण्ड में गोवर्धन की पूजा की जाती है। गोवर्धन आंगन में गोबर के बनाये जाते हैं। उनके चारों ओर ऐंपन या आटे का चौक पूरा जाता है। गोवर्धन के चित्रों के दोनों ओर दूध दही भरने को छोटे-छोटे कटोरे बनाये जाते हैं। विभिन्न प्रकार के पकवानों से गोवर्धन की पूजा की जाती है।

कार्तिकमास में ही प्रतिपदा के दूसरे दिन भाई दौज का त्योहार आता है यह त्यौहार वर्ष में दो बार मनाया जाता है एक कार्तिक मास प्रतिपदा के दूसरे दिन और दूसरा फागुन मास की प्रतिपदा के दूसरे दिन। इस दिन गाय के गोबर अथवा ऐंपन से आंगन अथवा दरवाजे पर चित्र बनाये जाते हैं। गोबर या ऐंपन से पुतलिया बनाई जाती हैं। तथा आजू-वाजू में दूध भरने के लिए कुण्ड बनाये जाते हैं। बीच में एक कुण्ड ऐसा बनाया जाता है जिसमें गायें बछड़े पानी पीते अंकित किये जाते हैं तथा एक तरफ गांव का चुगला बनाया जाता है जिसे पूजनोपरांत स्त्रियों द्वारा कुचला जाता है। इस दिन स्त्रियां अपने-अपने भाइयों की सुख समृद्धि एवं दीर्घायु की कामना करती हैं और माथे पर तिलक लगाती हैं।

कार्तिक मास में ही दीपावली के पश्चात जेठ उठनी एकादशी आती है इस दिन प्रत्येक घर में ग्यारस लिखी जाती है। छुई मिट्टी तथा खड़िया आदि से पूजन स्थल पर चांद, सूरज, तराजू, चरण, गायों के खुर, खड़ाऊ आदि के चित्र बनाये जाते हैं। कुछ लोग चौक, तुलसी, चौपड़, पांसे, चौपड़ खेलते व्यक्ति तथा कुछ पुतले आदि के चित्र भी बनाते हैं। एकादशी को गन्ने का मंडप बनाकर बेर, चने की भाजी, उड़द की दाल, सीताफल, आदि से पूजन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि देव उठनी एकादशी पर सोये हुये देव उठ जाते हैं और इसके पश्चात् विवाह आदि मंगल कार्य होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

नौरता बुन्देलखण्ड की कुंवारी कन्याओं द्वारा खेला जाने वाला एक विशिष्ट खेल है। यह कुंवार मास की नवरात्रि के अवसर पर नौ दिन तक खेला जाता है। इस खेल में ढिक देकर कलापूर्ण ढंग से चबूतरे को लीपा जाता है तथा लड़कियों द्वारा अनगिनत रंगों से सुन्दर पारम्परिक चित्र तथा चौक पूरे जाते हैं। इसके लिए लड़कियां महिनों से गेरू, सेम के पत्तों का रंग, हल्दी तथा छुई, गौरा पत्थर एवं अन्य रंगीन सामग्री एकत्र करके रखती हैं।

बुन्देलखण्ड में श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा की जाती है। जिसमें दरवाजे पर नाग देवता के चित्र अंकित किये जाते हैं। ये चित्र अलग-अलग ढंग से बनाये जाते हैं। नागपंचमी पर बनाये गये नाग देवता के ये चित्र कहीं पर घी तो कहीं पर गोबर या कालिख से बनाये जाते हैं।

भाद्रपद सुदी पंचमी को स्त्रियां व्रत रखती हैं और सायंकाल को पटा रखकर पांच पानों पर चन्दन या हल्दी से ऋषि बनाये जाते हैं इन पानों पर बने ऋषियों की विधि-विधान से पूजा की जाती है। ये पूजन सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए विशेष फलदायी माना जाता है। कहा जाता है कि इस व्रत को करने से वर्ष भर किये गये जाने अनजाने पापों का नाश हो जाता है।

इसी प्रकार पुत्रवती स्त्रियों द्वारा हलषष्ठी का व्रत रखा जाता है इसमें स्त्रियां दीवाल पर हरछट नाम की चित्र पूरी कथा कहता हुआ अंकित करती हैं। चित्र में पांच पण्डवा, आंवली का बिरवा, दूध दही बेचने वाली स्त्री, हल जोतता हुआ किसान, हल की नोंक तले अकस्मात बच्चे का

आ जाना आदि विविध आकृतियां अंकित करती हैं जो एक रोचक कथा कहती है।

बुन्देलखण्ड में क्वारमास के पन्द्रह दिनों तक पितृपक्ष में प्रत्येक दिन पितरों को पानी दिया जाता है तथा दरवाजे पर उरैन डाली जाती है। चबूतरे को लीप कर इसमें दो जोड़ा चरण बनाये जाते हैं। उन पर पुष्प चढ़ाये जाते हैं जो हमारे पूर्वजों के प्रति श्रद्धा भाव को अभिव्यक्त करते हैं।

चैत्रमास की शुक्ल पक्ष तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुख, सौभाग्य की अभिवृद्धि एवं मंगल कामना से अनुप्रेरित होकर गनगौर का पूजन करती हैं। इस दिन स्त्रियां पूजन स्थल को गोबर से लीप कर गीली मिट्टी की गौर बनाकर कथा कहते हुये पूजन करती हैं।

बुन्देलखण्ड में इन तीज त्यौहारों, पर्वों एवं मांगलिक अवसरों पर बनाये गये विविध चित्रों के अतिरिक्त यहां ग्रामीण अंचल में दीवालों पर गीली मिट्टी से उभरी हुई मोर एवं मकड़ी आदि की कलाकृतियां बनाई जाती हैं। सूखने पर इनको छुई या रंग से पोत दिया जाता है। ये आकृतियां घरों की सुन्दरता एवं मंगलकामना के उद्देश्य से बनाई जाती हैं। इसी प्रकार मिट्टी के बने बर्तनों परभी छुई से पोतकर सुन्दर रंग बिरंगी आकृतियां विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर बनाई जाती हैं। जिनका अपना विशिष्ट महत्व है। इन चित्रों की एक सुदीर्घ परम्परा बुन्देलखण्ड में प्रचलित है। प्रत्येक चित्र के पीछे कोई न कोई सार्थक कथा निहित है। इन सभी आकृतियों में जन मानस के अपने प्रतीक हैं जैसे सूरज, चांद, कमल, चक्र, शंख, कल्पवृक्ष, मछली, पंखा, मोर, शेर, हाथ की हथेली, पैरों के पद चिन्ह आदि। भारतीय संस्कृति में इन प्रतीकों का महत्व अनेक विश्वासों, पौराणिक एवं क्षेत्रीय कथाओं एवं धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित है। उदाहरण के लिए मछली शुभ का प्रतीक है जो ईश्वर के मत्स्यावतार का स्मरण कराती है। जिसमें ईश्वर ने मत्स्य का रूप धारण करके प्रलय के समय समस्त जीवों और बीजों को नौका की सहायता से हिमालय पर ले जाकर रक्षा की थी। जिससे पुनः सृष्टि का क्रम प्रारम्भ हुआ।

इन चित्रों में प्रयुक्त रंगों का भी अपना अर्थ होता है। जैसे कूंकू कुमकुम मंगल सूचक हैं। हरा रंग हरितिमा, समृद्धि, स्वस्थता का सूचक है। हरा सुआ, हरा मोर सुख और प्रसन्नता के सूचक हैं। पीला रंग भी शुभ माना जाता है। कालिख या काला रंग शक्ति प्रदाता माना जाता है। यह अशुभ को मिटाने वाला है। तभी बच्चों को कुदृष्टि से बचाने के लिए काला डिठौना लगाया जाता है। गोबर पवित्रता का प्रतीक है इसे रंग भी माना जाता है। अतः चित्रकला में इसका सर्वोच्च महत्व है।

अन्त में इस क्षेत्र की चित्रकला में हम अपनी बुन्देली भूमि के वैभव को प्रतिबिम्बित देखते हैं। इन चित्रों में समाज की समग्र जीवन पद्धति मुखरित है। यद्यपि बुन्देलखण्ड की यह चित्र परम्परा आधुनिक परिवेश में लुप्त प्रायः होती जा रही है। जो हमारी लोक संस्कृति के लिये शुभ संकेत नहीं है।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

(1) बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप-लेखक डॉ. कृष्णलाल हंस प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सन् 1976 ई.

(2) रामदास गौड़ हिन्दूत्व ज्ञान मण्डल काशी (संवत्) 1995 सम्प्रदाय खण्ड अध्याय 79 कला या महाविधाएं।

(3) राधाकमल मुखर्जी, सोशल फ्रंक्सन ऑफ आर्ट उद्धित द्वारा कुल सदुरू दयाल तथा सुरेश चन्द्र सामाजिक नियंत्रण एवं परिवर्तन स्टूण्डेण्ट्स फ्रेण्डस एंड कं. वाराणसी 1968 अध्याय 18 कला,

(4) लेंजर फिलासफी इन द न्यूकी, उर्द्धित द्वारा कुल एवं माटे,

(5) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कला हिन्दी विश्वकोष खण्ड 2 नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी 1962, कला.

(6) जवारा सम्भागीय बुन्देली मेला समिति की प्रस्तुति 25,29 अप्रैल 1992.

(7) चौमासा म.प्र. आदिवासी लोककला परि. का प्रकाशन नव. 1994, फर.95 वर्ष 11 अंक 36

- आदर्श नगर, छतरपुर (म.प्र.)

स्वास्थ्य जीवन के बुन्देली संजीवनी सूत्र

डॉ. आर. बी. पटेल 'अनजान'

बुन्देली संस्कृति जनसंस्कृतियों में प्रमुख स्थान रखती है जो आज भी जन-जन में व्याप्त है। यहां के लोग अपने जीवन से जुड़े पहलुओं को आचरण में लाने में सिद्धहस्त हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते चले आ रहे हैं। तभी तो बुन्देली सुगन्ध उनके आचार विचारों में अपने आप प्रस्फुटित होती है।

बुन्देली जन साहित्यकारों ने मानवीय व्यवहारों को अपनी लेखिनी का विषय बनाया है। वर्तमान परिवेश में पर्यावरणीय प्रदूषण सुरक्षा की तरह मुँह फैलाये निगलने को खड़ा है किन्तु हमारे बुन्देली साहित्यकारों ने पवनपुत्र बनकर संजीवनी सूत्र (गीत) जन मानस में बो रखे हैं जिनका अनुसरण कर मानव इस दूषित परिवेश में अपने आपको स्वस्थ्य रख सकता है जिसके कुछ अंश प्रस्तुत लेख में दृष्टव्य हैं -

आज का मानव प्रात: काल उठकर रसायनयुक्त टूथ पेस्ट, ब्रश तलाशता है जिससे मुख संवंधी तरह-तरह की बीमारियाँ (पायरिया जैसी) फैल रहीं है जबकि बुन्देली साहित्य में बबूल की दातौन करने का सुझाव दिया है जिससे दाँत मजवूत व बीमारी मुक्त वनते हैं। यथा -

जो दातून बबूल की, नित्य करे मनलाय।
टीस मिटे मजवूत हों, पायरिया मिट जाय।।

शौच आदि के पश्चात् स्नान का भी तरीका बताया गया कि कव और कैसे स्नान करना चाहिए। जबकि वर्तमान पीढ़ी तरह-तरह के साबुन, शेंपू का प्रयोग कर रही है जो मानव स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक हैं। बुन्देली सुझाव की एक छटा दृष्टव्य है। यथा -

दाह थकावट नष्ट कर, खुजली प्यास बुझाय।
शान्ति क्षुधावर्धक तथा, हृदय प्रसन्न बनाय।।
मन आलस्य विनाश कर, करे पसीना वंद।
प्रात: समय नहाइये, रहे सदा आनंद।।
सूर्योदय के प्रथम ही, जो नर सदा नहाय।
रक्त शुद्ध दीर्घायु हो, ओज शक्ति बढ़ जाय।।

यदि आप इसके अनुरूप स्नान का तरीका अपनाते हैं तो ओज शक्ति, दीर्घायु आदि बढ़ जाती है। शरीर में साबुन, शैंपू के स्थान पर चिकनी मिट्टी लगाने का सुझाव दिया है। जैसे -

चिकनी मिट्टी लीजिए, सारे बदन लगाय।
सूख जाय जब सब बदन, तुरतहि लेय नहाय।
बार-बार प्रतिमाह में, कीजे प्रति सप्ताह।
चर्म रोग सब नष्ट हों, मेटे तन की दाह।।

मानव शरीर की कुछ सहज प्रवृत्तियाँ होती हैं जिन्हें नहीं रोकना चाहिए किन्तु आज के इस आर्थिक युग में इन सहज वृत्तियों जैसे - शौच, भूख, प्यास, लघुशंका आदि को घण्टों रोक लेता है जिससे शारीरिक विकार उत्पन्न होते हैं व शरीर में बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। जैसे भूख रोकने से झुंझलाहट, चक्कर कान्तिहीनता आदि होती है। यथा -

कान्तिहीनता तिमिर अरू, चित्त बैचेन बनाय।
रक्त शक्ति का नाश हो, सिर में चक्कर आय।
झुंझलाहट पैदा करे, देवे रक्त जलाय।
नाशे चित्त एकाग्रता, क्षुधा समय नहि खाय।।

शौच रोकने में बवासीर, मन्दाग्नि, कब्जियत, वायुसूल आदि बीमारियाँ होती है यथा -

बवासीर मन्दाग्नि अरू, चित्त उदिग्न बनाय।
आधा शीशी रोग हो, देवे क्षुधा मिटाय।
वायुसूल सिर दर्द अरू, मृगी कब्जियत होय।
स्मरण शक्ति विनाश हो, शौच न जाये जोय।
शौच रोकने के समय, तालू गर्मी छाय।
केश शीश के श्वेत हों, अथवा सब झर जाय।।

बीमारियों से बचने के भी उपाय हमारे जनसाहित्य में बताये गये जैसे सिरदर्द के लिये सहज उपचार सुझाया है।

यथा –

धृत, कपूर को लीजिए, एकहि साथ मिलाय।
सिर माथे में रगड़िये, देवे दर्द मिटाय।।

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से पैदा होने वाले अनाजों, सब्जियों के सेवन से सर्दी, जुकाम खाँसी आदि बीमारियों से देश की 90% जनता ग्रसित हो गई है। इस तरह की बीमारियों से बचने के लिये हमारे जनपद में एक गीत प्रचलित है। यथा –

हर्र, बहेड़ा, आँवला, चित्रक लेय गिलोय।
सोंठ, मिर्च, पीपल सहित, बाय विरंगहु होय।
तोला तोला पीस के, लीजै सबै छनाय।
एक छटाक मिस्त्री सहित, गोली लेय बनाय।
बकला पीस बहेड का, गुड समभाग मिलाय।
भोजनान्त नित खाइये, खाँसी देय मिटाय।।

फसली बुखार को मिटाने के लिये हमारे जन कवियों ने निम्नवत् सूत्र सुझाया है। यथा –

तुलसीदल ब्रह्मजी सहित, काली मिर्च पिसाय,
गोली मटर समान कर, तोला तोला लाय।
प्रात दुपहरी रात में, इक इक गोली खाय।
पुन: घूट भर जल पिये, देय बुखार मिटाय।।

इतना ही नहीं शारीरिक सौन्दर्यता, वजन बढ़ाना, वजन घटाना, उम्र बढ़ाना आदि के सहज, सरल नुस्खे हमारे जनसाहित्य में बताये गये। इस विषय पर अनेकों शोधकार्य किये जा सकते हैं।

वास्तव में यदि जनमानस हमारी जनसंस्कृति में व्याप्त गीतों के मर्मों को जीवन में उतारने का प्रयास करें तो विविध कार्यों के साथ ही जीवन उपयोगी रहस्यों को समझ जाएगा एवं नीरोगी जीवन बिता सकता है। बुन्देली ग्रामीण जन इसका अधिक लाभ उठा रहा है जो पाश्चात्य संस्कृति से कोसों दूर है। यदि हमें सुखी व नीरोग जीवन जीना है तो बुन्देली संस्कृति की शरण जाना होगा क्योंकि जीवनोपयोगी मोती जनसंस्कृति के सागर में भरे पड़े हैं आवश्यकता है इन्हें सहेजने व तलासने की। यदि सभी जन ऐसा करना प्रारंभ कर दें तो वह दिन दूर नहीं जिसकी कल्पना स्वामी विवेकानंद जी ने की थी – ''मैं चाहता हूँ मेरे देश के नागरिकों में, लोहे की मांसपेशियां, इस्पात-सा स्नायुतंत्र और इनमें बास करता, वज्र सा दृढ़ मन हो।''

बजरंग नगर कालोनी, पं. दीनदयाल पार्क के सामने
छतरपुर (म.प्र.), मो. 9755155016

बुन्देलखण्ड में योग प्राणायाम एवं स्वास्थ्य चेतना

– डॉ. एम.एम. पाण्डे

योग सनातन जीवन-विज्ञान है। यह प्राण विद्या है। प्राणी सहज योग प्रवृत्त है। मानव योग प्रक्रिया के लिए जो कुछ भी शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक स्तर पर श्रम करता है, वह एक तप है एवं इस सुतप का सुपरिणाम है, परमात्मा से निकटता। योग के आठ अंग हैं। महर्षि पतंजलि के मतानुसार - ''यम-नियम-आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाधय: अष्टौ-अंगानि।''

(1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान, (8) समाधि

(1) यम - के अंतर्गत साधक निषेधात्मक भावों से विमुख हो आत्म केन्द्रिता की ओर उन्मुख होता है। यम को - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

(2) नियम - 'शौच संतोष तप: स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमा:।' (1) शौच, (2) संतोष, (3) तप, (4) स्वाध्याय, (5) ईशशरणागति, नियम कहलाते हैं।

(3) आसन - योगी को जप, ध्यान आदि के उद्देश्य से पद्मासन, भद्रासन, सिद्धासन आदि में स्थिर एवं सुखपूर्वक बैठने को आसन कहते हैं। योगी को आस का अभ्यास अपरिहार्य है। ध्यानात्मक आसन करते समय मेरूदंड सीधा रखें। आसन के लिए भूमि समतल हो तथा बिछाने के लिए जो उपकरण लिया जावे वह विद्युत का कुचालक हो। आसनों के द्वारा शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग को क्रियाशील किया जाता है, जिससे वे सक्रिय स्वस्थ एवं लचीले हो जाते हैं। सृष्टि में जितने जीव-जंतु हैं उतने ही आसन हैं। भगवान शिव से 84 लाख आसन बतलाये हैं। अष्टांग योग की साधना में यम और नियम के बाद आसन का तीसरा स्थान है। योग से श्रेष्ठ कोई दूसरा बल है ही नहीं। इसके अनुष्ठान से शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियाँ अनायास सहज ही सुलभ हो जाती हैं। महर्षि घेरण्ड के अनुसार -

'नास्ति योगात परम् बलं।'

योगाभ्यास से तत्व ज्ञान (परमात्म ज्ञान) की उपलब्धि हो जाती है। योग परमात्म शक्ति (आत्मबल) का पर्याय है। साधना से जीवात्मा स्वस्थ्य होती है। योगासनों के अभ्यास से शरीर हष्ट-पुष्ट होता है और प्राण की गति प्रवाहित होती रहती है। आसनों के अभ्यास से शरीर में हल्कापन आता है, निरोग रहते हैं - शारीरिक कांति एवं उज्जवलता में श्रीवृद्धि होती है। योगासनों का चरम-परम फल है - आरोग्य। योग हमारे जीवन के अमहत्व का अमोघ साधन है।

अष्टांग योग के अनुशासक महर्षि पतंजलि ने आसन को स्थिर और सुखद बताया है - 'स्थिर सुखमासनम्।' (योगसूत्र 2/46)

रीति से स्थिरता पूर्वक बिना हिले डुले और सुख के साथ, दीर्घकाल तक बैठा जाये, यह आसन है। आसनों के द्वारा मन अपने ध्येय तथा इष्ट के रूप में स्थिर हो जाता है।

प्रत्यक्षत: आसन शारीरिक और मानसिक प्रक्रिया है, परतु परोक्ष रूप में अध्यात्मिक शक्ति के जागरण पर भी इसका लाभप्रद प्रभाव पड़ता है। आसन की प्रक्रियाओं का संबंध शरीर में स्थित आठों चक्रों से है। विज्ञान के अनुसार चक्रों का संबंध विशेष ग्रंथियों से है। प्रत्येक आसन किसी न किसी चक्र को प्रभावित करता है।

आसन के प्रकार - आसन चार प्रकार के किये जाते हैं -

(1) लेटकर, (2) बैठकर, (3) खड़े होकर, (4) विपरीत मुद्रा में (सिर नीचे और पैर ऊपर)

आसन भोजन और निद्रा के नियमों को दृढ़ता से पालन करने वाला अमर हो जाता है -

'आसण दिढ़, आहार दिढ़ जे न्यंद्रा दिढ़ होई।
गोरस कहै, सुणौ रे पूता, मरै न वूढ़ा होई।।'

दैनिक अभ्यास के लिए प्रमुख आसन एवं विवरण निम्न प्रकार हैं -

	आसन	समय	विधि	लाभ
1.	नौकासन	3 से 6 बार	लेटकर दोनों हाथ जंघाओं पर रखें। श्वास अंदर भरते हुए, सिर एवं कंधे तथा पैरों को ऊपर उठावें।	फेफड़े तथा हृदय मजबूत होते हैं। अमाशय, यकृत के लिए उत्तम। कब्ज, गैस से मुक्ति।
2.	धनुरासन	3 से 6 बार	पेट के बल, घुटने मोड़कर नितंब पर रखें, घुटने पंजे आपस में मिले रहें। टखनों को पकड़िये, श्वास भरते हुए जंघाओं तथा धड़ को उठायें, नाभि पेट के पास का भाग, जमीन पर। 10 से 30 सेकेण्ड रुकें। श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थिति	मेरूदण्ड लचीला, सर्वाइकल, स्पोंडोलाइटिस, कमरदर्द, उदर रोग में गुणकारी। नाभि स्थिर। मूत्र विकार में लाभकारी।
3.	सर्वांगासन	2 मि. से 30 मि. तक	पीठ के बल लेटकर, हाथों को बगल में सटाकर, हथेलियाँ जमीन की ओर, श्वास अंदर भरकर धीरे-धीरे पैरों को 90° तक ले जावें। कोहनियाँ भूमि पर रहें, पंजे ऊपर की ओर तने हुए। वापिस आते समय, पैरों को थोड़ा पीछे झुकावें। इसका विपरीत आसन मत्स्यासन है।	थायराइड एवं पिच्युटरी ग्लैण्ड को क्रियाशील करता है। शुद्ध रक्त मस्तिष्क को मिलता है। जठराग्नि प्रदीप्त, प्रमेह - मुक्ति। बालों का झड़ना रोकता है।
4.	हलासन	30 सेकेण्ड	पीठ के बल लेट जायें, पैरों को सिर से पीछे टिकावें, श्वास सामान्य रहे, पूर्ण स्थिति से हाथ जमीन पर पट्ट रहें।	मेरूदण्ड को लचीला, मोटापा दुर्बलता दूर, मंदाग्नि कब्ज, प्रमेह से लाभप्रद।
5.	मत्स्यासन		पद्मासन - कोहनियों का सहारा लेकर लेट जाइये। ग्रीवा को पीछे मोड़िये, पीठ वक्ष ऊपर उठें, घुटने जमीन पर, हाथों से पैर के अंगूठे पकड़े , कुहनी जमीन पर, श्वांस अंदर भरें।	पेट के लिए उत्तम, कब्ज निवृत्ति नाभि टलना दूर।
6.	वज्रासन	5-15 मि. भोजन के बाद	पैरों को मोड़कर नितंब के नीचे, एड़ियाँ बाहर की ओर, अंगूठे मिले हुए, कमर ग्रीवा सीधे, घुटने मिले हुए, हाथों को घुटने पर रखें।	मन को स्थिर, गैस, कब्ज से निवृत्ति, घुटनों की पीड़ा दूर।
7.	सुप्त वज्रासन		वज्रासन - हाथों के सहारे लेट जाइये, घुटने मिले हुए, भूमि पर टिके रहें, ग्रीवा, कंधे भूमि पर टिके रहें, हाथ जंघाओं पर, कोहनियों का सहारा लेते वज्रासन में बैठे।	कोष्टबद्धता दूर, नाभि, गुर्दों में लाभप्रद।

	आसन	समय	विधि	लाभ
8.	शशकासन		वज्रासन - दोनों हाथ-श्वास भरते हुए ऊपर झुकते हुए श्वासन निकाले-आगे झुकते हुए, कोहनियों तक हाथों को भूमि पर टिकायें, माथा भूमि पर, पुनः वज्रासन।	हृदय रोग के लिए उपयोगी, आँत, यकृत, गुर्दों को बलदायक, तनाव क्रोध को दूर, चर्बी कम करना।
9.	पवनमुक्तासन	2 से 4 बार	लेटकर दांये पैर के घुटने को छाती पर रखें। कैंची लगाकर श्वास निकालते हुए, घुटनों से लगायें। नासिका घुटने से लगायें। 10 से 30 सेकेण्ड रूकें। दूसरे पैर से करें, दोनों पैरों से करें।	उदर वायु विकार के लिए उपयोगी अम्ल पित्त, हृदय रोग, कटि पीड़ा से लाभप्रद। चर्बी कम होना। स्लिप डिस्क, साइटिका से लाभ।
10.	मंडूकासन	3 से 4 आवृत्ति	वज्रासन - मुट्ठियों को नाभि के दोनों ओर लगाइये, श्वास निकालते हुए आगे झुकिए दृष्टि सामने, पुनः वज्रासन। वज्रासन - बांये हाथ की हथेली नाभि पर दूसरी हथेली ऊपर, पेट को दबाइये, श्वास को बाहर निकालते हुए।	अग्न्याशय (पेन्क्रियाज) को सक्रिय, प्रमेह दूर। उदर रोग, हृदय रोग में उपयोगी।
11.	अर्द्धमत्स्येन्द्रासन		दण्डास - बायें पैर को मोड़कर, एडी को नितंब के पास लगायें, दांये पैर को बांये पैर के घुटने के बाहर भूमि पर टिकावें। बांये हाथ को दांये घुटने के समीप, बाहर की ओर सीधा रखते हुए दांये पैर के पंजे को पकड़े। दांये हाथ को पीठ के पीछे घुमाकर पीछें देखें। इसी प्रकार दूसरी ओर से करें।	मधुमेह, कमर दर्द में उपयोगी, उदर रोग दूर कर आंतों को बल प्रदायक।
12.	गोमुखासन	1 मि.	दण्डासन - बांये पैर को मोड़कर एड़ी को दांये नितंब के पास रखें। दांये पैर को मोड़कर बांये के ऊपर, दोनों घुटने एक दूसरे का स्पर्श करें। दांये हाथ को पीठ की ओर मोडिए। बांये हाथ को पीठ के पीछे ले जाकर, दांये हाथ को पकड़िए। दूसरी ओर भी दुहरायें।	धातु रोग, बहुमूत्र रोग में लाभप्रद। यकृत, गुर्दे को बलदायक। संधिवात गठिया को दूर करता है।
13.	मर्कटासन	(I)	सीधे लेटकर, दोनों हाथों को कंधे के समानांतर फैलाइये। हथेली आसमान की ओर दोनों घुटनों को नितंब के पास रखें। घुटनों को दाई	कमर दर्द, स्लिप डिस्क, साइटिका में लाभकारी। कब्ज, गैस हरण, नितंब जोड़

	आसन	समय		विधि	लाभ
				ओर झुकाते हुए भूमि पर टिका दें। दाईं पैर की एड़ी पर बांये पैर की एड़ी टिकी हो। गर्दन को बांई ओर घुमाकर रखें। जमीन पर देखें। बांई ओर भी करें।	के दर्द में लाभकारी। मेरूदण्ड की विकृतियों को दूर करता है।
			(II)	लेटकर दोनों घुटनों को मोड़कर नितंबों के पास रखें। पैरों में 1.5 फुट का अंतर हो। दांये घुटने को झुकाते हुए भूमि पर टिकायें। बांया घुटना दांये तलुवे से स्पर्श करे। दूसरे पैर से भी करें।	
14.	मर्कटासन	3-4 आवृत्ति	(III)	पूर्ववत लेटकर, दांये पैर को 90° उठाकर धीरे-धीरे बांये हाथ के पास लायें, गर्दन दांये इसी प्रकार दूसरे पैर से करें, दोनों पैरों को उठाकर पूर्ववत।	
15	योगासन	4-5 आवृत्ति		1. पद्मासन - दांए हाथ की हथेली नाभि पर दूसरी उस पर, श्वास बाहर निकालते हुए आगे झुकते हुए ठोड़ी भूमि पर टिकायें-श्वास भरते वापिस जायें। 2. हाथों को पीठ के पीछे दांये हाथ से बांये हाथ की कलाई पकड़े, ठोड़ी - जमीन स्पर्श करायें।	जठराग्नि प्रदीप्त, गैस, अपचज, कब्ज का नाश। पेंक्रियाज को सक्रिय कर मधुमेह में लाभप्रद।
16	मकरासन	20-25 आवृत्तियाँ		पेट के बल लेटिए, कोहनी का स्टेण्ड बनाते हुए, हथेलियों को ठोड़ी के नीचे छाती ऊपर उठाइये। श्वास भरते हुए पैर मोड़कर नितंब को स्पर्श करें।	स्लिप डिस्क, फेफड़े, घुटने के दर्द में गुणकारी।
17	भुजंगासन	30 सेकेण्ड आसन में		पेट के बल लेटकर, हथेलियाँ छाती के दोनों ओर भूमि पर, कोहनियाँ ऊपर उठी भुजाएँ छाती से सटी। पैर सीधे, पंजे मिले हुए, श्वास अंदर भरकर छाती व सिर ऊपर, नाभि नीचे वाला भाग, भूमि पर टिका, सिर उठाकर, ग्रीवा नीचे, तिर्यक भुजंगासन-पैर फैलाकर बाईं ओर से दाड़ी एड़ी कंधे पर से देखना इसी प्रकार दूसरी ओर से करें।	सर्वाइकल, स्लिप डिस्क, मेरूदण्ड के रोगों में लाभकारी।

	आसन	समय	विधि	लाभ
18.	शलभासन	5 से 7 आवृत्ति	1. पेट के बल, दोनों हथेलियों को जंघाओं के नीचे, श्वास भरते हुए दांये पैर को ऊपर उठायें, ठोड़ी भूमि पर, 10 से 30 सेकेण्ड। इसी प्रकार बांये पैर तथा दोनों पैरों से। 2. पूर्ववत लेटकर दांये हाथ को कान तथा सिर से स्पर्श करते हुए सीधा रखें, बांये हाथ को कमर के ऊपर रखें, श्वास भरते हुए, आगे से सिर तथा दांये हाथ को तथा पीछे से बांये पैर को ऊपर उठायें, पूर्ववत। दूसरी ओर करें। 3. हाथों को पीठ के पीछे ले जाकर कलाईयों को हाथ से पकड़े, श्वास भरकर छाती को ऊपर उठाकर देखें। पूर्व स्थिति।	मेरूदण्ड के रोगों में लाभकारी
19	सिंहासन	3-4 आवृत्ति	वज्रासन मे घुटनों को खोलें, हाथों की अंगुलियाँ पीछे की ओर, पैरों के बीच में सीधा रखें। श्वास भरकर जिव्हा को बाहर निकाले। लार से गला तर करते हुए हाथ से मालिश।	टांसिल, थाइराइड, कान, गले रोगों में गुणकारी। तुतलाने में सुधार।
20	कटि चक्रासन	5 चक्र	1. दोनों पैरों में एक फुट का अंतर रख खड़े हों, दांये हाथ की हथेली बांये कंधे पर रखें, बायां हाथ पीछे से घुमाकर कमर पर रखें। गर्दन घुमाते हुए दांयी ऐड़ी देखें। दूसरी ओर से ऐसा ही करें।	कब्ज गैस से निजात।
			2. सीधे खड़े होकर दोनों हाथों को सीने के समानान्तर रखकर, श्वास भरते हुए दायीं ओर घुमाइये, दृष्टि हाथों के बीच रहें, दूसरी ओर से भी करें।	

(4) प्राणायाम - ''तस्मिन सति श्वास प्रश्वास योर्गति विंच्छेद प्राणायामः।''

योग में आसन सिद्धि, प्रथम सोपान है। आसन सिद्ध हो जाने पर श्वासप्रश्वास की गति को नियंत्रित करना प्राणायाम कहलाता है। प्राणायाम को चार प्रकार से वर्णित किया जा सकता है - 1. बाह्य वृत्ति, 2. आभ्यान्तर वृत्ति, 3. स्तंभ वृत्ति, 4. बाह्याभ्यन्तर विषयापेक्षी।

(5) प्रत्याहार - ''स्वविषयासंप्रयोगे चित्त स्वरूपानु कारइवैन्द्रियाणां प्रत्याहारः।''

जब योगी अपने विवेक से मन पर नियंत्रण कर लेता है तो इंद्रियों को सहज ही जीता जा सकता है। इंद्रियों को अंतर्मुखी करना ही प्रत्याहार के द्वारा संज्ञेय किया गया है।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध की आसक्ति साधक को आत्म कल्याण से विमुख करती है। इंद्रियों के विषयों के आसक्ति-व्यक्ति को भोगों की ओर प्रवृत्त करती है। प्रत्याहार साधक को इंद्रियजित बनाती है। इंद्रियजित साधक परम सत्ता से प्रीत करने लगता है एवं संसार की नि:सारता प्रतिभात होने लगती है। साधक को लौकिक विषयों का सुख अप्रीतिकर लगता है।

(6) धारणा - ''देशवन्धाश्चित्तस्य धारणा। ''

मन को स्थूल विषय से हटाकर परमसत्ता में स्थिर करना धारणा कहलाता है। धारणा ध्यान का प्रथम सोपान है।

(7) ध्यान - ध्यान में ईश्वर का स्मरण किया जाता है। नवीनतम शोध के निष्कर्षानुसार ध्यान से स्मरण शक्ति में अभिवृद्धि होती है तथा शारीरिक वेदना से मुक्ति मिलती है। ध्यान से एकाग्रता में वृद्धि होती है। हावर्ड मेडिकल स्कूल के शोधकर्ताओं के अनुसार ध्यान अल्फा रिदम नामक मस्तिष्क की एक महत्वपूर्ण तरंग को नियंत्रित करने में सहायक है। यह तरंग मस्तिष्क से अतिरिक्त जानकारियों का बोझ हटाकर, काम की बातों पर केन्द्रित करने में सहायक है। ''ध्यान'' साधक को अतीत की जानकारियों एवं भविष्य की चिंताओं से विमुख कर वर्तमान पर केन्द्रित करता है। इससे मन: स्थिति में सुधार होता है तथा तनाव में कमी होती है ध्यान एक प्रक्रिया है - जिसमें योगी अपने मस्तिष्क को सप्रयास एकाग्र और शांतचित्त करता है। यह मानव के अंतर्मन में घटित होने वाला एक प्रकार का व्यायाम है। ध्यान स्वास्थ्य के लिये अत्यंत लाभप्रद है। गीता ने ध्यान को बौद्धिक ज्ञान से उत्तम माना है।

(8) समाधि - ''तदैवार्थ मात्र निर्मासं स्वरूप शून्यमिव समाधि:।''

ध्यान का केन्द्र बिन्दु जब परमात्मा का स्वरूप हो एवं अपने आपको विस्मृत कर दिया जाये, तो वह समाधि कहलाती है।

ध्यान और समाधि में भेद - ध्यान के तीन पक्ष है - 1. ध्यान करने वाला, 2. मन, 3. जिस पर ध्यान लगाना है।

समाधि में केवल एक पक्ष होता है - परमात्मा का स्वरूप। समाधि में परमात्म स्वरूप में जीवात्मा भी संयुक्त हो जाती है। जिस प्रकार अग्नि में लोहा डालने पर वह भी अग्नि रूप हो जाता है, उसी प्रकार ईश्वर के दिव्यालोक में आत्मा के प्रकाशमय होकर अपने शरीर आदि को विस्मृत कर देते हैं।

मानव जीवन के प्रति उल्लास भरी रचनात्मक अभिवृत्ति प्राणायाम है। हम हृष्ट -पुष्ट और संतुष्ट बने रहें- इस का अत्यंत सरल उपाय है - योग। मानव जीवन का क्रम विकास की अव्यस्था से व्यवस्था की ओर, अपरिष्कार से परिष्कार की ओर तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर एक निरंतर प्रवाह रहा है। इसी सिद्धांत के अनुसार योग विद्या के गुप्त ज्ञान की ओर प्रवृत्त समाज का दर्शन इसी सिद्धांत पर आधारित है। योग अंतर्जगत की ओर ले जाने वाला मार्ग है। अध्यात्म के बिना सब विद्वायें - अविद्यायें ही परिगणित होंगी। ईसा ने ठीक ही कहा है - ''परमात्मा का राज तुम्हारे अंदर है'' अध्यात्म की आनंदपूरित अनुभूति के लिये मानव को योग की सरल से कठिन अवस्थाओं की आरे अग्रसर होना चाहिये - फिर धारणा और ध्यान की अवस्थाओं में पहुंचे।

ध्यान का निरंतर अभ्यास करते रहने से उच्चतर चेतनाओं के क्षेत्रों तक जाने का मार्ग सुलभ हो जाता है। वैज्ञानिकों के मतानुसार मानव अपनी मानसिक क्षमता का केवल पांच प्रतिशत के लगभग ही उपयोग कर पाता है। - शेष शक्ति सुप्त ही रह जाती है - शेष शक्ति का प्रयोग का सोपान योग है। जिसके माध्यम से हम अंतर्जगत की गहराइयों की थाह ले सकते हैं - ध्यान अध्यात्मिकता की परिपक्व स्थिति है, योग से व्यक्तित्व और व्यवहार में रचनात्मक परिवर्तन आता है। योग से शारीरिक और मानसिक विश्राम मिलता है। इससे अनेक आधि - व्याधियां स्वत: दूर हो जाती है, इससे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ लिया जा सकता है। योग मन और शरीर दोनों पर प्रभाव डालता है। इसके द्वारा रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास द्रुतगति से किया जा सकता है। शारीरिक और मानसिक क्रियाओं को नियंत्रित करने के

लिए योग प्राणायाम एक सशक्त माध्यम है। योग प्राणायाम से रक्त चाप पर अधिक प्रभाव पड़ता है। मानव का अतीत से लगाव वर्तमान से असंतोष एवं भविष्य की चिंता ही उसके वर्तमान को दुखमय बना देते हैं। इससे मुक्ति का सहज सरल एवं सुलभ मार्ग है - योग प्राणायाम की साधना,जो विद्या हमारे महर्षियों की अनुपम थाती है - इसे योग गुरू रामदेव स्वामी जी ने सामान्य जन हितार्थ पुन: नये संस्करण के साथ प्रस्तुत किया है, जिसे न केवल भारत के कोने - कोने ने अपनाया है, अपितु विश्व के कोने - कोने तक भारतीय योग की गूंज सुनाई दे रही है। मानव दुखी है, अशांत है, अस्वस्थ है, असफल है। आज का समाज सुखी एवं शांतिमय जीवन का आकाक्षी है, पर मन का संतुलन बिगड़ जाने से उसकी सहज प्रतिक्रिया आक्रोश और द्वेष में होती है जिससे जीवन अशांत एवं हिंसक हो जाता है, इस स्थिति से निपटने के लिए एकमात्र साधन-योग प्राणायाम की साधना है। इस साधना से मानव का अंत:करण संयमपूर्ण एवं प्रेममय बन सकेगा, मन और शरीर के शुद्धि के साथ ही साथ अच्छे संस्कार डालने की प्रक्रिया प्रारंभ होगी। ''जीवन का प्रथम सुख निरोगी काया'' का लक्ष्य योग प्राणायाम से सहज प्राप्य है।

मानसिक प्रसन्नता की अनुभूति, स्वस्थ शरीर से होती है और स्वस्थ व्यक्ति ही अपने चरित्र एवं नैतिक मूल्यों पर आचरण कर सकता है। उत्तम स्वास्थ्य आत्म विश्वास उत्साह, शौर्य, पराक्रम, पुरूषार्थ, दृढ़ता, अध्यात्मिकता, राष्ट्रीयता की प्राप्ति योग प्राणायाम की साधना से ही संभव है। मानव प्रतिदिन नये रोगों का शिकार हो रहा है। मानसिक अशांति के झंझावातों से जूझ रहा है। अपनी आर्थिक एवं मानसिक स्थिति के असंतुलन से दो चार हो रहा है। यदि नियमित कुछ मिनिट योग अभ्यास को निर्धारित कर दें तो उसके जीवन में बड़ा परिर्वतन संभव है। समस्याओं का समाधान आपके पास है, पर आप तो कस्तूरी के मृग बने हुये हो। हृदय, फेफड़े, आमाशय, यकृत, अंतड़ियां, रक्त संचार की नलिकाएं, मस्तिष्क, नाड़ीतंत्र, ग्रंथियां आदि अपना स्वाभाविक कार्य संपादित कर सकें इसमें योग प्राणायाम परम सहायक है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. एम. गुल्लर के मुतानुसार ''वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध है कि मांसपेशियों की झिल्ली व शरीर की नसों में एक प्रकार का मल जमा होता रहता है, यह मल पृथ्वी तत्व से संबंध रखता है। आयु के अनुपात में यह मल बढ़ता रहता है और शरीर के तंत्रों को बिगाड़ देता है इस मल के जमने से नसें व रक्त नलिकायें मोटी होकर सिकुड़ जाती है। शरीर के मुख्य अंगों मुख्यत: मस्तिष्क का रक्त संचार धीमा हो जाता है। इससे मस्तिष्क के कार्य में रूकावट आती है, स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है, विचार अस्थिर हो जाते है। भ्रम, चिन्ता, चिड़चिड़ापन व कामुकता आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं, हृदय शून्य सरीखा हो जाता है, शरीर और मस्तिष्क की इस विकृत अवस्था का एक मात्र कारण नियमित योग प्राणायाम तथा व्यायाम का न करना है। ''

योगासन से शारीरिक व मानसिक विकास दूर होते हैं, प्रत्येक अंग क्रियाशील होता है। जिसका अंतड़ियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है - जिससे अपच, गैस,कब्ज, सड़न आदि रोगों से मुक्ति मिलती है। योग से ही चेहरे पर चमक शरीर में बल, मानसिक एवं बौद्धिक बल का विकास होता है। व्यायाम केवल मांसपेशियों को क्रियाशील करते हैं जबकि योग प्राणायाम मानसिक एवं अध्यात्मिक ऊर्जा में अभिवृद्धि करते हैं।

योग शब्द ''युज'' धातु से बना है - जिसका अर्थ है मिलाप। आत्मा और परमात्मा का मिलाप ही योग है। प्राणायाम = प्राण + आयाम। प्राण अर्थात वायु। पंचतत्व से निर्मित शरीर में वायु (प्राण) का पूर्ण स्थान है। वायु के आयाम अर्थात अनुशासन से शरीर को स्वस्थ्य रखा जा सकता है। योग शास्त्रों में प्राणायाम की विभिन्न विधियां वर्णित है यथा - भस्त्रिका, कपाल, बाह्य प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, धामरी, उद्‌गीत, प्रणव, नाड़ी शोधन, सूर्य भेदी, चन्द्रभेदी, उज्जायी, वर्णरोगान्तक, शीतली, शीतकारी, मर्छा, प्लाविनी, केवली इत्यादि। प्रमुख प्राणायामों का विवरण इस प्रकार है-

प्राणायाम	समय	विधि	लाभ
1. भस्त्रिका	3 से 5 मि.	श्वास को डायाफार्म तक भरें, पूरी ताकत से छोड़े। मंद, मध्यम, तीव्र गति। हृदय रोगी मंद गति से करें। आँखें बंद रखें। (संकल्प – ब्रह्माण्ड में विद्यमान दिव्य शक्ति ऊर्जा आदि जो भी शुभ है वह प्राण (वायु) के साथ देह में प्रविष्ट हो रहा है।)	कफ रोगों से मुक्ति, फेफड़े सबल, थाइराइड, टांसिल से मुक्ति, हाई ब्लडप्रेशर, अस्थमा, फेफड़ों से संबंधित रोग दूर होते हैं।
2. कपाल भाँति	8 मि. (5 से 15 मि.)	मात्र रेचक, पूरी एकाग्रता सांस छोड़ने में। पेट में आंकुचन – प्रसारण, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर चक्र पर बल। (संकल्प – प्रश्वास के साथ समस्त रोग बाहर निकल रहे हैं।)	मुख मंडल, ओज युक्त कफ रोग, दमा, एलर्जी दूर। हृदय, फेफड़ों, मस्तिष्क के रोग दूर, मोटापा, मधुमेह, गैस, कब्ज, प्रोस्टेट रोगों से मुक्ति। हृदय के ब्लाकेज खुल जाते हैं।
3. बाहय प्राणायाम	3 से 21 बार	पद्मासन में श्वास को एक बार में बाहर निकाले। मूल, उड्डीयान, जालंधर बंध लगाकर श्वास को बाहर रखें। समस्त रोगों, विकारों को बाहर फेंका जा रहा है।	मन की स्थिरता, जठराग्नि, प्रदीप्ति, शरीर शोधक
4. अनुलोम, विलोम	5 से 15 मि.	अंगुष्ठ के द्वारा दायां स्वर (पिंगला नाड़ी) तथा अनामिका एवं मध्यमा अंगुलियों के द्वारा बायां स्वर बंद करें। बांयी नासिका से प्रारंभ करें। (संकल्प – देह, दिव्य आलोक से दैदीप्यमान हो रहा है। परमेश्वर की दिव्य शक्ति दिव्य ज्ञान की दृष्टि चारों ओर से हो रही है।)	72 करोड़ 72 लाख, 11 हजार 250 नाड़ियाँ शुद्ध। शरीर को कांतिमय बलिष्ठ। वात रोग, मूत्र, रोग, त्रिदोष दूर होते हैं। ब्लाकेज खुल जाते हैं। कुंडलिनी अधोमुखी हो जाती है।
5. भ्रामरी	3 से 11 बार तक	किनारे की तीन अंगुलियों से आँख ढंकें। अंगूठे के साथ वाली अंगुली माथे पर रहे। अंगूठे से कान के ढक्कन बंद करें। मुंह बंदकर ओम् बोलें।	तनाव मुक्ति, रक्तचाप सामान्य, एकाग्रता में वृद्धि।
6. उद्गीत ओंकार जप	5 बार 3 से 5 मि.	सुखासन या पद्मासन में बैठकर लंबी सांस अंदर भरकर मुंह से ओम् का उच्चारण करें। (10 सेकेंड में 'ओ' और 5 सेकेण्ड में 'म' का उच्चारण)	रक्तचाप सामान्य रहता है।
7. उज्जायी	3 से 11 बार	गले को सिकड़ते हुए सांस भीतर की ओर भरे, गले में आवाज हो। बाई नाशिका से सांस ना छोड़ें।	थाईराइड, टांसिल ठीक होते हैं। सर्दी, खांसी में लाभप्रद।

अत: योग प्राणायाम स्वास्थ्य चेतना के जागरण में परम सहायक है।

सर्व समर्थ ईश्वर ने मानव को ये मूल्यवान जीवन, पशुओं की भांति आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि प्रवृत्तियों की बलि चढ़ाने नहीं दिया है – आध्यात्म की ओर उन्मुख होकर समाज के उपयोगी सदस्य बन सकें तो जीवन की सार्थकता होगी।

– चण्डीजी वार्ड, हटा
जिला – दमोह (म.प्र.)

विन्ध्यकोकिल ईसुरी का रामचरित

डॉ. कुंजीलाल पटेल 'मनोहर'

लोककवि ईसुरी मूलतः ग्रामीण लोकभावनाओं का लोकभाषा बुन्देली में साकार चित्रण करने वाले रचनाकार हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विन्ध्यकोकिल ईसुरी को सुरीली चौकड़ियों का रामबोला माना जाता है। आधुनिकता के दौर में भी यदाकदा ईसुरी की चौकड़ियाँ यत्रतत्र बुन्देली फागप्रेमियों द्वारा तल्लीनता पूर्वक बड़े आदर के साथ गाई और सुनी जाती है। इतना ही नहीं, आपसी बातचीत के दौरान अनेक जीवन-प्रसंगों पर ईसुरी की फागें बात-बात में आज भी अधरों पर थिरक उठती है।

मानस के प्रणेता तुलसी की - 'कलि में केवल नाम अधारा, सुमरि सुमरि नर उतरहिं पारा' नामक चौपाई के आधार पर लोककवि ईसुरी मानवजीवन में रामभक्ति विषयक असंख्य बुन्देली चौकड़ियाँ रचकर लोकमानस में मानसकार से बहुत आगे निकल गये हैं। ईसुरी ने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में तुलसी और उनकी रामभक्ति की फलीभूत महत्ता को लोकमानस में स्थापित करने के लिए अनगिनत चौकड़ियों की रचना की। संगीत सम्राट तानसेन की रागनी, मानसकार तुलसी की रामायन और ईसुरी की चौकड़ियाँ फागों का हमारे साहित्य और लोकसाहित्य में कोई अन्य विकल्प नहीं है। इसीलिए तो बुन्देली का प्रत्येक जनमन यही कहता सुनाई देता है -

रामायन तुलसी कही, तानसेन ज्यों राग।
सोई या कलिकाल में, कही ईसुरी फाग।।

बुन्देली कवि ईसुरी गांव की चौपाल में संध्याकालीन रामायन कथा नियमित रूप से हमेशा सुना करते थे। इसलिए उनको चौपाइयों सहित संपूर्ण रामकथा और रामनाम की महिमा का आत्मज्ञान तथा भान हो चुका था। उस समय जनमन में रामकथा का क्या महत्व था? इसको लोककवि ईसुरी भली-भांति समझ चुके थे। जनमानस को रामचरित मानस के प्रति और अधिक जोड़ने के लिए ही ईसुरी अधिकांश लोगों को अधिकतर यह फाग गाकर सुनाया करते थे -

रामै लये रागनी जीकी, लगै सुनत में नींकी।
छैऊ शास्त्र पुरान अठारा, चार वेद से झींकी।
गैरी भौत अथांय भरी है, थांय मिलै न ईकी।
ईसुर साँसऊँ सुरग नसैनी, रामायन तुलसी की।

बुन्देली वाचिक परम्परा में ईसुरी की रामचरित विषयक अनेक फागें लोकगायकों से संकलित करने को मिली है। कथाक्रम के अनुसार विश्लेषित करने पर रामजन्म से लेकर विभीषण को लंका की राजगद्दी सौंपने तक लगभग मुख्य-मुख्य प्रसंगों की फागें प्रस्तुत आलेख के माध्यम से पाठकों के सामने लाना हमारा मूल उद्देश्य है। निश्चित ही इससे ईसुरी के कृतित्व पर भक्ति की दृष्टि से अनुशीलन करने वाले शोधार्थियों को एक नवीन दिशा मिलेगी।

अयोध्या नरेश दशरथ के महलों में चार पुत्रों के रूप में भगवान अबधबिहारी बनकर प्रगट हुए हैं। सभी देवता प्रसन्न हैं। क्योंकि पृथ्वी पर भक्तों की रक्षा करने वाले, राक्षसों का दमन करने वाले, अब अयोध्या नगरी में अवतरित को गये हैं। पूरी अयोध्या आज पूर्णतः धन्य हो गई है। ईसुरी की रामजन्म विषयक एक फाग यहाँ उदाहरणीय है-

महलन प्रगटे अबध बिहारी, दशरथ कुल सुतचारी।
भगतन के प्रत पालन हारे, करन धेनु रखबारी।
जनहित जीवन मूर सजीवन, दुष्ट दलन औतारी।
खेलें कौशिल्या की गोदी, सन्तन के हितकारी।
धन्य अजुध्या भई ईसुरी, माया अजब तुमारी।

जिस समय भगवान अयोध्या में प्रगट हुए, उसी समय सारे देवी-देवता, ऋषि-मुनि, नर-नारी, राजभवन में आकर जन्मोत्सव की खुशियाँ मनाने लगे। गगन से देवता फूलों की वर्षा करने लगे। ईसुरी प्रभु के जन्मोत्सव का वर्णन करते

हुए कहते हैं -

सोभा का बरनों उन छन की, दशरथ राज भवन की।
देवगन रिसी सबई जुर आये, बहुयें नचत सुरन की।
नाचत सबरे देव गगन में, बरसा करत सुमन की।
नर नारिन की आस ईसुरी, चरन कमल बंदन की।

एक साथ चार पुत्रों की खुशी में महलों के बाहर और भीतर नगर वासियों की भीड़ देखते ही बनती है। दान-दक्षिणा दिये जा रहे हैं, आनन्द मनाये जा रहे हैं, सोहर गाये जा रहे हैं, बाजे बजाये जा रहा है, पापियों के पाप से भारी हुई पृथ्वी का भार हटाने वाले अवतरित हो चुके हैं। दान-दक्षिणा के लिए राजा दशरथ सभी कुछ लुटाने के लिए इच्छाधारी नाग हो गये हैं। इन सभी का वर्णन ईसुरी की एक खड़ी फाग में देखते ही बनता है -

महलन में भीर भई भारी, जुरे नगर के नर नारी।
दान दच्छना देत सबै नृप, जैसे नाग इच्छाधारी।
भओ आनन्द अबध नगरी में, प्रभु पै सबकी बलहारी।
मंगल सोहर सुजस बधाई, बाजे बाजें सुखकारी।
हरन भये भूभार ईसुरी, रघुवंशी प्रभु औतारी।

कुछ समय बाद महामुनि विश्वामित्र अपनी यज्ञ रक्षार्थ दशरथ से राम लक्ष्मन को मांग कर अपने साथ ले जाते हैं। दोनों बालक सुसज्जित वेश में धनुष-वाण धारण किये कितने मनोहारी लगते हैं। अलंकारों से अलंकृत ईसुरी की यह चौकड़िया कितनी प्रभावी लगती है, देखिए -

मुनि संग चले जाऊँ दोउ भाई, कृपा सिंधु रघुराई।
जलजनैन मुखजलज गौरतम, सील सलज सुखदाई।
कटपट पीत कांछनी काछें, कर सर-चार चढ़ाई।
असुर संघार भगत प्रतपालन, संतन के सुखदाई।
मुनिवर संग लयें जात ईसुरी, मनो महा निधि पाई।।

मुनि विश्वामित्र के साथ नृपपुत्रों को देखते ही राक्षसी ताड़का उनपर झपट पड़ती है। राम एक ही वाण से उसका काम तमाम कर अन्य राक्षसों को मार भगाते हैं। यज्ञ की रक्षा करते हैं। गौतम ऋषि की अभिशापित पत्नी अहिल्या का उद्धार करते हुए विश्वामित्र के साथ जनकपुरी की ओर गमन करते हैं। पूरा प्रसंग एक चौकड़िया फाग में दर्शनीय है-

मुनि संग नृप सुत दिये दिखाई, तुरत ताड़का धाई।
एक बान में प्रान हरे प्रभु, तनक न देर लगाई।
गाध सुअन की रच्छा करकें, हने दनुज समुदाई।
गौतम रिसि की नारि तारकें, पाई प्रभु बड़बाई।
करे जनकपुर गमन ईसुरी, लखन सहित रघुराई।

जनकपुर में प्रवेश करते ही विश्वामित्र के साथ दो दिव्य बालकों को देखकर राजा जनक को बड़ा आश्चर्य होता है, किन्तु महामुनि विश्वामित्र बालकों को अपने साथ होने का सम्पूर्ण वृतान्त बताते हैं। तब कहीं विदेहराज जनक विश्वामित्र सहित राजकुमारों को ठहरने की उपयुक्त व्यवस्था करते हैं। इस आशय का सहज और सरलतम बयान ईसुरी की यह फाग किस प्रकार करती हैं, देखिए -

दोई सुप नृप दसरथ के जाये, मुनि हित भूप पठाये।
दोई बरजोर लखत के कौमल, मान मरीच भगाये।
जासु चरनरज परसत पावन, मुनि तिय ताप नसाये।
सनकें मुनि के वचन ईसुरी, नृप के बास कराये।

राजकुमारों का सौन्दर्य, दिव्य प्रतिभा, प्रतापी वदन, ईश्वरी स्वरूप देखकर राजा को विश्वास नहीं होता है कि ये असाधारण प्रतिभायें किसी राजा महाराजा की संताने हो सकती हैं। ईसुरी दोनों राजकुमारों का दिव्यरूप कितनी लोकदक्षता से चित्रित करते हैं -

मुनिबर हमें ना जानों जाता, को इनके पितमाता।
चंदन बदन कमल लोचन मृदु, मंद मंद मुसकाता।
सुसमा सोम सांवरे गोरे, मृदुल मोह चकराता।
छोटी उम्मर नरम कलइयाँ, धनुष वान लये हांता।
जोड़ी जुगल देखकें ईसुर, कोटन काम लजाता।

राजा जनक दोनों राजकुमारों को, उनके रूप-रंग को, सुन्दर मुकुट-मणियों को, उनके शीलवान गुणों को बार-बार देखकर उनके माता-पिता के भाग्य की सराहना करते

हुए विश्वामित्र मुनि के पैर लगकर सुकोमल वचनों का उच्चारण किस प्रकार कर रहे हैं, ईसुरी के ही शब्दों में देखा जा सकता है -

दोउ सुत राजा जनक निहारें, सुन्दर मुकुट समारें।
स्यामल गौर सरूप देखकें, तनक दृगन नई हारें।
सोभा शील गुनन में अगरे, बारी बैस कुमारें।
धन धन मात पिता बे इनकें, जनमें जिनके द्वारें।
मुनि के चरन जनक गहँ ईसुर, कौमल बचन उचारें।।

दोनों राजकुमार गुरू विश्वामित्र की आज्ञा पाकर पूजा के निमित्त पुष्पावाटिका फूल लेने के लिए जाते हैं। वहाँ बाग के माली से वाटिका की सुन्दरता का वर्णन कर राजाजनक की प्रशंसा करते हैं। चुनिंदा पुष्प संकलित करते हुए राम लक्ष्मन पुष्पवाटिका में भ्रमण करते हैं। प्रस्तुत प्रसंग पर ईसुरी कहते हैं -

बागन राम लखन दोउ आये, गुरू अनुशासन पाये।
बगिया में पूंछे माली से, लखें फूल फुलवाये।
टोरत फूल मनोहर चुनचुन, नृप की करत बड़ाये।
तौलौ जनक सिया कों ईसुर, पूजन गौर पठाये।

पुष्पवाटिका में गौरी पूजन के लिए जानकी आते ही श्यामगौरवर्ण के दो सुन्दर, सुकोमल, तेजस्वी स्वरूपों को देखते ही अपने तनमन की सुध खो बैठती है। लोककवि ने सीता जी की इस दशा का यथार्थ चित्रण एक रचना के माध्यम से किस प्रकार चित्रित किया है, साकार रूप में यहाँ देखा जा सकता है -

इनको लख-लख भई दिवानी, बोली सिया भुमानी।
गदगद कंठ मनई मन भाखै, भरें दृगन में पानी।
तन की सुध बिसराई जानकी, छोड़ दई कुल कानी।
मनों चित्त की पुतरी ईसुर, कीके हाँत बिकानी।।

सीता की ऐसी मनोदशा का होना और पुष्पवाटिका में कुलदेवी गौरी की पूजा के निमित्त जाना तथा विधि के विधान का ऐसा संयोग विचारणीय है। सीता जी की ऐसी मनोकामना और गौरी पूजन के अवसर पर इसी को पूर्ण करना, ईसुरी की एक फाग में अवलोकनीय है -

गिरजा मनो कामना कर दे, हो प्रसन्न मन भर दे।
भरत सत्रुधन लछमन देवर, रामचंद से वर दे।
दसरथ ससुर सास कौशिल्या, अबधपुरी सौ घर दे।
ईसुर प्रेम नाम की मुदरी, श्याम नगीना धर दे।

गौरी पूजन के दौरान जानकी की मनोकामना को भावनात्मक आस्वासन, धनुपयज्ञ में सीता का मन विचलित होना, अनेक महारथियों द्वारा धनुप तक पहुँच ही न पाना, जनक का अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहना, सीता की सहेलियों के मन में जो है सो है, और वही हुआ भी। इसीलिए ईसुरी ने इस प्रसंग को बड़े मनोयोग से अपनी एक रचना के माध्यम से इस प्रकार दर्शाया है -

दुल्हा सांवरिया रंग बारौ, देखौ सिया तुमारौ।
मन हर लेत हँसन हेरन में, रघुकुल राजदुलारौ।
ऐंसौ रूप आज लौ आली, देखों कहाँ? बिचारौ।
तज तो आन पिता अपने की, जै माला दै डारौ।
टोरो धनुष राम ने ईसुर, बाजो बिजै नगारौ।

धनुष भंजन के बाद नगर वासियों द्वारा बारातियों का स्वागत, मांगलिक गान, विधि-विधान से वैवाहिक कार्यक्रम चमात्कारिक आतिशबाजी, देवताओं द्वारा पुष्पवृष्टि आदि मनोहारी चित्रांकन रचनाकार द्वारा एक रचना में चित्रित किया गया है। राम और सीता के विवाह की एक रचना यहाँ प्रस्तुत है -

ऊबें जनकराज के द्वारे, राम मौर सिरधारें।
कंचन कलस धरें सिर ठाँड़ी, मिथलापुर की नारें।
नभ से देव सुमन के गजरा, बना-बना के डारें।
टीका होत तिरलोक धनी के, बिरमा वेद उचारें।
ईसुर कान दये ना जाबें, आगौनी के मारें।

रामजन्म से अभी तक सारी खुशियों के प्रसंगों के बाद राजतिलक की तैयारी चलते चलते विधि का विधान ऐसी करबट लेता है कि राम को सर्वाधिक प्यार दुलार करने वाली माता कैकेयी उनके चौदह वर्षीय वनवास को अंजाम

देती है। लोक में माता कैकेयी की अभूतपूर्व छीछालेदर होती है। रानी की मतिहीनता को सभी कोसते हैं। इस संबंध में ईसुरी स्वयं कहते हैं -

प्रभु को कैकई न बन दीना, ऐंसी अपजस कीना।
अपने सुत को राज मांग लयो, ऐसी मति की हीना।
रामचंद बनवासै निकरे, संग लक्ष्मन को लीना।
सुन बनगमन जानकी ईसुर, चरनन में चित चीना।

प्रभुराम के वनगमन से अयोध्या अनाथ हो जाती है। इसका सारा दोषारोपन माता कैकयी पर जनता द्वारा थोपा गया है, क्योंकि सुमित्रा और कौशल्या के एकमात्र सहारे राम और लक्ष्मन को सीता सहित वनवास की विपत्तियाँ भोगने के लिए इस कठिनतम कार्य को अंजाम दिया है। इस आशय की एक फाग देखिये -

बनखौं पठै दये दोई भइया, काये कैकई मइया।
हती सुमित्रा कौशिल्या कें, इकई एक डरइया।
संगै जनक सुता पठवा दई, बन में दैन तसइया।
ईसुर परी अवध में कारी, को है पार लगइया।।

ननिहाल से आकर भरत को अयोध्या में प्रवेश करते ही प्रभु के वनवास का वृतान्त मालूम होता है। अयोध्या की पूर्व और बाद की सुखद और दुखद स्थिति के लिए जिम्मेदार भरत स्वयं अपनी माता को क्या-क्या कहते हैं। इसे ईसुरी ने एक रचना के माध्यम से इस प्रकार प्रकट किया है -

पूछें भरत बता दो माई, काँ गये लक्षमन भाई।
जा नगरी रमनीक लगत ती, अबना मोय सुहाई।
जा जलनी जननी भई बैरन, कपटन कुटिल कहाई।
काँ गये अवध नरेश ईसुरी, अवध में सूनी छाई।।

वनवास के दौरान सीता सोने के मायावी मृग को देखकर उसकी चर्म के लिए पति से याचना करती है। मृग की मायावी हरकत को भगवान भी समझ नहीं पाते और धनुष-बाण संधान कर मृग के पीछे चल पड़ते हैं। मृग की मायावी हरकतों का वर्णन लोककवि ईसुरी अपनी चौकड़िया फाग में किस प्रकार करते हैं, यहाँ देखिए -

माया रूप मिरग नई जानौं, राम धनुस संधानों।
ज्यों ज्यों बढ़त जात आँगे हाँ, त्यों त्यों होत रवानों।
कऊँ कऊँ छिपत अलोप होत है, कऊँ को जात दिखानौं।
ईसुर दूर गओ जब जानों, देखत देय बिलानौं।।

भगवान लौटकर जब अपनी कुटिया के पास आते हैं, तब सब कुछ हो चुका होता है जिसकी किसी ने कभी परिकल्पना नहीं की होगी। राम के भाग्य की इस विडम्बना, व्यग्रता तथा बेचैनी का बड़ा ही सम्वेदनात्मक वर्णन लोककवि ने लोक शैली में चित्रित किया है। सब कुछ जानने वाले भगवान राम साधारण लौकिक मनुष्य की भाँति कुछ न जानने वाले कितने दुखी हैं। ईसुरी की एक चौकड़िया में देखते ही बनता है -

जीवन प्रान जानकी मेरें, बेई झाँखन हम हेरें।
हिरा गई बनखंड विपत में, ज्वाब ना देबें टेरें।
बिछरन पर गई बेग सिया की, परमेसुर खौं घेरें।
भल आई की बात ईसुरी, विधना कबै निबेरें।

इधर लंका में मंदोदरी को जैसे ही छलपूर्वक सीताहरण का पता चलता है, वैसे ही वह अपने पति के इस कुकृत्य को धिक्कारती है। क्योंकि इतना तो मंदोदरी भी जानती है कि सीता कोई साधारण मानवीय स्त्री नहीं है, बल्कि लंका का भावी विनास सीताहरण से ही संभावित है। इसीलिए वह अपने पति को समझाते हुए खुलकर स्वयं कहती है -

तुमने मोरी कईना मानीं, सीता लाये बिरानीं।
जिनकी जनक सुता मँहरानी, वे हरि अन्तरध्यानीं।
कनक कंगूर धूर में मिल हैं, लंका की रजधानीं।
लैकें मिलौ सिखावत जेऊ, मंदोदरी सयानीं।
ईसुर उपत हात हरयानी, लाये मौत निसानीं।

यहाँ मंदोदरी द्वारा रावण को नीतिपूर्वक प्रार्थना करकर समझाना, वहाँ अशोक वाटिका में पवनपुत्र हनुमान द्वारा सीता का पता लगाना, बड़े-बड़े बलशाली राक्षसों को मारना-पीटना, बाग उजाड़ना आदि प्रसंगों को ईसुरी ने अपनी एक रचना में सफलता पूर्वक किस प्रकार चित्रित किया है। यहाँ

उदाहरणीय है -

जितने हते बाग रखवारे, एक बंदर ने मारे।
जो फल पाये भाये सो खाये, कतर-कतर कें डारे।
बाराबाट बाग कर डारो, बिरछा बिरछ उखारे।
जो मारे सें बचे आयकें, नृप दरबार पुकारे।
ईसुर हुकम पाय दसकंदर, अछै कुमार सिधारे।।

अपने राज की इस तरह बरबादी सुनकर मंदोदरी अभी भी रावण को समझाती है कि आपने सीताहरण कर बहुत बड़ी गलती की है। आप ईश्वर की ताकत को नहीं जानते हैं। जानबूझ कर अपने सारे लंकावासियों की मौत के कारण को छलपूर्वक लंका में लाये हैं। इसलिए भूल सुधार कर मेरी बात मानिये और उस दिन की खबर करिये जिस दिन आप स्वयं सीताहरण कर लाये थे -

चोरी लाये जानकी, खबर करै ऊ दिन की।
ढीलो रथ लंका दरबाजें, धुजा रोप लई रनकी।
तुमहौ उनको कूरा करकट, बे है झार अगन की।
कौनऊँ दिना तुमाई फिरहै, सबरी लंका भिनकी।
ईसुर कऊँ लैन नई जानें, मौत सीस पै ठिनकी।।

आगे वह और भी कहती है कि उनके एक लंगूर ने पूरी लंका में तहसनहस का ताण्डव मचा रखा है। इस कंगूरे से उस कंगूरे पर उचक-कूदकर बड़े-बड़े जोधाओं को धूरा चटा दई और अभी भी न जाने और क्या-क्या होने वाला है। इसीलिए आप मेरी बात मानकर जो मैं कहती हूँ वही कीजिये, नहीं तो आप स्वयं देख रहे हैं कि -

लंकै आओ एक लँगूरा, उचकत कोट कँगूरा।
देखत रये सुभट सब ठांडे, तिनै लगा दई धूरा।
जर बिध्वंस भई रजधानी, जितने जुरत जहूरा।
ईसुर बारिद बांद करो उन, बालि पराक्रम पूरा।।

इतना ही नहीं लंका को लपटों की आगोश में, लपटों के साथ लंका को ईधन की तरह जलते हुए देखकर, मंदोदरी रावण से कहती है कि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, गलती को सुधारा जा सकता है और भूल सुधारने का अभी मौका है, क्योंकि शुरुवात में ही उनके एक साधारण बंदर ने कितना उत्पात मचा रखा है। जिसकी हुँकारें सुन-सुन कर आपके चेहरे सूखने लगे हैं, क्योंकि मैं स्वयं देख और सुन रही हूँ -

सुनकें हनुमान की हूँ कैं, राउन के मौं सूकैं।
उचट लंगूर कँगूरन चढ़ गये, चरन सिया के छूकैं।
कोटन अगन पवन बरयानें, लंकै उठै भभूकैं।
ईसुर कात होई जानैं जौ, राज विभीसन जूकैं।।

लंका में इतना अनर्थ होने के बाद भी मंदोदरी अपने पति को समझाती है कि प्राणनाथ इन सारे अनर्थों का मूल कारण केवल सीताहरण ही है। इसीलिए आप अपने पराक्रम को भूल कर, अहम का परित्याग कर, सीतापति से समझौता कर, उनकी सीता उन्हें वापस कर, सबको विनास के मुख में जाने से बचाने में ही सार है। अतः सीताहरण जैसे गलत कार्य को अपनी प्रतिष्ठा से मत जोड़िये। मंदोदरी के अनुसार ईसुरी कहते हैं -

प्रीतम परनारी कौ हरबौ, तुम राउन न गरबौ।
तुमने चाहो जगत मात को, पापन नियत नजरबौ।
उस नारी संग नारायन है, सागर पार उतरबौ।
मईं देखौ भइया कुलघाती, तकैं मारबौ मरबौ।
सब सुन आये खुदई ईसुरी, राज विभीसन करबौ।

भाई विभीषण और पत्नि मंदोदरी के लाख समझाने के बाद भी रावण अपनी घमंडीनीति पर अटल है। वह अपने जीते जी सीता और लंका को अपने अधीन बनाये रखने का अहम अभी भी पाले हुए है। अपने जोधाओं के पराक्रमी बल का बखान कर-कर अभी भी वह यही कह रहा है -

लंका मोरे जियत न पाहैं, लरबै रघुबर आहैं।
मोरे बड़े-बड़े सब जोधा, मार मार कें खाहैं।
मेघनाद सौ बेटा मौरौ, कुंभकरन भ्राता हैं।
ईसुर जुद्धभूमि में तुरतई, उनको मार भगाहैं।।

कोई समझौता न हो पाने से अब दोनों दलों में युद्ध की पूरी तैयारी हो चुकी है। युद्ध के बाजे बजने लगे हैं।

योधाओं के साथ रावण महाराज भी गर्जना कर-कर संग्राम के लिए सजने लगे हैं। अपनी-अपनी युद्ध की नीतियां तय होने लगीं हैं। सभी ने अपने-अपने मूड़-मिजाज तरोताजे कर लिए हैं। इस प्रसंग पर एक चौकड़िया के माध्यम से ईसुरी कहते हैं -

बाजन लगे जुझारु बाजे, राउन रन को साजे।
अपने जोधन को समझा रइये, संग में खाये खाजे।
नौन हरामी होऊ ना करियौ, काल सीस पै गाजे।
भूप भुवन से गमनें ईसुर, मिलके सबई गराजे।।

दोनों दलों में भयंकर युद्ध होता है। भाई लक्ष्मण पर मेघनाद शक्तिवाण मार कर उन्हें मूर्छित कर धरासायी कर देता है। रावणदल में खुशियों का और रामादल में शोक का माहौल दिखाई देता है। भगवान राम लक्ष्मण के मूर्छित होने पर बिलख-बिलख कर विलाप करते हैं। ईसुरी की यह चौकड़िया यहां प्रस्तुत है -

रोबें लछमन को रघुराई, बिपत कटाउन भाई।
मेघनाद ने शक्ति हन दई, तन में गई समाई।
भये आसकत मूरछा छाई, लोथ धरन में पाई।
सब कोऊ कै है नारी पाछें, भइया बसत गमाई।
ईसुर लौट अजुध्यै जैबी, करबी कौन बड़ाई।।

ईसुरी ने लंकासमर पर अनेक फागों की रचना की है। लक्ष्मण के मूर्छित होना राम को सर्वाधिक व्यथित करने वाला है। वे कहते हैं कि लक्ष्मण के बारे में पूछे जाने पर मैं लोगों को क्या जवाव दूँगा। एक अन्य फाग में प्रभुराम की मनोव्यथा विचारणीय है-

रौवें बिलख बिलख रघुराई, बोलौ लक्ष्मन भाई।
सुख दैबे संगै पठवा दये, हरस सुमित्रा माई।
मेरे हेत बरस चउदा संग, बिपत विपन मजयाई।
ईसुर रिपु कौ बैद बता गओ, एक अपाँच दबाई।।

बैद सुखैन के बताये अनुसार हनुमान जी के अथक प्रयास से लक्ष्मण सही हो जाते हैं। और युद्ध में वे मेघनाद का काम तमाम कर देते हैं। सुलोचना को मेघनाद के बध की खबर मिलते ही वह व्यथित होकर रावण की राजधानी छोड़कर रामादल में जाने की तैयारी कर, पालकी में बैठकर चली जाती है। ईसुरी की एक फाग इस संवंध में क्या कहती है, देखिए -

सिर खौं चली सुलोचन रानी, तज राउन रजधानी।
जैसे बिना जीव को देहिया, डरी नहीं बिन पानी।
जैसे बिना पुरुष की नारी, नाहक सब जिंदगानी।
रामा दल में पाँच ईसुरी, पूरन कर दई बानी।।

वैदिक संस्कृति में सतीप्रथा सतीत्व की रक्षा करने वाला धर्म है। मेघनाद बध के बाद सुलोचना सती का प्रसंग विश्व विख्यात है। ईसुरी ने सती प्रथा पर अनेक चौपड़िया फागें रची हैं। सुलोचना सती की एक फाग जनमानस में आज भी सर्वत्र सुनने को मिलती है, ईसुरी की पूरी फाग इस प्रकार है-

सत्ती भई सुलोचना रानी, मेघनाद संग स्यानी।
कटी भुजा ने कलम पकर कें, कई कुरखेत कहानी।
सिर दओ सौंप प्रीत अंतस की, पारब्रह्म पहचानी।
इन्द्रजीत संग जरी ईसुरी, राउन की रजधानी।।

लंका में राक्षसराज रावण के सभी भाई बन्धुओं का अंत हो जाने के बाद अंत में लंकेश स्वयं संग्राम की बागडोर सम्हालते हैं। दोनों दलों में जमकर युद्ध होता है, ग्रामीण लोक में भी इस संग्राम के संबंध में अनेक लोकगाथाएं और लोककथाएं कही जाती हैं। लंका समर की ईसुरी रचित एक फाग यहां प्रस्तुत है -

राउन बीस भुजा दस सिरके, डीलडौल महि गिरके।
समर चले सर-सर सर छूटे, सर दिकपालन खिरके।
बाजे बजे अनेकन सुरके, लंकै अमर असुर के।
गरजें दै दै ताल ईसुरी, दल दानव रघुवर के।।

रावण की लंका में सबका अंत हो गया। शिवभक्त रावण ने कभी भूल कर भी राम शब्द का उच्चारण नहीं किया। वह बहुत बड़ा घमंडी था। सभी लोकों में उसकी तूती बोलती थी। पराक्रमी योद्धा था। उसके इसारे पर कंकड़

नाचते थे। लेकिन उसका भी अंत हुआ ईसुरी की एक फाग और पढ़िये -

राउन 'राम' ना मौं से बाँचे, अंभानी ते साँचे।
जिनके जियत जिमीं के ऊपर, नजरन कंकरा नाँचे।
जितै राम कौ जोग जुरत तो, ते आखर नई बांचे।
सूरबीर ने जगत पति सें, मुफत ईर्खा कांचे।
ईसुर और देव नईं ध्याये, सेवा कौं सिब साँचे।।

लंकासमर में भगवान की विजय होने से लोक-लोकों में उनकी जय-जयकार होने लगी। विभीषण को उनकी शरणागति का अमरफल प्राप्त हुआ है। वहीं लंका का उत्तराधिकारी स्वयं भगवान ने राजतिलक कर बना दिया। लोककवि ईसुरी प्रभु की इस प्रभुता को स्वयं इस प्रकार व्यक्त करते हैं -

जिनसे लंक बिभीसन पाई, धन्य धन्य रघुराई।
सोने खुरी फुरी स्वामी वन, बिधि दई बनी बनाई।
रतनन जड़ी मड़ी कंचन की, सेवा कौं सिबकाई।
भजलौ राम नाम को ईसुर, जो चाहौ प्रभुताई।।

ईसुरी अपनी एक फाग में कहते हैं कि अगर भगवान राम वन हो नहीं जाते, मुनियों की रक्षा नहीं करते, राक्षसों का विनास नहीं करते, तो संसार में देवरुप में उनकी इतनी प्रतिष्ठा नहीं होती। हनुमान जी को इतना महत्व प्राप्त नहीं होता, रामराज्य की परिकल्पना का जन्म ही नहीं होता। पारलौकिक विभुतियों को लौकिक कष्ट भोगने की शक्ति जनमानस को भगवान के इसी लौकिक चरित्र से प्राप्त होती है। रचनाकार की एक रचना यहां उदाहरणीय लगती है -

रघुवर जो बन को ना जाते, गुनी कौन गुन गाते।
मरते नहीं असुर लंका के, सिये ना लंक पठाते।
हनुमान से जोधा जग में, कैसे बड़े कहाते।
ईसुर सन्त रिसी मुनि जन सब, कैसे कें सुख पाते।

संसार में जो व्यक्ति भगवान राम के गुणों को गाकर उनकी भक्ति करता है, वही व्यक्ति गुणी होकर गुणवान कहलाता है। उसी को संसार के सारे सुखों के बाद अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है। जन्म जन्मान्तर के बंधनों से मुक्ति मिलती है। लेकिन क्यों और कैसे? ईसुरी की वक्रोतिपरक एक फाग में इसका अन्वेषण किया जा सकता है -

जो कोऊ राम नाम गुन गावै, सोइ गुनवान कहावै।
दस और चार भुअन चउदा में, आठ कौ भाग लगावै।
बाँकी सेस बचे धन राखै, तामें ध्यान लगावै।
ईसुर ऐसी जुगत करौ कै, सेस सुन्न आ जावै।

आज से ढाई तीन दसक पूर्व 'बुन्देली फाग काव्य का अनुशीलन' विषयक शोध प्रबंध की सामग्री हेतु ग्रामीण क्षेत्रों की शोधयात्रा के दौरान लोकगायकों से जो फाग रचनायें संकलितं हो सकीं, उन्हीं में से कुछ प्रमुख फागों की उपर्युक्त प्रस्तुति के आधार पर हम कह सकते हैं कि लोक कवि ईसुरी केवल श्रृंगारी ही नहीं, बल्कि वे सच्चे अर्थों में उच्चकोटि के रामभक्त भी थे। अभी तक अन्वेषकों ने ईसुरी के भक्तिपक्ष की ओर बिल्कुल ध्यान ही नहीं दिया है। अतः ईसुरी की रचनाधर्मिता का नये सिरे से पुर्नमूल्यांकन होना चाहिए। मेरे अनुसार तो ईसुरी की रामचरित विषयक फागों का मुख्य निष्कर्ष यही निकलता है। उनकी फागों से लोकमानस को जो प्रेरणा मिलती है, उसका सार संदेश भी यही है -

रामकथा हरती बिथा, करती बेड़ा पार।
सुनियौ गुनियौ गाइयौ, रामकथा सुखसार।

33/208, रेडियो कालोनी के सामने,
छतरपुर (म.प्र.)

बुन्देलखण्ड में कलचुरी कालीन कला का अमर स्तम्भ नोहलेश्वर शिव मन्दिर नोहटा

रामप्रकाश गुप्त 'साकेत'

बुन्देलखण्ड में अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों का शासन रहा है। इनमें कलचुरि एक प्रमुख राजवंश था, इस राजवंश में अनेक प्रतापी नरेश हुए जिनका इतिहास में गौरवपूर्ण उल्लेख है। कलचुरि राजवंश के प्रतापी शासक युवराजदेव (915-945 ई.) ने दमोह जिले के नोहटा में 'नोहलेश्वर शिव मन्दिर' का निर्माण कराया था। यह मन्दिर आज भी पूर्ण सुरक्षित दशा में विद्यमान है और कलचुरि कालीन वास्तुकला के अमर स्तम्भ के रूप में पर्यटकों एवं शोधार्थियों को निरन्तर आकर्षित कर रहा है।

नोहटा मध्यप्रदेश शासन के दमोह जिले में 23°40' उत्तरी अक्षांश एवं 79°30' पूर्वी देशान्तर पर दमोह-जबलपुर मार्ग पर दमोह से दक्षिण पूर्व में 21 कि.मी. दूर गुरैया और व्यारवा नदियों के संगम पर स्थित है। नोहटा पुरातात्विक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध स्थल है, यहाँ पर कलचुरि कालीन नोहलेश्वर शिव मन्दिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुरातात्विक धरोहर है। नोहलेश्वर शिव मन्दिर का निर्माण कलचुरि राजवंश के प्रतापी नरेश युवराज देव (प्रथम) ने अपनी प्रिय पत्नी नोहला देवी के आग्रह पर कराया था। युवराजदेव और नोहला देवी दोनों ही शिव के परम भक्त थे उन्होंने इस मंदिर से संलग्न मठ का अधिष्ठाता ईश्वरशिव नामक शैव आचार्य जो कि मत्त मयूर शाखा के थे को बुलवाकर बनाया था। नोहला देवी के नाम पर यह मन्दिर नोहलेश्वर और स्थल नोहटा कहा जाने लगा।

नोहलेश्वर शिव मन्दिर कलचुरि कालीन कला शैली की अप्रतिम कृति है। मन्दिर एक ऊँची जगती पर पंचरथ सहित शिखर शैली का है। मन्दिर में सोपान, प्रवेश द्वार, अर्ध मण्डप, मण्डप, महामण्डप, अन्तराल, गर्भगृह का समावेश मिलता है। मंदिर के बाह्य तथा सम्मुख भाग तथा आन्तरिक प्रवेश द्वारों में गंगा-यमुना सहित अलंकरण तथा देवी-देवताओं का अंकन है। द्वार शीर्ष के मध्य में विविध आयुधों सहित नटराज शिव प्रदर्शित हैं। लता-वल्लरी, पुष्प, पतांकन, मंगलघट, कीर्तिमुख, भारवाहक, नवग्रह सप्तमातृकायें, त्रिदेव, सरस्वती, गन्धर्व युगल आदि का अंकन है। मन्दिर की आन्तरिक छतें सुविकसति कमल पुष्पों से सुसज्जित हैं तथा स्तम्भों पर लता-वल्लरियाँ और छुद्र घंटिकायें लटकती दिखाई देती हैं। मन्दिर के गर्भगृह में जलहरी के मध्य शिवलिंग स्थापित है। मन्दिर के बाहरी और भीतरी भागों में विविध देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उकेरी गयी हैं, इनमें ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, नटराज, शिव, सरस्वती, पार्वती, कंकाली, उमा-महेश्वर प्रमुख हैं। मन्दिर में मनोहारी भाव-भंगिमाओं सहित सुर सुन्दरियों , परिचारिकाओं आदि को आलंकारिक विधाओं सहित रूपायित किया गया है। मन्दिर में कलात्मक प्रस्तर खण्ड, चैत्य गवाक्ष, आमलक तथा शिखर एवं लघु शिखरों का रोचक समन्वय है। नोहलेश्वर मन्दिर अपनी वास्तुकला भव्य स्वरूप एवं ललित कलाओं के समन्वय के कारण भारतीय पुरातत्व की धरोहर होने के साथ-साथ बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक निधि भी है। यह मन्दिर केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्मारकों की सूची में भी सम्मिलित है।

नोहटा बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण पर्यटन एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बनाता जा रहा है। नोहटा में प्राचीनकाल से ही दीपावली के अवसर पर त्रि-दिवसीय मेला भरता चला आ रहा है। विगत कुछ वर्षों से यहाँ पर मन्दिर प्रांगण में फरवरी माह में त्रि-दिवसीय नोहटा महोत्सव का आयोजन म.प्र. संस्कृति विभाग द्वारा वृहद स्तर पर किया जा रहा है। वस्तुतः नोहटा बुन्देलखण्ड में कलचुरिकालीन कला का अमर स्तम्भ है।

संपादक गहोई समाचार
विद्यानगर कालोनी,
चिरगाँव-झाँसी (उ.प्र.)
मोबा. 09936324305

बुंदेलखंड के स्थान - नाम भी बोलते हैं ...

डॉ. कामिनी
पी.एच.डी., डी.लिट्

पाणिनी ने अपनी अष्टाध्यायी में मध्य एशिया से लेकर कलिंग और सिंध से लेकर आसाम तक के स्थान नामों को सम्मिलित किया जाता है। उनकी स्थान-नाम संबंधी शब्द-संपदा में देश, पर्वत, समुद्र, वन, नदी, प्रदेश, जनपद नगर-ग्राम के नाम हैं। जिस शब्द संपदा से स्थानों का नामकरण किया जाता है उस शब्द-संपदा को डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया भाषा की जीवंत शव्दावली मानते हैं। डॉ. सरजूप्रसाद अग्रवाल ने 'अवध के स्थान - नाम' डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा ने 'व्रज के स्थान-नाम' और डॉ. विनय कुमार पाठक ने 'छत्तीसगढ़ के स्थान-नामों' के महत्व को विश्लेपित किया है। विदेशों में स्थान-नाम विश्लेपण की समृद्ध परंपरा है, इसी परंपरा को भारत में वंगाल, असम, गुजरात के स्थान-नामों का विश्लेषण करके गति दी गई और हिन्दी भाषी क्षेत्र में अवध, व्रज, छत्तीसगढ़ के साथ बुंदेलखंड के स्थान-नामों की रूप-रचना, ध्वनि संघटन, अर्थ विचार, नामकरण के आधार, व्यहत शव्दावली के साथ वोली-भूगोल के आधार पर वितरण पर विचार किया गया।

बुंदेलखंड अपनी भूमि दशा में विशिष्ट है यहां का सामाजिक गठन विविधतापूर्ण है। इतिहास संघर्षों से जूझता रहा है और इन सब स्थितियों ने इस भू-भाग की संस्कृति को वहुवर्णी बनाया है। रूप रचना की दृष्टि से 'छतरपुर' द्विपदीय स्थान-नाम है, जिसका पूर्वपद 'छतर' इस भू-भाग वाले लोकप्रिय शासक छत्रसाल का स्मरण कराता है। इस तरह बुंदेलखंड के स्थान-नाम अपनी रूप-रचना में इतिहास, भूगोल, समाज, धर्म के साथ संस्कृति को समेटे हुये हैं। पूर्व पाषाणकाल से लेकर वर्तमान तक के इतिहास संबंधी संदर्भों को उद्घाटित करने वाले स्थान-नाम बुंदेलखंड में हैं। भीमबैठका, पवायाँ, लिखीछात्र, चित्रकूट, गुजर्रा, एरन, मढ़ण्ड, साँची, त्रिपुरी, खजुराहो, अहीरवाड़ा, खेगन, दुधई, गुढ़ासती जैसे स्थान-नामों में रामायण-महाभारत, मौर्य, शुंग, शक-हूण, सातवाहन, नाग, गुप्त, वर्धन, हैहय-कलचुरि, गौड़, चंदेल, कच्छपघात, परमारकालों के संदर्भ समावेशित हैं। अफगानों के आक्रमण ने स्थान-नामों को प्रभावित किया। तोमर, मुगल, खँगार, बुँदेला, मराठा, ब्रिटिश सत्ताओं ने भी स्थानों के नामों में परिवर्तन किये और भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी स्थान-नाम प्रभावित हुए। सत्ता परिवर्तन से स्थानों के नामों में भी परिवर्तन होता है और ऐसे परिवर्तन इतिहास संबंधी सूचनाओं से सदियों तक अपने साथ समेटे रहते हैं।

बुंदेलखंड के स्थान-नाम, धर्म, इतिहास, समाज, भौगोलिक दशा और संस्कृति पर आधारित है। समाज पर धर्म का प्रभाव सदियों पुराना है। परमात्मा, अवतार, देवता, देवियाँ, परिकर, मत-मतान्तर, सम्प्रदाय, पंथ, धार्मिक व्यक्तित्व, ग्राम्य देवता, स्थानों के नामकरण का आधार प्राचीन काल से रहे हैं। धर्म संबंधी ये समस्त आधार आस्था को बल प्रदान करते हैं। ईसुरकुंड और खुदागंज में यही आस्था है। मोटंगनेस की गली, छटयाई दाई, ईसानगर, पैगम्बरपुर, रसूलिया, सदनशाह की मजार, पिपरिया बन्दी छोर, जोगनी टीला, कमालखेड़ा, सिद्ध की रैयाँ, जुगयाना, हरदौली, पठानवावा, जिंदपीर, घटौरिया, दानेवावा, जौहरपुर, वेदमऊ स्थान-नामों के साथ धार्मिक आस्थायें लिपटी हैं। ईसा, पैगम्बर, रसूल, सदनसाह, सिद्ध, पीर, गनेस, सब विना किसी विभेद के स्थान-नामों के साथ समावेशित हैं। स्थान-नामों में विभेद पैदा करके उनकी शव्दावली में जातियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर के वर्तमान में भेदभाव किया जा रहा है, जो

सामाजिक समरसता के लिए 'जहर' का काम कर रहा है। शब्द तो ब्रह्म का रूप था, अक्षर का सम्मिलन था, उसी शब्द को अब हिन्दू और मुसलमान में वर्गीकृत करने का जाना-बूझा प्रयास किया जा रहा है।

'तेन निर्वृतम' के अनुसार पाणिनि स्थान, ग्राम अथवा नगर को बसाने वाले को भी नामकरण का सबल आधार मानते हैं। इस स्थिति में विजेता का सुयश, वीर-पूजा और महापुरुषों के प्रति श्रद्धा भाव सम्मिलित रहता है। बुंदेलखंड के स्थान-नाम इतिहास की टूटी कड़ियों को जोड़ने के लिए भी सामग्री देते हैं। इस भू-भाग का संबंध कुरू, मय, कठ, जर, मर, भर, यक्ष, मग, मेव और गौंडों से रहा है। इसी से मैथाना (ग्वालियर), जखौरा (ललितपुर), करथरा (दतिया), मगरौन (दमोह), मुरावली (भिंड), जरोद (जबलपुर), कठेली (सागर), भरखेड़ी (विदिशा), भवई (बाँदा), गौंड़ी (सिवनी) स्थान-नाम इस तथ्य को सत्यापित करते हैं। तँवरघाट, भदावर, कछवायघार, जटवायै, मरैठी, बुंदेलाकोट, तुर्कीखाया के आधार क्रमशः तोमर, भदौरिया, कछवाहा, जाट, मराठा, बुंदेली और तुर्क हैं। इमिलिया भोज, सिंकदरपुर, वेलाताल, वावरखेड़ा, अकबरपुर, बृसंगपुरा, हरदौल तिगड्डा, जहाँगीर कटरा, चंपतपुर, छत्रसाल टौरिया, शाहजहाँनाबाद, माधौनगर, काशीनरेश की बगिया से शासकों के नामों को अलग नहीं किया जा सकता।

राजनैतिक आधार प्राचीन काल से स्थान-नामों के साथ जुड़े हैं। रानीपुरा, शहजादपुरा, बसीठ, दीवान कौ बाग, तात्याटोपेनगर, मंगलपांडे पार्क, अंबेडकर नगर, गांधी ग्राम, तिलक वार्ड, विनोवा नगर में राजनैतिक चेतना क्रमशः आगे बढ़ती रही है। यह चेतना आरंभ में राजा के साथ रानी, राजकुमार, दीवान, फौजदार, किलेदार को आधार बनाती थी, बाद में इसी चेतना का विस्तार राष्ट्रप्रेम के रूप में हुआ। स्थान-नामों के नामकरण में जहाँ गाँधी, नेहरू को आधार बनाया गया वहीं तिलक चन्द्रशेखर और भगत सिंह को भी अजर-अमर बनाने की कामना रही है।

तीन लोक, सात द्वीप, नौखंड की कल्पना बुंदेल खंड के लोक जीवन में व्याप्त है। यह कल्पना भूगोल के प्रति लालसा उत्पन्न करने वाली है। छतरपुर जिले का स्थान-नाम बसुधा, नरसिंहपुर जिले का संसारखेड़ा, हमीरपुर का जहान, जबलपुर का सिंगलदीप और होशंगाबाद का जम्बूदीप इसी भौगोलिक चेतना के परिणाम हैं। बुंदेलखंड में 180 से अधिक वनस्पतियाँ स्थानों के नामकरण में सम्मिलित हैं। अंडौली, अरुसी, अकोला, आमखो, इमिलिया, ऊमरी, आँवरी, चिरौली, छरैंटा, पिपरिया, बिजौरा, सेंमरी स्थान-नाम वनस्पतियों से संबंधित हैं। करहिया, गधाई, बकाई, भैंसादेही, चितगुवाँ, नाहरखेड़ा, हतनापुर और हिन्नाई में स्थानों के नाम पशुओं की ओर संकेत करते हैं। मटामर घुगवासी, कौआडोंगरी, चीलखेड़ा, सुआडोंगरी, तीतरा-खलीलपुर में आधार पक्षी हैं। बरुआसागर, सुधासागर, उमरतला, झिलमिली, जामनी, पारीछा, बिघनयाऊ नरिया, पथरया कुआ, भदइयाँ कुंड, कुम्हरगढ़ा में जलाशय स्थान-नामों के साथ जुड़े हैं। टौरिया, टोकरी, घटिया, करार, टेकरी, कछार, स्थान-नाम भूमि की दशाओं को दर्शाने वाले हैं।

समाज में जातियों, गोत्र, पद, परिवार, घर-गृहस्थी, व्यक्ति, व्यवसाय सम्मिलित हैं। बुंदेलखंड के स्थान-नामों में इन सभी को आधार बनाया गया है और सदियों से ये सभी आधार इस भू-भाग के सामाजिक संदर्भों को सुरक्षित रखे हुए हैं। मुड़िया, गुसांई, गड़रिया खेड़ा, कछयाना, कायस्थपुरा, धोबीपुरा, लिधौरा, जैसे हजारों स्थान-नाम बुंदेलखंड में जातियों की ओर संकेत करने वाले हैं। खजांचीपुरा, महाजनीटोला, हाजीपुरा, पटैलढाना, सूबापायगा, परधानढाना में पद और उपाधियाँ समावेशित हैं। मामा का बाजार, नानीखेड़ा में परिवार बोध की ओर संकेत है। हुलुआपुरा, महेरी, कुरकुटा जैसे स्थान-नाम खान-पान को दर्शाते हैं। व्यक्ति को आधार बनाकर स्थानों के नाम रखने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। मदारी कौ ताल (दतिया), खूबी दादा कौ मंदिर (शिवपुरी), जमीन प्रताप सिंह (पन्ना),

शकीला बानो का मुहल्ला (भोपाल), मस्तराम की टेकरी (भिण्ड) में व्यक्तियों को समावेशित किया गया है। व्यक्तियों को आधार बनाकर स्थानों के नाम रखने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है तथा यह परंपरा सर्वाधिक टीकमगढ़ और भिंड जिलों में है।

बुंदेलखंड के लोक जीवन पर सांस्कृतिक समता का प्रभाव सबसे अधिक है। इस भू-भाग की संस्कृति समन्वय पर आधारित रही है। इसी से इस भू-भाग में धार्मिक उन्माद कभी भी शिखर तक नहीं पहुंचा। स्थान-नामों में सांस्कृतिक समता की यह भावना सर्वत्र देखी जा सकती है। सहूरपुर (बाँदा) और बिनती (दमोह) जैसे स्थान-नाम शिष्टाचार को बल देते हैं। दानीपुरा धनाश्री, ईदगाह कुराना, खेजराइज्जत, दातागंज में जिन भावनाओं को बल प्रदान किया गया है, वे भावनायें संस्कृति को उजागर करती हैं।

बुंदेलखंड के स्थान वाची नाम एकपदीय, द्विपदीय, बहुपदीय और वाक्यांशमूलक है। गुढ़ा (ललितपुर), ककरुआ बरामद गढ़ी और राजाराम रंगवालों की गली इसके उदाहरण हैं। उदगुवाँ और कुदौना जैसे स्थान-नामों में 18 उपसर्गों का योग है। पिपरिया और कुम्हरौल जैसे स्थान नामों में 80 प्रत्ययों का योग है। बाँदा जिले में प्रत्ययों का व्यवहार सर्वाधिक हुआ है? द्विपदीय स्थान-नामों में परपदों का महत्व निर्विवाद है। इस भू-भाग में सर्वाधिक व्यहत परपद 'पुर' और उसके रूपान्तर उपलब्ध हैं। गली, मुहल्ला, दरिया, टोला, ढाना, पुरवा, टपरा अन्य परपद हैं। समान अथवा एक जैसे नामों वाले स्थानों में विभेद करने वाले पद भी स्थान नामों में महत्वपूर्ण हैं।

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिन्दी

शासकीय गोविंद महाविद्यालय

सेंवढ़ा, जिला दतिया (म.प्र.)
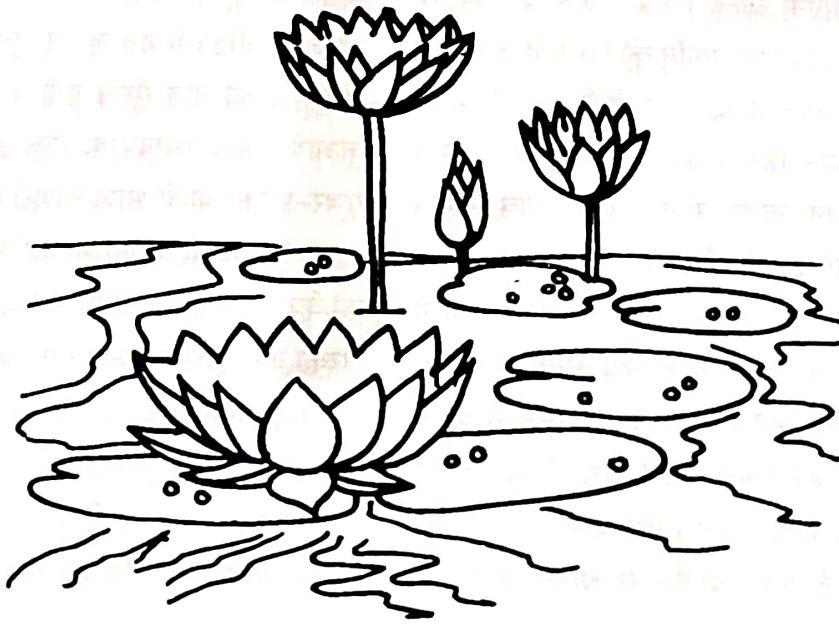
बुंदेली बोली और भाषा कौ इतहास

डॉ. लोकेन्द्र सिंह नागर

भूमका :- अपयँ धरम और करम की पोथियन में पैसें एक आखर ॐ कौ बड़ौ मान है जू। जई एक आखर खों सबसै ऊंचौ मनतुर कओ-गऔ है जू। जई खो अनहद नाद कात है जू। जोग की किरिया में जौ दुड़ी सैं कढ़त है जू। ऐसौ गुनी जनिन कौ मानबौ है जू। केउ गुनी जन जौ कत है के शंकर जू के डमरू सें निकरे हैं आखर और सबद। जे सब गूढ़ गियान की बातें है जू इनैं तो गुनी जनइ जानत है जू फिर अपुन है। पड़े-लिखे आदमी हैं जू। सब जानतइ हौ जू।

हमरकौ और अपुन खों इतनौ तौ मानइ कैं चलने पर है जू के जब ईसुर ने। आज काल पदार्थवाद में पदारथन नै। जब धरती और आगास बनाये। पानू, हवा, आग। कीरा, मकोरा, चौपे, चउआ, पनछी बनाये। सबखो बोली बानी दई। बैसइ आदमी बनाओ हुये तौ बाय सो कौनऊं बोली वानी तो दइयइ हुये। गुनी जनिन के अपने-अपने मते हैं। हम इन सब झिजटन में न पर कैं सादी सी बात जौ कत हैं कै आदमी जौं-जौं पैदा यऔ बाहै में से जो सबद निकरे व सवद से बौ अपनी बात दूसरिन सै के सकौ। उने बाकौ अरथ समजा सकौ और बाके संगिया बैसियइ बोली बोलन लगे जोई लोक-वोली बन गइ वोइ लोकभाषा बन गई जू! उन सवनै जा तरों सै अपनी बोली लिखवौ शुरू करो सौ बो वाकी लिपी वन गई। विकास प्रकृति को नियम है जू सो हम सब विकसित होके आज के जुग में ठाड़े हैं जू। पैलें कुटुम प्रथा हती उनके अपने हिस्सा बांट हते सो क्षेत्र बन गये साव! पहारन, नदियन, नावन, गोत, जात के नाव से क्षेत्र खास पैचाने जान लगे उनकी बौइ चिनार बन गई।

आज के विज्ञान कौ आदमी सूरज के पार यंत्र पौचा रऔ चनदरमा पै घर बनावे की सोच रऔ उपाये में लगौ है धरती तो छोड़ो आगास बांट रऔ है जू! सिनसार में अपुन सब जो मानत हैं कै बेद सबसै पुरानी पोथी है और बाकौ ज्ञान। हमाये इतहास के गुनी जन हमार धरम पोथियन खो इतहास कौ मान नइ दै पा रये या दैन नइं चाउत, कारन जो होवै सो होवे लेकिन पैले जब इतहास नई लिखौ जात तौ-तो जे धरम पोथी बा जमाने कौ इतहासइ तौ हैं। धरम की धरम निकार लो करम की जों जों करम और इतिहास की मांगों उनमें इतहास सो दिखने पर है जू।

अबै छतरपुर में एक बुन्देली सभा हती बामै मालवी बोली के एक गुनीजन बोले कै वेद तो वेद व्यास जू नै लिखे हैं। जब कै हमाये पुरखन से जो बात चली आ रई है जू के वेद अनादि हैं, अनादि काल सै हैं। हमनैं कई के जब सृष्टि के रचइता विरया जी की राजधानी ऐरान ये जलप्रलय भई तो हयग्रीव नाव को आदमी वेद दुका कै भगौ। विष्णु भगवान ने पाउँ में पैर कै बाकी नाव में-चढ़े बाय मारै और वेद छिड़ा कै विरया जू खौं सौपें। जौ घटना जो सिद्ध करत है कैं वेद वा वेशं लिखित में हते जू। वे चुप्प हो गये। विरया जी की राजधानी को नाव ऐरान हतौ बइसे उतैके रैवे बारे आर्य कुआये। आर्य स्थानपरक नाव है पर, जात परक नाव है गूजर-इनकी बोली भाषा गोजरी।

विरया जी के लरका कश्यप या मरीचि। कश्यप जी की कैर पतनियाँ हती उनमें से एक हती कद्रू जी। कद्रू जी के लरका नाग कुआये। कछू नाग विष्णु भगवान की सेवा में रे गये कछू शंकर जू (रुद्र) के संगै हिमवान, या हिमवर्ष या हिंदुस्तान आ गये। हिन्दी साहित्य को इतहास जो कत हके इन नागवंशियों की बोली या भाषा सै निकास है। दो प्रकार की रचनायें मिलत है डिंगल और पिगल। पिगल छन्द शास्त्र

के रचयिता कौ नाव है। पिगल स्वयं नाग थे। अइये बृजभाषा को नाव दओ गऔ है। भौत दिनन नौ शौरसैनी प्राकृत खौ वासै निकरी बृजभाषा खों नाग-भाषा कइ जात रइ है। डिगल जुद्धन की भाषा हती और पिगल प्रेम और लरम कवता की भाषा मानी गई है। जो भाषा अपभ्रंश यें आगै बढ़ी भइभाषा हती। हभाव मानकौ जो है के नाग भाषा सैं तमाम भाषाये बनी। नागभाषा जाय पिंगल कई गई है बोइ गोजरी भाषा हती।

हमाये इतहास के गुनीजन इनइं गूंजरन खो आर्यकत है। स्थान के नाव सै तो लिख रये जात खों छोड़ देते हैं जो भेद-भाव सदियन से हो रऔ है जू।

विरयावर पुष्कर और गायत्री जू को इतहास सबइ जने जानत है। बीच में इतहास कौ अंधेरौ है। अब हम बातैं करत है ईसा कै पैसौं की प्रथम शताब्दी की जामे विम कनफ्यूशियस और कुजुल कनफ्यूशियस हिन्दुस्तान में राजा हो गये। कनिष्क राजा थे। इनकी राजधानी पेशावर में हती। इननै अपइं बिरादरी के सूबेदार हियाँ राख दये ते बे शासन चलाऊत हते। काशी बनारस में बनस्पर नाव को आदमी सूबेदार हतौ -गौत करौ हतो-बइके जात के आदमी बनाफर हते-आज है। जे सब गूजर हैं। पन्ना जिले में हैं। बुन्देलखण्ड वनस्पर के शासन में हतौ। हमाव कैवो जो है के गोजरी भाषा और विन्धाचल की पुरानी भाषा मिलके बिन्देली या बुन्देली भाषा कुआई है जू।

हमाये इतै जौ कइ जात है कै काउ भाषा खो भाषा को रूप मनावे के लाने तीन बातें चायनै परत है :-

1. राजसत्ता 2. पूंजी 3. प्रचार।

जानौ राजसत्ता है तो जो मानके चलौ पुंजी तो हुइये और प्रचार के लाने बाके आदमी और बइ भाषा में लिखा पढ़ी। जे सब बातैं गोजरी भाषा के संगै हती। कश्मीर से कन्या कुमारी नौ गूजरन कौइ राज हतौ। जा हाल में गोजरी भाषा के असर जो कैसे टारौ जा सकत है जू। पूरे देस में गोजरी के सबदंन कौ जार पुरौ है, जू। गोजरी के सबद बाके उपसर्ग और प्रत्यय कऊं न कऊं तो जुरेई है बस सोद करके जरूरत है जू और निसपक्ष विचार करने की।

बुन्देली भाषा की इतहास :- अपुन सबह जन इतइं के रैबइया हैं जू पढ़े लिखे है जू सबइ जानत है जू। अपनौ हुकुम भऔ है सो बाके यान पालन में जो उल्टो सूदो बन रऔ है जू सो लिखै देतइ साब। बड़ौ जगड़ डाल है भाषा कौ इतिहास और उन राजन को जिनके संगे-संगे भाषा फलत-फूलत रई और अपुन खो सजाऊ। रई समारत रई।

महाभारत काल और बुंदेली :- महाभारत काल में महाराज चिदि के नाव पै जा क्षेत्र कौ नाव चेदिगण राज हतौ। उनके लरका हतै शिशुपाल। जे कलचुरी गोत के और गूजर जाति के राजा हते। शिशुपाल-भगवान कृष्ण की फुआ जू के लरका यानी फुफेरे भइया हते। बा काल मेऊ जौइ बोली बोली जात हुये सो बुंदेली भाषा थी उमर पांच हजार बरसै हो गई।

कनिष्क-बनाफर काल और बुंदेली - कनिष्क कौ सूबेदार वनस्पर हतो। कासी में और कासी के संगै बुन्देलखण्ड क्षेत्र सो बइके राजके हतौ। कासी के गैहरवार 3 गूजर हते। वनस्पर के बुंदेली रूप भओ बनाकर। बनस्पर काल से बुंदेली की जीवन यात्रा हो गई दो हजार बरसै।

कासी के गैहरवार और बुंदेली - कासी के गूजर गहावार राजा के लरकन ने बारबी सदी ये विन्ध्याचल क्षेत्र में पांवघरों वारा सो पच्चीस में बुन्देला प्रभार और घंघेरिक की करैरा में बनी। विन्धेला क्षेत्र से बे विन्धेला या बुन्देला कुआये और भाषा कुआन लगी बुन्देली। आकाल खो हो गई आठ से बरसैं।

जगनिक काल और बुन्देली - सन् ग्यारा सौ अठहत्तर जगनिक को जनम जगनेरी गांव में मानो गऔ है। ये जगनिक और सियानन्द राय आल्हा ऊदल में भानेज हतै। क्षत्री हते। गुनीजन जबरइं खो उनै भाट बनाये फिरत है। वे जोधा और कवी खो अलग-अलग देख रये। अरे भइया जू कौ दूर जाने है महाराज छत्रसाल जू भारी जोधा हते कवि सोऊ। समथर

रियासत के गूजर महाराजा विष्णु सिंह भारी जोधा हते और कवि सोऊ है ई एक नवल सिंह जू कायत हो गये उनकी तीस किताबें हैं जे कवि हते और भारी जोधा हते। ढूंढे से और सो केउ मिल जेहे। गुनी जनिन से विनती है के वे अपयें विचार बदलै और अटकल पच्चू न लिखें तो ठीक है। जगनिक ने बुनेली भाषा में आला भी बाउन लड़ाइ लिखीं हैं जो काल खोईं आठ नौ साल बारई है। जगनेरी गाँव से जगनिक कौइ बसाव गाँव है जू। जगनिक और आज तक की बुंदेली भाषा में कम से कम आइ सै तेतीस बरसिन कौ फाँसलो हो गव है जू।

ईसुरी और बुन्देली :- ईसुरी कौ छोटे कौ नाव हरलाल हतौ। इनके मताइ-बाप छोटे-छोड़ कै मर गये ते। जे तीन भइया हते। ईसुरी सबसै छोटे हते। इनके मम्मा जू भूधर नाइक उन्हें अपने ढिंगा लुहरगांव कौनिया जिला छतरपुर में लुआ लियाते ते। वे हैंइ पढ़े लिखे बड़े भये। इनको ब्याव गाँव सीगौन के भोलानाथ। मिसुर जू की बिटिया श्यामकुँवर के संगे हो गव तो। भोलानाथ मिसुर धौर्रा में छोटी-मोटी नाज की दुकान करत ते। ईसुरी अपनी सररार की दुकान पै बैठन लगे। ईसुरी चेतन बुदी और व्योहार कुशल आदमी हते। इनके अच्छे गुनन खो देख को धौर्रा गाँव के जगजीत जू मुसाहिब ने इनै अपनौ कारिन्दा बना लाओ तौ। गाँव धौर्रा पन्नपा की जागीर को गांव हतो। मुसाहिब जू गैहरवार गूजरन की शाखा राठौर गोक्ष के ठाकुर हते। इनईं की बिन्नू का नाव रज्जू राजा या रजाउ हतो। ईसुरी ने इनखो देख-देख के सेकरन फागें लिखी। ईसरौ को जो इक अंग नेव सनेव प्रेम हतो। रजउ की तरप सै कौनउ प्रेम कौ उदाहरन देखबे खों नइ मिलत है जू।

ईसुरी को जनम संवत् 1898 में यानी के सन् 1841 ई. में मऊँ तौं। कविता करने को अन्दाज जो लगत है के उनको बियाव हो गव और वे गांव धौर्रा ये मुसाहिब जू के इतै कारिन्दा हो गये तक कऊँ सरसुती जू करके कण्ठ में विराज मान भउँ। **विरही होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान** सुमित्रा नन्दन जू पन्त की कविता केसोई प्रभाव लगत है। सन् 1841 ई. में जन्मे और कारिन्दा बनवे तक बीस बरसै तो लगइ गई हुये। जातरो से उनने सन् 1861 ई. से कविता या चौकड़िया फागें लिखवौ और गावौ शुरू करौ हुये। इन बिरियन नौ सन् 1857-58 को सुतंत्रा जुद्द समाप्त हो गऔ हुये। जगनिक के आल्हा और ईसुरी के बीच कौ फासलौ कम से कम 683 बरसिन कौ मान कै चलौ। ईसुरी थोरे पढ़े लिखे हते। हमखो धौरी से ईसुरी के एक दो हिसाब के कागद और उनके दसकत के पन्ना मिले हैं। ईसुरी बुनेली बोली खो दुवारा जनम देके बाय भाषा कौ रूप दऔ है और आज जन-जन ये बुंदेली के लानै नेव-सनेव है, बोली जा रई है और जइये मानक भाषा को रूप मानौ जा रऔ है। जौइ राजा भाषा हुये।

अंग्रेजी राज और बुंदेली - अंगरेजन ने मुसलमानन खों अकल से धुन दऔ और औरंगजेब ने उनै धंधौ करबे की आज्ञा दे दई। अंगरेजन धीरे-धीरे बौपार फैला के मुसलमानन को राज खैंच लओ पूरे देश पै राज करन लगे। अंगरेजन ने खूब जी भर कै लूटौ-देश खों 1857-1858 ई. में अपनौ राज बनाये राखवे के लानै भारी उत्पात मचाऔ लाखन हिन्दुस्तानी मारे गये। जा देश कौ जौ चलन बनौ रऔ के जो एक नइँ हो पाव अपुन मुसलमानन के काल या और कोनउं काल खों देख लेव। आपसी फूट और घमन्ड में देश गुलाम होत रऔ। अनैउ जा गणतंत्री राज में देख लो। हमाये देश को नाव एक नइया कैइ है। हमाये देश की एक भाषा नइयाँ जाय अपुन राष्ट्रीय भाषा के सैक बड़ी बिडमना है। सांची कैदो तो हम साम्प्रदायिक है हम बागी है हम गाल बजा रये हैं। हम रोटी सेंक रये हैं। जौ लग रऔ है के हम लीक छोड़ रये है। अपइँ बात पै आउत हैं जू कैं सन् 1793 ई. में विलियम कैरे नैं भारतीय भासन को सर्वेक्षण कराओ हतो। उननैं तेतीस भासन खो भासा मानै। हतौ वामे येक बुन्देली सोउ भाषा के रूप में हती। सन् 1938 ई. सै सन 1843 ई. तक मेजर रावर्ट लीच नै बुन्देली भासा कौ हिन्दी

व्याकरण कराऔ हतो। जाके पाछैं सर जार्ज ए ग्रियर्सन नै देश की तमाम भासन पै सोद पूरक काम कराओ। बायें गोजरी भाषा मानी गई। बुंदेली भासा मानी गई। इनकी अपनी किताबै बनी लिखी है।

बृजभाषा और बुन्देली - अपुन सब गुनी जन है। अपने सामनै हिन्दी और लोकभासन को इतहास है। अपुन देखिये साव के बृजमण्डल में बृजभाषा के कितने कवी भये हैं। बुन्देली भासा के कवियन को गिनती नईं हो पाउत। बृजभाषा में बुंदेली के पचास प्रतिशत से जादों शब्द हैं। बुन्देली के कवियन नै बृजभाषा खों सजाओ है समारौ है।

गुरु ग्रन्थ साहब और बुन्देली - हमाये हिन्दू-सिख धर्म के पवित्र गुरुग्रन्थ साहब ये बुंदेली के पद सबइ मान सैत लिखे हैं। जाको अर्थ जो है के गुरुमुखी भासा पै बुंदेली कौ असर है।

राजस्थान और गुजरात और बुन्देली - पैलै पूरौ क्षेत्र गुजरात हतौ। गूजरन को राज हतौ। गोजरी भासा के बोल वालौ। राजस्थानड गुजरात में हतो बाद में अलग भव है पर। गोजरी भाषा कौ असर बुंदेली में है जाकौ सीदो सा अर्थ है के गुजरात और राजस्थान में बुनेली के शब्दन को मिलो-जुलो रूप देखवे खो मिलत है। अपुन देख लेव साव। हमाव कैकौ जो हैं कै बुन्देलखण्ड हिन्दुस्तान कौ हिरदै क्षेत्र है जाकी बुनेली भासा कौ पिरभाव देश के दूर-दूर नौ बनौ रओ है। मध्यप्रदेश में बुंदेली के बाईस जिला हैं उत्तरप्रदेश के सात जिला लगभग तीस जिला की जनता बुंदेली भासी है।

सार :- हमाये लेख कौ जौइ सार है कै चोंय को मालवा होवे चोंय गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बुन्देली भासा को अपनौ जबरजस्त असर है। हजारन सालन से बोली जा रई है। जीवन में उतार चढ़ाव सबइ देखत आये हैं सो बुंदेली देखत रई है। आजऊं हिचकोला ले रइ है। मगर ईसुरी भी बुन्देली नै डंका बजा राखौ है। बुनेलखण्ड में बुनेलखण्ड मुक्ति मोर्चा ने पृथक बुनेलखण्ड राज बनवावे की जंग छेड़ राखी है। हम सो जायें मध्यप्रदेश मण्डल से प्रभारी हैं। आंध्रप्रदेश के तेलंगाना राज को कऊं निर्माण होत है तो जू बुन्देलखण्ड पृथक राज सो बनवेये देर नइं लगनै। हमाइ जो आसा है। फिर ईसुरी की कृपा। कऊं बुन्देलखण्ड राज बन गओ तो जौ तो अपुन मानइं के चलिये कै बुनेली भासा बुन्देलखण्ड की अपनी भासा हुये जू।

रघुवंश नगर, भाण्डेर मार्ग
दतिया, बुन्देलखण्ड (म.प्र.)

केशव के काव्य में बुन्देली संस्कृति की झलक

डॉ. जगदीश प्रसाद रावत

रीतिकाल के प्रथम आचार्य महाकवि केशव के साहित्य पर अनेक संदर्भों में शोध एवं समीक्षायें हुईं। समीक्षकों एवं शोधार्थियों ने केशव के काव्य के विविध विषयों को अपने शोध का विषय बनाया, लेकिन केशव की जन्म एवं कर्मभूमि बुन्देलखण्ड रही है। अत: यह स्वभाविक है कि समकालीन देशकाल, परिस्थितियों, परिवेश एवं यहाँ की संस्कृति का भी उनके काव्य पर प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। भले ही केशव ने अपनी काव्य भाषा ब्रज भाषा को चुना लेकिन उनके समग्र साहित्य में बुन्देली के शब्दों की भरमार है। इस भाषागत दृष्टि से हम उनकी काव्य भाषा को ब्रज मिश्रित बुन्देली कह सकते हैं। केशव दो युगों की संधि पर खड़े थे। भक्तिकाल का अंतिम छोर और रीतिकाल के प्रादुर्भाव के मुहाने पर उनके काव्य का श्रीगणेश होता है। वस्तुत: केशव के युग को हम रीतिकाल का स्वर्णयुग कह सकते हैं।

भाषा के अतिरिक्त इस अंचल के लोकाचार्य, रीतिरिवाज, जन्म से मरण तक के संस्कार, वेशभूषा, रहन-सहन, आचार-विचार आदि संस्कृति के अनेक अवयव उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। बुन्देली संस्कृति के इन विभिन्न सोपानों एवं उपादानों को महाकवि के साहित्य में ढूढ़ने की एवं पड़ताल की किसी ने कोशिश नहीं की या इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया। मैंने इस विषय पर उनके साहित्य में गहरे पैठने की अकिंचन कोशिश की है। हो सकता है कि मेरे इस शोध से आगे केशव के काव्य में इस संदर्भ में शोध के नये अध्येता मिले और यह सर्वथा अचूता अध्याय केशव के इस संदर्भ से जुड़ें।

बुन्देली खान-पान का उदाहरण -

रामचन्द्रिका में इस संदर्भ में परशुराम कहते हैं कि -

भूतल के सब भू पन को मद भोजन तो बहु भांति कियोई।
मेद सो तारकनन्द को भेद पछयावरि पान सिरायो हियोई।।
खीर पडानन को मद केशव सो पल में करिपान लियोई।
राम तिहारेई कंठ को सोनित पान कों चाहे कुठार पियोई।।

(रा.च. 7/21)

जेवनार के प्रसंग में एक जगह केशवदास कहते हैं कि -

पुनि झारि सौ द्वै स्वाद घने, विधि दोइ पछयावरि सात पने।

बुन्देलखण्ड में पछयावरि एक प्रकार के पेय को कहते हैं। जो भोजन के अन्त में परोसा जाता है इसके प्रभाव से भोजन शीघ्र ही पचता है, अत: मठ्ठा या छांछ की बात करते हैं या हो सकता है कि यह मीठी खीर की बात हो। कहा भी जाता है कि मधुरेण समापयेत। जेवनार के अन्त में चावल या आम का शर्बत या श्रीखण्ड या गोरस में गुड़ मिलाकर परोसने की प्रथा है। यही वह मिष्ठ पेय है।

हर एक भू-भाग, अंचल, प्रान्त या देश की संस्कृति की अपनी प्रथम पहचान होती है। उसको स्पष्ट रेखांकित करती हुई उसकी विशेषताऐं भी होती हैं। केशव के काव्य में ऐसे चित्रण में तत्कालीन बुन्देली संस्कृति की छटा यत्र तत्र सर्वत्र बिखरी पड़ी है। राम विवाह का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

विनती रिषिराज की चित्त धरौं, चहुं भैंयन के अब ब्याह करौं।
पठई तब ही लगन लिखि, अबध पुरी सब बात।।
राजा दशरथ सुनत सजि, चारओ चली बात।

---0---0---

वनि चारि बरात चहूदिसि आई, नृप चारि चमू अगवान पठाई।।

(रा.च. 6/4)

बुन्देलखण्ड में विवाह में गारी गाने की पुरानी परम्परा है। गारी गाई भी जाती है और गारी (गाली) दी भी जाती है। यथा -

अति सुन्दर नारी, सब सुख कारी, मंगल गारी देन लगी।
बाजे बहु बाजत, जनु घन गाजत, जहाँ-तहाँ सुभ सोभ जगी।।

(रा.च. 6/6)

दूल्हा राजा सिर पर मौर बांधता है। बुन्देलखण्ड में इस प्रथा का केशव ने अपनी अपनी कविता में पूर्णरूपेण निर्वाह किया। राम के सिर पर मौर है जिसे वह यहाँ सिरमौर

कहते हैं। एक बानगी -

रामचन्द्र सीता सहित, सोभत है तेहि ठौर।

सुवरनमय मनिमय खचित, सुभ सुन्दर सिरमौर।।

डेरा में बारातियों को ठहराया जाता है, देखिए भगवान श्री राम की बारात का डेरा।

राजपुत्रकनि स्यों छवि छाए, राज-राज सब डेरहिं आयें।

कन्यादान के साथ कन्या को धन (दहेज) देने का उल्लेख भी केशव के काव्यालोक में मिलता है। इसके पहले अग्नि की पूजा का विधान विधिपूर्वक किया जाता है-

पावक पूज्यों समिधि सुधारी, आहुति दीनी सब सुखकारी।
दै तब कन्या बहु धन दीन्हा, भांवरि पारि जगत जस लीन्हा।।

(रा.च. 6/9)

केशव ने अनेक ग्रन्थों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति के अनेक अनछुये पहलुओं का स्पर्श किया। इतना ही नहीं उन्हें काव्या प्रवृत्ति में सर्वोपरि स्थान दिया है। राम विवाह में वरमाला का वर्णन इस प्रकार है -

सीता जू रघुनाथ कों, अमल-कमल की माल।

पहिराई जन सवनि की हृदयावलि भू पाल

सगुन-असगुन की भी इस अंचल विशेष में विशेष ध्यान दिया जाता है। राम विवाह में सगुन का उदाहरण -

काहु कों न भयों कहूँ, ऐसौ सगुन न होत।

पुर पैठत श्री राम के, भयों मित्र खद्योत।।

केशव के राम विवाह में भाट, भांड से भी प्रशस्ति वर्णन कराया है। यहाँ तक की बेडनी से भी गीत गवाये हैं। राम चन्द्रिका से एक चित्र उद्घृत है -

कहूँ नृत्यकारी, नचै सोभ साजै, कहूँ भांड बोलै कहूँ मल्ल गाजै।
कहूँ भाट - भाट्यों करैं मान पावैं, कहूँ लोलिनी बेडिनी गीत गावैं।
कहूँ बैल-भैंस भिरैं भीम भारे, कहूँ एन एनीन के हेतकारे।
कहूँ बोल बांके, कहूँ भेषसूरे, कहूँ मत्त दंती लरैं लोहपूरे।

(रा.च. 6/14)

केशव का काव्य अनेक स्थानों पर ठाटी, परिपाटी, माटी और ठेठ देशज संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। चूंकि केशव का संबंध ओरछा राज्य से था और ओरछा का मतलब बुन्देलखण्ड का हृदय हार जहाँ मानक बुन्देली या वास्तविक बुन्देली भाषा और संस्कृति के दिग्दर्शन होते है। बुन्देली भाषा की नफासत और ताजगी एवं राजाओं के राजसभा मध्य आदर्श सत्कार रामचन्द्रिका में मूर्तमान हो उठता है।

देखि तिन्हें तव दूर तें, गुदरानों प्रतिहार।

आए विश्वामित्र जू, जनु दूजो करतार।

उठ दौरे नृप सुनत ही, जाइ गहे तव पाइ।

लै आए भीतर भवन, ज्यौं सुरगुरू सुरराइ।।

(रा.च. 2/8)

बुन्देली परिपाटी का स्वागत निर्वाह देखने योग्य है -

बहु भांति पूजि सुराइ, कर जोरि के परि पाई।

(रा.च. 2/12)

रावण संवाद में रावण, महा पंडित और ब्राह्मण द्विज था, अत: केशव उससे कहते हैं कि सनाढ्य ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ होता है क्योंकि केशव मिश्र सनाढ्य ब्राह्मण थे। यह जातिगत, स्वाभिमान या अभिमान का अतिरेख है। केशव यह मोह संवरण नहीं कर सके।

सनाढ्य जाति गुनाढ्य है जग सिद्ध सुद्ध सुभाउ।

कृष्णदत्त प्रसिद्ध है जहँ मिश्र पंडित राउ।।

रावण वाणासुर संवाद में भाटों के द्वारा गारी सुनाने का भी उल्लेख है -

बाढ़ि गयो बगवाद वृथा सह भूलि न भाट सुनावहि गारी।

(रा.च. 4/19)

बुन्देलखण्ड में पुत्री के चरण स्पर्श और मान-सम्मान की रीति है। वाणासुर को जव तक पता चलता है कि धनुष यज्ञ में टूटने वाला धनुप उनके गुरू का है तो वह सीता को माँ समझकर प्रणाम करते हुये वापस चला जाता है -

मेरे गुरू को धनुप यह, सीता मेरी माइ।

दुहू भांति असमंजस, वान चले सिर नाई।।

(रा.च. 4/28)

महादेव कों देखि कै, दोउ राम विसेप।

कीनो परम प्रनाम उन, आशिप दियो विसेप।।

(रा.च. 4/44)

इस क्षेत्र का व्यक्ति प्रत्येक नदी को गंगा के समान पवित्र मानता है वह बेतवा को भी गंगा का दर्जा देता है -

सूरसुता सुभ संगम तुंग - तरंग तरगित गंग सी सोहै।
(वी.सिंह दे.च. 15/31)

रचे कोट पर जहँ-तहँ जंत, सोधि-सोधि दिन पढि-पढि मंत।

विविध हथ्यारन की कोठरी, दारू गोलन की ओखरी।।
(वी.सिंह दे.च. 15/41)

वीर सिंह जू देव ने अपने शासन काल में वावनवें जन्मदिन के उपलक्ष्य में वावन स्थापत्यों का निर्माण कराया था। वीर सिंह देव का शासन बुन्देलखण्ड का स्वर्णयुग कहलाता है। उन्होंने अनेक सरोबरों को निर्माण भी कराया था। जो जल संकट के इस युग में उनकी स्मृति अक्षुण्ण रखे हुये है -

वीर-वीर सागर कों देखि, वरनन लागे बचन बिसेखि।
(वी.सिंह दे.च. 15/1)

प्राचीन काल में बुन्देलखण्ड में घूंघट प्रथा को भी रेखांकित किया गया है -

घूँघट घालि चलत गुन बने, लागत घायनि रन में घने।
(वी.सिंह दे.च. 15/28)

बुन्देलखण्ड के क्षत्रिय अपनी आन-वान-शान के लिए जग प्रसिद्ध है। उनके परम पौरूष का बखान इस प्रकार किया गया है।

क्षत्री जानि कहै सब लोग, परम पुरूष पौरूष संजोग।
(वी.सिंह दे.च. 15/26)

यहाँ गऊदान एवं अन्य प्रकार का दान, गंगा स्नान और देवताओं के अनुष्ठान को भी महत्व दिया जाता है। यह यहाँ की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है -

गंगा जल असनान करि, पूजे पूरन देव।
सुनि पुरान गोदान दै, कीने भोजन भेव।।
(वी.सिंह दे.च. 22/16)

नृपहि अनेक दान बहु दियौ, सबही को मनभायौ कियो।
(वी.सिंह दे.च. 23/3)

बुन्देलखण्ड की हिन्दु विवाहित महिलाओं में सैंदुर से माँग भरने की प्रथा है -

सैंदुर माँग भरि अति भली, तापर मोतिन की आवली।
(वी.सिंह दे.च. 23/1)

केशव के काव्य में बुन्देली संस्कृति का प्रभाव अनेकों जगह बिखरा पड़ा है। उनके काव्य में यहाँ की माटी की सौंधीगंध अपनी जन्म भूमि से ममता, संस्कारों से जुड़ाव नीति-रिवाजों से संलिप्तता मानों केशव के रोम-रोम में समाहित है। यही कारण है कि रीतिकाल में महाकवि आचार्य कवीन्द्र, रवीन्द्र, केशव अपने देशकाल परिवेश को नहीं भूले। उन्होंने निश्चित रूप से अपनी माटी का ऋण चुकाया है और बुन्देलखण्ड की संस्कृति को काव्य के माध्यम से वैश्विक रूप दिया है।

ग्राम व पोस्ट - गोर,
जिला - टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. - 9993759874

वर्तमान

नगर पालिका परिषद, हटा, जिला-दमोह (म.प्र.)

श्री बाबूलाल तेंदुवाय
अध्यक्ष-न.पा.प. हटा (कॉंग्रेस)

श्रीमती सरोज मोदी
उपाध्यक्ष-जवाहर वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती शोभारानी
पार्षद-गौरीशंकर वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती अल्का सोनी
पार्षद-रामगोपालजी वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती सरोज रानी पाराशर
पार्षद-संजय वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती रश्मि ताम्रकार
पार्षद-हजारी वार्ड (कॉंग्रेस)

श्री अनंत राम नामदेव
पार्षद-बालाजी वार्ड (कॉंग्रेस)

श्री मनीष जैन
पार्षद-सुभाष वार्ड (भाजपा)

श्रीमती जुलेखा बी
पार्षद-मुरली मनोहर वार्ड (कॉंग्रेस)

श्री महेश अहिरवार
पार्षद-चंडीजी वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती सुधारानी साहू
पार्षद-रमाकवि वार्ड (कॉंग्रेस)

श्री मनीष चौरसिया
पार्षद-कमला नेहरू वार्ड (भाजपा)
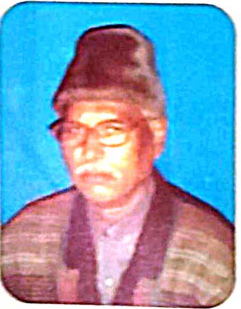
श्री क्यू खान
पार्षद-आजाद वार्ड (भाजपा)

श्री जगन्नाथ पटैल
पार्षद-शास्त्री वार्ड (कॉंग्रेस)

श्रीमती अवधरानी अहिरवार
पार्षद-गाँधी वार्ड (कॉंग्रेस)

श्री अफजल पठान
पार्षद-नवोदय वार्ड (भाजपा)

बुंदेली मेला 2011 के शुभारंभ के अवसर पर सरस्वती पूजन करते हुए कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह हजारी, श्री रामेश्वर नीखरा, श्री रविनन्दन सिंह (एडवोकेट), शिवराज सिंह जी लोधी (सांसद), श्रीमती उमा देवी खटीक (विधायक) श्री विजय सिंह राजपूत (जिलाध्यक्ष, भाजपा) एवं डॉ. श्री श्यामसुंदर दुबे

बुंदेली मेला 2011 के शुभारंभ के अवसर पर मंचासीन अतिथिगण श्री रविनन्दन सिंह (एडवोकेट), श्री शिवराज सिंह जी लोधी (सांसद), श्री रामेश्वर नीखरा, डॉ. श्री श्याम सुंदर दुबे पगड़ी बंधवाते हुए।

बुंदेली मेला 2011 के शुभारंभ के अवसर पर मंचासीन अतिथिगण श्री संजेश नायक (मु.न.पा. अधिकारी), श्री बाबूलाल तंतुवाय (अध्यक्ष, न.पा. हटा), श्री उमादेवी खटीक (विधायक)

बुन्देली सांस्कृतिक शब्द

– मेहबूब अली

बुन्देलखण्ड में बोली जाने वाली बोली को आज देशती बोली कहते हैं, मगर स्नेह, सत्यता, दृढ़ता, विश्वास और अपनत्व छिपा है। कर्ण प्रिय, सरल झलकता है।

जैसे भैया मोरे, बाप हमाये, मोरी बऊ, प्यारी बैन, दद्दा कक्का, नन्ना, दाऊ, कुंवर जू, हांजू, काये हूं आदि संबंधों में उच्चारित होते हैं।

दैनिक बोलचाल, सामग्री कार्य वगैरह में विभिन्न शब्द बोले जाते हैं। घरदोर, पौंर, उसारो, खकरी, इकवाई पछीते अंगीते कुठिया, डहरिया, आरो, मजोटो, सार, सपन्ना, घिनौची, गड़ई, टाठी, यारो, हड़िया, कलछिरी, परसो, ओजों, ढड़कवो, उखरी, परछिया, व्याव, मुड़ढकनों, हाड़ो, हरदी लगवो, गौतरी, रामत, बचका, मनगापई, हाट, बड़ेरी, खाओ, जेवो, चखो, धांसवो, लीलवो, गुटकवो, उन्ना लत्ता, सेतवो, सुड़ारो धरो, कचरदे घानो उरान उरैंया, अथैं, बियारी, पहर भर आदि।

आभूषण

बुन्देली आभूषण सोने, चांदी, पीतल, तांबा, कांच आदि के होते हैं। कांच की रंगीन चूड़ी, लाखों की चूड़ी, पैर में छल्ली, बिछिया, ऊठाने, ढाडेर, पायल, पैगना, झांके, लच्छा, पट्टी, सांकरे, कमर में करधोनी, नाक में नथनी, पुंगरिया फुलिया लोंग, कानों में वारी, ऐरन कनपूल, टप्स, झुमकी, गले में ..... माला, टकानुर पोत की माला-हार, बूटा, सिर पर बैंदा, कुहनी में बांके, हाथ ऊँगली में मुदरी, पैर की पिपरियों, हाथ कलाइयों, कोचों नाक, माला, पेट में गुदना गुदाये जाते हैं। ठाकुर, लोधी, कुर्मी जातियों में पुरुष हाथों चूरा मुंदरी, गले में ताबीज, कान में तिगड़ी पहनते हैं।

वेशभूषा

मुख्यत: परदनी, कुरता, कमीज, बंडी, बनयान, जाकट, गमछा,, साफा, टोपीपंचा, टोपा खचऊ, पनैया, लाटी। महिलाएँ 16 हाथ की साड़ी, रंगीन घाघरा, चुनरिया, लहंगा, पोलका, पिछौरा, मुंह को साड़ी से ढांकना (घूंघट), किनारदार रंगीन छोती, मुख्य पसन्द होती है।

बटियागढ़, दमोह
मो. 8349193484
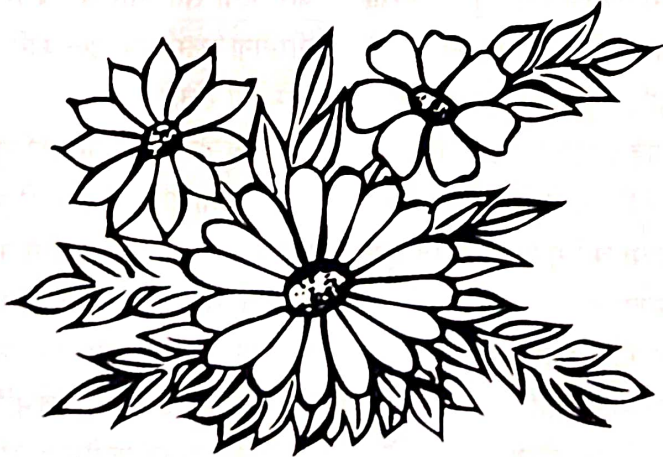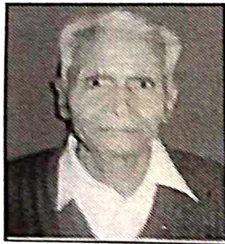
गौरवशाली बुन्देलखण्ड

– डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'

भारतवर्ष के हृदय स्थल में बसी असि और मसि की धनी वीर प्रशविनी बुन्देलखण्ड की भूमि कभी भी किसी परिचय विशेष की मुँहताज नहीं रही, और न ही आज है। यहाँ की गौरवशाली, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रससिक्तता और शौर्य पराक्रम संपृक्त निर्भीकता का अद्‌भुत मिश्रण है। विन्ध्याटवी की गोद में अवस्थित होने के कारण इसका पूर्व नाम विन्ध्येलखण्ड था। बुन्देली साहित्य के मूघर्न्य शोधकर्ता पं. गोरेलाल तिवारी के अनुसार – ''कन्नौज साम्राज्यान्तर्गत 'जेजा' (जयशक्ति) नामक एक कीर्तिमान एवं शक्तिशाली सम्राट था। उसके विक्रम पराक्रम की धूम उन दिनों चारों ओर फैली थी। इसके फलस्वरूप इस देश का नाम जेजाक भुक्ति या 'जुझौति' पड़ गया।''

भारत के मध्य भाग में नर्मदा के उत्तर और यमुना के दक्षिण में बिन्ध्याचल पर्वत की शाखाओं के समाकीर्ण और यमुना की सहायक नदियों के जल से अभिसिंचित अपूर्व सुषमा से आवेष्ठित सौन्दर्यालंकृत जो प्रदेश है – उसे बुन्देलखण्ड कहते हैं। जिसकी सीमा निर्धारण में बुंदेलखण्ड के मूघर्न्य कवि वियोगी हरि की कविता की निम्न पंक्ति प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत है।

''इत यमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस''

सुप्रसिद्ध वास्तुकला और मूर्तिकला मर्मज्ञ पुरातत्ववेत्ता श्री कृष्णादत्त बाजपेयी के अनुसार ''चेदि जनपद को चंदेलों के समय जेजाक मुक्ति'' (यजुर्द्धोति=जुझौति) एवं तत्पश्चात् 'बुन्देलखण्ड' की संज्ञा से अभिहित किया गया। जो आज उत्तरप्रदेश के 5 मध्यप्रदेश के 21 जिलों में विभाजित है।

बुन्देलखण्ड की गौरव गाथा का गुणगान करते हुये मुंशी अजमेरी जी के उद्‌गार दृष्टव्य हैं :-

''चँदेलों का सब रहा चिरकाल यहाँ पर
हुये वीर नृप गण्ड मदन परमाल जहाँ पर।
बड़ा विपुल वैभव भरे गद, दुर्गम, दुर्जय,
मंदिर महल मनोज मनोहर अनुपम अक्षय।
यही शौर्य सम्पत्ति गयी कमनीय बुन्देली भूमि है।
यह भारत का हृदय सी, रमणीय बुन्देली भूमि है।''

वहीं बेनी माधव कवि के हृदयोद्‌गार हैं।

''जन्म औ निवास व्यास जी का कालपी के पास
रच गये जहाँ धर्म-ग्रंथ ज्ञान मार्तण्ड।
लक्ष्मीबाई नाना, आल्हा, ऊदल का वीर बाना
छत्ता का जमाना है विभूति जिसकी अखण्ड।
परम पुनीत जम्बू दीप में भरत-खण्ड
पुण्य खण्ड उसका है, अपना बुन्देलखण्ड।''

यह वही पुण्य भूमि है – जहां भगवान राम ने अपने चौदह वर्ष के बनवासी जीवन का समय व्यतीत किया-पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का समय बिताया-तभी तो कवि अब्दुल रहीम खानखाना कहने को विवश हुये थे कि-

चित्रकूट में रम रहे, रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा परत है, सो आवत यह देश।

बुन्देली वसुन्धरा में अगणित वीर रत्नों शूरवीरों योधाओं ने जन्म लेकर अपने शौर्य पराक्रम के बल पर इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अपना नाम अंकित कराया। आल्हा ऊदल, मलखान रुद्र प्रताप, मुधकर शाह, वीरसिंह देव, चम्पतराय और छत्रसाल इसी बुन्देलभूमि के शौर्य पुरुष थे। यही नहीं वीर पत्नी सती सारन्धा, प्रथम स्वतंत्र संग्राम की दीपशिखा वीरांगना लक्ष्मीबाई, झलकारी, अवंतीबाई भी इसी वीर प्रसूता भूमि की संतानें थीं।

बुन्देल भूमि ऋषियों मुनियों साधू संतों की तपोभूमि तो है ही साहित्यिक दृष्टि से भी भाव भूमि के रूप में समस्त विश्व में ज्ञानालोक प्रसारित करने में भी अग्रगन्य है। कविता का सर्वप्रथम सृजन आदि कवि महर्षि बाल्मीकी के मुखारविन्द से इसी बुन्देली भूमि पर निस्तत हुआ था। भगवान वेद व्यास कृष्णा द्वैपायन, भवभूति जैसे संस्कृत के मूघर्न्य कवि रचनाकार भक्त शिरोमणि संत कवि गोस्वामी तुलसीदास

कवीन्द्र केशवदास बिहारी भूषण पद्माकर, मतिराम चन्द्रसखी ईसुरी, रायप्रवीन मुंशी, बनारसी दास चतुर्वेदी, गौरीशंकर द्विवेदी, कृष्णानन्द गुप्त, श्यामसुन्दर बादल, मेमेरी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त वियोगी हरि घासीराम व्यास, घनश्याम पाण्डेय, सुभद्राकुमारी चौहान, रामकुमारी चौहान, सेठ गोविन्दास, डॉ. रामविलास शर्मा, रामकुमार वर्मा डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा, नर्मदा प्रसाद गुप्त, अशांति त्रिपाठी, कन्हैयालाल केलश, गोविन्दास विनीत, लोकगीतकार ख्यालीराम इसी भूमि के पुन्यपूत हैं। आज भी बुन्देली भाषा के पुनरुत्थान में संलग्न 'बुन्देली बसंत' परिवार छतरपुर, सागर, देवाास, टीकमगढ़, भोपाल, उरई, झाँसी और जबलपुर की संस्थाऐं बुन्देली को राष्ट्रीय भाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने को जीजान से जुटी है। इनमें दुर्गाचरण (टीकमगढ़), गंगा प्रसाद बरसैंया (छतरपुर) देशराज पटैरिया, बुन्देली पीठ सागर वि.वि., डॉ बहादुर सिंह परमार (छतरपुर), डॉ. रामनारायण शर्मा (झाँसी), बटुक चतुर्वेदी (भोपाल) डॉ. हरिसिंह घोष (छतरपुर), सत्यार्थी (टीकमगढ़), दुर्गा दीक्षित (टीकमगढ़), अयोध्या प्रसाद कुमुद (उरई), डॉ.एम.एम. पाण्डेय, हटा (दमोह), डॉ. परशुराम विरही (शिवपुरी), श्रवण कुमार त्रिपाठी (तालवेहट), डॉ. शंकरलाल शुक्ल (भान्डेर, दतिया), डॉ. भगवत नारायण शर्मा (ललितपुर) और गड़वैया आदि के साथ इस आलेख का लेखक (डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय सूरत) आदि तन-मन-धन से जुटे हैं।

बुन्देल भूमि के राजनैतिक क्षितिज पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले पं. परमानन्द, क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, भगवान दास माहौर, सदाशिव मल्कापुरम, मास्टर रुद्रनारायण तथा विश्वनाथ वैशम्पयन ने अपने शौर्य और पराक्रम से बुन्देल भूमि को गौरवान्वित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी - तो संगीत के क्षेत्र में संगीत सम्राट तानसेन, बैजू बावरा, मृदंगाचार्य कुदऊ आदि जैसे कलाविद भी इसी बुन्देलखण्ड के अनुपम लाल थे। विश्व विजयी गाथा, हाकी जादूगर ध्यानचंद रुपसिंह चित्रकार कालीचरन वर्मा, इतिहासकार उपन्यासकार, चित्रकार डॉ. महेन्द्र वर्मा प्राचीन सिक्कों के शोधक संग्रहकर्ता कवि डॉ. मोहनलाल 'चातक' डाक टिकटों के मर्मज्ञ संग्रहकर्ता गोपीचंद नागर भी इसी बुन्देली भाव भूमि, कर्म भूमि की रत्न रहे हैं।

जहाँ तक बुन्देलखण्ड की भाषा का प्रश्न है - भाषाविद् डॉ. ग्रियर्सन के विचार से बुन्देली मात्र एक बोली है। पर सत्यता की कसौटी पर परखने पर यह बात सत्य प्रतीत नहीं होती - क्योंकि

'चार कोस पै बदलै पानी, बारा कोस पै बानी'

बुन्देलखण्ड की ऊबड़ खावड़ जंगली पठारी भूमि में आवागमन की कठिनाई के कारण विभिन्न खण्डों में थोड़ा बहुत अंतर अवश्य है तथापि यह बोली नहीं, इसे हिन्दी की उपभाषा भले ही कहा जा सकता है - जिसका प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। इस विषय में डॉ. राहुल सॉस्कृत्यौन का कथन सही प्रतीत होता है।

''बृजभाषा के साहित्य की मानी जाने वाली अधिकतर पुस्तकें बुन्देली साहित्यकारों की ही निर्मित हैं, किन्तु वे बृजभाषा के खाते में गिनी जाती है।'' डॉ. मोतीलाल चातक के अनुसार - शौरसेनी प्राकृत से पश्चिमी हिन्दी का आर्विभाव हुआ और पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत बृज बुन्देली कॉगरू कन्नौजी और खड़ी बोली आती है। ये पाँच बोलियों आपस में बहिनें हैं। परन्तु बुन्देली का अपना साहित्य है, सौन्दर्य है, छटा है तथा स्वयं साहित्यक विशेषता है। सच तो यह है कि बुन्देली साहित्य के आगे बृजभाषा नहीं ठहराती - जो सबसे प्राचीन है - जिसका प्रमाण जगनिक प्रणीत आल्हाखण्ड है। आज बुन्देली भाषा साहित्य की हर विधा से सम्पन्न है और राष्ट्रीय भाषा सूची में शामिल होने को कटिबद्ध है।

पुरातत्व की दृष्टि से बुन्देलखण्ड राजस्थान के समान किले गढ़ियों महलों मंदिरों स्मारकों मूर्तियों और चिचमारित से चमकृत करने वाली कृतियों से समृद्ध है - जो पर्यटकों को आकर्षण के केन्द्र हैं। हॉ, यातायात की असुविधा के कारण और सत्ता की उपेक्षा के कारण ये स्थान विदेशी पर्यटकों के लिये अब भी सहज उपलब्ध नहीं है। डॉ. राजेन्द्र सिंह के अनुसार, ''बुन्देलखण्ड में अनेक दुर्गों की उपस्थिति, जिनका निर्माण विभिन्न कालखण्डों में हुआ,

इसकी उज्जवल संस्कृति का दस्तावेज है।'' इन दुर्गों के खण्डहर आज भी अपने मौन से बुन्देलखण्ड की स्मर्णीय गाथाऐं गा रहे हैं - जिनमें कलिंजर का किला झाँसी, महोबा, जैतपुर, तालवेहट, दतिया, बानपुर, छतरपुर, ओरछा, ऐरन, गढ़ाकोटा, राहतगढ़, शाहगढ़, रायसेन, गढ़कुढ़ार, ग्वालियर, पृथ्वीपुर, मोहनगढ़, चंदेरी, शिवपुरी, दतिया पर्यटन की दृष्टि से अब भी आकर्षण के केन्द्र बने हुये हैं।

लोक कलाओं की दृष्टि से भी बुन्देल भूमि समृद्ध है। जिसके विषय में बुन्देली के श्रेष्ठ हस्ताक्षर श्री अयोध्या प्रसाद कुमुद का कथन है कि विन्ध्य पर्वत मालाओं के प्रांगण में बसा बुन्देलखण्ड ऐसा सांस्कृतिक क्षेत्र है जहाँ लोककला के विविध रूप देखने को मिलते हैं। जिनमें लोकगायन, लोकनृत्य लोकनाट्य चित्रकला और मूर्तिकला प्रमुख हैं।

अ. लोक गायन - अचरी (देवी गीत व्यांगुरिया), आला गायन, राछेरा, तमूरा भजन (शब्द वानी भजन कबीर पंथी), संस्कार गीत (सोलह संस्कार), गोट (कारसदेव, हीरामन आदि की गाथा), फाग, ख्याल लखनी, कछियाऊ

ब. लोक नृत्य - दिवारी, राई, होली, घट, जवेर नृत्य, पटा बनैती, पालना, बधाई, चाँचर, चाँचर मशाल, सैरा, झिझरू, ढिमरयाऊ, रावला

स. लोकवाद्य - ढोलक, वाँसुरी, नगड़िया, नक्कारा चंग, पजावज, मृदंग, झोक, मंजीरा, चिमटा, कसेरू, चटकौआ

लोकगीतकारों में ईसुरी शिरोमणि हैं। जिनकी चौकड़िया रजऊ के लक्षित कर कही गई हैं। जिसमें छायावादी पुट दृष्टिगोचर होता है तभी तो कविकर कथन है - 'देखौ रजऊ क्राऊ मैं नईयाँ, कोन बरन तन मुइयाँ'

लोकगीतों में लालित्य अपरम्पार (माधुर्य) समेटे है-
हँसकर मुख झरत परत फूल से, जो वागन में नईयाँ
योरई रजऊ सासरे जाती, हमें लगा ले ओ छाती

चातुर्य पूर्ण उक्ति का उदाहरण, ओरछा की नर्तकी प्रवीनराय का मुगल सम्राट की वद् नियती के प्रतिरोध में दिया उत्तर इतिहास का अमिट छाप छोड़ गया कि -

''बिनती राय प्रवीन की, सुनिये शाह सुजान।
जूठी पातर भखत हैं, बारी वायस स्वॉन''

आल्हाखण्ड बुन्देलीभाषा का सबसे प्राचीन महाकाव्य है जो उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में ही नहीं अन्य प्रान्तों तक अपनी लोक लुयावन प्रसिद्धि आज भी बनाये हुये हैं - इसके बाद ओरछा के लाला हरदौल का चरित पूरे बुन्देलखण्ड में देवतुल्य पूज्य माना जाता है और उनके नाम के चबूतरे यम तम मिलते हैं।

बुन्देलखण्ड की ऊबड़ खावड़ ककरीली पथरीली ऊंसर भूमि के लोग अपनी उदर पूर्ति - ''महुआ मेवा, बेर कलेवा'' पर गुजर बसर करके भी अपने तीज त्यौहारों पर्वों के मेलों के माध्यम से शौर्य पराक्रम हेतु सहस्त्र गुनी ताकत अर्जित करके शत्रुओं के दाँत खट्टे करने में सदैव अग्रणी रहे। इन पर्वों-त्यौहारों और मेलों से बुन्देली जन जीवन, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वरूप नियमित होता रहा। लोगों को हर्ष और उल्लास के अवसरों से नये संघर्ष से जूझने की ऊर्जा भी प्राप्त होती रही। वैसे तो बुन्देलखण्ड इस बात के लिये बदनाम है कि यहाँ तो रोज ही कोई न कोई तीज त्योहार मनाया जाता है तथापि चैत में - गनगौर नवदुर्गा रामनवमीं वैसाख में अक्षय तृतीया जेठ में - वट सावित्री, गंगादशहरा, निर्जला एकादसी, असाड़ में गुरुपूर्णिमा, सावन में - सावन तीज, नागपंचमी, भुजरियाँ (कजलियाँ) रक्षाबंधन, भादों में - श्री कृष्ण जन्माष्टमी, हरितालिका वृत, गनेश चौथ, भौराई छठ, संतान सप्तमी जल विहार अन्तन्त चतुदर्शी कुआँर - पितृपक्ष, महालक्ष्मी, नवदुर्गा सुअटा, दशहरा, कार्तिक में - करवा चौथ, धनतेरस, दिवाली गोबरधन, देवठान ग्यारस, बैकुंठ चतुदर्शी अगहन में संकट चतुदर्शी राम विवाह पंचमी, फागुन में - होली रंग पंचमी प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त सोलह संस्कार के उल्लास के अवसर पर्व के रूप में हर परिवार में मनाये जाते हैं। जिनसे समाज में संगठन समरसता प्रीति प्रेम और नई ऊर्जा प्राप्त करने का सुझाव सार प्राप्त होता है।

डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने और इनसे पूर्व डॉ. बनारसीदास चतुर्वेदी गौरीशंकर द्विवेदी, श्यामलाल बादल ने लोकगीतों को संग्रहित कर प्रकाशित करने की महती भूमिका अ

की। नि:संदेह ये लोकगीत लोकजीवन और लोकसंस्कृति की विशद अभिव्यक्ति के जीवंत प्रमाण हैं - मधुर गीतों का लालित्य बुन्देली लोकगीतों में प्रचुर मात्रा में मिलता है। लोक साहित्य का ये विशेष अंग-लोकगीत समाज की सच्ची धड़कन और चेतनाओं का प्रतीक है जो मार्मिक अनुभूतियों से युक्त होने के कारण लोक जीवन को अपने में समेटे रहते हैं। यही नहीं उनमें लोक जीवन को अनुप्राणित करने की अद्‌भुत क्षमता होती है, क्षेत्र व्यापक और विस्तृत होता है। बुन्देली लोकगीतों में बुन्देलखण्ड की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन की स्पष्ट झांकी मिलती है - उदाहरणार्थ - सुअवसर पर -

''आज दिन सोने को महाराज सोने कौ सब दिन सोने की रातें, सोने को दियला धराओ महाराज''

जन्मोत्सव पर्व पश्चात्‌ 'वीर की बलइया लै हौ जामुना के तीर'

वर्षा में - ''सावन बरसै भादौ बरसै पवन चलै पुरवाई
कौन बिरछ तन ठॉड़े हुइऐं, राम लखन दोऊ भाई।''

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भी बुन्देली सूरवीरों और कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नाना साहब तात्या टोपे बखतवली राजा, मर्दन सिंह और वीरांगना लक्ष्मीबाई भी इसी पुन्य भूमि के पुन्य पूत थे।

चन्द्रशेखर आजाद मास्टर रुद्रनारायण सदाशिव राव मल्कापुरकर भगवानदास माहौर पं. परमानन्द जैसे महान क्रान्तिवीर भी इसी धरती पर जन्मे जिनके रोम रोम में माँ भारती के उद्धार हेतु विकट तड़पन थी और पल-पल उसी के लिये जिये मरे। ऐसे ही क्रान्तिवीर कवि घासीराम व्यास के हृदयोद्‌गार थे :-

'लेजा लेजर मत बेजामन, भेजा फाड़।
नेजा पर टॉग दे कलेजा, देश द्रोही का।'
तो नाथूराम माहौर की ललकार थी।
'कर जुल्म तू दीन बना ही चुका
तुम्हें दीन बनायेंगे, दीन के ऑसू।'
वहीं भगवानदार माहौर की चेतावनी थी
मेरे शोषिण की लाली सी कुछ तो लाल धरा होगी।

वनस्पत्ति और वन सम्पत्ति की दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड बेजोड़ है। यहाँ की वन संपदा स्वर्गिक सौन्दर्य वरदान प्राप्त तो है ही जीवनोपयोगी भी है - जो जड़ी बूटियों के अक्षय भंडार से सुसम्पन्न है, फूलों फलों से आच्छादित है। यही नहीं बुन्देलखण्ड के बीहड़ वन विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों से बचाव के रक्षक भी रहे हैं। जिसका प्रमाण मुहम्मद गजनवी के कालिंजर पर आक्रमण करते समय स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ। बीहड़ वनावलि के कारण महिनों उसका मार्ग अवरूद्ध रहा। बुन्देलखण्ड के वनों में, चित्रकूट, कुंडेश्वर, पन्ना और विजावर की वनस्थली अधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है। यहाँ के वन जीवनोपार्जन और अर्थ प्राप्ति के मुख्य माध्यम हैं। जिनमें - सागौन, करघई तेंदू, इमली, महुआ, नीम, पीपल, बरगद, ऑवला, पलास, बबूल, खैर, खिन्नी, बेर, शीशम आदि के वृक्ष प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। जड़ीबूटियों की अपार संपदा संजायें ये वन बहुत ही उपयोगी हैं।

मनोरम वनावलि के साथ बुन्देलखण्ड का भू-भाग अपने अंतस्‌ में विपुल खनिज संपदा से भी समृद्ध है। जिनमें हीरा, काँचरेत, चूना, चुनककरा, चीनी मिट्टी, गौरा पत्थर ग्रेनाइट लोहा और सोना समाहित है।

जीवन के दिशा निर्देशन, बुद्धि को प्रखर बनाये रखने और व्यंगों के माध्यम से लोगों गलत मार्ग पर चलने से रोकने के लिये तथा कभी-कभी हास्य की फुहारें छोड़कर मनोरंजन करने के लिये बुन्देले में भी सुक्तियाँ (आने) बुझौअल (अटके) और व्यंगों की भरमार है जो मेरे ख्याल से संसार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं होगा। ये बात अवश्य है कि खजाना अभी भी बहुत कुछ विलुप्त है।

अंत में, आज भी ये क्षेत्र सत्तासीनों की उपेक्षित नीति का शिकार है। न सिंचाई के पर्याप्त साधन, न आवागमन की समुचित सुविधा और न ही उद्योग धंधे। फलत: यहाँ के किसान मजदूर भूखों मरते या आत्महत्यायें करते। रोजी-रोटी के लिये, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक जाकर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

सरल साहित्य संगम, 97/17ए, सिविल लाइन्स
मोबा. नं. 9452921298

बुन्देली का विकास और हमारे प्रयास

– एन.डी. सोनी

यमुना से लेकर नर्मदा और चम्बल से लेकर टोंस नदियों के बीच का क्षेत्र बुन्देलखण्ड कहा जाता है जिसे भारत देश का हृदय स्थल भी मानते हैं। इस क्षेत्र में भारत के दो प्रदेशों उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश के अनेक जिले शामिल हैं। लम्बे अरसे से इस क्षेत्र को अलग बुन्देलखण्ड राज्य बनाने की मांग चल रही है। इस क्षेत्र की अपनी अलग बोली और संस्कृति है जिसे बुन्देली के नाम से जाना जाता है। बुन्देलखण्ड के अलग-अलग भागों में बोली जाने वाली बुन्देली में थोड़ा-बहुत शब्दों का अंतर मिलता है, मगर कुल मिलाकर है वह बुन्देली ही। बुन्देली बोली के साथ-साथ यहां का खान-पान, रस्म-रिवाज, तीज-त्योहार, रहन-सहन, वेष-भूषा आदि लगभग समान हैं। वर्तमान समय में पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण बुन्देली भाषा-बोली और संस्कृति को यहां लोग धीरे-धीरे भूल रहे हैं। अत: इस क्षेत्र के साहित्यकारों और समाज सेवकों का यह दायित्व बनता है कि बुन्देली को अक्षुण बनाये रखने और उसके विकास हेतु प्रयासरत रहें। इसी संदर्भ में हम यहाँ बुन्देली की शुरु से अब तक की स्थिति और उसके विकास हेतु किये गये प्रयासों तथा भावी आवश्यकताओं पर दृष्टिपात करेंगे।

किसी बोली को भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का कार्य साहित्यकारों का होता है। साहित्य के संवर्धन से भाषा का रूप निखरता है। यदि हम विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करें तो हम पायेंगे कि साहित्य लेखन में पहले पद्म लेखन विकसित हुआ और बाद में गद्य लेखन। बुन्देली साहित्य में भी पहले पदम लेखन ही शुरु हुआ और बाद में गद्य। मध्यकाल से आल्हखण्ड और पृथ्वीराज रासौ के रूप में साहित्य सृजन की शुरुआत सामने आती है। आल्हा के बाद जिन कवियों ने बुन्देली की प्रतिष्ठा को बढ़ाया उनमें महाकवि ईशुरी और गंगाधर प्रमुख रहे। बुन्देली में आल्हा और चौकड़िया फागों के साथ ही दोहा, चौपाई, गीत, भजन, गारीं, शादी के विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीत लिखे गये। पहले छपाई की व्यवस्था की कमी से अधिकांश लोकगीत मौखिक रूप से लोगों की जबान पर रहे। छपाई की सुविधा के विकास के साथ ही पुस्तकों का प्रकाशन सुलभ हो गया। अंतत: वर्तमान काल में बुन्देली की पुस्तकों का प्रकाशन भी होने लगा है। ईशुरी की चौकड़ियों का सिलसिला जहाँ प्रकाश सक्सेना झांसी ने आगे बढ़ाया वहीं श्री सीता किशोर खरे ने बुन्देली में अद्वितीय दोहे लिख कर बुन्देली की क्षमता को प्रकाशित किया। आज बहुत से कवि बुन्देली में काव्य सृजन कर रहे हैं। जिन कवियों ने बुन्देली काव्य लेखन में अपनी विशिष्ट छवि अंकित है उनमें स्व. संतोष सिंह बुन्देला, रति भानु तिवारी कंज, डॉ. अवध किशोर जड़िया, दुर्गा प्रसाद, दीक्षित दुर्गेश आदि हैं।

श्री गुण सागर 'सत्यार्थी' ने महाकवि कालिदास के मेघदूत का बुन्देली में अनुवाद किया है, जिसके प्रकाशन पश्चात अनेक विदेशी भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ है। इसी क्रम में प्रभुदयाल श्रीवास्तव ने शाकुंतलम का बुन्देली अनुवाद किया है जो अभी अप्रकाशित है। राजीव नामदेव,राना लिधौरी ने बुन्देली में हाइकू संग्रह प्रकाशित कर विशेष नाम कमाया है। इनके अलावा अनेकानेक कवियों ने बुन्देली में पद्य रचनायें की हैं जिसका समस्त ब्यौरा यहां संभव नहीं है।

साहित्य की दूसरी विधा गद्य लेखन में बुन्देली अभी भी पीछे है। इसका मुख्य कारण है बुन्देलखण्ड राज्य न होना, जिससे इसे राज्याश्रय नहीं मिल सका है। यदि हम बुन्देल गद्य के इतिहास को देखें तो श्री हरि विष्णु अवस्थी के अनुसार सन् 1531 में ओरछेश भारती चन्द ने बुन्देली को राजभाषा बनाया और इसके पश्चात् बुन्देलखण्ड के सभी राजाओं ने भी बुन्देली को राजभाषा बनाये रखा। इससे उस समय के ताम्रपत्र, सनदें, पट्टे, वचनपत्र, आमंत्रण पत्र

व पत्राचार सब बुन्देली में पाये जाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से प्रथम बुन्देली गद्य श्लोकों की टीका के रूप में महाकवि केशवदास के बड़े भाई श्री बलभद्र मिश्र ने उपवन विनोद (अप्रकाशित) के नाम से लिखा था। सोलहवीं शती में बृज और बुन्देली में काफी समानता देखने को मिलती है। यही कारण है कि बृज के लेखकों ने यदि बुन्देली शब्दों का उपयोग किया तो वह बृज में ही समाहित हो गया। श्री अवस्थी जी के विचार से वैकुठ मणि शुक्ला ने उसी दरम्यान वैशाख और अगहन महात्म्य नामक गद्य रचनायें कीं। 17वीं शती में संबढ़ा में अक्षर अनन्य ने अष्टांग योग गद्य में लिखा। बुन्देलाओं का राज्य समाप्त होने से साहित्य को राज्याश्रय के अभाव में बुन्देली का विकास रूका सा रह गया। केवल बोली के रूप में समाज उपयोग होता रहा।

इधर बीसवीं शताब्दी में बुन्देली भाषा के विकास के कार्य फिर शुरु हुए। सन् 1940 के अक्टूबर से टीकमगढ़ में पाक्षिक 'मधुकर' पत्रिका का 'प्रकाशन पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में शुरु हुआ जो दिसंबर 1946 तक चला। पत्रिका का प्रकाशन श्री वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद के तत्वावधान में हुआ जिसमें बुन्देली लोकगीत, शब्द संग्रह, कहावतें, मुहावरे, लोक गाथाओं व गीतों का संग्रह हुआ। लोक वार्ता नामक त्रैमासिक पत्रिका के छै अंक श्री कृष्णानन्द गुप्त के संपादन में प्रकाशित हुए। एक पत्रिका श्री कन्हैयालाल 'कलश' गुरसराय ने 'बुन्देली वार्ता' के नाम से 1962 से प्रकाशित की थी। फिर सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की बुन्देली पीठ के द्वारा 'ईशुरी' पत्रिका का प्रकाशन प्रो. कांति कुमार जैन के सम्पादकत्व में शुरु हुआ। कांति कुमार जी के जाने से पत्रिका बन्द सी हो गई थी जिसे अब पुनः प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने शुरु किया है। यह एक स्तरीय पत्रिका है। श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' ने 'सारस्वत' पत्रिका उरई से प्रकाशित की। सन् 1981-82 के लगभग श्री नर्मदा प्रसाद गुप्त ने छतरपुर से 'मामुलिया' नामक बहुत अच्छी पत्रिका निकाली जो लगभग छैः वर्ष तक निकलती रही। इन सभी पत्रिकाओं के प्रकाशन से बुन्देली भाषा और संस्कृति के विकास का प्रयास हुआ। विशेष रूप से गद्य लेखन को प्रोत्साहन मिला। बुन्देली नाट्य संग्रह 'गांव की बातें' श्री हरिमोहन श्रीवास्तव दतिया द्वारा 1989 में प्रकाशित किया गया। बुन्देली गद्य के प्रोत्साहन हेतु सन् 1991 में 'बांके बोल बुन्देली के' तथा सन् 2008 में 'मीठे बोल बुन्देली के' श्री कैलाश मड़वैया ने सम्पादित किये जिनकी सराहना हुई। मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परषिद भोपाल से डॉ.कपिल तिवारी ने 'बुन्देली का इतिहास एवं संस्कृति' का प्रकाशन किया जिसमें बुन्देलखण्ड पर महत्वपूर्ण सामग्री है। डॉ. राम नारायण शर्मा झाँसी ने बुन्देली भाषा और साहित्य का इतिहास लिख कर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

टीकमगढ़ से श्री कृष्ण किशोर द्विवेदी, श्री प्रेमनारायण रूसिया, श्री कपूरचन्द पोतदार के जो अभिनन्द ग्रंथ प्रकाशित हुए उनमें बुन्देखण्ड पर काफी सामग्री है जो पाठनीय है। इनके संपादन में श्री कैलाश बिहारी द्विवेदी, श्री हरिविष्णु अवस्थी और गुणसागर सत्यार्थी ने बहुत मेहनत की। इसी प्रकार के ग्रंथ और अनेक जगह से निकले। बुन्देली बोली को भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में उक्त सभी कृतियों का जो योगदान है उससे बढ़कर योगदान जहां श्री कन्हैयालाल कलश ने व्याकरण लिखकर किया है वहीं डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी और श्री मोहनलाल गुप्त 'चातक' द्वारा बुन्देली शब्दकोष लिखकर किया गया है। इन ग्रंथों की भूरी-भूरी प्रशंसा हुई है। डॉ. रामनारायण शर्मा ने सन् 2000 में बुन्देली कहानियां, सन् 2003 में बुन्देली कथा तथा 2009 में बुन्देली उपन्यास जय राष्ट्र का प्रकाशन किया।

वर्तमान में बुन्देली भाषा और संस्कृति के विकास हेतु जो संस्थाएं कार्य कर रही हैं, उनमें पहला नाम है बुन्देली विकास संस्थान छतरपुर का, जिसके संरक्षक श्री शंकर प्रताप सिंह जी मुन्ना राजा हैं। यह संस्थान 12 वर्ष से भी ज्यादा समय से ग्राम बसारी में बुन्देली मेला आयोजित कर बुन्देली संस्कृति पर आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। बुन्देली उत्सव नामक इस आयोजन में प्रतिवर्ष लगभग 1 सप्ताह तक जो कार्यक्रम होते हैं उनमें मेला,

प्रदर्शनी, कुस्ती, रंगोली, सांस्कृति कार्यक्रम, कबड्डी, बॉलीबॉल, चौपड़, गिल्ली-डंडा, बुन्देली व्यंजन प्रतियोगिताओं, बैलगाड़ी दौड़, रस्सा कसी, बुन्देली नाटक, बुन्देली पोशाक, बहुरूपिया, जलेबी दौड़, मेंढ़क दौड़, दिल-दिल घोड़ी नृत्य, विभिन्न जातियों और विभिन्न विधाओं के बुन्देली गीत, राई, कांडरा, सोहरे, फाग आदि नृत्यों की प्रतियोगिताएं होती है। इसके साथ ही मेले में राव बहादुर सिंह स्मृति सम्मान, बुन्देली साहित्य और संस्कृति हेतु प्रदान किये जाते हैं। लोक कला हेतु डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान तथा दीवान प्रतिपाल सिंह बुन्देला स्मृति, बुन्देली इतिहास सम्मान भी प्रदत्त किये जाते हैं। बुन्देली बसन्त के नाम से एक पत्रिका बुन्देली संस्कृति, साहित्य और इतिहास के संवर्धन हेतु प्रकाशित की जाती है। पत्रिका संपादन में डॉ. बहादुर सिंह परमार और सह संपादक डॉ. के.एल. पटैल व हरिसिंह घोष का श्रम और सहयोग अति प्रशंसनीय है।

बसारी के आयोजन से प्रेरित होकर नगर पालिका परिषद् हटा जिला दमोह में भी मेला और पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया। 'बुन्देली दरसन' नामक पत्रिका का सम्पादन श्री एम.एम. पाण्डेय द्वारा कुशलता पूर्वक किया जा रहा है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए माननीय जयंत कुमार मलैया जी के संरक्षण में दमयंती बुन्देली महोत्सव दमोह और 'बुन्देली अर्चन' पत्रिका दमोह से प्रकाशित हाने लगी है। पत्रिका के प्रबंध सम्पादक इंजीनियर अमर सिंह राजपूत इसमें महत्वपूर्ण जिम्मेवारी का निर्वहन कर रहे हैं, जो बधाई के पात्र हैं। इधर दो वर्ष से 'अथाई की बातें' नामक त्रैमासिक पत्रिका छतरपुर से प्रकाशित होने लगी है। जिसके प्रधान सम्पादक श्री सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' हैं। बुन्देली गद्य, पद्य और इतिहास व संस्कृति के उन्नयन हेतु यह एक अच्छा प्रयास है।

उपरोक्त तमाम प्रयासों से बुन्देली भाषा, साहित्य, इतिहास और संस्कृति को जो बल मिला है। इससे निश्चय ही बुन्देली का भला करेगा। बुन्देलखण्ड के विभिन्न भागों में भाषा के थोड़े-बहुत अन्तर को दूर करने हेतु बुन्देली भाषा के मानकी करण के प्रयास शुरु हो गये हैं। ओरछा के पूर्व नरेश के वंशज महाराज मधुकर शाह के संरक्षण में बुन्देली के विकास का चल रहा है। जिसमें डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी श्री हरिविष्णु अवस्थी, डॉ. दुर्गा प्रसाद दीक्षित दुर्गेश, श्री गुण सागर सत्यार्थी, श्री कैलाश मड़बैया आदि महत्वपूर्ण योगदान हैं। लगभग 3-4 वर्षों से इस कार्य हेतु बैठकें महाराज मधुकर शाह के द्वारा कराई जा रही हैं। जिनमें बुन्देली के साहित्यकार पूरे बुन्देलखण्ड से आमंत्रित किये जाते हैं। इस वर्ष 14-15 फरवरी को यह आयोजन ओरछा में आयोजित हो रहा है।

अभी तक के प्रयासों से बुन्देली साहित्य को तो बल मिलता लेकिन बुंदेली बोलने वालों की संख्या में निरन्तर कमी हो रही है। बुन्देली बोलने वाले नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रहे हैं। मगर अब गांवों में भी पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में वृद्धि होने से बुन्देली कम बोली जाने लगी है। गांव-गांव में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों और टी.वी. ने अंग्रेजी और खड़ी बोली को बढ़ावा दिया है। इधर गांवों से बड़े शहरों में रोजगार हेतु पलायन ने भी बुन्देली बोलने वालों पर खड़ी बोली व अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ाया है। यदि बुन्देली बोलने वाली इसी तरह घटते जाएंगे तो एक दिन यह बोली समाप्त हो जाएगी। अत: सभी सजग साहित्यकारों और समाज सेवियों का यह दायित्व बनता है कि साहित्य में विकास और संस्कृति के संरक्षण के साथ ही बुन्देली बोलने को (जीवित रखने हेतु) प्रयास भी किये जाएं। इस हेतु विशेष प्रयास भावी पीढ़ियों को बुन्देली बोलने के लिए करना अनिवार्य है। मेरे विचार में निम्नांकित प्रयास करने से कुछ लाभ हो सकता है।

1. हम सब आपकी बातचीत बुन्देली में करने को बढ़ावा देने का प्रयास करें। बुन्देली बोलने में नई पीढ़ी अपने आपको पिछड़ा समझे जाने की झिझक रखती है, जबकि सिंधी, पंजावी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि ऐसा नहीं सोचते।
2. अपने क्षेत्र के मंत्रियों, सांसदों और विधायकों व बड़े नेताओं को बुन्देखण्ड में भाषण करने हेतु संस्थाओं

और प्रभावशाली लोगों द्वारा प्रेरित किया जाए। इससे सुनने वालों पर अच्छा असर होगा।

3. बुन्देलखण्ड के क्षेत्र में संस्थाओं द्वारा सरकार से मांग की जाए कि बुन्देलखण्ड के जिलों में बुन्देली की एक सहायक पुस्तिका हो जो बुन्देली भाषा, साहित्य और संस्कृति पर आधारित हो।
4. बुंदेलखण्ड क्षेत्र के स्कूलों में पुस्तकालय के लिए बुन्देली साहित्य की पुस्तकें खरीदने हेतु प्रयास हों।
5. बुंदेलखण्ड के स्कूलों में बुंदेली में लेख, भाषण और गायन की प्रतियोगिताएं हों। इस हेतु संस्थाएँ प्रयास कर सकती हैं। पं. विश्वनाथ शर्मा जिस प्रकार स्कूलों में सामग्री वितरण कर रहे हैं। उसी प्रकार यह प्रयास भी किया जा सकता है।
6. बुन्देली विकास का कार्य कर रही संस्थाएं अपने कार्यक्रमों में बच्चों के लिए बुन्देली में भाषण, लेख, कविता, किस्सा, कहना आदि प्रतियोगिताओं को बढ़ावा दे सकती हैं।
7. यद्यपि पत्राचार का रिवाज कम हो गया है, लेकिन आपस में जो पत्राचार करे वह बुन्देली में करें तो इससे बुन्देली के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।
8. बुन्देली पर्वो, त्यौहारों, विवाहों में बुन्देली गीतों के गायन को बढ़ावा मिले इस हेतु प्रयास हों। इन गीतों की सीडी तैयार हों। यह कार्य भी संस्थाओं के माध्यम से संभव है।
9. टीवी चैनलों पर बुन्देली के कार्यक्रमों को आकाशवाणी के समान स्थान मिले इस हेतु बुन्देली साहित्यकार व कलाकार प्रयास कर सकते हैं। इससे भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।
10. अपने क्षेत्र में होने वाले कवि सम्मेलनों में बुन्देली के सम्मेलन अधिक हों, इस बात पर संस्थाएं बल दें। संगीत सम्मेलन भी बुन्देली गीतों पर आधारित हों। इससे छात्रों की रुचि बुन्देली में बढ़ेगी। महंगाई डायन खाय जात है, जैसे लोकप्रिय सामाजिक गीत लिखे जायं तो टीवी और फिल्मों में स्थान पा सकें।
11. बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में बुन्देली भाषा और संस्कृति पर पीएचडी के प्रयास हों इससे छात्रों का रुझान बुन्देली के प्रति बढ़ेगा।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि बिना किसी राजकीय संरक्षण के बुन्देली के विकास हेतु जो प्रयास हुए हैं और हो रहे हैं वे सराहनीय हैं तथा इन प्रयासों को आगे और अधिक गति देकर हम अपने लक्ष्य की ओर और आगे बढ़ सकते हैं। प्रयास ही मंजिल तक पहुंचाते हैं।

राजमहल के पास,
टीकमगढ़
मो. 9993750271

हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि में दमोह जिले का योगदान

– हरिविष्णु अवस्थी

ऐसी मान्यता है कि दमोह नगर का नामकरण राजा नल की राज महिषी महारानी दमयन्ती के नाम पर हुआ। दमोह एक प्राचीन नगर है इसका प्रमाण यहां स्थित प्राचीन दुर्ग के ध्वंसा विशेषों में मिले मुगल कालनी शासकों के अनेक शिलालेख हैं। ब्रिटिश शासन काल में सन् 1838 ई. में दमोह को दमोह जिले का मुख्यालय बनाया गया था। इस प्रकार लगभग पौने दो सौ वर्षों से दमोह नगर दमोह जिले का मुख्यालय है।

दमोह जिले के अंतर्गत आने वाले भू-भाग में अनेक प्राचीन नगर शामिल हैं तथा भलीभांति समपत्र अनेक ग्राम भी। मध्यकाल से ही जिले के अंतर्गत आने वाले नगरों, ग्रामों में साहित्य सृजन का सिलसिला चलता आ रहा है, जो निरंतर गतिशील है।

श्री रमाशंकर खरे के अनुसार चंदेल नरेश परमार्दिदेव (परमाल) के राजाकवि जगनिक का जन्म ग्राम सकोह तहसील हटा में हुआ था। जबकि डॉ. कृष्णनंद उन्हें ललितपुर जिले के महरौनी तहसील अंतर्गत मदनपुर का बताते हैं। श्री गनेशीलाल बुधौलिया के अनुसार जगनिक हमीरपुर जनपद के निवासी थे। पं. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' ने उन्हें महेवा निवासी बताया है। इस प्रकार जगनिक के जन्म स्थान के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। अस्तु यह वर्तमान पीढ़ी हेतु एक शोध का विषय है।

बुन्देल केसरी छत्रसाल का 'छत्रप्रकाश' नाम से जीवन चरित्र के रचियता श्री गोरेलाल जिन्हें लाल कवि के नाम से अधिक जाना जाता है को श्री रमाशंकर खरे ग्राम सिकोलिया जिला दमोह का निवासी कहते हैं। मिश्र बंधुओं के अनुसार गोरेलाल, लाल कवि मऊ के निवासी थे। किन्तु पं. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' श्री रमाशंकर खरे के मत की पुष्टि करते हुए लाल कवि को संक्डोली हटा का निवासी ही मानते हैं। चूंकि श्री रमाशंकर खरे एवं वरिष्ठ साहित्यन्वेशी पं. गोरीशंकर द्विवेदी दोनों ही महानुभाव बुन्देलखण्डवासी है। अस्तु बहुमत के आधार पर ही श्री गोरेलाल कवि का जन्मस्थान सकोलिया ही सही प्रतीत होता है।

परमाल के राजकवि जगनिक की रचना से देश का पूरा साहित्य संचार परिचित है। श्री गोरेलाल 'लाल कवि' द्वारा रचित 'छत्रप्रकाश' ग्रंथ को तो साहित्यकारों एवं इतिहासकारों ने बहुत महत्व दिया। ब्रिटिश शासन ने 'छत्रप्रकाश' ग्रंथ को आधार बनाकर ही आल्हा महोबाखण्ड की रचना की गई थी। एक किंही भावसिंह लोधी का उल्लेख भी हमें इसी काल में मिलता है। जिनके कृतित्व के अनुसंधान की महती आवश्यकता है।

संवत् 1938 से संवत् 2000 के मध्य के रचनाकारों में हटा नगर में जन्में हाजी अली खां का कविता काल एवम् 1938 से माना जाता है। आप संस्कृत, हिन्दी एवं उर्दू भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। आपने वेद परोपकार, खलदल गंजन, हाली दृष्यं माला, अन्जाम वही इनाटका, मोरध्वज चरित्र, इन्द्र सभा का ख्याल, मो. अष्ट, शराब की ऐसी तैसी ग्रंथों की रचना की। यह सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं।

इसी काल में नंदूलाल 'प्रेमदास' ने भक्तिपूर्ण 'प्रेम गीतावली' 'प्रेम' एवं 'प्रेम विलास' ग्रंथों की रचना की। आप संगीत के भी अच्छे ज्ञाता थे। पथरिया माधव प्रसाद सप्रे ने 'टोकरी भर माटी', 'जीवन संग्राम के कुछ क्षण' तथा 'गीता रहस्य' आदि ग्रंथों की रचना की। आपने 'छत्तीसगढ़ मित्र' 'हिन्दी केसरी' तथा चित्रमय जगत का सम्पादन एवं श्री शारदा और कर्मवीर का प्रकाशन किया। श्रीरूठ निबंध लेखक रहे।

रनेह निवासी हरिराम त्रिवेदी 'हरि' का कविता काल संवत् 1960 से माना जाता है, ने 'कैकई' तथा 'हरदौल'

नाटक 'प्रिय प्रवास', 'कंस सभा', 'बुन्देली ख्याल लावनी' आदि कृतियों की रचना की।

इसी काल में हिण्डोरिया निवासी मुहम्मद बजीर खां ने 'बसंत बहार', 'सती सुलोचना' नाटक एवं 'सदाचार दर्पण' नामक ग्रंथों की रचना की। सीता नगर निवासी देवदत्त सीरोठिया ने 'हरिहर दृष्ट' 'सीता नगर' 'अंधे की लाठी' ग्रंथों की रचना की। यह सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं। सीरोठिया जी की धर्मपत्नि श्रीमती कोशाकई भी कवियत्री थी। किन्तु उनका कोई ग्रंथ प्रकाश में नहीं आया है।

इसी काल में हटा के आत्मा राग देवकर ने 'त्रैलोक सुन्दरी' 'आदर्श मित्र' 'मन मोहनी' 'भयंकर दुर्दशा' 'माया मारी चका' 'पानी का बुलबुला' सभी उपन्यास 'स्नेह लता' (गल्प) की रचना की जो प्रकाशित है। इनका काव्य संग्रह का भी एक ग्रंथ 'कुसमावली' नाम का भी है।

हटा निवासी लक्ष्मी प्रसाद मिस्त्री 'रमा' का कविता काल संवत् 1967 से माना जाता है। 'रमा' ने बंधु वियोग, रेवा महात्म्य, काग संग्रह, स्तुति प्रबंध, दृष्टान्त माला, चतुर गवैया, कब्बाली गुलबहार, श्री गौपुकार, प्रभावी संग्रह, प्रेम प्रबोध, लावनी चौदह रत्न, कलगी, काल का चक्र, उर्वसी पीड़ा, राजकुमारी ऊषा, स्वर्गांगना, सती मदालसा, प्रेम शतक, लावनी लक्ष्मी बिलास, महाकवि केशव और उनके ग्रंथ, राष्ट्रीय रत्न, महिला गायन, श्री गांधी श्रृद्धांजलि आदि अनेक ग्रंथों की रचना की। इन्हीं के भाई रामसहाय मिस्त्री ने 'मित्र मिलाप' तथा मोहना रानी ग्रंथों की रचना के अतिरिक्त स्फुट छंदों एवं विभिन्न विषयों पर अनेक आलेख भी तैयार किये।

हटा निवासी रघुवर दास महन्त ने स्फुट छंदों की रचना की। हिंडोरिया निवासी रघुवर प्रसाद ने भी स्फुट छंदों की रचना की। सर्रा निवासी मोहन शर्मा विद्याभूषण एक श्रेष्ठ पत्रकार के रूप में स्थापित हुए। उन्होंने इटारसी में रहकर 'मोहनी' पत्र इटारसी तथा 'रसायन एक पैसा' पत्रों का सम्पादन एवं प्रकाशन किया।

सम्वत् 2000 वि. में वर्तमान संवत् 2068 वि. तक के साहित्यकारों की एक लम्बी श्रृंखला है। हनुमान प्रसाद तिवारी ने 'विचार' पत्र का सम्पादन कर यश अर्जित किया। पत्रकार के साथ गद्य लेखक के रूप में भी उन्हें यश प्राप्त हुआ। दमोह निवासी दरबारी लाल 'सत्य' भक्त ने कृष्ण भक्त के उपनाम से गद्य एवं पद्य दोनों में अपनी लेखनी चलाकर साहित्य सृजन किया।

भोज ग्राम निवासी बनवारीलाल गुरु
'बेनी' ने स्फुट छंदों की रचना की।

संवत् 2020 वि. से जिन का कविता काल माना जाता है इनमें पथरिया के प्रेम नारायण दुबे अच्छे निबंध लेखन हेतु जाने जाते हैं। आपके पांच सौ से भी अधिक निबंध प्रकाशित हुए हैं। केवलारी के डॉ. गनेश खरे को जय शंकर प्रसाद के प्रगीत शोध प्रबंध पर पीएचडी की उपाधि से अलंकृत किया गया, जो कवि एवं कहानीकार भी हैं।

दमोह के राजनेता विठ्ठल भाई पटेल को बुन्देलखंड, मध्यप्रदेश से नहीं पूरा देश एक सफल गीतकार के रूप में जानता है। सिने संसार में भी उनके गीत और सराहे गए हैं।

ललित निबंधकार, कथाकार, कवि, आलोचक, लोकविद, श्रेष्ठ वक्ता डॉ. श्याम सुन्दर दुबे का जन्म वरतलाई हटा में हुआ। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एमए का पीएचडी की उपाधि अर्जित की। शासकीय पीजी काविज के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए डॉ. दुबे ने अपनी रचना धर्मिता के बालस डिपो में कीर्ति अर्जित की है। आपकी प्रकाशित कृतियों में बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन, काल मृगया, दाखिल खारिज, जड़ों की ओर, बुन्देलखण्ड की लोक कथाएं, मरे न माहुर खाय, दीते खेत में बिजू का, विवाद बांसुरी की टेर, बिहारी सनसई, काव्य और चित्रकला का अंर्तसंबंध, इतने करीब से देखो हमारा जाना हंसता क्यों नहीं, लोक: परम्परा पहचान एवं प्रवाह संस्कृति समाज और संवेदना, समसामायिक निबंध, ऋतुएं जो आदमी के भीतर हैं, धरती के अनंत चक्रों में, लोक चित्रकला, परंपरा ओर रचना दृष्टि आदि अनेक कृतियां

प्रकाशित किया जा चुका है। डॉ. दुबे जी की लेखनी अगध गति से संचालित है। वर्तमान में आप डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वद्यिालय सागर में ..... पीठ के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

हटा के ही डॉ. मनमोहन पाण्डेय ने .... पर शोधकार्य कर पीएचडी की उपाधि अर्जित की है। विगत वर्षों से आप बुन्देली दरसन स्मारिका का सफलता पूर्वक सम्पादन कर रहे हैं। दमोह में जन्में प्रो. नईम को कौन नहीं जानता। डॉ. रमेश चन्द खरे दमोह ने स्वर्गीय अम्विका प्रसाद दिव्य को कृतित्व पर शोध कार्य कर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। आपकी ... , विरागी अनुरागी, ... कृतियां प्रकाशित हैं।

दमोह के श्री मुन्नीलाल वर्मा अधिवक्ता ने 'भारत दर्शन' दमोह के ही एसएस सप्रे ने खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड ग्रंथ की रचना की है। वांदकपुर के स्व. जगमोहन वाजपेयी 'मोह' तो समस्या पूर्ति के लिए विशेष रूप से जाने जाते रहे। दमोह के श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव का 1857 नाराहट की वीरांगना उपन्यास प्रकाशित है। दमोह नगर के मनोहर 'काजल' भारतीय वायुसेना के सेवा निवृत्त अधिकारी के कहानी संग्रह जल पांखी, इनकलाव जिन्दावाद तथा मुक्ति पर्व और अन्य कहानियां प्रकाशित हैं। आप एक अच्छे चित्रकार एवं निवंधकार हैं। कई सम्पादन आपको प्राप्त हो चुके हैं।

हटा के हनुमान प्रसाद अरजरिया 'जीजा बुन्देलखंडी' एवं दमोह के जानकी प्रसाद 'जिजी' को बुन्देलखण्ड का वच्चा-वच्चा जानता है। जिनकी हास्य रस एवं व्यंग्यपूर्ण रचनाओं की पंक्तियां लोग समय-समय पर दुहराना नहीं भूलते। दिन का सोन वरगता तो कवि सम्मेलनों में धूम मचाने में अग्रणी हैं।

उनकी अंकुर की कृतज्ञता, दीवारों के खिलाफ, प्रतिनिधि साहित्यकार, माटी कवि आदि मौलिक एवं समाचार गंथ है।

पथरिया के डॉ. छविनाथ तिवारी को बुन्देली के शब्द सामर्थ के अनुशीलन एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन पर शोध हुए के प्रकार स्वरूप पीएचडी की उपाधि से अलंकृत किया गया है। जिले के साहित्यकारों के परिचय ग्रंथ का उन्होंने सम्पादन किया है। रमाशंकर खरे अपनी रचना धर्मिता के कारण साहित्य सत्ता में स्थापित हो चुके हैं।

श्री दिनकर सोनवत्ताकर की अंकुर की कृतज्ञता, प्रतिनिधि साहित्यकार, मराठी कवि एवं दीवारों के खिलाफ प्रकाशित कृतियां हैं। कवि सम्मेलनों में अपने रचना पाठ से धूम मचाने वाले सोनकर जी अच्छे कवि भी हैं। पथरिया के डॉ. छविनाथ तिवारी ने बुन्देली के शब्द सामर्थ के अनुशीलन ही भाषा वैज्ञानिक अध्ययन पर शोध कार्य कर पीएचडी उपाधि अर्जित की है। जिमि 69 साहित्यकारों का परिचय ग्रंथ का आपने सम्पादन किया है। रमाशंकर खरे भी अनी रचना धर्मिता के वल पर साहित्य जगत में स्थापित हो चुके हैं।

उपर्युक्त साहित्यकारों के अतिरिक्त गद्य एवं पद्य की विभिन्न विधाओं के रचना धर्मियों की साहित्य साधना भी उल्लेखनीय है। इनमें से कुछ साहित्य जगत से और कुछ इस नश्वर संसार से विदा ले चुके हैं।

श्री अजीत श्रीवास्तव एडवोकेट, भगवती प्रसाद दुवे, वावूलाल सेन, वलराम दत्त दुवे, चन्द्र कुमार असाटी, चन्द्रकांत स्वर्णलंकर, चन्द्रकांत श्रीवास्तव, दीनदयाल गुरु, डॉ. देवकी नंदन जैन 'वैभव', डी.पी. सिंह, गज राजा सिंह, हर गोविन्द चौरसिया, हमेन मोझुखर, जय राजा सिंह 'सुधांशु', जमुना प्रसाद 'जलेश', जानकी शरण तिवारी, कामता प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. कोमल चन्द गर्ग 'कमलेश', कपूर चन्द जैन, माधव सिंह 'मधुकर', महानंद आदर्श डॉ. महेश प्रसाद चतुर्वेदी, महन्त दाना जी, मानिक चन्द जैन, मनीष यादव, मुन्नीलाल वर्मा, मोहन सिंह नर्वदा प्रसाद शुक्ल 'जिज्ञासु', निर्मल डंडौरिया, नारायण सिंह नवोदित निगम, पलानंद कटारे, परमानंद दुवे, प्रेमचंद विद्यार्थी, प्रेमचन्द प्रेमेन्दु, प्यारेलाल शर्मा, प्रेम शंकर ताम्रकार घायल, प्रेम प्रकाश चौबे, राजधर

जैन मानस हंस, रामचरण साहू निर्झर, रामगोपाल श्रीवास्तव अनिल, रामकुमार खरे अनुज, रमेश वर्मा, रामकृष्ण अर्गल राज, रामनाथ अकेला, रविशंकर मिश्रा, रमाकांत श्रीवास्तव, सत्य मोहन वर्मा, सुरेश श्रीकांत चौधरी, सुबोध कुमार श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश वर्मा, सोनेलाल रैकवार, श्यामसुंदर शुक्ला शैलेन्द्र, विष्णु प्रसाद बादल, विमल लहरी, विजय कुमार व्यास तथा महिला रचनाकारों में प्रेमलता मौसुदी 'वत्सला' जैन ने संस्कृत समसामायिक पाठ का पद्यानुवाद किया जो प्रकाशित है। श्री मनी कुसुम खरे 'श्रुति' एवं श्रीमती चन्द्रा नेमा दमोह की रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। सुश्री लक्ष्मी ताम्रकार की काव्य कृतियां 'तपिस' एवं 'दर्द की दहलीज' पर प्रकाशित है। डॉ. प्रेमलता नीलम की 'नील नयन के पार', 'नजर भर हेरो' 'हरदौल और कुंजा' 'अहसास में तुम हो' 'बुंदेलखण्ड के संस्कार गीत' एक विश्लेषण आदि कृतियां प्रकाशित हैं। आकाशवाणी छतरपुर, भोपाल इंदौर, नागपुर आदि से रचनाओं का प्रसारण होता रहता है। आप एक मंचीय कवियत्री हैं। श्रीमती ऊषा शिवहरे 'नीरांजना' के लेख, कविता, कहानी, लघुकथाएं आदि एवं श्रीमती विमल तिवारी 'कल्याणी' की रचनाएं विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। श्रीमती गायत्री खरे 'केशव' गैसावाद एवं श्रीमती ववीता चौवे की रचनाएं पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। श्रीमती नूतन साहू की काव्य कृति 'दर्द हुए अक्षर' प्रकाशित है।

की काव्य कृतियां 'तपिस' एवं 'दर्द की दहलीज' पर प्रकाशित है। डॉ. प्रेमलता नीलम की 'नील नयन के पार', 'नजर भर हेरो' 'हरदौल और कुंजा' 'अहसास में तुम हो' 'बुंदेलखण्ड के संस्कार गीत' एक विश्लेषण आदि कृतियां प्रकाशित हैं। आकाशवाणी छतरपुर, भोपाल इंदौर, नागपुर आदि से रचनाओं का प्रसारण होता रहता है। आप एक मंचीय कवियत्री हैं। श्रीमती ऊषा शिवहरे 'नीरांजना' के लेख, कविता, कहानी, लघुकथाएं आदि एवं श्रीमती विमल तिवारी 'कल्याणी' की रचनाएं विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। श्रीमती गायत्री खरे 'केशव' गैसावाद एवं श्रीमती ववीता चौवे की रचनाएं पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। श्रीमती नूतन साहू की काव्य कृति 'दर्द हुए अक्षर' प्रकाशित है।

श्री अली मुहम्मद, आवेदुल्ला रहमान, अनरव, गफूर तायर, हाफिज कुतुबुद्दीन निस्तर जनाव करमामी नैयर दमोही की रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। इस प्रकार दमोह जिला के साहित्यकार निरंतर माता सरस्वती के आदर में अपना अंशदान करते रहते हैं।

अवस्थी चौराहा, किले का मैदान,
टीकमगढ़ (म.प्र.)
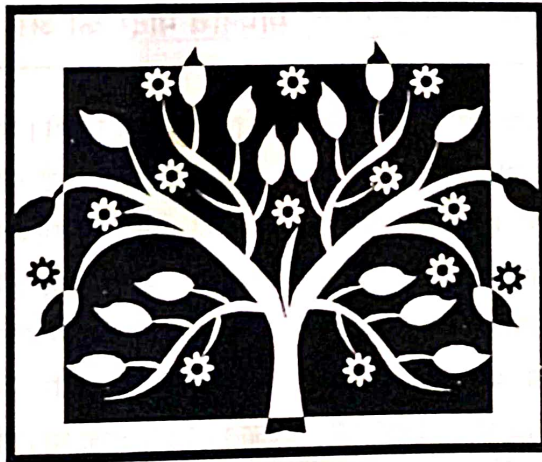
सोमनाथ मंदिर : अतीत की यात्रा का सुंदर, रोचक दुखद प्रसंग

– डॉ. राहुल मिश्र

प्राध्यापक, केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लद्दाख

यह बात पिछले बरस की अवसान बेला की है। मैं अपने अभिन्न मित्र राकेश कुमार गौतम 'मेजर' के साथ चित्रकूट में घूम रहा था। घूमते-घूमते बात बुंदेलखंड में शैव मत के विस्तार और उसके प्रमुख केंद्रों तक पहुंच गई। दरअसल, मुझको बुंदेलखंड की संस्कृति, सभ्यता, कला और स्थापत्य पर आधारित एक स्मारिका के लिए एक आलेख लिखना था। इस आलेख का विषय तलाशते-तलाशते मन में आया कि क्यों न बुंदेलखंड में फैले शैव मत के ऊपर कोई आलेखलिखा जाए। बातों के दौरान ही मेरे मित्र राकेश ने बताया कि कर्वी से मानिकपुर मार्ग पर स्थित चर गांव में एक शिव मंदिर है, जिसे सोमनाथ मंदिर कहा जाता है। राकेश ने बताया कि मैं भी वहां नहीं गया हूं, लेकिन उस मंदिर के बारे में सुनकर अक्सर इच्छा होती है कि वहां जाया जाय।

बुंदेलखंड में सोमनाथ, नाम सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। यह तो सच है कि शिवभक्त राजा, शासक या धर्मभीरू लोग अपने नाम के साथ 'नाथ' या 'ईश्वर' जोड़कर शिव मंदिर का निर्माण कराया करते थे, किंतु सोमनाथ का नाम प्राय: गुजरात के प्रभासपतन नामक स्थान पर चालुक्य शासकों द्वारा बनवाए गए सोमनाथ मंदिर के लिए रूढ़ हो गया था। फिर पाठा की दुर्गम विंध्य श्रृंखलाओं के बीच सोमनाथ मंदिर देखने और जानने-समझने की उत्कट लालसा को रोक नहीं सका।

दिसंबर और जनवरी, दो माह बीत गए। कभी राकेश जी की व्यस्तता, तो कभी मेरी व्यस्तता, किंतु इस बीच सोमनाथ मंदिर जाने की इच्छा बनी ही रही और फरवरी के पहले दिन हम दोनों सोमनाथ मंदिर के लिए चल ही पड़े।

सोमनाथ मंदिर का अग्र भाग

सोमनाथ मंदिर पहुचकर हम दोनों के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। मंदिर पुराना अवश्य होगा, धार्मिक आस्था का बड़ा केंद्र भी होगा, लेकिन मंदिर का स्थापत्य मन को मोह लेने वाला होगा, ऐसा हम लोगों ने सोचा भी नहीं था। मंदिर एक छोटी सी वृत्ताकार पहाड़ी पर था। पहाड़ी से लगा हुआ एक पक्का रास्ता भी कुछ दूर तक था, जो आगे कच्चा और ऊबड़-खाबड़ था और चर गांव में जाकर मिल जाता था। लोगों ने बताया कि एक दूसरा रास्ता
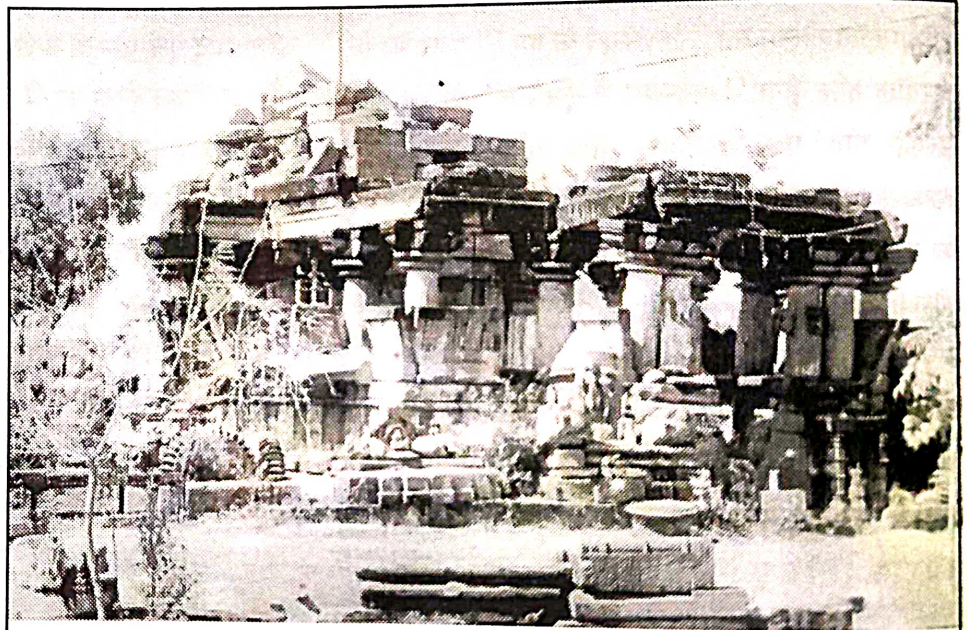
भी है, जो कर्वी-मानिकपुर मार्ग पर मालिन टंकी से मदना गांव संपर्क मार्ग से होते हुए सीधे सोमनाथ मंदिर पहुंचता है। हालांकि वह रास्ता भी कच्चा और ऊबड़-खाबड़ है, फिर भी चार पहिया वाहन के लिए रास्ते का उपयोग किया जा सकता है।

मंदिर तक पहुंचने के लिए कुछ सीढ़ियां भी बनी हुई थीं। सीढ़ियों के पास ही लाल बलुए पत्थर में बनी हुई मुगदरधारी योद्धा और नृत्यगणेश की मूर्तियां रखी हुई थीं। इसके साथ ही चित्रात्मक प्रस्तरों के भग्न खंड रखे हुए थे। संभवत: इन प्रस्तरों को गांव के लोगों ने इस प्रकार रखा होगा। इस तरह मंदिर के दरवाजे पर पड़ी हुई भावात्मक प्रस्तर कलाकृतियों, भग्न मूर्तियों ने ही इस बात को साबित कर दिया था कि मंदिर बहुत पुराना होगा और इसका स्थापत्य भी अपने आप में बेजोड़ रहा होगा।

मंदिर में ऊपर पहुंचकर देखा तो चारों ओर भग्न प्रस्तर, गुंबदों के हिस्से, मूर्तियां और विभिन्न प्रस्तर कलाकृतियां पड़ी हुई थीं। समूची वृत्ताकार पहाड़ी पर मंदिर बना रहा होगा, ऐसा अनुमान लग रहा था, किंतु चारों तरफ मैदान के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं था। एक खंडहर, जिसे मंदिर कहा जा सकता था, वही शेष था और वह भी काफी हद तक गिर चुका था।

भग्न खंडहर में अष्टकोणीय मण्डप था, जिसकी छत गिर चुकी थी। मण्डप के गुंबदों में अप्सराओं की सुंदर मूर्तियां थीं। मण्डप के आगे गर्भगृह जैसा था, जहां शिवलिंग स्थापित था। यह गर्भगृह सुरक्षित लगता था, किंतु इसमें हुए नवनिर्माण को देखकर लगता था कि इसमें कुछ बदलाव हुआ है, यह किस कारण से हुआ, इसको कुछ कहा नहीं जा सकता। गर्भगृह और मण्डप का पिछला हिस्सा एकदम ध्वस्त हो चुका था। इसको देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता था कि यदि इस बची-खुची इमारत को बचाने की कोशिश नहीं की जाती तो यह भी गिर जाएगी। इस खंडहरनुमा गर्भगृह और मण्डप की प्रदक्षिणा के लिए एक रास्ता जैसा बनाया गया था और इसके दोनों ओर टूटी-फूटी मूर्तियों को, मण्डप के भग्नावशेषों को और गुंबदों-प्रस्तरों को व्यवस्थित करके रखा गया था। इसी प्रदक्षिणा-पथ में विभिन्न आकार-प्रकारों के अनेक शिवलिंग रखे हुए थे, इनको देखकर ऐसा अनुमान होता था कि जब यह मंदिर पूरी तरह से बना होगा,
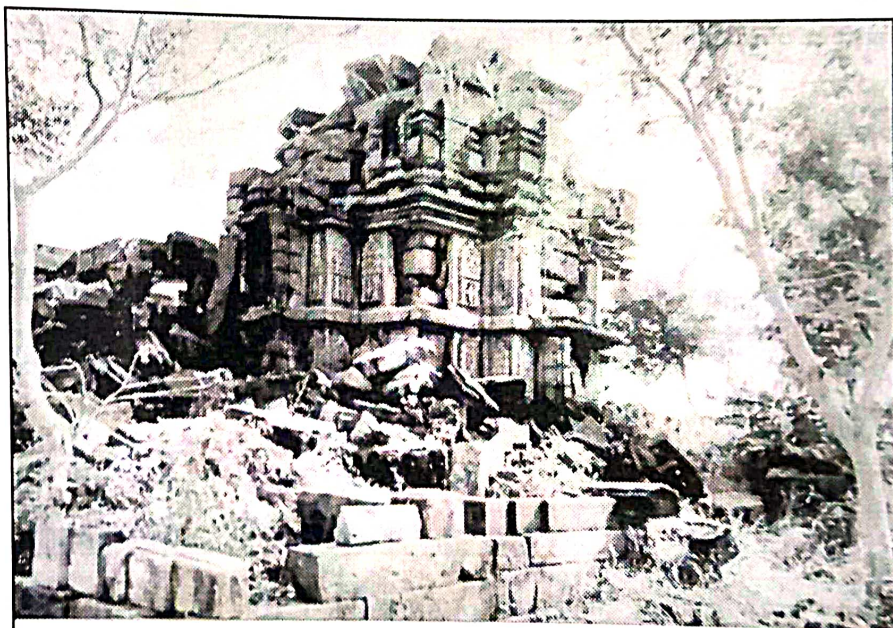
सोमनाथ मंदिर का पृष्ठ भाग

तब इसमें छोटे-छोटे कई शिव मंदिर रहे होंगे। मंदिर के पीछे की ओर वाल्मीकि नदी बहती है, जो आगे चलकर वारूणी नदी में मिल जाती है।

मंदिर के पूर्वोत्तर में बरकोठ नाम का गांव है, जहां पर कुछ ध्वंसावशेष हैं। पूर्व की ओर लालापुर की पहाड़ी, देउरा-नेउरा की पहाड़ी और लहरी पुरवा हैं, यह सभी

ऐतिहासिक महत्व के स्थल हैं और इन स्थलों पर ध्वंसावशेष आदि भी प्राप्त होते हैं। मंदिर से लगभग ढाई किलोमीटर दूर लोखरी गांव है, जहां ऋषियन गुफा है। इस गुफा का प्रमुख द्वार भी प्रस्तरांकित भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। ऋषियन गुफा आज भी अपने प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध है, अतीत में इसका शैव साधना में भी बहुत महत्व रहा होगा। इसके नाम और सोमनाथ मंदिर से निकटता के माध्यम से इस तथ्य को पुष्ट किया जा सकता है। मंदिर के पुजारी रामकृष्णदास त्यागी से हमें यह जानकारी मिली कि किंवदंतियां भी इस मंदिर से जुड़ी हुई हैं, जो हमें पता चलीं। मंदिर की वृत्ताकार पहाड़ी के आस-पास खुदाई करने पर मूर्तियां मिलती हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर के एक या दो खंड अभी जमींदोज ही हैं। संभवत: ऐसे गुप्त तहखाने एकांतिक साधना के लिए प्रयुक्त होते रहे होंगे।

इतना सब जानने-समझने के बाद हम लोग सोमनाथ मंदिर से लौट पड़े। वापस आकर अपनी मित्र मंडली को और कुछ वरिष्ठ लोगों को सोमनाथ मंदिर की प्राचीनता के बारे में तथा इसकी दयनीय स्थिति के बारे में बताया और फिर यह तय किया गया कि मंदिर के संरक्षण के लिए शासन-प्रशासन को लिखा जाय, लिहाजा एक ज्ञापन चित्रकूट के मंडलायुक्त को देकर मंदिर को संरक्षित पुरातत्व धरोहर के रूप में घोषित किए जाने और इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को दिए जाने की मांग की गई।

इसी बीच यह विचार बना कि मंदिर के ऊपर एक वृत्तचित्र भी बनाया जाय। अत: राकेश गौतम, अर्जुन प्रकाश गुप्त, अनिल त्रिपाठी और मैं, चारों लोग एक बार फिर सोमनाथ मंदिर पहुंचे। बुंदेलखंड का यह क्षेत्र बघेल शासकों के अधीन था, इस आधार पर यह अनुमान लगाया जा रहा है था कि इस मंदिर का निर्माण बघेलों द्वारा कराया गया होगा।

हम लोगों ने दोबारा सोमनाथ मंदिर पहुंचकर गहनता के साथ इधर-उधर पड़ी भग्न प्रस्तर मूर्तियों को देखा। इनमें से कई मूर्तियां दैनंदिन जीवन को व्याख्यायित कर रही थीं। इन मूर्तियों में से कुछ युद्ध की भी थीं, कुछ मातृ रूप प्रकट करतीं मूर्तियां थीं, कुछ मूर्तियों में दैवासुर संग्राम दर्शाया गया था और ऐसी ही एक विशालकाय प्रतिमा शेषशायी विष्णु की भी थी। गुंबदों पर बनी विभिन्न मूर्तियों के साथ ही अन्य तमाम प्रस्तर मूर्तियों की अपनी एक विशेषता थी कि उनके सिर के ऊपर गूमड़ जैसा बना हुआ था, जैसे कोई छोटा-सा शिवलिंग बना हो। इसके साथ ही मंदिर के स्थापत्य को देखकर यह कहा जाना कि मंदिर बघेलों द्वारा बनवाया हुआ है, सही नहीं लग रहा था। इस कारण किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के बजाय हम लोग मंदिर की वीडियो रिकार्डिंग करके वापस लौट आए।
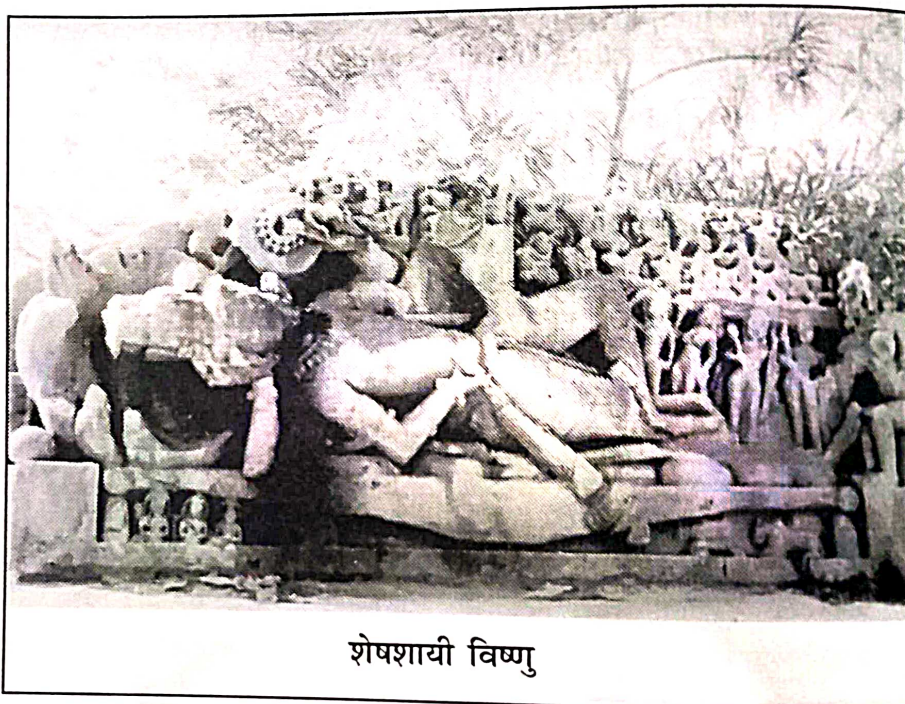
शेषशायी विष्णु

हम लोगों की एक बार फिर तैयारी हुई, सोमनाथ

मंदिर जाने को। इस वार हम लोगों का नेतृत्व बुंदेलखंड के जाने-माने इतिहासकार श्रद्धेय राधाकृष्ण बुंदेली ने किया। 18 फरवरी को हम चार लोगों के साथ ही महेंद्र पटेल, दीपू दीक्षित, प्रमोद विश्वकर्मा आदि दस लोग एक बार फिर सोमनाथ मंदिर पहुंचे। इस वार विभिन्न समाचारपत्रों के संवाददाता भी हम लोगों के साथ मंदिर पहुंचे। वीडियो रिकार्डिंग भी हुई और मंदिर के हर-एक हिस्से का, कोने का गहन अध्ययन भी हुआ। और अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह मंदिर दूसरी से चौथी शताब्दी के बीच गुप्तकाल में बनवाया गया होगा, इस मंदिर का स्थापत्य भी इस तथ्य को पुष्ट करता है। यह मंदिर कालिंजर के नीलकंठ मंदिर की तरह और रौली गोंडा में वने शिव मंदिर की तरह का है। इस मंदिर की मूर्तियों के सिर पर वने हुए गूमड़ या शिवलिंग भारशिवों के प्रतीक थे।

शिव पार्वती

गुप्त शासकों का इस क्षेत्र में परोक्ष शासन रहा है। गुप्त शासकों के पूर्व यहां पर नागवंशी भारशिवों का शासन था, जिनकी राजधानी नचना-कुठार (पन्ना, म.प्र.) में थी और उपराजधानी भारगढ़ (वर्तमान बरगढ़) थी। बरकोठ या भारकोट का इतिहास भी ऐसे ही इनसे जुड़ा होगा। यदि नागवंशी भारशिवों के शासन-विस्तार को देखा जाए तो इसकी सीमा बहुत विस्तृत मिलेगी। अतर्रा (उत्तर प्रदेश) के नजदीक नगवारा, बरहेण्डा, नगनेधी और मध्य प्रदेश के वारीगढ़ जैसे गांवों-कस्बों के नाम ही नागवंशी भारशिवों के शासन-विस्तार को वताने में सक्षम हैं। यह बात अलग है कि इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया और भारशिवों की प्रतीक स्थापत्य धरोहरें काल के गर्त में समाती चली गईं। सोमनाथ मंदिर ऐसे स्थापत्य और शैव साधना का बहुत बड़ा केंद्र रहा होगा, इस कारण उसके अत्यल्प ध्वंसावशेष आज देखे जा सकते हैं।

भारशिव शासक शैव मत के कट्टर अनुयायी थे और सिर पर शिवलिंग धारण किये हुए भारशिव प्रतिमाएं इनका प्रतीक होती थीं। गुप्त शासकों के शक्तिशाली होने पर नागवंशी शासकों ने उनसे रोटी-वेटी का संवंध स्थापित किया और इस तरह क्षेत्र के नागवंशी शासक गुप्त राजाओं के माण्डलिक बन गए। सोमनाथ मंदिर में मिलने वाली भारशिव प्रतिमाएं और इनके साथ ही शेषशायी विष्णु की प्रतिमाएं इस बात को प्रमाणित करती हैं कि यह मंदिर गुप्तकाल की स्थापत्य कला की प्रेरणा लेकर, गुप्तकाल के स्थापत्य की तर्ज पर भारशिवों द्वारा बनवाया गया होगा।
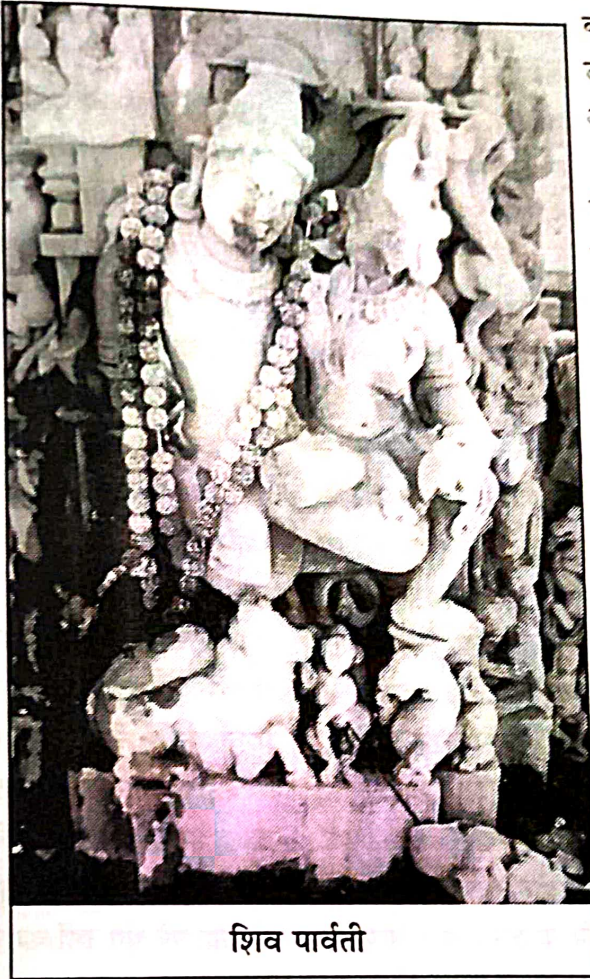
भारशिव (नागवंशी) शासकों की यह भी विशिष्टता रही है कि वे आदिवासी जीवन जीते हुए तथा शैव साधना करते हुए विधर्मी और परराष्ट्राक्रांताओं को पछाड़ते रहे हैं। यदि इतिहास को खंगाला जाय तो यह समझ में आता है कि गुप्त शासकों की सत्ता स्थापित करने और उनके शासन को समृद्ध, सफल बनाने में नागवंश के शासकों का अमूल्य योगदान रहा है। जब बुंदेलखंड में गुप्त शासकों की पकड़

धीमी पड़ने लगी तब बुंदेलखंड में गुप्त शासकों के मांडलिक वाकाटक शासकों का आधिपत्य कायम हुआ। वाकाटक शासकों के प्रतीक तो प्राप्त होते हैं, किंतु नागवंश के शासकों के प्रतीक बहुत कम ही मिलते हैं। इतिहास में दर्ज है कि नागवंशी शासक युद्ध आदि में व्यस्त रहे और इन्होंने अपने शासन के प्रतीक स्थापित नहीं किये। इस कारण यह कहा जा सकता है कि यदि यह मंदिर नागवंश के शासकों द्वारा बनवाया गया है तो इस अनूठे, अद्वितीय और अतुलनीय मंदिर को दुर्लभ सांस्कृतिक धरोहर की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

स्थानीय ग्रामवासी बताते हैं कि चालीस वर्ष पहले यह मंदिर काफी हद तक ठीक स्थिति में था। बीहड़ में होने के कारण यह आक्रांताओं की नजर में नहीं आया और शायद इसी कारण यह सुरक्षित भी रह सका। किंतु बाद में लोगों ने धन के लालच में अपनी धरोहर को नष्ट करने का दुष्कृत्य किया। इस मंदिर की दुर्लभ मूर्तियां चोरी हो गईं और कई तरीके से इस मंदिर को नुकसान पहुंचाया गया। ग्रामवासियों ने बताया कि मंदिर में एक नागेश्वर शिवलिंग भी था जिसमें शिलालेख था। उस शिलालेख से मंदिर के इतिहास पर कुछ रोशनी पड़ सकती थी, किंतु उसकी चोरी हो चुकी थी। लेकिन यह शिव मंदिर नागशासकों का रहा होगा इस तथ्य को नागेश्वर शिवलिंग के माध्यम से पुष्ट किया जा सकता था।

इस मंदिर में हम लोगों की यात्रा सुखद और दुखद दोनों ही पक्ष रखती है। सुखद इस मायने में हमें अपने अतीत के एक स्वर्णिम अध्याय को, एक प्रतीक को देखने का, जानने-समझने का अवसर मिला, और दुखद इस मायने में कि यह मंदिर अपने अस्तित्व की आखिरी सांसें गिन रहा है। हम लोगों ने इस मंदिर के स्थापत्य को, इसके अतीत को, इसकी विशिष्टता को और इसके परिवेश को केंद्र में रखकर एक वृत्तचित्र भी बनाया। इसकी कई प्रतियां तैयार कराईं और लोगों में वितरित करके अपने अतीत की इस पुरातन धरोहर को बचाने की अपील की। मीडिया के माध्यम से जन-जागरुकता लोन और शासन-प्रशासन का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराने का कार्य किया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को ज्ञापन दिया, पत्र भी लिखे।

इस काम में स्थानीय ग्रामवासियों के साथ ही इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया के लोगों का, बुद्धिजीवियों का, छात्रों का और अपने अतीत के प्रतीकों से लगाव रखने वाले लोगों का भरपूर सहयोग मिला। तब से लगातार इस मंदिर को बचाने, संरक्षित पुरातात्विक धरोहर घोषित कराए जाने के लिए संघर्ष चल रहा है। स्थानीय लोगों के साथ ही समाजसेवा, राजनीति, शिक्षा और पत्रकारिता से जुड़े लोगों ने अपना अमूल्य योगदान इस दिशा में दिया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की लखनऊ इकाई के प्रतिनिधिमंडल ने इस मंदिर का दौरा करके चौदह पेज की एक विस्तृत रपट तैयार की है और अपनी केंद्रीय इकाई, दिल्ली को इस अनुमोदन के साथ भेजा है कि सोमनाथ मंदिर को अविलंब अधिगृहीत किया जाए। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की विस्तृत रपट इस मंदिर के पुरातात्विक महत्व को रेखांकित करती है। इस संबंध में यह बताना भी समीचीन होगा कि उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल, चित्रकूट के सांसद और स्थानीय विधायकों ने भी सोमनाथ मंदिर को संरक्षित किए जाने की पुरजोर वकालत की है। तब से लगातार चर्चा में रहने के बावजूद मंदिर को पुरातत्व विभाग अधिगृहीत नहीं कर पाया।

यह स्थिति दुखद है, खेदजनक है कि हम सरकार की तंद्रा को भंग नहीं कर सके। यह बुंदेलखंड का दुर्भाग्य है कि हम तरक्की की मुख्यधारा में नहीं हैं। सोमनाथ मंदिर जैसी अन्य ऐतिहासिक धरोहरें भी यहां पर हैं जिन्हें संरक्षण की जरूरत है, जो देशी ही नहीं, विदेशी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकृष्ट कर सकती हैं, किंतु इस ओर किसी का ध्यान नहीं। यदि इन धरोहरों को संरक्षित कर लिया जाए तो अपनी पहचान तो बच ही जाएगी, पर्यटन उद्योग के रूप में आय का एक नया स्रोत बुंदेलखंड के लिए सुलभ हो सकेगा।

छाबी तालाब रोड,
बांदा, 210001 उ. प्र.

ग्वालियर के सिंधिया का सेना नायक : पीरू फ्रान्सीसी (पैरन)

- डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव (पी.एच.डी.)

मध्यकालीन बुन्देलखण्ड राजनैतिक उथल-पुथल से भरा रहा। अधिकांश देशी राजा आपस में संघर्षरत थे। ग्वालियर के सिंधिया और दतिया के बुन्देला राजा के मध्य संघर्ष निरंतर रहा। सिंधिया शक्तिशाली थे। उनकी सैन्य शक्ति दतिया की अपेक्षा अधिक थी। सिंधिया की सेना में फ्रांसीसी सैन्य अधिकारी भी थे। इनकी सेना में पहले डी. वायने रहा फिर पैरन सैनिक कमाण्डर बनकर आया।

पैरन (पैरो. पीरू) का जन्म फ्रान्स में सन् 1765 ई. में हुआ था। वह सन् 1780 ई. में स्क्वाड्रन लीडर की हैसियत से भारत आया था। यहां पर वह फ्रांसीसी झंडे के नीचे से निकलकर पहले गोहद के राणा के यहां सिपाही के रूप में रहा। तत्पश्चात् भरतपुर के राजा के यहां चला गया था। पैरन ने फ्रांस से आकर दस वर्ष इधर-उधर बिताये। सन् 1790 ई. में पैरन डी. वायने के सम्पर्क में आया और उसकी सेना में चीफ कमाण्डेंट बन गया था।

महदजी सिंधिया सन् 1792 में पूना लौट आए थे और उत्तर भारत की सुरक्षा का भार डी. वायने पर छोड़ दिया था। डी. वायने सन् 1795 ई. में सेवा निवृत्त हुआ। तब पैरन सैकण्ड कमान्डेंट के पद से पदोन्नत होकर कमाण्डेंट और सिंधिया की सेना का प्रमुख अधिकारी हो गया था। इस समय तक पैरोन बड़े व्यक्तित्व वाला नहीं बन पाया था परन्तु उसने अपनी प्रतिभा और शक्ति के बल पर बहुत सी भूमि इकट्ठी कर ली थी। उसके पास आर्थिक साधन बढ़ गए थे। आगरा का किला पैरन के अधिकार में था और उसने अपनी सम्पूर्ण सम्पतित आगरा के किले में रखी हुई थी।

सन् 1794 में महदजी सिंधिया का निधन हो गया था। वे निःसंतान थे। उन्होंने दौलतराव को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। महदजी की तीन पत्नियां बैजाबाई, भागीरथी बाई, लक्ष्मीबाई थी। महदजी की मृत्यु के बाद दौलतराव ने इन विधवाओं को तंग करना प्रारंभ कर दिया था। महदजी का एक विश्वस्त सैनिक लक्ष्मण अनन्त लाड़ उर्फ लकवा दादा इन विधवा बाइयों की सुरक्षा के लिए तैनात था। लकवा दादा, दौलतराव द्वारा सताई जाने वाली बाइयों को लेकर शिवपुरी, आगरा आदि स्थानों पर भागता रहा। अंत में दतिया के बुन्देला राजा शत्रुजीत ने इन विधवा बाइयों को दतिया के निकट सेंवढ़ा के दुर्ग में संरक्षण दे दिया था।

ग्वालियर के मराठा शासक तो पहले से ही दतिया पर आक्रमण करते आ रहे थे पर अब उन्हें एक और बहाना मिल गया था। दौलत राव सिंधिया ने दतिया के राजा शत्रुजीत के ठिकानों पर अनेक आक्रमण किए। दतिया की सेनाओं का संचालन राजकुमार पारीछत बुन्देला कर रहे थे। दौलतराव सिंधिया की सेनाओं का नेतृत्व अम्बाजी इंगले तथा रघुनाथ राव के हाथ में था। प्रारम्भिक युद्धों में मराठे विजय प्राप्त नहीं कर सके तब अम्बाजी इंगले ने सिंधिया से और अधिक सेना भेजने को कहा। तब पैरन (पीरू) के नेतृत्व में एक विशाल मराठा सेना ने भिण्ड की ओर से आक्रमण किया। शत्रुजीत बुन्देला की सेना ने सन् 1801 में भिण्ड जिले के बरहा गांव के खोंद पर पीरू का मुकाबला किया।

3 मई सन् 1801 को पैरन ने बुन्देलों की सेना पर भयानक हमला किया और एक के बाद एक कई सैनिक टुकड़ियों को काबू में कर लिया था परन्तु दतिया नरेश शत्रुजीत के एक घातक प्रहार से पैरन गम्भीर रूप से घायल हो गया था। आमने सामने की इस लड़ाई में पैरोन ने शत्रुजीत को भी गंभीर रूप से घायल कर दिया था। पैरन शत्रुजीत के प्रहार से भयभीत होकर भाग गया था। बुन्देलों की विजय तो हुई थी, परन्तु सेंवढ़ा के किले तक आते-आते शत्रुजीत भी स्वर्ग सिधार गए थे।

पैरन के युद्ध का वर्णन दतिया नरेश शत्रुजीत के दरबारी कवियों ने रासो ग्रंथों में किया है। कवि साहिबराय ने

इस युद्ध का वर्णन इस प्रकार किया है।

जिन भिरत जुध्ध भयौ वर्ष सात।
नृप सत्रजीत धनि तात मात।।
लख्यन नरेस सेवा समेत।
पुर बरा गाम तहं रच्यौ खेत।।
पीरू उमंग दल मुसलमान।।
माच्यौ स जुध्ध कौहौ कंत जान।।

उपर्युक्त छंद के अनुसार मराठों बुन्देलों का यह संघर्ष सात वर्ष से चल रहा था। दौलतराव की मजबूत सैन्य शक्ति का सामना सत्रुजीत ने वीरता पूर्वक सात वर्ष तक किया। साहिब राय उपर्युक्त पंक्तियों में पैरन (पीरू) को मुसलमान लिख रहे हैं, जबकि पैरन फ्रांस का रहने वाला फ्रांसीसी था।

साहिब राय के अतिरिक्त किशुनेश भाट ने भी सत्रुजीत रासो लिखा। किशुनेश ने रासो में पीरू के मारे जाने का उल्लेख किया है। छन्द इस प्रकार है-

'जहां खाए मुख घाई हाथ कईयक चलाई,
मार पीरू रिपुराइ काट पलटनै महान।
जहां कुध्ध कै उपाई जुध्ध वारिधि मचाय,
काढ़ी कीरति सुधा सी बड़ी दसहू दिसान।।
जहां नकस नसैनी सुखदैनी, पांव देत ढायौ,
ब्रम्ह कहै आपौ पद पायौ निरवान।
तहां सत्रजीत भूप इन्द्रजीत के सपूत करौ।
विक्रम अकूत जय जंपत जहान।।
(किशुनेश कृत शत्रजीत रासो, पाण्डुलिपि, छन्द 295)

उपर्युक्त छन्द में कवि किशुनेश ने पैरन के मारे जाने की सूचना दी है किन्तु इतिहास के अनुसार पीरू बरहा के खॉद से घायल होकर भाग गया था और सिंधिया की सेना में बना रहा। इसके बाद वह सेवा निवृत्त हुआ और अपनी अकूत सम्पत्ति लेकर फ्रांस चला गया था। वहीं पर सन् 1834 में पैरन की मृत्यु हुई।

बरहा के खॉद पर हुए युद्ध में पैरन की मृत्य नहीं हुई। सम्भव है कि पीरू नाम का कोई पीलवान (महावत) मारा गया हो और रासोकार ने पीरू (पीलवान) को पैरन समझ कर रासों में उसकी मृत्यु की घोषणा कर दी। यह एक महत्वपूर्ण विषय है कि जिस पैरन को दौलतराव सिंधिया ने शत्रुजीत बुन्देला के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए विशाल सेना के साथ भेजा था, वही युद्ध में घायल होकर कायरता पूर्वक भाग गया और सिंधिया को पराजय का मुख देखना पड़ा था।

पैरन युद्ध क्षेत्र से पलायन भले ही कर गया हो पर उसके स्थान पर मारा गया उसका पीरू नाम का महावत आज भी बरहा और आसपास के क्षेत्रों में दूर-दूर तक आस्था का केन्द्र बना हुआ है। बरहा के खांद पर हाथीवान (पीलवान या महावत) का चबूतरा बना हुआ है। लोग हाथीवान बाबा के नाम से उसे पूजते हैं। मनौतियां मनाते हैं। लोगों की मनोकामनाओं के पूर्ण होते रहने से यह स्थान चमत्कारिक रूप से प्रसिद्ध हो गया है। अनेक लोग हाथीवान बाबा के चमत्कारिक प्रभाव पर विश्वास रखते हैं।

अतएव ग्वालियर के दौलतराव सिंधिया का सेनापति पैरन फ्रान्सीसी था। पैरन बहुत वीर, साहसी और कुशल योद्धा था। उसने अनेक युद्धों में सिंधिया को विजय दिलवाई थी।

अनन्य कालोनी, सेंवढ़ा,
जिला दतिया (म.प्र.)
मो. 9827815769

बुन्देली लोक संस्कृति के आधार : बुन्देली लोक पर्व, उत्सव एवं त्यौहार

– डॉ. शुभा श्रीवास्तव

किसी जाति या राष्ट्र के सभ्यता सूचक कार्य संस्कृति कहलाते हैं। संस्कृति व्यापक और बहुआयामी है। लोक जीवन के विविध क्रियाकलाओं द्वारा संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। भाषा, भूषा, बोलचाल, व्यवहार, आचरण, उत्सव, पर्व, त्यौहार, गायन, वादन आदि रूपों में लोक संस्कृति की पहचान होती है। खेलकूद, मनोरंजन, के साधन, व्यवसाय आदि भी लोक-संस्कृति के अंग हैं।

बुन्देलखण्ड में 'महुआ मेवा, बेर कलेवा गुलगुच बड़ी मिठाई।' कहावत प्रचलित है। इसका तात्पर्य यह है कि यह क्षेत्र रहन-सहन, खान-पान आदि की दृष्टि से संतोषी वृत्ति वाला रहा है। यहाँ के लोग सांस्कृतिक पर्वों, त्यौहारों एवं उत्सवों को अपनी आर्थिक स्थिति, देश, काल, परिस्थिति के अनुसार मानते आ रहे हैं। बुन्देलखण्ड का लोक मानस अपनी सांस्कृतिक विरासत से गहराई से जुड़ा हुआ है। कवियों ने उत्सवों और त्यौहारों के विषय में गीत आदि लिखकर जन संवेदना को और अधिक जागृत कर दिया है। वसन्तोत्सव जैसे उत्सवों के विषय में बहुत अधिक लिखा गया है। दो पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं।

''आधी वगिया में आम बौरे, आधी में इमली बौरे हो।
तबहूँ न बगिया सुहावन, एक रे कोइल बिनु हो।''

कोयल बसंत के आगमन की सूचना देती है। इससे ज्ञात होता है कि बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति रसमय है। यहाँ की बोली रसीली है। लोकगीतों और लोकगाथाओं में बुन्देली संस्कृति का माधुर्य समाया हुआ है। बुन्देलखण्डके व्रत, उत्सव, त्यौहार पर्व आदि इसी प्रकार के सांस्कृतिक सौन्दर्य के जीवन्त प्रतीक है। बुन्देलखण्ड में सांस्कृतिक रूप से मनाये जाने वाले उत्सव, त्यौहार आदि निम्नांकित हैं।

होलिकोत्सव – होली बसंत ऋतु का त्यौहार है। इसके संबंध में प्रहलाद और होलिका की पौराणिक कथा का आधार लेकर होलिका दहन किया जाता है। होली उल्लास का त्यौहार है एक दूसरे के ऊपर रंग गुलाल डालकर लोग मिलते हैं, फागें गाई जाती हैं। यह त्यौहार पूरे बुन्देलखण्ड अंचल में संस्कृति का प्रतीक है।

गणगौर – यह पर्व चैत्र शुक्ल तीज को होता है। यह सुहागिन स्त्रिओं का पर्व है। स्त्रियाँ पार्वती की पूजा करती हैं।

चैतीपूनो – इस पर्व पर सात या पाँच मटकियों को चूने से पोतकर रखा जाता है। एक करवा रखा जाता है। करवा पर माताओं की प्रमिमा और पूजन कुमार की प्रतिमा बनाई जाती है। परिवार का लड़का मटकियों को हिलाकर करवे में से लड्डू निकालकर माँ की झोली में डालता है।

आसमाई – यह पर्व वैशाख की दोज को मनाया जाता है। औरतें चौक पूरकर सफेद चंदन की एक प्रतिमा बनाती हैं। नैवैद्य के लिये सात आसे बनाई जाती है जो वृत रखने वाली स्त्री खाती है। पटे पर कौंडी रखी जाती है, जिन्हें परिवार का छोटा लड़का पटे पर पलटता है। आसमाई की कहानी कही जाती है।

अकती – यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। अकती (अक्षय तृतीया) बुन्देलखण्ड का महत्वपूर्ण त्यौहार है। लड़कियां गुड्डे, गुड्डियों का विवाह रचाती हैं। घेलों (छोटे घड़े) के ऊपर पूड़ी, पकौड़ी, सत्तू, गुड़ व कच्ची अमियाँ रखकर दान में दी जाती है। लड़कियाँ गीत गाती हुई किसी खास स्थान तक जाती है फिर भीगी हुई चने की दाल सोन के रूप में बाँटती हैं।

बरा बरसात (वट सावित्री वृत) – यह पर्व जेठ के महीने मे अमावस्या को होता है। सुहागिन स्त्रियाँ विधि-विधान से वट वृक्ष की पूजा करती है। सती सावित्री की कहानी पढ़ी जाती है।

कुनघुसू पूनों – यह आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को बुन्देलखण्ड के हर घर में मनाया जाता है। इसमें गृह वधुओं का पूजन किया जाता है। सास दीवाल पर हल्दी से चार

पुतरियाँ बनाती हैं, पुतरियों की पूजा करके सास लक्ष्मी बहू और धन सांतान की कामना करती हैं।

हरी जोत - यह पर्व सावन माह की अमावस्या को होता है, इसमें कन्याओं की पूजा कर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाता है।

नाग पंचमी - श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी मनाई जाती है। इसमें नागों की पूजा की जाती है। घर की दीवालों पर नागों की आकृति बनाने और पूजने से साँपों का भय दूर होता है ऐसी मान्यता है।

रक्षाबन्धन - श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला राखी का त्यौहार भाई-बहनों का प्रसिद्ध त्यौहार है। बहिनें भाइयों को राखी बांधती हैं और भाई बहिनों को उपहार के साथ रक्षा का आश्वासन देते हैं।

हरछठ (हल षष्ठी) - यह त्यौहार भादों के कृष्ण पक्ष की छठ को मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्म हुआ था। यह व्रत पुत्रवती स्त्रियाँ ही करती हैं।

कन्हैया आठें (कृष्ण जन्माष्टमी) - यह भादों कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। यह भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में आस्था और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

तीजा (हरतालिका तीज) - भादों शुक्ल तृतीया को यह वृत सौभाग्यवती स्त्रियाँ करती हैं। इसमें व्रत रखकर, भजन गाकर रात्रि जागरण किया जाता है।

ऋषि पंचमी - भादों शुक्ल पंचमी को होने वाला यह व्रत स्त्रियाँ करती हैं।

महालक्ष्मी - यह बुन्देलखण्ड का प्रसिद्ध त्यौहार है। यह क्वांर के महीने में कृष्णपक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। यह व्रत सौभाग्यवती और पुत्रवती स्त्रियाँ करती हैं, इसमें महालक्ष्मी के साथ हाथी की भी पूजा होती है।

नौरता - यह क्वांर के महीने में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुरू होता है और नौ दिन तक चलता है। बुन्देलखण्ड में लड़कियाँ नौरता (सुआटा) खेलती हैं। यह लड़कियों का विशेष त्यौहार है।

दशहरा - यह त्यौहार क्वांर महीने में कृष्ण पक्ष दशमी को मनाया जाता है। इसे विजया दशमी भी कहते हैं। इसीदिन भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए चढ़ाई की थी। दशहरे को अस्त्र-शस्त्रों और घोड़ों की पूजा की जाती है। दशहरे पर सभी जातियों के लोग एक दूसरे से प्रेम पूर्वक गले मिलते हैं।

शरद पूर्णिमा - शरद पूर्णिमा से बुन्देलखण्ड में कार्तिक स्नान शुरू हो जाता है। पुराणों के अनुसार इस तिथि को चन्द्रमा में अमृत का वास होता है। दूध चावल की खीर बनाकर रात को खुले आकाश में टाँग दी जाती है और फिर सवेरे इसे खाया जाता है।

धनतेरस - यह कार्तिक के महीने में कृष्णपक्ष त्रयोदशी को मनाया जाता है। घर के दरवाजे पर दीपक जलाकर रखा जाता है। यमराज और भगवान धनवंतरि की पूजा की जाती है। इस दिन नये बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है।

नरक चौदस - इसे छोटी दीवाली भी कहते हैं। यह कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मनाई जाती है। इस दिन अर्द्ध रात्रि को हनुमान जी का जन्म हुआ था ऐसी मान्यता भी है।

दीवाली - यह बुन्देलखण्ड सहित पूरे भारत का प्रमुख त्यौहार है। यह उल्लास और पवित्रता का पर्व है। यह कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। रात को दीपक जलाकर छतों की मुंडेरों पर रखे जाते हैं। यह प्रकाश पर्व है। पकवान बनाये जाते हैं। नये कपड़े लाये जाते हैं। कहते हैं कि राम रावण पर विजय प्राप्त कर इसी दिन अयोध्या लौटे थे। इसलिए खुशी में दीपक जलाये जाते हैं। सभी लोग एक दूसरे के घर जाकर दीवापली की बधाई देते हैं।

इसी तरह बुन्देलखण्ड में विभिन्न स्थानों पर समय-समय पर मेले आयोजित होते हैं। ये मेले भी सांस्कृतिक परम्परा के प्रतीक हैं। बुन्देलखण्ड के तीर्थ स्थल देवता और उनकी आराधना विधियाँ भी संस्कृति के स्वरूप को उजागर करते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड में पर्व, उत्सव और त्यौहार श्रद्धा और विश्वास के साथ मनाये जाते हैं। इन पर्वों, उत्सवों में बुन्देली लोक संस्कृति के स्वरूप की झांकी देखेने को मिलती है।

बंगालीपुरा, बांदा (उ.प्र.)

बुन्देलखण्ड और रामकथा

– उदय शंकर दुबे

रामकथा के प्रचार-प्रसार में बुन्देलखण्ड संभाग का विशेष योगदान है। अवध की पुण्यभूमि पर राम का आविर्भाव हुआ, बुन्देलखण्ड की धरती ने उनको अपने यहाँ आश्रय दिया, उनकी यशगाथा का चतुर्दिक विस्तार किया। एक प्रकार से बुन्देलखण्ड की धरती रामकथा की उत्पत्ति का केन्द्र है। आदि कवि बाल्मीकि का आश्रय यहीं पर था। बाल्मीकि मुनि ने राम को लक्ष्मण, सीता सहित पवित्र चित्रकूट में रहने का सुझाव दिया था। गोस्वामी तुलसीदास ने यहीं पयस्विनी के तट पर स्थित रामघाट पर चंदन घिसा था। कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक न जाने कितने ऐसे कवि इस धरती पर उत्पन्न हुये जिन्होंने रामकथा को अपने काव्य का विषय बनाया। बुन्देलखण्ड के समस्त रामकथा गायकों का विवरण प्रस्तुत करना दुरूह कार्य है। बारहवीं शताब्दी में कवि दयाराम ने संस्कृत में शक्ति चंद्रिका ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में कवि ने दशावतार की कथा प्रस्तुत करते हुये रामकथा का संक्षिप्त वर्णन किया है। इसी के आस-पास जैन कवि रइधू सोनागिरी में रहकर प्राकृत भाषा में रामायण की रचना की थी। पन्द्रहवीं शताब्दी में ग्वालियर के विष्णुदास ने वाल्मीकि रामायण की कथा को दोहा-चौपाई छंद में ब्रजभाषा में प्रस्तुत किया। बुन्देलखण्ड के विद्वान विष्णुदास की इस रामायन कथा को बुन्देलीभाषा का प्रथम ग्रंथ मानते हुँ किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि कवि विष्णुदास के समय में बुन्देलखण्ड का अस्तित्व ही नहीं था फिर बुन्देली भाषा कहाँ से कवि की भाषा बन गई।

अपने निर्वासन काल में राम ने चित्रकूट को अपना साधना स्थल बनाया। यहीं पर तत्कालीन आचावर्त की विशाल धर्म सभा जुटी थी जिसमें अयोध्या और विदेह राज्य की प्रजा सम्मिलित हुई। तुलसी को चित्रकूट सर्वाधिक प्रिय रहा। रहीम को बरबस कहना ही पड़ा –

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेश।
जापर विपदा परत है सो आवत यहि देश।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि गोस्वामी तुलसी दास ने जिस दिन-चैत्र शुक्ल नवमी मंगलवार संवत् 1631 वि. की शुभ घड़ी में अयोध्या में बैठकर श्रीराम चरित मानस का श्री गणेश किया ठीक उसी दिन – 4 अप्रैल सन् 1574 ई. को ओरछा की महारानी गणेश दे कुँवारे ने अपने महल में भगवान राम की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कराने में व्यस्त थीं। महारानी भगवान राम की मूर्ति की सविधि प्राण प्रतिष्ठा कराकर पूरे राज्य श्री राम के चरणों में अर्पित कर दिया। अयोध्या के रामलता ओरछा के राम राजा बन गये। भगवान राम की यह मूर्ति भी अयोध्या से ओरछा तक साथ लाने का श्रेय रानी को ही है। नाभादाय न अपने भक्तकाल में रानी की तपस्या, भगवान राम के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति का वर्णन किया है। पद्माकर भट्ट के पौत्र गदाधर भट्ट ने विजय ब्रज विलास ग्रंथ में रानी की भक्ति की सराहना की है-

मधुकर महीप महिमा विसाल।
सु गनेस कुंवर रानी नृपाल।
तिति न्हात अवध सरजू अमंद।
प्रगटे सुभक्ति लाईक रामचंद्र।

श्री मन्मधोर्भूमि यतेर्मतिव्या गणेश देव्या कृत भक्ति भावः।
साकेत त श्त्तौडछ पत्तनेस्मित् विराजते श्री रघुराज रामः।।

बुन्देलखण्ड में ऐसी लोकश्रुति है कि ओरछा राम मंदिर में राम राजा की जो मूर्ति है वह वही प्रतिमा है जो अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि में प्रतिष्ठित थी और जिसे पुजारियों ने सरयू नदी में सुरक्षार्थ डाल दिया था। महारानी को वह मूर्ति सरयू नदी से प्राप्त हुई थी। रामराजा की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही ओरछा का राज्य उनके चरणों में अर्पित कर दिया गया। तबसे ओरछा के राजा अपने को राम राजा का दीवान मानकर राज्य का संचालन करते थे। ओरछा के कुछ राजाओं ने अपनी मुद्रा पर राम नाम अंकित कराया। ओरछा राज्य की ऐसी कुछ मुद्रायें मिलती हैं। राजा सावंत सिंह की प्राप्त मुद्रा पर ''राम नाम प्रमान। सब जग मानज आन।'' मंगल वाक्य अंकित है। राजा अभय सिंह ने अपनी षट्कोणीय मुद्रा पर 'श्री सीताराम शरणः' मंगल वाक्य के साथ 'राम जानकी लखन के चरन सदन मजबूत, है हरबंस उदोत सुत अभै सिंह अवधूत।' दोहा भी उत्कीर्ण कराया।

॥ श्रीराजकुमाररामचंद्रजैसैंआनंदआवैतैसोलि॥

॥षवावी॥अथश्रीअजोध्याकांडकीलीलाकोप्रारंभ॥

प्रथमसवदरवारलगैजथाविधिवसिष्ठादिकमुनिसुमंत्रादिकमंत्रीरघुवंशीमुसाहवसमेतसिरदार

॥तासमयपरजोसंभाषनवार्ताहोवोचाहियेसोलि॥

॥प्रसन्नतांयोनगतोभिषेकस्तथानमम्लौवनवासदुःखितः॥मुखांबुजश्रीरघुनंदनस्यमेसदास्तुसामंजुमंगलप्रदा॥ ॥षुत॥

॥कवि॥

श्रीगुरुचरनसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि॥वरनौरघुवरविसदयशजोदायकफलचारि॥

जवतेरामव्याहिघरआये॥नितनवमंगलमोदवधाये॥भुवनचारदसभूधरभारी॥सुकृतमेघवरिसुषवारी॥रिधिसिधिसंपतिनदीसुहाई॥उमगअवधिअंवुधिकहंआई॥मनिगनपुरनरनारिसुजाती॥सुचिअमोलसुंदरसवभांती॥कहिनजाइकछुनगरविभूती॥जनुइतनीविरंचकरतूती॥सवविधिसवपुरलोगसुषारी॥रामचंद्रमुषचंद्रनिहारी॥मुदितमातसवसषिसहेली॥फलितविलोकमनोरथवेली॥रामरूपगुनसीलसुभाऊ॥प्रमुदितहोहिदेषसुनिराऊ॥सवकेमनअभिलाषअसकहहिमनाइमहेस॥आपुअछतजुवराजपदरामहिदेहिनरेस॥८

॥फिरमहाराजदर्पनलैआपनोमुषमुकटसमेतदेषे॥१०

॥कवि॥

॥अयनसमीपभयेसितकेसा॥मनहुजठरपनअसउपदेसा॥नृपजुवराजरामकहदेहू॥जीवनजन्मसुफलकरलेहू॥सगजैहैकछूनरहैकरमैकरमैकरलैजसविस्वपरेसो॥ह्यांदिलकैसवसोंमिलकैपरकाजकरौनगुमांनधरोसो॥विजैविगरीवहुकालनकीसुधरैसवरीहरीपाइपरोसो॥जहैकरनैकरतैअवहींफिरजातनकौतनकौनभरोसो॥१॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥

यहविचारउरआंनन्रपसुदिनसुअवसरपाइ॥प्रेमपुलकतनमुदितमनगुरहिसुनायोजाइ

दतिया राज्य की राम लीला की हस्तलिखित प्रति का प्रथम पृष्ठ

इसके साथ ही राम राजा के मंदिर की दीवालों पर रामकथा के महत्वपूर्ण प्रसंगों के चित्र भी उरते गये। ओरछा निवासी कवि केशवदास ने संवत् 1658 वि. (सन् 1601 ई.) में राम राजा की प्राण प्रतिष्ठा के सत्ताइस वर्ष बाद राम चन्द्रिका ग्रंथ की रचना की जिसके संवाद आज भी रामलीला में व्यवहृत होते हैं। केशव की रामचंद्रिका-रचना पद्धति का आगे के बुन्देलखण्ड के कवियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। बुन्देलखण्ड के कई कवियों ने समय-समय पर विविध छंदों में रामकथा विषयक छंदों की रचना की। जिनमें रसिक बिहारी रचित राम रसायन और आचार्य कवि महोनलाल कृत रामचरित बाल चंद्रिका ग्रंथ विशेष उल्लेखनीय हैं। ओरछा के दरबारी कवि गोप ने राम चंद्राभरण की रचना की यद्यपि यह स्वतंत्र राम काव्य नहीं हैं। कवि ने अलंकरों के उदाहणार्थ रामकथा के प्रसंगों को अपनाया है। ओरछा की रानी वृषभान कुंवरि के राम कथा विषयक पद आज भी मंदिरों में गाये जाते हैं।

ओरछा राज्य की ही भांति बुंदेलखण्ड की अन्य रियासतों के राजाओं ने अपने-अपने नगर में राम मंदिर का निर्माण कराया और उनके आश्रित कवियों ने रामकथा का गायन किया। बुन्देलखण्ड की प्रमुख रियासतें - पन्ना, छतरपुर, चरखारी, दतिया, बिजावर, सरीला आदि थीं। इन राज्यों के कवियों द्वारा लिखे राम काव्य संबंधी ग्रंथ हस्तलिखित रूप से प्राप्त होते हैं। बुन्देलखण्ड में न केवल रामकथा के ग्रंथों की भरपूर रचना हुई अपितु उसके प्रचार-प्रसार के लिये यहाँ के राज्यों द्वारा रामलीला का भी आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त यहाँ के चित्रकारों ने अपनी तूलिका के सहारे रामकथा को चित्रांकित करने का श्रमसाध्य कार्य सम्पन्न किया। देश के कई संग्रहालयों में बुन्देलखण्ड में तैयार की गई सचित्र प्रतियों के दर्शन हो जाते हैं।

दतिया राज्य की रामलीला के लिये तैयार की गई रामचरित मानस की एक प्रति में मानस की पंक्तियों को चित्र काव्य का रूप दिया गया है जिसमें सिंहासन, मंदिर, छत्र-चॅवर, ढाल-तलवार, शंक-चक्र, गदा, पद्म, अश्व, मीन आदि चित्र बने हैं। एक अन्य प्रति में बुन्देलखण्ड के कवियों द्वारा रचित रामकथा के प्रसंगानुसार छंद संग्रहित हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में संवत् 1900 वि. से लेकर संवत् 1900 वि. तक का समय श्रृंगार काल पर रीति काल कहा जाता है। रीतिकाल के प्रथम आचार्य कवि केशवदास माने जाते हैं जो ओरछा (बुन्देलखण्ड) के ही थे। केशव दास ने रसिक प्रिया और कवि प्रिया नामक नीति काव्य ग्रंथों की रचना की तो उन्होंने रामचंद्रिका ग्रंथ भी लिखा। बुन्देलखण्ड के रीतिकालीन कवियों ने आचार्य केशव के मार्ग का अनुसरण किया। इन कवियों ने एक ओर रीति परक ग्रंथों की रचना तो दूसरी ओररामकथा का भी स्टजन किया।

रीतिकाल में बुन्देलखण्ड में विपुल रामकथा से संबंधित ग्रंथ लिखे गये यद्यपि इस क्षेत्र में रचा गया रीतिकालीन राम साहित्य विशिष्ट न होते हुए थी अधिक व्यापक है। इस काल खण्ड में रचे गये रामकाव्य में श्रृंगार की प्रधानता, संस्कृत के राम काव्यों का पद्यानुवाद, रामचन्द्र हनुमान से संबंधित छोटी-बड़ी रचनाओं का बाहुल्य मिलता है। बुन्देलखण्ड के इस युग के अधीकतर कवि रसिक संप्रदाय के थे। रसिक राम भक्तों की प्रधानता इस क्षेत्र में भी थी। यहाँ पर हम बुन्देलखण्ड के रीति कालीन कवियों की सूची प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे उपर्युक्त धारणा की पुष्टि होती है -

1. पर्वत दास सोनार, 2. गोप कवि, 3. मान कवि, 4. महाराज छत्रसाल, 5. विक्रमाजीत, 6. रतन सिंह, 7. प्रताप सिंह, 8. हरिजन, 9. जोगराम, 10. किशोरदास, 11. मंडन, 12. भारथशाह, 13. पद्माकर भट्ट, 14. गजाधर भट्ट, 15. कवीन्द्र सुधाकर, 16. रसिक बिहारी, 17. बैजनाथ भोडले, 18. परमानंद प्रधान, 19. गंगा प्रसाद उदैनिया, 20. सीताराम, 21. अलि रसिक गोविन्द, 22. भूपति, 23. चैतराय, 24. कृपाराम, 25. रामचंद्र गोसाईं, 26. महारानी वृजभात कुंवरि, 27. रानी कंचन कुंवरि, 28. नवल सिंहप्रधान, 29. बुन्देलखण्डी गुसाई तुलसी दास, 30. बुद्धिराज आदि।

रीतिकाल के बुन्देलखण्डी कवियों द्वारा लिखा गया रामकथा साहित्य समग्र रूप से अभी तक अप्रकाशित है। दो-चार कविओं द्वारा रचित अवश्य प्रकाशित हैं शेष बंडलों में बंधे रियासतों ग्रंथागारों और व्यक्तिगत संग्रहों में पड़े अपने प्रकाश की घड़ियाँ गिन रहे हैं। बुन्देलखण्ड के सुधी विद्वानों को इन कवियों की रामकथा विषयक रचनाओं के प्रकाशन की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

साहित्यान्वेषक
ग्राम-करेरूआ, पो. खमरिया,
जिला-मिर्जापुर (उ.प्र.)

विलुप्त होती बुन्देली लोक कलाएं

– कुं. शिवभूषण सिंह गौतम

भारतीय समाज की जीवनशैली भले ही पूरे देश में कमोवेश एक जैसी हो, किन्तु उसमें औपचारिकता और लोकत्व की झलक उसे विशिष्टता प्रदान करती है। यह विशिष्टता ही उस अंचल लोक संस्कृति के रूप में जानी पहचानी जाती है।

किसी भी अंचल के समग्र चैतन्य समाज में परम्पराओं से पोषित एवं मौलिक रूप से संचित ज्ञान राशि तथा अनुकरण से सीखी जाने वाली कला ही उस अंचल की लोककला के मूक उपादान होते हैं।

वर्तमान में भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, आधुनिकतावाद तथा अन्तर आधुनिकतावाद के अन्धानुकरण ने हमारी लोक संस्कृति व रिवाज, खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, आस्था-विश्वास ही नहीं अपितु हमारी मौलिक सोच का भी तीव्र गति से क्षरण हुआ है।

यद्यपि पुरातन काल से चली आ रही परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा संस्कारों का अनुसरण बुन्देली संस्कृति की प्राचीनता को निरूपित करते हैं। तथापि युगों के अन्तराल से अनेक रीतियों व लोकचारों के स्वरूप में उत्पन्न विकृतियों के कारण उनके मूल स्वरूप से अनभिज्ञ तथाकथित भद्र-जन उन्हें ढकोसला व रूढ़िवादिता तथा पुरातनपंथी आदि संज्ञाओं से अभिहित कर उनका उपहास उड़ाते रहते हैं, जिससे समाज में घोर वितृष्णा व उपेक्षा का भाव उत्पन्न हुआ है, परिणामस्वरूप हमारी यह अमूल्य विरासत विस्मृति के गर्त में तिरोहित होती जा रही है।

बुन्देली लोकजीवन का कला पक्ष अत्यंत समृद्ध है। लोक कलाओं का विस्तृत व बहुआयामी फलक है। पारम्परिक भित्ति सज्जा, भूमि अलंकरण चित्रकला, मूर्तिकला, काष्ठकला, धातुकला, बर्तन, वस्त्र, आभूषण, कृषियंत्र, गृह उपयोगी वस्तुयें आदि के निर्माण की परम्परा रही है तो वहीं तीज-त्यौहारों, पर्वों, रीति-रिवाजों की अलग छवि रही है। अनादिकाल से बुन्देली नारियां धरती पर चबूतरों पर, दीवारों पर मिट्टी, खरिया, गेरू, गोबर आदि से रेखांकित चित्रांकन कर अपने मनोभावों का प्रदर्शन करती रही हैं। जो आदि मानवों द्वारा निर्मित शैलचित्रों के ही परिवर्धित संस्करण है। वृत पूजन त्यौहारों आदि के अवसरों पर धरती को गोबर से लीप कर आटे से चौक पूरने की परम्परा रही है। इसी प्रकार करवाचौथ, हरछठ, नागपंचमी, देवउठनी तथा विवाह आदि अवसरों पर सूर्य, चन्द्र, स्वास्तिक, कमल, शंख, अश्व, गज, हिरण, मयूर, दीप, कलश व गणेश आदि मांगलिक चिन्ह व आकृतियों का अंकन किया जाता रहा है। जो अब रंगोली व विद्युत झालरों की चकाचौंध में दृष्टि पटल से ओझल होते जा रहे हैं।

मिट्टी एक ऐसा उपादान है जो सहज रूप से सर्वदा सर्वत्र सुलभ है। अत: मिट्टी से निर्मित बर्तन, खिलौने आदि वस्तुओं का उपयोग होना स्वाभाविक है। मिट्टी से बने चून्हे तथा सिगड़ी, मटेलनी, गुरसी, दिया, कुड़ा, गगरा, गगरी, मटका-मटकी, कुठिया, नांद, डहरिया, चिलम, कुल्हड़ आदि गृह उपयोगी सामग्री तथा बच्चों के खेलने के लिए मानव, पशु, पक्षियों की व.प्रतिकृतियों का निर्माण कुशल कारीगरों (कुम्हारों) द्वारा किया जाता रहा है। दीपावली के अवसर पर दिया धारण करने वाली आकृतियां, लक्ष्मी, सरस्वती के साथ गणेश प्रतिमायें आज भी पूजन के लिए शुभ मानी जाती हैं। फिर भी इनमें से अधिकांश वस्तुयें अब देखने को नहीं मिलती। इनके परम्परागत निर्माता कुम्हार आज अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं।

काष्ठकला तो टूटे-फूटे महलों, किलों तथा गाड़ियों की चौक्षटों पर खिसक रही है। उनके नक्काशीदार चौखट, दरवाजे तथा खम्भे तो अब बीते युग की बातें होकर रह गई हैं। कृषिकार्य में उपयोग होने वाले हर, बखर, पहटा, रहट, रथ, रब्बा व बैलगाड़ियों का अस्तित्व भी धीरे-धीरे समाप्ति

की ओर अग्रसर है।

घर पर महिलाओं द्वारा फटे-पुराने कपड़ों द्वारा निर्मित रंग-बिरंगे खिलौने व कथरियां तो घरों से पहले ही निष्कासित हो चुकी है। इसी प्रकार घरों में प्रयुक्त होने वाले पीतल, तांबा, कांसा आदि के बर्तनों का स्थान स्टील व प्लास्टिक ने ले लिया है। खजूर से निर्मित मौर व मौरी अब दूल्हा व दुल्हन के सिर की शोभा बढ़ाने में अक्षम होते जा रहे हैं। मकर संक्रांति के पर्व पर शक्कर से बनने वाले खिलौनें गड़िया-घुल्ला देख कर अब बच्चों के मुंह में पानी नहीं आता।

बुन्देली अंचल के स्त्री-पुरुष दोनों ही उत्सवधर्मी एवं अलंकरण प्रिय रहे हैं। सौंदर्य वृद्धि के लिए नारियां तो नख से लेकर शिख तक सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गिलट आदि के आभूषण धारण करती रही हैं। जिनके शताधिक नाम व प्रकार गिनाये जा सकते हैं, जो अब सिमट कर उंगलियों पर गिनने लायक बचे हैं।

बुन्देली पुरुषों के सर पर साफा व पगड़ी तथा पैरों पर पहनीं जाने वाली पनहियां अपनी क्षेत्रभ्य पहचान की घोतक रही है। पगड़ी तो मान-सम्मान का प्रतीक मानी जाती रही है। तभी तो पाग ऊंची रखना और पगड़ी उछालने जैसे मुहावरे बने थे। पर आज न तो पगड़ी की पहचान ही बची है और न ही उसका सम्मान शेष है। अब तो नंगे सर के रिवाज ने सूरत ही नहीं सीरत को भी नंगा करके रख दिया है।

बुन्देलखण्ड की महिलाओं में सौंदर्य बृद्धि की भावना के कारण शरीर के विभिन्न अंगों पर गुदना गुदवाने की प्रथा रही है। यथापि गोदनें के परमपरागत तरीके अत्यन्त कष्टदायक थे। फिर भी स्त्रियां इसे गुदवाने का लोभ संवरण नहीं कर पाती थीं। आज यह कला महज आदिवासियों की पहचान बनकर रह गई है।

कभी गांव-गांव में अखाड़ों का प्रचलन था, जहां मल्ल विद्या अर्थात् कुस्ती कला का प्रदर्शन व प्रशिक्षण होता था। इन अखाड़ों में तैयार पहलवान देश-विदेश में अपना व अपने क्षेत्र का नाम रोशन करते थे। विश्व विजेता पहलवान गामा इसी बुन्देली धरा का सपूत था। जिसके लिये कहा जाता है कि विश्व का हर अखाड़ा जीत का मैदान हुआ करता था।

बुन्देलखण्ड में कभी तूरमार नाम का खेल प्रचलित था। जिसे आज के सर्वाधिक चर्चित खेल क्रिकेट का पूर्वज कहा जा सकता है। यहां पर फड़बाजी लोकरंजन का सशक्त साधन रहा है। जो शीघ्र ही वादों की धरोहर बन कर रह जाएगा। तब न चंग की थाप पर ख्याल सुनने को मिलेंगे और न ही फाग। तुर्रा-कलंगी जैसी फड़बाजी भी अव नाम शेष होकर रह गई है। यही हाल लोकनृत्यों का भी होने वाला है। दिवारी नृत्य, मौनिया नृत्य, डांडिया व जवारा नृत्य, धुविधाई, ढिमरयाई, रावलानृत्य भी अब अंतिम सांसें ले रहे हैं। हां राई नृत्य ने अवश्य अपनी अलग पहचान कायम की है। आवश्यकता है इस लोक कलाओं के बचे-खुचे अवशेषों के संरक्षण एवं संवर्धन की अन्यथा आने वाले पीढ़ियां इस अमूल्य धरोहर की पहचान से भी वंचित रह जाएगी।

कमला कालोनी, छतरपुर
छतरपुर (म.प्र.)
पिन - 471001

वैश्वीकरण कौ बुन्देली संस्कृति पै असर

– कैलाश मड़वैया

समसामायिक विषय पर बुन्देली में बुन्देलखण्ड की संस्कृति पर बुन्देली साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार जिन्होंने बुन्देली गद्य में मील के पत्थर की तरह बुन्देली तार सप्तक ग्रंथ 'बांके बोल बुन्देली के', 'मीठे बोल बुन्देली के' और 'नीके बोल बुन्देली के' प्रदान कर भारतेंदु हरिश्चन्द्र सा कार्य ही नहीं किया वरन् बुन्देली भाषा में अभूतपूर्व लोकप्रिय खण्ड काव्य-तथ्य ओर तथ्य एक साथ- 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' देकर अद्वितीय सृजन किया है। 'आंगन खिली जुंदइया' जैसे बुंदेली कविता संकलन सहित 19 ग्रंथ मां भारती को इन्होंने अब तक दिये हैं। बुंदेली को राष्ट्र ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने वाले अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाश मड़बैया, भोपाल की कलम से पढ़िये विचारोत्तक ताजा ललित निबंध वैश्वीकरण पर - सम्पादक

आज कौ जुग वैश्वीकरन कौ है ई खों नकारवौं अपनौ आत्मघात करवौ जैसो है। दुनिया भर में एक होवे की ललक मची है। पच्छम के देसन की मंशा भले ई के बहानें पूरब के बजार में अपनी बनी चीजें/जिन्सें खपावौ होवै पै ऊपर सें तौ जेई खाल ओढ़ें कै उदार आर्थिक बिवस्था में सब देसन खों विज्ञान और तकनीकी ज्ञान एक सौ मिले, धन कौ समान वितरन होवै, प्राकृतिक संसाधनन कौ एकसौ दोहन करो जाये, प्रदूषण रोकवे खों इंतजाम करे जावें मानें विकास के एक जैसे औसर मिलवें और देसन देसन के बीचां जौन खाई है वा पाट कें सबखों एक दूसरे के बजार अपनी अपनी जिन्स बेंचवे खों मिलवें। पै आचरन ई कौ उल्टउ हो रऔ। ईरान, अफगानिस्तान, सीरिया जैसे देसन में इन औरन नें का कर डारो सो कोऊ से छिपो नईयां। भारत जैसे बड़े देस जौन कौ आधारई लोक संस्कृति और आध्यात्मिक संवेदना है, वसुधैव कुटुम्बकम है। भाई चारौ फैलावौ है, प्रेम प्रसार है वौ तो एई सें अब इतै सब तहस-नहस हौन लगो। दुनिया में होड़ लगी भारत कौ बजार लूटवे की। इतई के प्राकृतिक शोषण करवे की। हालांकै बुन्देलखण्ड तौ इन दिनन अलग से प्रान्त है नइयां, जब कै जे बातें तौ अलग देसन पै लागू होतीं। पै ऐसी बात नईयां बुन्देलखण्ड राजस्व के हिसाब से भलई एक अलग प्रांत अबै नईयां पै इतै की अलग एक निखालिस संस्कृति तौ हैई है जौन अवश्य दुनिया से प्रभावित होत। कायकै संस्कृति कौनऊ बंदी बंदाई तलैया नौंई, बा तौ बउत नदी घांई है जी में हमेसई कछु जुरत घटत रत। कायकै आज के वैश्वीकरन में अपनों भारतीय वसुधैव कुटुम्बकम दूर-दूर नों नईयां। न तौ ई में आपसी भाई चारौ न प्रेम प्रसार और न आत्मिक विकास खों जांगा है, न बुन्देली संस्कृति घांई ई में सबके मंगल की मंशा है।

वैश्वीकरन में मानुस-संवेदना की तौ लगार नौ नईयां। बस बजार उर बजार, पैसा उर पैसा, कैसउ अपनौ माल खपाऔ और आगे बढ़ौ। लूटवे, खसोटवे की ऐसी धुन है कै 'लौरौ मरै चाय ज्वान, हत्या सें काम्'। ई के कारक हैं इण्टरनेट/उपग्रह, विश्वबेंक, यू.एन.ओ. और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जिनसें सबरे संसार में पश्चात संसार आज पूरी दुनिया खों नचाउन चाउत। इनसें हमाय देस खों फायदा सें जादां नुकसान है कायकै हमाऔ लक्ष्य तौ कभऊं अकेलौ धन बढ़ावे की मंशा कौ रवउ नइंया, न भोगवाद में हमाऔ भौत भरोसौ रऔ। हमाय देस में तो जिंदगी कौ लक्ष्य परभव

सुदारवौ, भगवान खों पावौ, सबके सुख-दुख में सामिल होकें हेंसा बांटवौ, सुख उर शांति से जीवौ। विद्या, धन, काम, मोक्ष की अलग-अलग अवस्थायें बताई गई सो सब जरूरी तौ है पै ई के आंगें पाछें भी अध्यात्म जादां जरूरी है। हाय तौबा मचाकें अपनी शांति हिराकें धन कमावौ उर कौनउ के मौ कौ कौर खेंचवे कौ धरम हमाए इतै हैई नइयां। धन से जादां मन जोरवे पे हमाई संस्कृति बनी है। पै आज के वैश्वीकरन में हम अपनी आत्मीय संस्कृति भूल कें भौतिकवादी होन लगे जेऊ कारन है कै हम उनइं चीजन खों पछयान लगे जिन्हें अमेरिका/यूरोप परेशान होकें छोड़त जा रऔ। ऐई सें हमाई लरकवार/नई पौद नशैलची उर हिंसक कामन में उरजन लगी। कायकै वे उदार लैकें घी पीवे की भोगवादी पाश्चात संस्कृति खों अपनाउन लगे। अपने इतै 'कर्जा वैल वनकें चुकाउनें परै' की धारणा हती। अपनी कमाई में संतोष करवे की कामना करी जात ती। एक बुन्देली लोकगीत में अपनी बिटिया खों व्याव के पछाई, विदा पै सीख दई जात ती-

जित्तौ पति कमा कें ल्यावै, ओई में गुजर चलइयौ-
मोरी भंवर कली।

पै अब कर्जा लैवे के लानें मेला भरन लगे उर सरकार खुदई कर्जा माफी करवे की घोषणा कर कर कें जनता की आदत विगारन लगी सो ई जुग में कर्जदार होकें किसान आत्म हत्यायें तक करन लगे। अब हमायी प्रकृति कौ सत्तेनाश होन लगो। जंगल मिटत जारये, पेड़ कटन लगे, नदियां सूकन लगीं, पहाड़ फूटन लगे, खदानें खोद कें धरती पोली कर दई, पानी जहरीलौ होन लगो, हवा नों विषैली हो गई और तौ और हमाई भाषा नौ वर्वाद होन लगी, बोली क्वाउन लगी, जी सें तित त्योहार वारे ई देस में हम अपनी चिनार नों खोउन लगे। बुन्देली जैसीं लोक भाषायें बिलुरन लगीं। जब हमाई हिन्दी तक पै आफत आगई तौ बुन्देली, ब्रिज, बंगला, मराठी खों को बचा पाउत ऐसे अंदेर में। वैश्वीकरन के नांव में सब जांगा जा बैलमूँतनी- अंग्रेजी हावी होत जा रई। चाय कम्प्यूटर होए चाय तकनीकी ग्यान सबत्तर अंग्रेजी कौ भूत ऐसें चढ़ रऔ कै हजारन साल की हमाई संस्कृति मैली हो रई। कायकें अकेली भाषई बिगरवे कौ सवाल नौंइ है एई सें संस्कृति सोउ जुरी। फल जौ होरऔ कै हम होरी औ मदनोत्सव भूलकें अब वेलेण्टाइन डे मनाउन लगे, हरयारी तीज भूलकें ग्रीन डे और मताई वाप खों जियत में 'ममी' उर 'डैड' कन लगे। झुक के पांव परवे की जांगा हम हाय-हाय, बाय-बाय बकन लगे। अपने धरम के जनेऊ, छोड़कें पच्छम के धरम की क्रास/टाई पैरन लगे। भगवान खों भूलकें नेकी के चलन विसर गये। बाप मताई खों भूलन लगे। कुटम एई सें टूटन लगे, नारी सुतंत्रता के नाव पै विटियां वहकन लगीं। भौतिक विचारन में ज्वान जवान आत्महत्या करन लगे। हमाए ज्वान अब अपनी मस्ती कें लानें कैसउं मिलै, पैसा लूट लाटवे की जुगत में अकेली दिखाऊ तरक्की खों लुलयान लगे। शराव, सबाव औ कबाव के चक्कर में चक्कर में सैंकरन मान्स आतम घात कर रऐ। एक का हजारन उदाहरन ई वैश्वीकरन के बुरये प्रभाव के हैं। अपनें इतै जमीन की कमी नौंई है पै फ्लैट बनवे सें बिल्डरन के घर भरन लगे। ई में सरकार तक शामिल होन लगी। गांवन में कारों की जरूरत नौंई है पै विदेशी कारें बेंचवे के लाने सरकार तक मदद करत, जीं सें पेट्रोल के कारन हमाऔ देश विदेशियन कौ गुलाम होन लगो। एफ-1 जैसे विदेशी कारों के खेलन खों गंगा-दोआब की उपजाऊ जमीन तक सत्तैनाश करी जान लगी। किसानन खों खेती करवे जंगा नइ मिल रई पै बिल्डरन खों मॉल बनावे खेत उजारे जा रये। मउआ, आम, नीम जैसे फलदार बिरछा काट कें यूकीलिप्टस जैसे पानी सोंकवे वारे पेड़ लगवाये जा रये। रासायनिक खाद लै कें किसान कर्जदार बन रये उर खेती की जमीन बंजर कराई जा रई। हमाए सुनार, लुहार, बाढ़ई, बुनकर, बंसोर, चर्मकार अपने काम करवे की कलाकारी भूलत जा रये। उनें काम नइं मिल रऔ। कुटीर धंधे चौपट हो रये। जे सब वैश्वीकरन के नाव पै, उदारीकरन के नांव पै, आधुनिक बनवे के नांव पै हमाई संस्कृति, भाषा, आचार-विचार बिगारवे की चालें चली जा रई। पूरी दुनिया ई बेरां एक शॉपिंग काम्पलैक्स बनत जा

रई। हर चीज बिकाउ हो रई।

जब-जब मैंगाई के भाव, बेंकन में जमा धन के ब्याज से जादों होन लगत, तबई हमाई बचत कौ कछु मतलब नइं रत उलटे मान्सन खों नुकसान होन लगत। एई सें कर्जा लैवे की आदतें पनपन लगतीं और जेऊ वैश्वीकरन कौ बड़ौ खतरा है। कायकै जेई हालात अबै भारत में बनन लगे। सो 1980 की मंदी में तौ हम नुकसान से बच गये पै अब की मंदी में बड़ौ कठन है भारत कौ बचवौ।

पै अब अकेलें निंदा करे से काम नइ चलनें। कायकै वैश्वीकरण तौ आई गव, होई रव सो ऊ सें तौ अपन बच नई सकत। हां, नीर क्षीर विवके से अपन खों एई में से अपने काम की चीज नकारकें आगें बढ़ने हमाऔ देस कभऊं ग्यान कौ गुरु क्वाउत रऔ। अबै भी जनबन की कमी नईयां अपने देस में। अपन जानतई हौं के अपने लरकन ने आज कम्प्यूटर के क्षेत्र में इतनी तरक्की करी कै अमेरिका जैसे अंगाए देसन में आज भारतीय ज्वान छाय हैं। मोय गरब है कै मोरो जेठो बेटा मनीष कैऊ सालन में अमेरिका में सॉफ्ट वेयर के क्षेत्र में खूब नाव कमा रऔ। ऐसई कैऊ अपन सब के लरका बिटियां नाव कमा रए हुइयें। आज मोबायल फोन नें भारतीय जिन्दगियन में चमत्कार ल्या दऔ। हालांकै साइंस के अविष्कार में उर वैश्वीकरन में अंतर भी है सो हमें विज्ञान कौ फायदा तौ उठाउनई हैं पै अपनी भाषा बुन्देली कौ बोलबौ उर अपनी बुन्देली/देसी संस्कृति नइं छोड़नें। टेली बिजन उर कम्प्यूटर सें फायदा भी कम नईयां सो उनकौ लाभ तौ लैनें पै दोषन से दूर रने। इलाज के नये तरीका निकरे उनकौ अपन खों लाभ उठाउनें।

नई शिक्षा लै कें ज्ञान कौ दिया उजयारने पै आमदनी अठन्नी उर खर्चा रुपइया न होवै। जितनौ पिछौरा होय उत्तई पाँव अगर अपन पसारें तौ कभउं न पछतैंय। कायकै लालच और भौतिक सुख सुविधन कौ तौ कौनउं अंतई नइयां। पै जरूरत सें जादां के फेर में अगर परे तौ पतन होनइ होनें है। सो अपनी औकात में रैवे में सब कछू है, कायकै जेई अपनी चिनार है और एई में अपन अपनी धरती सें जुर कें तरक्की कर सकत। कोऊ की जूँठन सें न तौ अपनौ पेट भरत, न अपनें गुन सुदरत। अपने पेड़, नदी, तला बचाउनें, मैले नइँ करनें उर अपने ऊर्जा के साधन बचाउनें। अपनी खेती की धरती खों अपनी देसी खाद दैनें रसायनिक खाद से खेत नइं बिगारनें। इनके सेंसैक्स उर जी.एन.पी./सकल राष्ट्रीय उत्पाद/ की चालन में नइं फसनें।

कायकै जैसें- अपनें इतै पैदल चले सें भौत फायदा बताये गये, साईकिल तक सें चले में फायदा है पै इनकी जी.एन.पी. से नइं बढ़त। इनकी जीएनपी बढ़त कार सें पेट्रोल बार कें चलवें में ठण्डी हवा लय से नइं इनकी जीएनपी बढ़त एसी की हवा खाये से बढ़त... सो अपन खौं इनकी जीएनपी के फेर में नइँ परनें, अपनी प्राकृतिक वातावरन में रैवे की आदतें नइ बिगारनें। कायकै अगर रोग दोग दूर राखनें उर कर्ज में नइं फसनें तौ अपनी जरें औ जमीन नइं छोड़नें। जौन ई बेरां नौंनों है उये अपनाउनें, बुरऔ छोड़नें। इनकें डी जे उर कानफुराउ पाश्चात संगीत सें अपने लोकगीत सैकरन गुने साजे हैं, मीठे हैं और नीके हैं। हमनें तौ भोपाल में अपनें लरका के व्याव में बुन्देली लोकगीत गवा कें आ देख लये, इनकौ मजा कैऊ स्टार वारे बड़े होटल में अजमा कें आ देख लऔ। सो हमें जमानें सें दूर नइं रने पै नौंनें बुरए कौ ग्यान अवश्य राखनें। लरका-बिटिया दोई बरावरी के मानके पढ़ाउनें उर खुद आगें बढ़नें। अपने गांव, समाज उर देस खों इकईसवीं सदी के संगै आधुनिक और आगें बढ़ाउनें। पै अपनी चिनार के संगै। काय के बुन्देली केसरी छत्रसाल मराझ नें अठारवीं सदी में कई ती कै-

लाख घटै कुल साख न छाँड़िये, वस्त्र फटै प्रभु औरहु दैहै
द्रव्य घटै घटना नहीं कीजिये, दैहै न कोउ पै लोक हंसै है
भूप छता जलराशि कौ पैरवौ, कौनउं बेर किनारे लगै हैं-
हिम्मत छांड़ें ते किम्मत जायेगौ, जायगौ कलंक न जैहै।

75, चित्रगुप्त नगर, कोटरा
भोपाल - 462003
मोबा. 9826015643

लुप्त होती विधा फड़ काव्य के आशु कवि श्री राम सहाय कारीगर

– डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन', पी.एच.डी.

बुन्देलखंड का क्षेत्र बहुत बड़ा है। यहां की भाषा भी बुन्देली कहलाती है। बुन्देली का अपार साहित्य है। इसकी विधायें भी अनेक हैं। बुन्देली में फड़ काव्य की विधा भी बहुत प्राचीन है। फड़ काव्य के अंतर्गत, शैर, मज तड़का, ख्याल, फागें-छंदमाउ व चौकड़िया, लावनी, भजन आदि हैं। वर्तमान समय में जैसे जबाबी कीर्तन व कब्बालियों का मुकाबला होता है, उसी प्रकार से फड़ काव्य की विधा फागों में सबसे अधिक फड़बाजी चलती थी। फड़ का अर्थ है प्रतिद्वंदता या मुकाबला। फागों के साहित्य में उच्चतम कोटि का ज्ञान सरलतम भाषा में गाया जाता है। फागों में राई नृत्य होने से असीम आनंद होता है, जिसमें दर्शकों की अपार भीड़ जुटती है। आज भी नृत्यांगना बेड़नियां राई नृत्य फाग गायन में करती हैं।

फागें दो प्रकार की प्रमुख रूप से होती है। प्रथम छंदयाड फागें और द्वितीय चौकड़ियां फागें। बुन्देल खंड के मऊरानीपुर तहसील की मेढकी ग्राम में जन्में 'ईसुरी' ने अमरत्व प्राप्त किया है। ठीक इसी प्रकार से छंदयाड फागों की फड़काव्य की विधा में रामसहाय कारीगर बेजोड़ हैं। इनका जन्म मऊरानीपुर तहसील, जनपद (झांसी) के ग्राम (स्यावरी) में सन् 1898 में हुआ था। बुन्देली की आशुकवित्व शक्ति इन्हें विरासत में मिली थी। छंदयाऊ फाग में दोहा, शैर, लावनी, टेक, छंद तथा उड़ान के मिश्रित रूप होते हैं। एक छंदयाउ फाग में किसी भी कथानक का वर्णन होता है। गायक मंडली के साथ गाते हैं तथा साज बाज में नगड़िया, झांझें, ढोलक व कहीं कहीं हारमोनियम भी होता है। लय ताल स्वर में नर्तकी बेड़नी नृत्य करती हैं तथा वह स्वयं गायिका होती है। लहंगा-चुन्नी में सजे-धजे रूप में बेड़नी नर्तकी बड़ी मोहक लगती है।

बुन्देली फड़काव्य की विधा आज लुप्त प्राय है। यत्र-तत्र कुछ फागें होली के अवसर पर सुनाई पड़ती हैं, वह भी बहुत कम मात्रा में। इस फड़ काव्य की विधा पर राठ के पं. गनेशीलाल बुधौलिया ने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। डॉ. श्यामसुंदर बादल (राठ) ने फाग साहित्य पर अनौखा ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ के संग्रह में बुन्देली फागकारों का वर्णन है। उनकी पैनी दृष्टि से बन्देली की फड़ काव्य विधा के यह आशुकवि श्री रामसहाय कारीगर ओझल रहे। उनके साथ गायन करने वाली माया नाम की गायिका नर्तकी आज भी है जो लगभग 116 बसंत देख चुकी है।

स्व. श्री रामसहाय कारीगर में त्वरित कथानक पर छंदयाउ फाग लिखने व मौखिक रचना करने की तथा गाने की क्षमता प्राप्त थी। दंगलों में विपक्षी की रचना का जवाव देना मौखिक रूप से एक कथानक ही नहीं दो-दो व चार-चार कथानकों की रचना करते जाना व गाते जाना उन्हें एक सहज काम था। फड़ काव्य जीतने को मानक होते हैं कि विपक्षी ने यदि सगुण को गाया है तो जवाब में सगुण ही गाना चाहिए तथा उससे कुछ बढ़कर उसमें कुछ यदि कलात्मकता है तो उससे अच्छी रचना मानी जाएगी। अधरोष्ठ का अधरोष्ठ से जवाब देना होता है। श्री कारीगर एक-एक सप्ताह फड़ में अपनी मंडली के साथ डटे रहते थे तथा फड़ जीत कर ही आते थे।

संक्षेप में लुप्त होती इस फड़काव्य की विधा की कलात्मकता देखिए, जिनके कारण वे दंगल जीतते थे। एक अधरोष्ठ रचना देखें। इसमें पवर्ग को निकाल कर रचना होती है।

दोहा: श्री शारदा आनकें, कर कंठन स्थान।
हे जननी हरि के चरित, करन चहौं कछु गान।।

शैर: अज्ञान जान जननी दै जन को ज्ञाना।
दै जोर कड़ी छंद शैर सुनै सुजाना।।

टेक : राजा टेक धनुष की ठानें- सीता जी के लानें।

छंद : सुंदर धनुष जज्ञ की साजा, आये देश देश के राजा
टूटा धनु न हुआ कुछ काजा-कहें जनक नरेश।
नइयां छत्रानी जग कोय, जानें छत्री जाया होय,
निज-निज घर को जाना होय- सुनी सकल नरेश।।

उड़ान: लखन तड़क के ये कहीं, कितनों हर कौ दंड
कहौं उठा लूं गेंद से, ये सारे नौ खंड।।

इस प्रकार की शैली में अधिकांश रामचरित मानस व

आल्ह खंड की बहुत सी रचनायें हैं। जिनके कारण वह फड़ में विजय प्राप्त करते थे। इसी प्रकार के फड़ काव्य की फड़ जीतने वाली रचना का अवलोकन कीजिये।

दोहा: न्यामत सांई मंगाई सुन चेला दै ध्यान।
न आ न जा कोउ दीन कें, भिक्षा लीजों आन।।

टंक: चेला जा जा काम बजाजा-जा ल्या न्यामत ल्याजा।

उड़ान: जा करज के काजा

उपर्युक्त रचना में प्रथम शब्द चरणांत में बदलकर रखा गया है। यथा न्या का उल्टा यान तथा न आ का उल्टा आन तथा जाल्या का ल्याजा तथा जाका का उल्टा काजा हो गया। इसी प्रकार से सम्पूर्ण रचना है। ऐसी विपक्षी गायक की रचना न होने पर उसे हारा हुआ माना जाता है। एक अन्य रचना देखिये जिसे फड़ में जीतने के लिए प्रयोग किया जाता है।

दोहा: गूजरि ने गुलचा दिया, पकर श्याम का हात।
तहां पटक दधि झटक कर, थान कुंवर भगजात।।

टेक: तुरतई तंजा स्याम कौ दइया, आदइ खुड़ी कनैया।
आनै पाय ग्वालिन ऐंगर, भागत भौत तरैया।।
और गोपी पीछें लागी, गई जां जसुदा मैया।
आमैं माता तोय बता दें, भरी डरी अगनैंया।।
आनै जात कंस से कैदों, राम सहाय दिखैंया।।

उपर्युक्त छंद के चरणांत के शब्द को बदला गया है। उलटने पर जो नया शब्द बना उससे अगला चरण प्रारंभ हुआ। यही क्रम पूरी चौकड़िया में है व सार्थकता में कहीं व्यवधान नहीं होने पाया है।

एक सिंहा विलोक न रचना देखिये। जिसमें यह विशेषता हे कि छंद के चरण के अंत में जो शब्द होता है, उसी शब्द से अगला चरण प्रारंभ होता है। छंदयाउ फागों में श्री रामसहाय कारीगर का कमाल देखिए।

दोहा: नंद लाला ने सखिन को, किया निकट बुलवाय।
आये यमुना तीर पै गइयां रहे चराय।।

टेक: गइयां चरा रहे नंद लाला- नंद लाला संग ग्वाला।

छंद: ग्वाला लीने टेर फेर, कीनी नाहीं देर घेर,
घौरी घूपर टेर फेर सखा चटपट।
चटपट सखा फेर रये गइयां, गइंया ग्वाल बाल लरकैयां
ठैया स्याम कदम की छैंया- बैठे झटपट।

दोहा: झटपट हरि के सखा उठे- चट पट फेरें धेनु।
धेनु चैन सखा चरा रये, स्याम बजावें बेनु।।

ऐसी सिंहा बिलोकन रचनायें फड़ में विजयी बनाती थीं। एक और छंदयाउ फाग देखिये। जिसमें कलात्मक सौंदर्य व उलट गतागत विधि से रचना की गई है।

दोहा: नई फाग टकसार नई, क्यों गाते ना ईनु।
नहीं फाग ऐसी सुनूं, सुन सायर मति हीन।।

टेक: नागा इंगलिश में ये गाना-ना चाहा न चाना।

चरण आरंभ का शब्द चरण थे, अंत में बदला है तथा अर्थापत्ति दोष भी नहीं आने पाया है।

इसी प्रकार की एक रचना का प्रारंभ देखें।

दोहा: कये बचन आंखन लखे, झूंठी कहूं न एक।
कवे अर्थ चातुर गुनी, कर कर खूब विवेक।

टेक: काहां जात कहां का, ये कौ कां हां जात कहां का का जाने को जांका।

इसी प्रकार के चमत्कार पूर्ण व सार्थक पूरे प्रश्न की रचना है। लोककवि की एकाक्षरी रचना दृष्टव्य है।

'नानी नान नुनौ ना, नैं नें नुनों न नी ना।
नन्ना ना नों नानें नैं नैं, नुनें नना ना नी ना।।
नोनी नुनें न नौंने नौंने, ननू नुनें नौनी ना।
नन्नू ना नों नन्ने नन्ने, नन्नी नान नुनी न।

कवि एक अक्षर से पूरी रचना कर दी है। अपना नाम इसी से 'नन्नू' रखना पड़ा। इसमें नुनों अर्थात खेत-काटने के प्रसंग को लिया है। एक दंगल जीतने वाली चतुष्पादी का आनंद लें इसमें कोई माया नहीं है।

शैर: डगर चलत पनघट झट नटखट बढ़कर।
झटकत व मटक पटकत पकरत व जलल कर।
मटक चलत झट सरपट सरपट, धर सर सटक पकर चट।
छलकत दध सरपर रम तरकर लचकत कमर उड़त पट।
तर चड़ लखत बड़त उत नटखट, पकरत पट हर झटपट।
हर हर डरत न नवल लरत उत, कर पकरत तर तर वट

उनके कई शिष्य गायक हैं। इस प्रकार की अनेक रचनाओं को अमूल्य निधि समझ कर प्राणों से लगाये हैं, लिखाते नहीं हैं। कई रचनायें लुप्त हो चुकी हैं।

कठिन काव्य के प्रेत महाकवि केशवदास का एक सवैया ऐसा मिला था, जिसे किसी भी प्रकार उल्टा या सीधा पढ़ने पर उच्चारण एक सा निकलता है।

'माता बनी बलि केशवदास सदा बस के लिए बनी वलमा
मा सम सोम सजै बम तीन, नवीन बजै सम सोम समा'

इस महाकवि की रचना की तरह कौन कल्पना कर सकता है कि एक लोक कवि इसी विधा में (नरेन्द्र छंद) चौकड़िया भी रच सकता है। उदाहरण देखिये

'जा जा कै आ सिख खिसिआ कें, कैना बना बनाकें।
ना झामस दै समझाना, कैंना मना मना कें।।
वे नर जानों नों जारन वे, केसा कसा कसा के।
ना जा जावे वेजां जाना, कै बानर रन बांके।'

ऐसी रचना छेड़ गता गत कहलाती है। सभी लोक कवियों व लोक गायकों में ऐसी रचनायें मिलना दुर्लभ हैं। आशु कवि स्व. श्री राम सहाय जी कारीगर ने अपनी समग्र रचनाओं को 'नई टकसार' का नाम दिया है।

इस लघु कलेवरीय आलेख में उनका समस्त विवरण देना असंभव है, अत: उनकी कविताओं की मात्र झलकी स्वरूप दो दो चार पंक्तियां दी जा रही हैं। उनकी प्रश्नावली की फागें तो हतप्रभ करके विपक्षी को निरुत्तर व सिंकर्तव्यमूढ़ कर देती हैं। जैसे

दोहा: 'सायर से अरजी करौं फाग इतै दो छड़।
तनक बात निनवार दो, बीज बड़ौ कै पेड़।।
टेक: जइयो बात तनक बतलाकें, कहौं भेद सब गाकें।
छंद: मोरी बात समझ ना आवै, कोऊ जेठौ पेड़ बतावें,
कोई फल खां बड्डों गावें, की की मानें।

इसी प्रकार-

दोहा: तत्व पांच जब नई हते, नहीं चन्द्रमा भान।
कौन ठौर किस जगह पै, रात हते भगवान।।
टेक: कर, पगा, मुख, उर, श्रव न उनके कब।

इसी प्रकार की फड़ काव्य की सैकड़ों रचनायें स्व. श्री कारीगर के द्वारा रची गई और आजीवन फड़ गायकी भी की तथा दंगल जीतते रहे। अपार आनंद देने वाली फड़ गायकी विधा आज लुप्त सी हो गई है। यह लोक काव्य की जान है। स्व. श्री राम सहाय जी कारीगर मेरे पूज्यनीय पिता श्री हैं अत: अधिक श्लाघा न करते हुए यथार्थ की झलक मात्र यहां दी गई है। उनके विषय में उनकी दो अंग, चौअंग, अठंग, गतागत, उलट गतागत, अधरोष्ठ, बारहमासी, छत्तीसमासी सिंहा विलोकन तथा बुन्देली शब्दों का सूझबूझ पूर्ण प्रयोग देख कर ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे स्व. श्री गुरु दलाल श्रीवास्तव ने कहा था- 'स्व. श्री कारीगर यद्यपि अधिक शिक्षित नहीं थे पर जिनको उनकी रचनाओं को सुनने का मौका मिला करता था, वे उनकी सूझबूझ व बुन्देली खंडी भाषा के शब्द आदि की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते। लेखक इसी ग्राम का निवासी होने के कारण उनके इस अलौकिक गुण का महान प्रशंसक रहा है।' (फाग रसखान छंद- 'दो शब्द')। वरिष्ठ अधिवक्ता बाबू श्री लालराम अहिरवार ने लिखा है 'बुन्देलखंड की परिस्थितियों पर स्व. श्री रामसहाय कारीगर ने साहित्यिक व बुन्देली भाषा में प्रसिद्धि प्राप्त की है।'

(टाउन एरिया मांगपत्र पृष्ठ 3)

'दैनिक जागरण' झांसी से प्रकाशित 12 मार्च सन् 1979 के अंक में उद्‌भट विद्वान डॉ. सियाराम शरण शर्मा जी ने अपने आलेख 'बुन्देल खंड का अज्ञात साहित्य' में लिखा है-

'... सामान्य शिक्षा प्राप्त करने वाले इस कवि में आशु कविता करने का अलौकिक गुण था।'

प्रो. डॉ. श्री बहादुर सिंह परमार प्राध्यापक डिग्री कालेज छतरपुर ने अपने ग्रंथ में लिखा है- '.... फड़ काव्य की त्वरित रचनायें दंगल में लिखकर गाना इनका प्रमुख शौक था, जिससे वे गायकी के दंगल जीतते रहे।'

(बुन्देल खंड की छंदवद्ध काव्य परम्परा पृष्ठ 141)

इनके अतिरिक्त डॉ. स्व. मोतीलाल तिवारी 'अशांत' झांसी ने 'बुन्देल खंड दर्शन' के साहित्य में डॉ. स्व. श्री कन्हैयालाल शर्मा कलश गुरसराय सम्पादक 'बुन्देली वार्ता' और अनेक विद्वानों ने श्री कारीगर की प्रशस्ति में बहुत कुछ कहा है।

प्रस्तुत आलेख में फड़ काव्य को संजीवनी प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। उनकी रचनाओं की किताव उन्हीं के द्वारा नामकरण की गई 'नई टकसार' प्रकाशित हो गई है। आशा है बुन्देली फागों की फड़ गायकी में इससे वल मिलेगा।

पूर्व प्राचार्य- अखंडानंद जनता इं. कॉ.
गरौठा, जिला- झांसी (उ.प्र.)
निवास- ग्राम पो.- स्यावरी तह. मऊरानीपुर,
जिला- झांसी (उ.प्र.)

बुन्देली झरोका

बुन्देली में काव्य की परम्परा बहुत लम्बी है, इस बोली ने अनेक समर्थ कवियों की अभिव्यक्ति को विश्वजनीय बनाया है। बुन्देली में काव्य सर्जना की सामर्थ्य ब्रज, अवधि और मैथली से कमतर नहीं हैं, यदि बहुत पहले हिन्दी के सुधी समीक्षकों ने बुन्देली काव्य वैभव पर अपना दृष्टिपात कर लिया हो तो बुन्देली कविता विस्तृत विश्व में समाहित हो पाती, इस खंड में बुन्देली की काव्य रचनाओं का स्तवक संजोजित है।

गोरी मुइयाँ ओंठ गुलाल

डॉ. लखन लाल पाल

उठी सवेरे द्वारौ झारै, लैखें अपन बहरिया सें
गुटका दबो गाल में ओखे चूना लगो उंगरिया में

थूक खें ओने आधौ खा लऔ, आधौ खुसो खुटी में
सास-ससुर की आन करत है, दाबै रहत मुठी में
आग लगो मैं करौं जिजी का आदत मोरी पर गई
कीरा लगत हतो दाँतन में, दाई दबा बता गई
घुँघटा ओखौ बड़ौ जलीलौ, मोती जड़े पुंगरिया में
गुटका दबो गाल में ....

हारै-खेतै रोज जात है, ओली भरै चनन की
आंगू दुकान धरी बनिया की, लेवै बहू रजन की
सबरी भितियाँ रंगी पीक में, कोऊ न केहै जिजी सें
वे सब एकई सी हो गई है, बैठी अलग पिढ़ी में
पाती सी वे चरत रहत है, होड़ लगायें बुकरिया से
गुटका दबो गाल में ....

तलब लगे पै ससुर जेठ सें, घुँघटा काढ़ै माँगे
हंस-हंस देवर खबा तमाखू, नैनन सैन चलावै
ऐसी बिधी बिगर गई अब या, फैसन बनी तमाखू
इनकौ राज अलग सें अपनौ, कहत फिर ते बापू
हटके सें वे मानत नहियाँ, सबरी जाँय लुघरिया में
गुटका दबो गाल में ....

मिस्सी कौ अब गओ जमानौ, सोलई ते सिंगार
सत्तरावाँ रूप भओ गुटका, अब मुइयाँ कहती बारंबार
छोड़े सें अब छूटत नहियाँ, कहती दाँत नसा गए
एक दिना वे लड़ गए मोसें, कछू न कही रिसा गए
मैं समझी अब काए लड़ेते, पीक लगी चुनरिया में
गुटका दबो गाल में ....

कृष्णाधाम के आगे, अजनारी रोड,
नयाराम नगर, उरई (जालौन) उ.प्र.
मो. 09236480075

वन पाखी टेर गया

सत्यमोहन वर्मा

वन पाखी टेर गया भुनसारे ताल पर
अग्नि पुष्प दहक गये टेसू की डाल पर
वैठ गया शिशिर शान्त अनमना उदास
मलिन हुए अंग-अंग शिथिल हुई साँस
मोह भरी दृष्टि डाल लेता है काल पर
महक उठे महुआ और बौर गई अमराई
रसभीनी चलती है वासन्ती पुरवाई
प्यार भरी थपकी दे जाती है गाल पर
सुख-दुख के छन्दों से रची हुई कविता सा
जीवन गतिमान सतत निर्मोही सरिता सा
मनचाही रेखाएं खींच रहा भाल पर

असाटी वार्ड-2,
दमोह - 470661 (म.प्र.)

फागुनी दोहे

डॉ. जमना प्रसाद "जलेश"

प्रीतम बसे पहार में, आम गए बौराय।
कोयलिया की कूक जा, मन आग लगाय।।
फूलों है फागुनी सखी, लाली सी बिखराय।
गलबैंया ना डारियों, साजन की सुधि आय।।
टेसू जैसे होंठ भये, रंग गुलावी गाल।
कौन गली से आ गयो, सखी सोलवां साल।
मन में प्रियतम प्यार की, जब जब उठे हिलोर।
रात कटे करवट बदल, अंसुअन हो गई भोर।
दिन में तो सूरज तपे, रात तपे जा देह।
सखियां ताने दे रही, नही सजन को नेह।।
खेलन रंग गुलाल ले, देवरा ठांडे दोर।
रंग डारी जा देहिरा, दइ बैयां झकझोर।।

सिविल वार्ड नं. 4, दमोह (म.प्र.)
मो. 3179608285

गाँव कौ एक दिन

डॉ. रामनारायण शर्मा

एक रात बीत गई सूरज की उगन नई
पूरब ने खोल दयें द्वार
हीरां हीरां चल रई बयार।
गलियन में भोर भओ
पनघट पै सोर भओ।
भौंरा फिर करन लगे गान
कलियन नें खोल दये द्वार

हरां हरां .....

ऊषा फिर डोल रई बाल रवि संग लयें
पनहारिन लौट गई अपने सिर कलस लयें
चलन लगौ जीवन व्यौपार

हरां हरां .....

मालिनियां फूलन के अपने अरमान लयें
काछिनियां डेलिया में अपने सब साग लयें
गली-गली चल रई निहार

हरां हरां .....

आरी औरेंती के फुड़वा न गैंती के
शबद हो रये है अपार
चाक पै बैठौ कुम्हार

हरां हरां .....

अनयारे मनयारे मानिक मन मोर लयें
बाल रये बोल हजार
जनी जनी रच रई सिंगार

हरां हरां .....

बूढ़े गभु आरे सब बैठे इक ठौर
बतियान कौ उनन्दौ चलन लगौ दौर
अथाई पै लाग गओ दरबार

जीवन कौ चलन ....

हरबारे निकर गये खेतन की ओर
घर-द्वारे मचन लगो लरकन कौ सोर
डोली लै कढ़ गये कहार

हरां हरां .....

सूरज सरक गओ पच्छिम की कोर
जंगल से लौटे बरेदी संग ढोर
श्यामा रम्भा रई द्वार
सारन में पसरो उसार

हरां हरां .....

संझा के संग संग लौट आई रात
नभ में उजयारे की सज गई बारात
पिछवारे में महके कचनार

हरां हरां .....

हरां हरां सब की फिर हो गई बियाई
दद्दा सुना रये राम की दुहाई
खरियन पै हो गओ सुखसार

हरां हरां .....

बाई नें गै लई धरती की सिजिया
आंखन में तैर गई बिन व्याही बिटिया
का हुइये भरतार

हरां हरां .....

आसों की खेती में लग गओ तुसार
बनिया कौ दूनों हो गओ उधार
का हुइये करतार

हरां हरां .....

सोचत में डूब गई सरग तरैयां
सारन में बंधी रंभा उठी गैंया
गलियन में हो गओ भुंसार

हरां हरां .....

'रामायण'
695/3, सिविल लाइन्स, रानी ल.बाई पार्क के
सामने, झांसी (उ.प्र.) 284001
फोन - 0517-2442026

दहेज एक अभिशाप

डॉ. यू. एस. पाठक

लड़की व्याद आज दुनिया में, ऐसी चलन चलाई
पईसा न हाथ में एकाऔ, रोरय बाप मताई ।।
मौड़ी मोरी अबै क्वारी छाती अद्दन धरी है
घर वर की आशई आशा में, खूबई खूब फिरो है ।।
घर में होय न भुंजी भांग पर मागत माग खरी है
फिरने काल द्वारे-2 पर आप सोने की बने लरी है ।।
काया सूख ठठेरो हो गई
रो के कैरई बिन्ना की आज मताई ....

झाँसी और छत्तरपुर देखो, कऊ न जाय उवारें।
घुटकौ प्राण कडईया हो गये देखे लाख द्वारे।।
कैउ हजार देवे को कैदई और मना मना कें हारे
पाठक इन्ही गुनों से पूछो नईया अब तक डरे क्वारे।।
पइसा की वजय से
अब तक कहू न भई सगाई ....

दशा विचित्र हो गई समाज की कई वर्गों में बट गयी
एई से जो शादी को पवित्र रिस्ता व्यवहारन से कट गयी।।
लरका को घर वारी जाने दद्दे जाने नकद रुपया
कसर कछु दै वे न राखी विक गई टाठी गड़ई कुपईया।।
बारात वारन को चाने गाड़ी बोतल
बिस्कुट मक्खन और मलाई ...

लड़की व्याद आज दुनिया में, ऐसी चलन चलाई
पईसा न हाथ में एकाऔ, रोरय बाप मताई ।।

ग्रा. पो. लिधौरा,
टीकमगढ़ (म.प्र.)

तनगाड़ी

शंकरदयाल खरे

पंचर हो गइ जा 'तनगाड़ी'
हवा निकर गइ सारी।
पैल हती जा रंगी-चंगी,
सबै लगत ती प्यारी।। पंचर ...

चिकनइ चुक गइ, पालस छुट गइ,
पटकें पर गइँ न्यारीं।
अब बदरंगी हो गइ सूरत
लगन लगी कुपयारी।। पंचर ...

खिलकट हो गए पुरजा-पुरजा,
चैंकत चलतन भारी।
ढक्का दैं दै, ठेलें-ठेलें,
अब जा बड़त अँगारी।। पंचर ...

आँगे कीं सब लाइट झक्क भइँ,
पचकी धरी पछारी।
रिंगें कट गइँ, पिस्टन घिस गए,
मौं फेरत नर-नारी।। पंचर ...

जँजर-पँजर भओ सबरू ढाँचा,
सुदरत नइँ सुदारी।
दम नइँ रइ इंजन में तनकउ,
कैसें चलै बिचारी? पंचर ...

एक दिनाँ ई सूरत पै सब,
होत हते बलहारी।
आँगे चलकें अब का हुइयै?
जाँनें अवध बिहारी। पंचर ...

डॉ. बहादुर सिंह परमार
संपादक - बुंदेली बसंत

पनें गांवन की तलास

डॉ. जवाहर लाल द्विवेदी

कित हिरा गइ गांव हमांय, उनखौ ढूढ़त फिर रय
पने पांव पे मार कुलइया, उरद-मूंग से चुर रय।। टेक।।
कां गय वे चौथरा अथाई के, किते चले गय बूढ़े वारे
किते हिरा गइ रमटेरा-सुर, कां गय आला गावे वारे
लूगर लग गऔ प्रेम भाव में, सद्भाव बनावे फिर रय ....

उठत भुनसरा सुना परत तीं-घर-घर बारामासी
हारन ढोर बछेरू जा रय, घन्टी सुना परत ती खासी
गोधन सबरौ मिटत जा रव, शहरन से दूध गंगाके पी रय.....

कभऊं बनत ती महेरी-मठा की, कभऊं चेंच की भाजी
सांसी कऊं बेरन को मिरचन, कडी बरत ती साजी
बरा-मगौरा तो सपनन रे गय, मौठी मौडा मेंगी खा रय ....

होरी होय चाय दिवारी, ईद पे खुशियां सोउ बांटत ते
राम-राम दसरय की होत ती, मन कौ मैल काटत ते
अब तौ सब ठसकीले हो गइ, एकला बनके जी रय....

भले हते माटी के घर तौ, पर मन में तो सौटंची सौनो
अटा अटारी सबकें बन गइ, भाव नई कोनउ कौ नौनौ
ऐंठत लम्पा से जा रय है, बस अपनौ-अपनौ घर भर रय ....

अब बूढे भय बाप मताई, सोचत को करवे इनकी सेवा
सूकी रोटी देवे रो रय, खुदई मसक रय रबडी-मेवा
संतत सत्यानासी पजरई बेटा सरमन असुंआ पी रय....

सलाकार साले भये घर में, साडू सबरौ घरई संमारें
घरवाई के कये से चल रय, भलौ होय तौ रामई जाने
मम्मा की बातन में बिन्नू-भइयन-2 भारत जैसे लर रय....

सबकें हाथन में मोबाइल, कत मुट्ठी में कर लइ दुनियां
रमियां थाने कचेरी भटके, भईयन से बोला चाली नईयां
अपने भये पराये अब तौ, सगे गैरन के बन रय....

संजा बेरा होत गांवन में गैले-खोरे सूनी पर गई
वांचवौ रामान कौ भूलो, टी.वी. सीडी घर में चल रई
बिसरी भगते, उर फागें, फिलमी गानन पें रातन भर नच रय.....

बापू जा मानत ते आजादी आय से, गांवन हुइये खुशहाली
कैसे भाग फूटे हमायं के, डगर-डगर मच रई वदहाली
सामें फोटू गांधी जू की धरके, कुर्सी पावे माला भर जप रय.....

प्राध्यापक, वाणिज्य
शासकीय महाविद्यालय,
राघौगढ़, जिला-गुना (म.प्र.)

अजन्मी बिटिया की चिठिया

आशाराम त्रिपाठी

माई री! बिनय करौं कर जोर
चित्त सें चिठिया पढ़िये मोर
हरां कें चलत सांस की डोर
पै देखन पाई न संसार।
ऐसौ लग रओ बाप मतारी हां बिटिया भई भार।
मोय का खोरी है। आत्मा तोरी है।
का बाबुल कौ नेव मर गओ माई की ममता मर गई।
लग रओ हीर पीर बारे हिरदे की होरी जर गई।
तुमने करवाई कउं जांच
खरच करकें हजार दस पांच
अजनमी पै अब आहै आंच
मोह कौ मिट गओ नांव निसान।
जान जान अनजान की जा रई जनम के पैलां जान।
ई सें भले तौ भईया होते माई बलैयां लेती।
भर अंकवार लगाती आंचर प्यार मुलक कौ देती।
अरी! अकुंवानो बीज न खोद
अबै में आ न पाई गोद
भली सी भीतर कर ले बोद
माई पछतैहौ करकें चूक।
कईयक बारा मड़ियां पूजत तऊ चलत न कूंख।
जो होती में पेट वायरें लिपट पांव सें जाती।
हा हा दैया कर मैया सें बेर बेर गिगयाती।
ऊपर चढ़त बेल न खोंट
लगत तौर ममता की छोंट
बोल तौ बोल अरी दो ओंठ
दया करुना के खोल किवार।
ममता की मूरत मो सें पैलां ममतै न मार।
पूरी करदे मोरी एक ललक तौ गाहौं साकौ।
एक झलक ओली में हो चंदा मामा की झांकौ।
जौ जस जनमन रैहै याद
अंस अपनो न कर वरवाद
होत विटियन सें कुल आबाद
मान कें ब्याद न पिंड छुड़ाव।
आगन्नों कर करौ दादरे और सोहरे गाव।
मोरे ऊपर भइया हुइयै लैहों नोनकंदईयां।
छिटक खेलहों अपनी गुईंयन संगै चईंयां मईंयां।
करहों मात पिता की गौर
झारहों दोर उसारौ पौंर
अगारें कभऊं न दैहों कौर
खड़ी हो जैहों अपने पांव।
बाप मतारी कौ पढ़ लिख कें सबरें करहों नांव।
जी ललकत कै हमजोली संगै सजाऊं मामुलिया।
दोई गडुलियन घुंघरूं बांदों नाचों पैर झंगुलिया।
भर किलकारी करों किलोर
पकर तोरे आंचर कौ छोर
बात फिर मनवाऊं दै जोर
भरें में भीतर भौत उमाव।
पुतरा और पुतरियन कौ आंगन में रचहों ब्याव।
ब्या दइयौ गरीब घर में न दान दायजौ दइयौ।
करबे पीरे हांत एक चुटकी भर हरदी लईयौ।
मानत बिटियै रांदो भात
चिरैया आंगन सें उड़ जात
काऊ के पेटै नईं समात
होन दे अंगनाई में भोर।
बिटियै कम न मानो मैले मन कौ चीर निचोर।
मिलहैं दुक्ख सासरे में तौ कभउं न तुमें सुनाहों।
एकई बेर साल में राखी पौंचा बांदन आहों।
देख जैहों ग्योंड़े के रूख
जताहों न दाने की भूख
बात इक कै रई मैं दो टूक
आप सोउ कोऊ की बिटिया आव।
उनने पोसो तुमें मोय तुम पोसौ करज चुकाव।
मान कें बिटिया चिठिया हां मां लगा गरे सें लइयौ।
भली लगै मोरी बिनती तौ फिर बाबुल सें कईयौ।
बिटियै बिरथा मानत भार
रतन अनमोल गरे कौ हार
लाड़ली लक्ष्मी कौ औतार
बिटियां रईं भारत की सान।
भईं इनईं में सें अनसुइया सावित्री गुनवान।

एफ-108/11, शिवाजी नगर, भोपाल

बुँदेली खजानौं तक लईयौ

पं. हरगोविन्द तिवारी

बुँदेली मेला सुहानौं है,
सुहानौं बुंदेली ठिकानौं है।
बुँदेली ठिकानौं पुरानौं है,
पुरानौं बुँदेली खजानौं है।
बुँदेली खजानौं तक लईयौं,
संगै अपन जौ लयें जईयाँ।

इतै मिलत है कुनैतौ, कुठिया,
राँटौ, जाँतौ, मौट, जतरिया।
सींकौ, चपिया, हंड़ा, मटकिया,
उखरी, मूसर, खल्ल, मुसरिया।
बुँदेली खजानौं तक लईयौ,
संगै अपना जौ लयें जईयौ।

इतै मिलत है बिजना, दौरिया,
बसना, बोईया, नांद, डहरिया।
बटुआ, कलछुर, टाठी, टठिया,
ढुलक, मजीरा, ढांक, नगरिया।
बुँदेली खजानौं तक लईयौ,
संगै अपन जौ लयें जईयौ।

इतै मिलत है डिग्गी, तबला,
खंजरी, तारें, ढपली, टपला।
गैंती, फरुआ, सब्बल, तसला,
गुट्टां, पिरियाँ, सूपा, छबला।
बुँदेली खजानौं तक लईयौ,
संगै अपन जौ लयें जईयौ।

इतै मिलत है खिचरी, गुड़ला,
खुरमा, बतियां, गड़ियाघुल्ला।
पजामा, पज्जी, मुंदरी, छल्ला,
ऐरन, झुमका, टिकली, टिकला।
बुँदेली खजानौं तक लईयौ,
संगै अपन जौ लयें जईयौ।

तिवारी टाइपिंग इंस्टीट्यूट
इंदिरा प्रियदर्शिनी वार्ड,
तिवारी मुहल्ला-शाहगढ़
जिला - सागर (म.प्र.)
पिन - 470339

आज कौ नेतो

राजीव नामदेव "राना लिधोरी"

मछुरा रहत रक्त को प्यासौ,
ज्यौं नेता होत है धन कौ।
बखत परै पे हाथ खैंच लओ,
झूठी कै के वोट झटक लओ।

पाँच बरस नौ अब नई आने,
ज्यौं ईद को चाँद हो रओ।
जनता मरत है भूखन प्यासी,
इनके घरे ए.सी. चलरओ।
चमचन को तनक डार दओ कौरा,
दुम हिलारये संगे कर गॉवन कौ दौरा।

बोटन की बेरा आते ही,
खूबई पी रये ठर्रा,
अलुआ-ठलुआ सबई जनन के भाव बढ़ रये,
चमचा भी रये गर्रा।

लूट खा रये देश को खूबई,
अब का है राम करईयाँ।
करम करे हैं ऐसे भईयाँ,
घलन लगे हैं पनईयाँ।।

शिवनगर कालौनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9893520965

विरहन की पाती

एल.एम.चौरसिया

पिया परदेशी तुम सुन लेव, कछू मोरी बातें गुण लेव
घुनीतों मन कौ मिट जावे,
विना काउ से कांय जिया जौ भौतइ घवरावै
लगत चैत की टियाधरी ती, आन लगौ चौमासौ
पिया पिया पपिहा की सुनकें, छिन छिन आय झमासौ
कांय कोसें कै बुलवा देव, संदेशौ उनखां पठवा देव
खबर के मिलतन आ जावै बिना काउ से ...
दिल की बात बतावे लाजें, कररइ तुमें इसारे
खुलकें बात लिखत ना बनवें, लाज शरम के मारे
बरसवे जब ही रिमझिम मेव, बड़त हिय में दिन दूनौनेव
पिया बिन की सें का कावे, बिना काउ से ...
हूंकउठे सुन कूंक मोर की, मनमयूर मचलत है
भरे समुंद में घोघा प्यासौ, सौ जौ जी तलफत है
वूंद स्वांती की बरसा देव, दया कौ तनकइ भौत पसेन
कहूं प्यासे ना मर जावे, बिना काउ से ...
संग की संखियां हाली फूलीं, गलवइयां दै झूलें
मो विरहिन के दोइ नैनन में, श्याम छबीले झूलें
प्यार कौ झूला झुलवा देव, फुलारा हियकौ खिलवा देव
बाग मनकौ हरया जावे, विना काउ से ...
सदां तुरइया ना बन फूलें, सदा ना सावन रावै
चार दिना की चमक चांदनी, फिर अंधयारो आवै
भूल से जो औसर खो देव, तौ फिर सारे जीवन पस्तेव
गये दिन फिर से ना आवे, बिना काउ से ...
भौत दिना लौ जुतें विवें बिन, अच्छी भूम नशोवे
डरें डरें मालय की धरती, सोइ ऊसर हो जावे
ना रैहे जब खेतन में रेव, खाद पानी फिर कैसउ देव
बीज ना फ़िर अकुआ पावे, बिना काउ से ...
सांसो-सांसो हाल लिखो है, चाहे जैसो करियो
बिगरें बने तुमइ सब जानौ, मोय नांव ना धरियो
कवहुं तो पूरी हुइयें आस, हिये में है पूरौ विश्वास
भावना निष्फल ना जावे
बिना काउ से कांय जिया जौ भातंइ घवरावे।

सीताराम कालोनी
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9925898357

हँसन लगौ उजयारौ

शोभाराय दांगी 'इन्दु'

एक दिनां भुन्सारें कलुआ कररओं तौ बतकाऔ।
छोड़ो उन्ना जागो भइया हँसन लगौ उजयारौ।।
पूरव में छाई है लाली बोलन लगी चिरइयाँ,
कडगऔ हारै श्यामा भइया चरवै कड़ गई गइया।
पुनियाँ हारै जइयौ तुम बैलन खौं लइयो चारौ। ...
रमवोलें तुम मोटे जइयौ करियौ उतै निदारौ।
अपने ऊपर बीती भइया, अपनौ काम समारौ।
सोबत रैहो तौ का खैहो मन में कछु विचारौ। ...
रमटेरा भीतर सोरव ओरी उएँ जगा दै।
नइयाँ बेरा सोवें की जा दुखौ तैं समझा दै।।
नै करिहौ न करन दैव तौ होजे बंटाढारौ।
चितकबरी गइया खों 'दाँगी' ले गय पसर चरावै।
इन्दु अफरा लाये गइया मिलै मठा महेरौ खावै।।
मठा महेरौ दूध-धीव सें घर में है उजयारौ।
छोड़ौ उन्ना जागो भइया हँसन लगौ उजयारौ।

नदनवारा, जिला टीकमगढ़
मो. 9753113660

चौकड़िया फागें

बद्री प्रसाद खरे 'निरंकार'

(1)

जितने ठाकुर ई बस्ती में – सब अपनी मस्ती में
कोऊ चलै कोऊ आहट होवै – कोऊ लगो गस्ती में
कोऊ लिखै कोऊ वांच लेत है – का लिखदऔ नस्ती में
कोऊ खावै कोऊ स्वाद बखाने–का भर लऔ कश्ती में
'निरंकार' सोचौ और समझौ – को की–की हस्ती में

(शरीर)

(2)

मुड़िया कायधरें डुड़िया पै – जादू की पुड़िया पै
बिन देखें बिन सुने बैठ गऔ – दिशाहीन घुड़िया पै
परमारथ के परवा पीस के – सिल धर दई लुड़िया पै
सात हाथ कौ ध्वजा चड़ादऔ – स्वारथ की मड़िया पै
'निरंकार' गुन को धर पारौ – आंगुन की हड़िया पै

(समझ)

(3)

जम के दूत बड़े अटपटिया – ठांड़ी करवें खटिया
हुकम अदूली सीकी नैयां – ढार होय चाय घटिया
इनके आंगे कछू चलै ना– तुबक तमंचा लठिया
लाख करौबंदेज कीमती–लाख लगा लो टटिया
'निरंकार' सरबस जग ठग के – पौचावें मरघटिया

(अंतिम सत्य)

(4)

रे मन चार दिना के लाने – पैर प्रेम के बाने
अतर फुलेल मलो सब तन पै–कौन काम कौ राने
हीरा मोती चुन चुन तैने – धन के करे धिंगाने
वेशकीमती बसन पुराने – नमे नहीं हो पाने
'निरंकार' बिगरी बनवे की–साजी गैल बताने

(समझाइश)

'चित्रांश भवन'
सटई रोड, छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9977338575

समुन्दर खारो है

पं. श्यामसुन्दर शुक्ल

गजब को तें हुसयार – समुन्दर खारो है।
धन्न धन्न कतयार – सुनी है तें कारो है।।

चन्दन के बिरछा सें लिपटे देखे करिया नाग,
काली करतूतें जिनकी हैं, उनके उजरे भाग,
बारे सें बारे में बैठो, बारा बेर पुकारो है।
घरवारो तो है, पे घर है नैयां, बारो है।।
गजब को तें हुसयार–समुन्दर खारो है।
धन्न धन्न करतार ...

रोउत सोउत कटे जिन्दगी, भारी महँगो सोनों,
पसरो एक महल में पूरो दस खाँ सकरो कोनों
मन कितनों बे–चैन, चैन को का कैंसो बँटवारो है।
हिम्मत नैया की–मत पूँछें, मत नैंया मतवारो है।।
गजब को तें हुसयार, समुन्दर खारो है।
धन्न–धन्न करतार ...

मेला ठेला धक्कम पेला, पेलें जाबैं ज्वान,
हाथी अपनी चाल से चलबै भौंके कितनऊँ स्वान
बराबरी भई बरा–बरी को, बड़ो देस जो न्यारो है।
बराबरी तो रात की बातें, अबे तो बस भुनसारो है।।
गजब को तें हुसयार, समुन्दर खारो है।।
धन्न–धन्न करतार ...

(अगरिया वाले गुरूजी)
राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त से.नि.शिक्षक
शुक्ल सदन गार्ड लाइन, दमोह (म.प्र.)
फोन - 07812-227652

जब-जब फागुन आए...

मणि मुकुल

होली के दिन आय संवरिया,
जी भर होली खेलो।
लाज शरम की तोड़ किवरियां,
तन-मन की सुध ले लो।।

दरकन लगे क्वारें सपने
अंखियों ने मुंह मोड़ा।
अधरों ने घूंघट के पीछे,
नहीं कहीं का छोड़ा।।

बैरन अंगिया ने धो डाली,
सीमाओं की रेखा।
उमर ने कितने जाल बिछाए,
नहीं किसी ने देखा।।

ऐसा रंग लगा दो सजना,
जो अंग-अंग बिछ जाए।
जनम-जनम तक रहूं देखती,
जब-जब फागुन आए।।

खेतों में फूली सरसों को,
तुमने गले लगाया होगा।
आंखों में बरबस ही कोई
मन का मीत समाया होगा।।

ध्रुवतारा साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक पत्रिका
2, एल.आई.जी. कन्टिस,
आधारताल, जबलपुर

'होली-हुलास'

– श्रीमती ब्रजलता मिश्र, झांसी

ढोल-नगाड़े बज रए, होरी कौ हुरदंग।
हुरियारे फीके करें, इन्द्रधनुष के रंग।।
इन्द्रधनुस के रंग, छटा छिटकी बहुरंगी।
लाल, हरे, पीरे दिखात सब साथी संगी।।
सुखी रएं सब बिपदा कभऊं न आए आड़े।
मन की गांठें खोल बजाओ ढोल-नगाड़े।।

साल भरे में आऔ है होरी कौ तेहार।
दिन दूनों बड़तइ रहै, प्रेम नेह बेहार।।
प्रेम नेह बेहार सबइ मिल नाचौ गाऔ।
जात-पांत कौ भेद मिटा हुरदंग मचाऔ।।
फागें-रसिया गाइयो, खूब मिलै सुर-ताल।
भूले सें ना भूल हैं, जौ होरी की साल।।

होरी में गोरी कभऊँ, भोरी नई दिखाय।
नख-सिख से सब रंग गई, कोउ चीन ना पाय।।
कोऊ चीन ना पाय, स्वांग सबके मन भाए।
अनबोले नैनन में जब गौरी बतराय।।
लाज भरे नैना उरजे, मन की डोरी में।
कहें 'ब्रजलता' आज लाज ना कर होरी में।।

केशव कुल,
352, नानकगंज,
सीपरी बाजार, झांसी (उ.प्र.)

बुंदेली बखरी

बुंदेली अपनी बनक–ठनक और कहन में बेहद मीठी है उसकी यह मिठास उसके लोकगीतों में सदा से ही हमारे अधरों को रससिक्त करती रही है। बुंदेली गद्य की परम्परा का अभाव गद्य में बुंदेली मिठास का अभाव है। गद्य में भी बुंदेली की सामर्थ्य अद्वितीय है, वह गद्य की अनेक भंगिमाओं को अपने कलेवर में सृजन संभव कर सकती है। इस खंड में बुंदेली की इस सृजन सामर्थ्य की बानगी है।

बुंदेली बखरी

बसन्त गीत

गोविन्द यदुवंशी

भुंसारे से कटिया काटें,
बैलन खां देवे सानी।
रहत चलाय खेत में
ढारे गंगा जल से पानी।।

बोले बुन्देली के बोल,
मन मानक से अनमोल।
जैसें अमराई में कोयल
बोले बसन्ती बोल।।

सुआ चरेरू हाकें,
खेतों में किसान की रानी।
मानो भोर उतर के आई
धरती पे ऊषा रानी।।

पवन घुंघटा ले उठाय,
ऊब तो सूरज सो दिख जाय।
हेरन हसन देख गोरी की,
दिन सोने सो खिल जाय।।

चोली बंध कसें दोई जुबना,
गागर छलके भरी जवानी।
गुफना गोली सो सन्नावें,
चाल चलें मस्तानी।।

गदराई गोहूँ की बालें,
कठिया के पीरे पात हुये।
होरी रंग रंगोली लैके आई
बिटिया के पीरे हाथ हुये।।

इतनी खुशी मिली माटी में,
घर में नई समानी।
आओ बसन्त ब्याह के लै गओ,
बिटिया भई बिरानी।।

यदुवंशी निवास, पन्ना
अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
जिला इकाई पन्ना (म.प्र.)

बुन्देलखंड की बीमारी रिस्पत

– परशुराम भास्कर 'विमल'

कैसें मिटै रोग रिस्पत कौ कुछ तौ जतन करौ–
ई बीमारी कौ सब मिलकें ऐसौ पतन करौ।
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ–2
दफ्तर में पौंचौ पैंलां तुम, उतै रुपइया चानें।
अरजी सुनें न तैसीलन में, थाने की का कानें।।

बैठे उतै दलाल हजारन, उनपै नजर करौ–
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ...
साफ नियत ईमान धर्म से काम करत कोऊ नइयां।
सीधे–सच्चे खड़े लैन में, भर–भर देत तरईयां।।

तुमई गठरिया जा अपजस की, सिर पै काये धरौ–
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ...
खूब मुफत कौ खाकें अब तुम, दुर्घटना सें बचियों।
पागल हो गये कैऊ लालची, ध्यान हमेशा रखियों।।

आदत बुरी सुधारौ जल्दी, उसपै अमल करौ–
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ...
दसकत जो न करें उनईयें, इतनों सब सिखा दो।
जितनों पइसा लओ रिस्पत कौ, गिनकें आज बता दो।

इनके लानें हरे बांस कौ, डण्डा जबर धरौ–
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ...
मानव होंके भूल न जइयों, शिष्टाचार प्यारौ।
काम करौ खुशियन जनता के, सब गुन गायें तुम्हारौ।।

'परशुराम' अपने भारत की, ऊंची शान करौ–
देश खुशहाल करौ– लड़वे नांहि डरौ...

ग्राम सप्तवारा पोस्ट स्यावरी
वायां मऊरानीपुर जिला झांसी, उ.प्र.
9935967278

बुन्देली कहानी

माटी कहे कुम्हार सें

डॉ. लखन लाल पाल

प्रिय सन्तोष की बहू

तोई दोऊ बिटियन की पढ़ाई-लिखाई ठीक चल रई है। बड़ी दरजा बारा में पढ़त छोटी दस में है। वे खूब खुस रहत। पूरे घर में तितली सी मंडरात। जब तक मोखें खाना नई खबा देत तब लौ वे मोखें हुरक्यात ई रहत। सांची कहाँव तो कभऊँ-कभऊँ मैं बच्चा बन जात और वे मोई महतारी। मौंड़ी मोसें इतनौ लाड़ करती हैं कि मैं ऊ लाड़ खें अपने मूँ सें तोखें बता नई सकत। वे मोखे पापा कहती। मैं जब टैक्टर लैखें मुँ अंधयारें खेत जोतन जात ता वे दोऊ मोसें पहलूँ जग जात और गरम-गरम खाना बनाखें टिफिन लगा देत। तोई जिठानी नै कभऊँ टैम पै कलेबा नई पहुँचाओ। मैं ऐसई हार-खेत में आँतें ऐठाउत रहो। ओसें अपनौ सरीरई नईं चलत। जानै कितनौ आलस भरो। दिन ऊरे लौ सोउत। ई बिटियन ने ओखें और मठया साँप बना डारो। वे घर कौ सब काम करती और ओखें खटोली पै खाना खबाउत। मैंने कभऊँ उनकौ मूँ बिगरो नई दिखो। दोऊ चिहकतई रहत। हमें दिन भर हंसाउत। मम्मी-पापा कौ ऐसौ बेलेन्स बनाय रहत कि हम गुस्सा में एक दूसरे सें कछू नईं कह पाउत। मैं पहलूँ सोचत तो कि बिचारी बारे की अभागिनें हैं, कैसे पल पाहै। बड़ी दोई साल की तौ हती और छुटकी तोय पेट में जब टैक्टर पलट गओ तो। सन्तोष के ठौर पै प्रान निकर गए ते। मैंने हजार देर समझाई ती कि भइया पीखें टैक्टर न चलाये करे पै ओनै मोई न सुनी। ऊ समै तोई उम्मर का हती? कछू नईं। खेलें-खायें के दिन हते तुम्हाए पै का करो जाबै, बेमाता ने जेखे करम में जितने अच्छर मार दए वे कैसें टर सकत। कहो जात है कि राई घटै न तिल बढ़ै। सन्तोष इतनई उम्मर लैखें आओ तो। बेमाता के अच्छर पूरे हो गए सो चलो गओ। ऐसौ नुहै बहू, सारे कौ हम-तुम करजा चाहत होहिन सो अपनौ मूल ब्याज सब कछू लैखें चलो गओ और हमाए-तुम्हाए मूँड़ पै पथरा पटक गओ। मोखें ध्यान है, ऊ दिना तैं कित्ती बिलखी ती। ऊ दिना की ध्यान आ जात ता मोई छाती फट जात। भइया नुहै गुजरो तो मोई बाँह आय टूट गई ती। सन्तोष तो जलम कौ दुश्मन निकरो सो ओनै अपनी पूरी कसर निकार लई। जलम भरे के रोबें खें कर गओ। आझऊँ ऊ मोई आँखिन सें नईं टरत। मैं तौ तोरहई में अपने भइया कौ अक्स दिखन लगो तो पै करम की लिखी को मेंट सकत? तहूँ न रही।

ऊ समै करन पाँच साल कौ हतो। अब तो ऊ बी.टेक. कर रओ है। छुटकी ओखें बहुत चाहत। भइयई-भइयई करत रहत। छुटकी ऐसी है कि ओसें जब लौ फोन से बातें नईं कर लेत तब लौ ओखी रोटी नईं पचत। चलौ करन खें बहनें मिल गईं, मोखें बिटियाँ मिल गईं। तहूँ बनी रहती तौ जौ घर खूब भरो-पूरो बनो रहतो। पता नहीं तोय मन में का हतो कि तैं अन्तै चली गई। सुनो है ऊ गरीब है। गरीबयऊ तो एक सराप है। भगवान गरीबती काऊ खें न देय। मैं भगवान से येई विनती करत रहत कि तैं हमेसा सुखी बनी रव। अगर हो सकै तो एकाद दिना खें हो जइये। अपनौ घरई मानिये। यौ न सोचिए कि मैं अन्तैं चली गई सो सब नातौ टूट गओ। बिटियाँ हैं, तोरहई तो आँय। बिटियन खें दिख जइये। दोऊ ऐसी बबुआ सी है कि आदमी दिख खें रह जात। बिटियन सें कई देर तोई चरचा चलाई। वे सुन खें हँस देत पै पता नई उन्नै तोय बाबत कौन्हऊ बात काए नईं करी। हो सकत तोई जिठानी ने तोय बारे में उल्टौ-सूधौ भर दओ होवै। वे दोऊ कभऊँ-कभऊँ आपस में लड़ जात। दिन

में डूबें न्यायालय लगत सो ऊ न्यायालय की ओई वकील और ओई जज। हम दोई जने तो दरसक भर बने रहत। ई मौड़ियन ने हमें ऐसौ सुकुवारू बना दओ कि दुख की कल्पना करे से हम भैभीत हो जात। हम येई सोच खें हलकान हो जात कि जब ये पराये घर में चली जैहै तो हम कैसे रैहें। हमेसा चिन्ता सी बिड़ी रहत। दूसरी चिन्ता जा लगी रहत है कि मौड़ियन खें घर-बर साजौ मिल है कि नई। दोऊ बड़े लाड़ में पली हैं। नाव धरें खें डिरात हों कि कहूँ घर-बर साजौ न मिलो तो आदमी नाव धर है कि बिना पाप-मतारी की हैं सौ मौड़ियन खें ऐसई घर में पटक दओ।

बहू बस मोखें येई खटका है। घर-बार तहूँ दिखत रहिये, तोई नजर में कौन्हऊ साजौ घर होवै तो बताइये। लरका पढ़ो-लिखो और शिष्ट होवै। मैं बिटिया ब्याह दैहों। जुआरी सराबी घर न बताइये, ओखे घर में चहां लखूरौ काए न बरत होवै। करन ने एक लरका बताओ तो ओई के सगें बी.टेक. कर रओ है। अगर मन भर जावै तो एक नजर तहूँ दिख लइये। पक्के खें आइये, मौड़ियन ऊ खें दिख लइये और जो कछू की कमी होवै सो इतै सें लै जइये। ईसुर ने बिगार दओ ता बिगार देन दै, पै मैं तोखें पीठ न दैहों। तै भलेई ई घर से चली गई लेकिन तोई यादें थोरी ई घर सें मिटी हैं। घर की हरेक ईंट में तोरौ नाव लिखो है। कभऊँ-कभऊँ मोखें लगन लगत है कि तैं भीतर मढ़ा में बैठी है। मैं अपने आप में इतनौ खो जात कि बाहर से खाँस खंकार खें भीतर घुसन लगत। तोई जिठानी हँस खें कहत कि काहे खे खाँसत हौ, कौन भीतर लुहरी बैठी है। मो जक्का खुल जात। तोखे दाम पइसा की जरूरत होय करै तो माँग लए करे। संकोच न करिये। दाम घर में न होहें ता चहाँ सरग से ल्याऊँ, पै तोखें मैं खाली न लौटा हों। तैं यौ न सोचिये कि मैं तोसें पइसा कौ तकाजौ करिहों। जीवन में कभऊँ जीब न डुलाहों।

अब जादा का लिखौं, तै तो खुद समझदार है। अपनौ खयाल राखिये। सरीर खें न सुखै लइये। सरीर ई सें संसार है। मोखे बिसवास है कि तैं आहित जरूर।

अब फिर कभऊँ।

तो अभागौ जेठ

धनपत

आदरनीय जेठ जू

सादर परनाम

तुम्हाई चिठिया मिली। जौ पढ़खें साजौ लगो कि दोऊ बिटियाँ सुख में है और पढ़-लिख रई हैं। मोई खुसी के लानै येई बहुत है। एक खटका लगो रहत तो कि इनकौ का होहै। पै तुमने बाप बनखें जैसौ पालो-पोसो है ऊसौ तो हमऊँ न पाल-पोस पाते। बिटियाँ साजी निकर आई, ईमें ओखी मम्मी (जिठानी) कौ बड़ौ हाँत है। अगर उन्हें जिज्जी न अपनाती तो बिचारी मारी-ढकेली फिरतीं। करन बी.टेक. कर रओ है यौ सुनखें अच्छौ लगो। करन तो पहलेई से साजौ हतो। मोरहई इतै तो रहत तो दिन भर। चाची-चाची कर खें मोई ओली में बैठ जात्तो। अब तो खूब बड़ौ हो गओ हो है। बड़ी जब दूद पियत ती जब करन ओखे कइयाँ में लैखें द्वारें कढ़ जात्तो। ओसें मौड़ी सधत न हती सो ऊ मौड़ी समेत खुद गिर जात्तो। मौड़ी से जादा करन रोउत तो। मोरहई खे ओखें चुप करानै परत तो। छुटकी के पापा के गुजरें के बाद तुमने मोखें खूब कही ती कि बहू घरई में बनी रौ। मोय हींसा में तीस बीघा जमीन परत ती। तुम्हें तीस बीघा जमीन दिखात ती और संग में दिखात ती मोई गरदयानी देह। येई देह की सीढ़ी बनाखें तुम या कीमती जमीन हड़पबो चाहत ते। मैं जानत न ती का कि यौ सब तुम काए कर रए ते। औरत एक देर फिसली तो-ओखें फिर कहूँ ठौर नहियाँ। फिसली औरत की इज्जत लात की पन्हइया से जादा नहीं होत। जो काऊ आओ ओई पन्हइया में पॉव पुभेबो चाहत। जिठानी जू तुम्हाए इरादे पहलई भाँप गई ती। ओनै पहलेइ अपनौ ताम-झाम इकट्ठौ करखें मोखें उगदाबो सुरू कर

दओ तो। तुम चाहत ते कि मैं तुम्हाई लुगाई बनखें रहाँव। ईमें तुम्हाए दोऊ फायदा हते। सीधौ-सीधौ एक फायदा तो तुम्हें यो हतो कि जमीन कहूँ न जैहै, दूसरौ फायदा जमीन के संग में लुगाई फ्री में मिल जैहै। तुमने मोखे और जमीन खें बजार बना डारो। एक खरीदौ दूसरी चीज फ्री। यौ रिस्तन को कैसौ बजार हतो जेठ जू कि मोरहई जमीन और मैं फ्री। तुमने मोय ऊपर खूब डोरा डारे। कए मैं समझत न हती का? मैं सब समझत ती। जेठ जू जेखऊ सेर भर अन्न खात ऊ सब जानत। आदमी की मंसा जान लैबे कौ गुन तो कुदरत ने बइयर खें उपहार में दओ है। तुम समझत ते कि मैं कछू नईं जानत। मोखें बिटियन कौ भविष्य दिखात तो। ई अभागियन कौ का हो है। जिठानी ने मोसें खूब ऊँचे बोल बोले पै मैं सांत रही। भगवान जेखौ विगार देत तौ ओसें गेल की खपरियाँ बातें कर लेत। मैं दोऊ कोद सें पिसत रही। एक कोद तुम्हाई हरकतें, दूसरी कोद जिठानी की जरी-कटी। जिठानी ने मोखें बस भर अकेलौ नई छोड़ो पै ऊ दिना पता नईं तुम कहाँ से छक्क पा गए। घर में कोऊ नई हतो। तुमने मोखें अकेली पाखें मढ़ा में पकर लओ तो। ऊ दिना तुमने अपने मन की सब बातें कह डारी ती। कितनी मिन्नत करी ती कि इतईं बनी रौ, तोय पेट कौ पानी न डुलन दैहों। ऊ समै तुम्हें मोय दोऊ माँस के लौंदा दिखात ते। मैंने तुम्हाए कितने हाँत झटके ते पे तुमने मोई छाती से हाँत नई हटाए ते। धोती अलग से छोर दई ती। ऊतौ जै होवै करन की जानै कहाँ से खेलत-खेलत आ गओ, नईतर तनकऊ कसर थोरी हती। तुम्हें या सरम न आई कि कहाँ लुहरी ... कहाँ जेठ। अपने समाज में अभै लुहरी जेठ के उन्हा नई छुअत और तुमने ...। एक देर तो मोखें लगो तो कि या जमीन ये मौड़ी छोड़खें कहाँ जैहौं? आदमी नाव धार है तो धरत रहाय। कछू दिनन बाद आदमी अपने आप बन्द हो जैहै। मैं ऐसे दुंद में फँस गई ती कि मो दिमाक कहो नईं कर रओ तो। भलेई तुम्हाऔ प्रेम झूठौ होवै पै ई झूठे और स्वारथी प्रेम ने मोखें हलकान कर दओ तो। ई प्रेम ने मोय दिल में हलचल तो मचाई दई ती। मो दिमाक सुन्य पर गओ तो। भीतर सें ऐसी धार बहन लगी ती कि लगत तो कि वा धार मोखे डुबै-डुबै खें मार डार है। वाह रहे पुरुष! लुगाई के फाँसबे की तै कितनी तरकीबें जानत। आज सोचत हों कि अगर मैं तुम्हाऔ हाँत थाम खें बैठ जाती तौ जलम भर मोय रोबे खें हो जातो। जेठ-जिठानी के बीच में मोई का गत होती यौ तुम नई जान सकत काए कि तुम तो देह और जमीन के भूके हते। जब तुम्हें दोऊ चीजें मिल जाती तो फिर तुम बंदरा की नाईं तखरिया के पलवा बरोबर करत रहते। आज मैं अपने निरनै सें खुस हों। तुम्हें जमीन चाहुनै हती सो वा मिल गई, मोई जान बच गई। मैंने तसीली में तुम्हाए फेबर में बयान दै दए ते। तुम खुस हो गए ते। मैं न मिल पाईतुम्हें ई बात कौ आझऊँ अफसोस है। जिठानी के तरुआ कौ काँटौ निकर गओ तो। तुमने लिखो है कि मो यौ आदमी गरीब है। तुमने कहाँ से गरीब समझ लओ। तुम्हाए बरोबर जमीन नहियाँ तौ इतनी कमऊ नहियाँ। मोय अकेले लरका के लानै बहुत है। मो आदमी मोखें खूब चाहत। समाज में आज मोई इज्जत है। तुम्हाई रखैल बनी रहती तो मोखे मिलती इतनी इज्जत ? आदमी मो करेजौ ई फारत रहते। जभई थोरी बहुत झगड़ा हो जातो तो चूना कैसी चहकाई कहते आदमी। इतै मैं खूब ठसक सें रहत। मो बिगर गओ तो सो बना लओ, ईमें का बुराई है। तुमनै लिखो है कि बिटियन खें दिख जइयो। बिटियाँ दिखबे की मोखे कोऊ जरूरत नहियाँ। जुन दिना तुम बिटियन खें तकलीफ दैहौ ऊ दिना सब जमीन बिटियन के नाव आ जैहै। मैंने येई सरत पै तसीली में ब्यान दए ते। मैं मूरख नईं हती। ब्याव के बाद मौड़ी चाह है तौ वे अपनौ हींसा लै सकत है। ईसें ध्यान राखियो बिटियन खें ऐसे घर में ब्याहियो कि वे काऊ के मूँ कोद न हेरें। न वे जमीन की आसा करें। मैं बिटियन के घर-बर न दिख हों। अगर मैंने तुम्हाए कहे सें बिटियन के घर-बर दिखे और कहूँ वे घर

ठीक न भए तो सबरी टिपरिया तुम मोरहई मूँड़ पै फोर दैहौ। मोखें न फाँसौं। मैं तुम्हाए कौन्हऊ चक्रब्यूह में फँसत वाली नहियाँ। रही बात मोय आवै की तौ मैं जियत-जियत तो ऊ गाँव में पाँव न धर हों। कउआ मरें हाड़ भलेई लै जाय। मैंने अपने आदमी खें सब कछू बता दओ। अब आँखिन दिखत माछी कोऊ नई खैहै। भलेई तुम्हाए बिचार मोय लानै बदल गए होवै, अकेले आदमी के सक खें का करो जैहै। मैं अपने बने बनाए घर में आगी न छुबवा हों। मोखें तुम्हाई हमदरदी की बिल्कुल जरूरत नहियाँ स्वारथ कौ संसार है। तुम्हाऔ अपनौ स्वारथ है।

एक बात तुमनै और लिखी ती कि कौन्हऊ दिक्कत परै तौ मोखें बताइये। जेठ जू ईसुर की किरपा सें मोखें कोऊ कमी नहियाँ। जमीन-जायदा कौ तौ यौ है कि आज है, कल नहियाँ। आदमी औरत खें प्रेम सें राखै ईसें बड़ौ सुख संसार में कछू होई नईं सकत। भगवान ने एक देर बिगार दओ, अब जोड़ी सलामत राखें रहाय सो मो उद्धार हो गओ। इतनी भाबई भुगत लई, अब का है? अब तो बनें के लानै है। एक बात और कहत हों जेठ जू, हो सकै तो मोखें भूल जइयो। मैं अब पुरानौ सब भूल चुकी हों, और नए सिरे सें जिनगी जी रही हों। काहे खें तुम मोई जिन्दगी के सूखे घाव हरे करत हौ। नासूर बनें ईसें पहलूँ ऊ नासूर खें खतम कर दओ चाहिए।

अपनी बिटियन खें तो मैंने तुम्हाई नजरन सें दिख लओ। अब तुम्हई उनके बाप, तुम्हई मतारी। खैर तुम तो उन्हें खूब सनेह देत हो फिरऊँ मोखें कहबो आउत है, बरगई बारे की अभागी हैं उन्हें तनकऊ दुख न पहुँचाइयो, मैं तुमसें हाँत जोर खें बिनती करत हों। मैं तो बेसऊर हों, मो कहो-सुनो बुरओ न मानियो। मोखें माफ कर दइयो।

काऊ दूसरे की

रमा

माटी प्रतीक है – स्त्री की अर्थात लुहरी

कुम्हार प्रतीक है – पुरुष का अर्थात जेठ

कृष्णाधाम के आगे, शिवमंदिर के पास

अजनारी रोड, नया रामनगर

उरई – 285001 (उ.प्र.)

मोबा. 09236480075

अप्रकाशित/अप्रसारित बुन्देली कहानी

हम चोर नईयां

लेखक : दिनेश चन्द्र दुबे

उनै ऑफिस छोड़ कै हम जैसेई घर के द्वारै पौचे कै वौ आदमी सामने के मकान से हमाये सामने आकै ठाड़ौ हो गऔ तौ।

''माराज कछू काम?''

हमें भिखारीयन से है चिढ़। हट्टे-कट्टे जबान लड़का तिलक मंदरा लगाये जा कालौनी में सबेरे-सबेरे ढोल मंजिरा बजाऊत भीख मांगबे निकर परै। या शनिचर के दिनां हात में एक बाल्टी लये शनिचर के नाम पर वा ऐंचकताने से आदमी खौ देखके हमें लगी ती कै जौ भी भिखारीयई हुयै और कै है...।

लेकिन भीख की जगां काम की बात सुनके हमाये भीतर कछू भाव बदलौ। उसके थैलों से कछू औजार झांक रये ते।

''का काम करत तुम?''

''कछू भी कर सकत। मजबूरी का नई कराऊत माराज। वैसे कयै तौ बंगला की सकल सदार देवें। उल्टे सीधे फैल रये जे पेड़ पौदा। कांट छांट जरौं कयै तौ।

''कितैक पइसा ले औ।''

''जो आप दे औ उतेकई।''

'' नई। बाद में हुज्जत करत तुम लोग। पच्चीस रुपये दूंगा। मैं नहाऊंगा-धोऊंगा, थोड़ी देर में आ जैओ?''

''हओ माराज। तनक पानी मिल पीवे? वैसे आप कऔ तौ हम तव तक बाहर कौ काम कर डारै। आप नहाओ धोओ भीतरे।

विलात दिनन से सोच रये ते कै दरवाजे के बाहर के अशोक को पेड़ छटा दये चइये। बिजली के तारन से ऊपर निकर गऔ तो। सोडियम लैम्प की रोशनी भी सामने से नई आ पा रई तो। भीतर भी लाल गुडहल कौ पेड़, बिना पत्तन के जाने कां कां तक डगारे फैला के बुरऔ लग रऔ तौ। पर गली खतम हो जाये जाके इंतजार में बात टर रई ती। पर ऐन द्वारै आदमी आ ठाड़ौ भऔ तो लगी कै घेरे आये सांप न पूजै, बांयी पूजन जांये। सो साफ मजूरी तय करई लई।

फ्रिज मै से एक बोतल बाय दै के, हम नहावे धोवे में लग गये। वो आदमी काट-छांट में लग गओ। ऐतिहातन हमने बीच के किवार बंद कर लये। का पतौ चोर चपाट होय। पैले पड़ताल खौ निकरो होय कै रात के चोरी खौं घुसने परै तौ कां से सुविदा रै। घर में कितेक आदमी रत। मोहल्ला कैसौ है। हम सोचत भये अपने काम करत रये। वा पै नजर रखत भये।

''बबली की इच्छा है कै एक मोड़ी-मौड़ा होतो तो वौ अकेलेपन से दिन भर दुखी न रती। अन्नू चवालीस कौ हो रओ, लेकिन अबै तक ब्याब नहीं कर पाओ। मताई जई सै हम से लगरित कै कऊ कैसियई मौड़ी से कर दओ जाकौ ब्याब तासै कै वे मर जायं तो जाय रोटी तौऊ मिलत रयै। लेकिन... गुड़िया कै रई ती कै जाने का हो गओ पांड़े जी खों। पैले बैन के कये से मकान गिरबी रखयाये और अब... और जा औरत कौ तो देखौ? पन्द्रा हजार मिल रये लेकिन जै हैं सामूहिक औटो से तासे के पांच रुपैय्यन के पौच जाये। कितेक समझाई कै आदमी कमाता काहे के लिये है। घर से ऑफिस तक को ओटो लगा लो। लेकिन मानें तव न।

आदमी कौ मन एक अजीब चीज है। कमऊ चैन मे नई रत। सच कई जाये तौ का नइयां जा घर में। सव पै मकान, गाड़ी घोड़ा, सव कछू है। पर हमेशा दुखी वई वनौ रत। जौ होतो तौ... उनके पास देखो... एक हम है कै...।

''माराज ऊपर जाने पर। मौत ऊचौ है जो पेड़।

''उसकी आवाज आई। हम सोच गये कै ऊपर कऊ जा सै तौ नई जान चा रऔ कै... अपने रहवासी हिस्से के प्रवेश द्वारा खो खोले विना हमने गैरेज खोल के ऊपर जावे

को रस्ता बता दओ। चिलचिलात भई धूप और तेज लू के थपेड़ेपन के बीच में वौ, बोतल से पानी पियत भओ डगारे काटन लगौ। गर्मी के मारे हम ए.सी. बारे कमरा मे आ के रोटी पर्स के खात भये सोचत रये। बेकार कौ काम बढ़ा लओ। कौ करत तौ सौ कौ काम पच्चीस में जा दुपरिया में। जरूर जौ आदमी चोर...।

"निपट जओ हमाओ काम सरकार। ल्याओ पइसा। माराज हम चोर चमार नईयां। हमाये भी जमीन है। मोड़ी-मौड़ा है। वौ तो बखत सब कराऊत। एक मौड़ा हतौ। पागल कुत्ता नै खालओ। इंजेक्शन लगे। पर बचौ नईयां। नाती बहू और हमाई डुकरिया रै गये। कमा वे वारौ तौ चलौ गऔ। खेती है। पर कुआं में पानी सूख गऔ। वर्षात भई नईयां पिछले साल। सौ का खावे। जा सै निकर परे कै कछू तौ मिल। गांव में कछू काम नई मिलौ तौ निकर आये कै... जो बोतल लयै जाये माराज जदि कछू काम की न होय तौ...।

और पच्चीस रुपये लेकर, बोतल में फिर पानी भरा वह एक हाथ में थैला लटकाये, बिना एकऊ बेर मुड़के देखे, पूरे जोश से आगे बढ़ गऔ तौ। और हम सोचत रै गये ते कै दुख का होत। हमाये दुख का दुख हैं? दादा की याद यकायक आ गई। कतते, बेटा दुख तुम भईयां बैनन ने देखे कां है। तुम लोग तो डबल बैडन में, करन में ए.सी.यन में पले। हम सै पूछौ कै दुक्ख का होत। एक साइकिल हती घर में तीन भईयन में। लड़ाई होत ती कै आज कौ स्कूल लैजे बाय।

यकायक दूर मस्ती से जात भऔ वौ ऐंचकतानौ सौ आदमी हमै लगौ जैसे हमें कौनऊ अपराध बोध में फैंक कै हमैं जा सोचने खौ मजबूर कर गऔ है कै विना जाने समझे कोऊ के लाने खराब धारणा बनावो ठीक नईयां। हमाऔ मन कऐ कै दौड़ कै जाये और वाये कछू और रुपैय्या दिया यें। कम दये ते बाकी मजबूरी कौ लाभ उठा कै। विधि कौ विधान जानत। कबै का हो जाय।

68, विनय नगर-9,
ग्वालियर-92 (म.प्र.)

दो सियाने

– डॉ. एल. आर. सोनी 'सीकर'

वे दोऊ जनें- रेलगाड़ी से- दिल्ली से- लौट रये ते। 'जनरल'- डिब्बा - को टिकट लै कें- 'रिजर्वेशन'- वारो (स्लीपर-टू टायर) डिब्बा में बैठ गये। उन्नें जा सोची कै- रस्ता-में टी.टी. को पटाकें- उर पचास के दो नोट थमाकें- अपनों काम बना लें- और फालतू के ढ़ाई-ढ़ाई सौ रुपईया- जो लग रये हैं- सो बचा लें। आजकल तौ- जोई काम बिलात कर रये हैं। का- हमई अकेले आंय।

विधाता की मर्जी कों कोऊ नईं जानत। ऊ डिब्बा में टी.टी. तौ आय नई पाव- पुलिस के सिपाईयन को संग लयें- 'मजिस्ट्रेट चैकिंग गेंग'- आ-धमकी। दोऊ जनें पकर गये- और हक्का-वक्का रै गये। टिकट, जुर्माना, रिजर्वेशन चार्ज (यानी पैनाल्टी)- सब मिलाकें- तीन सौ साठ रुपईया एक जने के हिसाब सें- यानी सात सौ बीस रुपईया- दोनों के देने परे- रसीद लई- नईं तौ अन्य की जगह वे टिकट वारों की लाईन में पुलिस अधिकार में रहने परतौ। ई पईसा भी बड़ी विनती थराई सें कम से कम भये ते नई तौ हजारन की चपत लगती। कभऊं-कभऊं ज्यादा सियानपन भौतईं अखरत है।

सीकर भवन, ठंडी सड़क
दतिया (म.प्र.)

बुन्देली लोककथा

उरजंटा औ सुरजन्टा

– अजीत श्रीवास्तव एडवोकेट

भौत पुरानी बात है ऐसे-ऐसे राजा हते, राज हते सो उनको एक राज हतो, एक दार की बात है कि बड़े भुन्सारे की बेरा में एक कामवारी बाई महलन खों झारबे आई और जब व झार रई ती तबई राजा साब किले के झरोखा में आन ठांड़े भये, इतै झारत झारत ऊ कामवारी की नजर ऊपर खों परी सो ऊनें तुरन्तई घुँघटा तानो और जमीन पै वै मूँड़ टिका दऔ जुहार करी, लेकिन इतेकई में ऊने का देखो राजा साब अपनी मूँछन मै ताव दै रये ते। ऊनै ऊते तौ कछु नई कई पै अपने बारहकोट मुहल्ला में जाके लोगन से कई कि राजा काऊ पै चढ़ाई करबे वारे है, कऊँ युद्ध होवे वारौ है। बात हती सो कूरा औ धुँआ सी फैली, औ पूरे राज में जा बात की चरचा हौन लगी की लड़ाई होबे वारी है, बात सिपाईयन से होके सेनापति फिर मंत्रियन लों और फिर राजा के कान लौ पौच गई, सो राजा भौत चिंता में पर पर गये, उननै तो ऐसौ कछु सोसो नई हतो, ना काऊ से कई हती, सो पने गुप्तचरन खो टेर के कई, जा बात कासे उड़ी, कीने कई, सच कौ पतो लगाओ।

गुप्तचरन से सुरागरसानी करी, होत करत बे मां तक पौंच गये कि मैलन में झार बे वारी बाई नै आ जा बात फैलाई राजा खो बताई गई, सो राजा नै ऊ बाई खौं टिरवाओ ऊ के सामूं सबरी बात कै सुनाई तौ बॉ कन लगी-

मराज मै मैलन में झारत-झारत बूढ़ी हो गई, अपुन के पुरखन के समय से अन्न खा रई पल रई, एक दिना मै ने अपुन खा झरोखे पै मूँछन पै ताब देतन देखो, सो मैने समझ लओ कि युद्ध होवे वारो है, काय से कि आपके बड़े मराज जबई मूँछन में ताव देत ते जब चढ़ाई करनै होय, सो मैने कै दई।

राजा ने कामवारी खो तो जान दऔ पै मंत्रियन से कई कि जा तौ पुरखन की रीति कढ़ आई अब तौ काऊ न काऊ पै चढ़ाई करनेई परै, उरजन्टो लेनेई परै मंत्रियन नै भौतई तरा से राजा खौं समझाऔ कि अबै सब ठीक ठाक चल रऔ, कौनऊ पड़ोस कौ राजा ने मूँड नई उठाऔ पै राजा तौ मानवे वारे हतेई न। सो एक ज्ञानी सलाकार नै कई ''मराज अपुन के पूरब के किलेदार ने बिलात दिनन से न तौ भेट करी न मिलने आओ, कऔ तौ बोई पर चढ़ाई रोप दई जाय'' राजा खौं जा बात जम गई, सो दूतन खँ बुलाओ गऔ औ उनसे कई – ''जाकै पूरब के किलेदार से कै आऔ कि राजा तुमाये ऊपरै चढ़ाई करबे आ रये।''

दूत नै मंत्रियन ताई हेरौ, से मंत्री जान गये कि दूत का कन चाउत, सो एक मन्त्री नै सला दई ''राजा साव'' चढ़ाई कौन सी बात पै आ हौनें ई पै सोच विचार कर लऔ जाय पैलऊँ उरजन्टा लै लऔ जय बाद में हुकुम, सन्देशो पठाऔ जायं राजा खो जा सला भी नौनी लगी, उननै दरवार के दरबारी विद्वानन ताई हेरौ सो एक विद्वान नै ठांडे हो के कई ''मराज एक पहेली बनाये देत सो ऊको जुआब मंगा लओ जाय, ना दै पाहै तो किलेदार पै पढ़ाई हो जान दई जाये'' राजा नै सैमत होंके हामी में मूढ़ हिला दऔ, सो ऊ विद्वान ने एक पहेली रच दई।

''असली कौ नकली कौ असली।
बाजार का कुत्ता, राज कौ गधा।।''

राज नै कई ईकौ अरथ का भओ ? सो कई गई ''ईकौ कौनऊ अरथ हैई नइयाँ, जा तौ उरजन्टा लैबे आ बना दई गई।'' राजा ने दूत खो सिखा पढ़ा कै संदेशौ दैवे पठा दओ। दूत ऊ किलेदार के इतै पौचों औ जाकै राजा को संदेशो सुना दऔं ऊ ने दूत से कई कि जा बुझउअल तौ कठिन है मोय राजा से एक बरस कौ समय दिला दऔ जाय तौ मैं जा कौ हल जरुरई हल कर दैहो, मराज से मोरी जा विन्तवार पौंचा दई जाय व उनकौ आज्ञा मोय बता दई

जाय।''

दूत नै आकें राजा से जा कई सो राजा नै ऊ किलेदार खों एक बरस कौ मौका दै डालो। काय से राजा खुदई नई लड़न चाउत तो। सो किलेदार खों जा आज्ञा पौंचा दई गई।

किलेदार की किलेदारी में फैलो हतो, सूखा काय से की दो तीन बरस से बरसा भई नई हती सो अकाल धाई फैल गओ तो एक तला हतो, सो ऊखों पीने कौ पानी में सबई इस्तमाल करत ते। किलेदार नै उतै सिपाइयन कौ पैरा बैठा दओ तो। बिना आज्ञा के कोऊ पानी न पी सकत तो, न छी सकत तो। पै होनी तौ आय, हो कै रैत एक सेठ बंजी करत उतै आ गओ, रात हती सो एक पेड़ तरै पर रओ रातैं ऊखों लगी प्यास। सो उनै पानी तलाशो। उतै तला दिखानो सो पीने जुड़ गओ, तबैं रात कौ समय हतो, सिपाईयन की आख लग ई ती। पै छप-छप सुनके वे जाग उठे देखो तको सो सेठ पानीं पियत बिना आज्ञा के पकरे गये। जुतयाई भई, बांध के रात भर रखो गऔ भुनसारै किलेदार के लिंगा पेश करो गऔ। उननै बिना आज्ञा पानी पै मौत की सजा को एलान कर कर रखो तो। सेठ ने अपने बचाव मैं और हाथ पांव जोरे प्रै किलेदार फासी पै अटल हते तबई सेठ नै कई मराज मौसे अनजाने में भूल भई मोये न मारो जाये मै आपके काम आहों। जा सुनके किलेदार खो वा पहली याद आ गई बोले - तौ जा पहलीं कौ हल कर दौ तौ जान बख्सी हो सकत

''असली कौ नकली, नकली कौ असली, बाजार कौ कुत्ता राज को गधा।''

सेठ ने कई मैं हल तौ कर दैहों मोये छह महीने कौ समय तौ दओ जाय। किलेदार ने अपने गुप्त चरन खो टेर कै कई सेठ पै छह महीना नजर रखो जे जा पहेली हल कर दे तौ ठीक नई तौ पकर कै फासी पै टांग दओ जाय। काय से राजा खॉ हमें पहेली को जवाब दैने। सेठ नै चैन की सांस लई, गुप्तचरन के संगै वौ राजा के राज में पौचो उतई को बो रैवे वारो हतो

सेठ ने सबसे पैले का करो कि राजा के कुंवर से हिलक-मिलक कर लई पक्के गुइयां बन गय सो एक दिना उन्नै कुंवर सै कई कुंवर तुमनै अपने राज घूमो कभऊँ अरे। तुमे तौ अपनौ राज देखने तकने चइये, येई से तो दुनिया भर की समझ आहै। हम तुम्हें पड़ोस के अपने पई-पावनन, रिश्तेदार- नाते दारन के पते देत और खरीता लिखे देत, तुम मसकऊँ कछु दिनन खो काऊँ से कयें- बतायें बिना कढ़ जाओ, फिर देखो दुनियाा कौ मजा। हमाये नातेदार रुकवे, खैबे ठिकाना दै दैहें कुंवर खों जा बात भौत नौनी लगी, सो वे एक दिना काऊ से कयें बिना घूमवे निकर गये। और अपने पैरत के राजाशाई उन्ना, सोने के गाने सेठ के इतै धर गये । वे अब राजकुंवर नांई नई गांव वारन घाई बन के कढ़ गये।

फिर नाँय सेठ ने राज की नामी नचईया वेश्या के इतै आवो-जावो खूबई बनालव, उये खूबई धन नये-नये उन्ना दैन लगे। औ के दई कि सेठानी है नई तौ बियाव सोइ कर लेते सो वा वैश्या सेठ के पीछे मरबे तक तैयार हो गई। फिर सेठ नें एक भौत बड़ी सबई चीज बसन की दुकान खोल लई और सबरे सेठसे सस्ती चीजें बेचन लगे, राज भरमें सबरे, सेठन की दुकानें चलबो बंद सो हो गई, सो सबरे सेठ उनसे जरने लगे।

इतै बिलात दिना तक जब कुंवर कौ पतौ नई चलो सो हा-हाकार मच गओ, ढुढ़ऊआ मच गऔ सेठ से भी पूंछतांछ भई, काये से कि उनके संगे कुंवर रत हते। सेठ ने कै दई कि हम खोंपतौ नईया। फिर एक दिना सेठ ने सेठानी से कई - कुंवर खों हमने मार डारो है तुम काऊ से जा बात न कईयो फिर कुंवर के उन्ना, गैने-गुरिया सिठानी के लिगां धर दये कि इनै लुका के धरियो।

सिठानी हती जनी-मान्स। सो बात कैसे पचत ती। उन्नै काउ से कै दई, कई सो बात उड़ चली सबरे में फैल गई, राजा तक पौच गई, खोज खबर भई सो सिठानी नै मार के डर से सेठ कौ नाँवलै दओं सो सेठ पकरे गये, सेठ नें

अपनी सफाई गवाई में वैश्या खो टिरवाओ, ऊ नचइया ने गवाई में कई ऊ दिना तौ सेठ हमाये इतै परे हते, अन्नदाता सेठ ने राजकुंवर खो नई मारो।

वै राज के बाकी सेठन ने राज दरबार में आकैं गवाई दई गरीब परवर कुँवर खों मारत ई सेठ खो हम औरन ने देखो, कुँवर खों तो येई सेठ नै मारौ। अब सेठ पूरी तराँ से फंस गये सो सेठ ने राजा से जा विनती करी कि मोय चार दिना को मौका दऔ जाय में कुंवर खों जा हुईये सो ढूँढ़ लिआव। सेठ सिपाईयन संगै छोड दव गव, कुंवर खो लिवा के सेठ दरबार में आने के पैला किलेदार नौ जा के बताव कि राजा कि पहेली कौ हल हो गओ सो फिर सेठ कुंवर और किलेदार खो लैके सिपाईयन संगै दरबार में हाजिर हो गये।

तब भरे दरबार में सेठ ने कई मराज तुमाई पहेली हल हो गई सो इन किलेदार पै किरपा करो जाये मराज नै कई कैसे ? सो सेठ ने कई-मैं सासी कै रओ तो कुंवर खों काऊ नै नई मारो पै मोई असली घरवाई ने झटठी बात दरबार में कई, मोय खिलाफ गवाई दई, मोय हत्यारो बना दऔ। और जौन नकली मोरी चाहबे वारी जा नचवे वारी हती, ई ने सांसी कई। पै इन बजार के सेठन नें तो कुत्ता घांई काम करो और ईकाऊ झूठी गवाई दई-जब कि कुंवर तौ पड़ोस में घूमबे सुरक्षित गये हते। सो पूरौ राज खों लोगन ने गधा बना दऔ। बुद्धि हर लई राज की । सो राजा तुमाई जेई तौ पहेली हती कि असली कौ नकली नकली कौ असली, बाजर कौ कुत्ता, राज कौ गधा। राजा नै सबखों माफ कर दओ ना चढ़ाई भई न लड़ाई न फांसी भई तो हांसी। किसा हती सो निपटी, बाढ़ई नै बनाई टिकटी। सेठ खों राजा ने उरजंटा कौ सुरजंटा घोषित कर दओ।

राजीव सदन मुहल्ला

टीकमगढ़-472001 (म.प्र.)

मो. 8827192845

बुन्देली कहानी
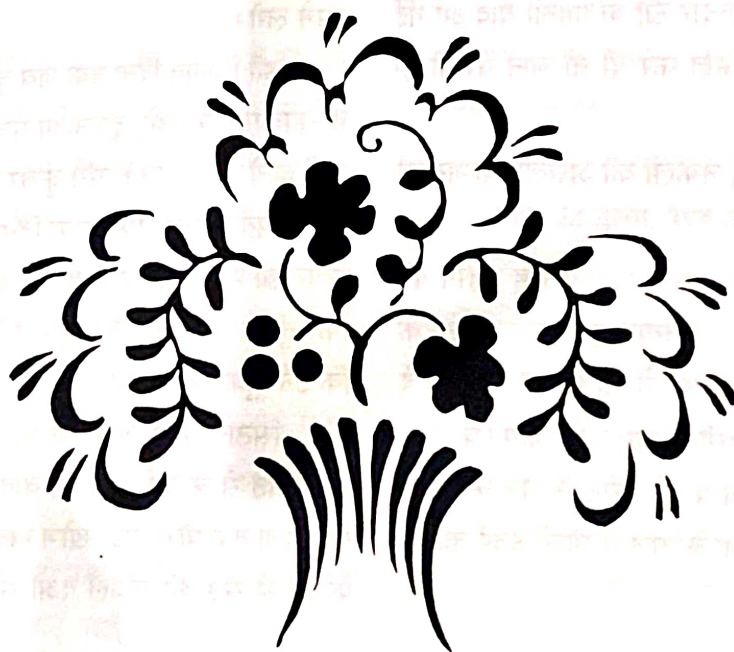
संतान कौ सुख

– डॉ. दुर्गेश दीक्षित

अबै तक भारी उमस परत रई। सूरज की किरनन सें आग सी बरसत रई आदिमियन खों घर से बायरौ कडवौ मुश्कल हो गऔ तो। पेड़ पौदा मुरजा गयेते नदियँन में ढोर बछेरूयन को पीबे तक पानी नई बचोतो। पानी की जगाँ रेतई रेत भरी दिखा रईती। बड़े बड़े तला सूकके मैदान बन गये। पपीहा प्यासा हूँ प्यासा हूँ चिल्ला रओतो। इन्द्र देवता खों प्राणियँन पै दया आ गई उर उन्नें मेघन खों हुकम दै दओ। बादल गड़गड़ान लगो उर रात भर रिमझिम रिमझिम होत रऔ। वातावरन में ठंडक आ गई। सबई जनें सुक की नींद सऊत रये। हल्के हल्के बाल बच्चा पानी में खेल खेल के खिल खिला रयेते। उनें देख देख कै समर्राबाई काकी कौ मन किलपत रऔ। वे सोसत रई कै कजन हमाओ एकाध बाल बच्चा होतो तौ वौ सोऊ इनन के संगे खेलतो कू दतो। का बतायें भगवान की लीला बड़ी विचित्र है। ऐसी कानात कई जात कै काउयें शक्कर, धना, उर काउये मुट्ठक चना। भगवान सोऊ चींन कें रेवरीं बाँटत। कोउ काउयें इत्ती लड़ेर दैदये कै वौ उने समारई नई पाउत। उर कऔ कोउ को एक चुखइयई खौ ललात रये। ऐसई सोसन गत्या में अपनी पौर के दोरें मुरजानीं सी बैठींतीं समर्राबाई काकी। इतेकई में क्यांऊ सें उनकी सहेली रामकली खिलखिलात आ गई। काकी खों उदास बैठी देखतन कन लगीं कै काय काकी आज तुम रीनी रीनी सी काय दिखा रई। सुनतनई उनकी झपकी सी खुल गई। उन्नें गैरी सांस लेकें कई कै बैन तुम सें हमाऔ का छिपौ? ऊसें सो ऐसी कानात कई जाता कै थैलिया की चोट तौ बनिअई जानत। अरी बैंन कईजा कै जाके पांव न फटी बिमाई बौ का जानें पीर पराई। ईसें काऊ सें कैबे में का फायदा। अपने मन में सोस सोस कै पूरब जनम के करमन कौ फल भोगत रत। कोऊ कौ दुख बांट नई सकत। हंसी के करइया तौ सैकरन जनें ठाढ़े। कविवर रही जा बात सोरा आना सांसी आ कै गये।

रहिमन निजमन की विथा मन ही राखें गोय। सुनि अठिलैहें लोग सब बांटन लैहै कोय। जा सोस कें बैन हम तौ मौंगे चाले बनें रत। उर मनई मन मौंगेचाले बनें रत। उर मौगेंचाले रैके विष के घूट पियत रत। रामकली बोली अरी बैन हम एक जरूरी खबर सुनावे आयेते। उर इतै आकें सब भूले जा रयेते। समर्राबाई बोली कै बताव गुइयां, तुम का खबर ल्याईं।

अरी बैन हमनें सुनी कै झांसी में एक भौत बड़े अनुभवी बनवारी वैद हैं। उनकी दवाई करे सें कैऊ जनियंन कीं गोदें भर गईं। काकी बोली कै बैन हम काल भुंसरा दादा के संगे बनवारी बैद के नां जाकै अपनौ इलाज करायें। ऊसें तौ दवाई कराउतन और देई देवता पूजत पूजत उमर चालीस बरस हो गई। हमें निपटती मानकें असगुन मानत उर हमाऔ मौ देखवो लोग पाप समझन लगत। बैंन तुम भौतई नौनी खबर ल्याई। उर कजन लाग लग गई तौ तुमें मन मुक्तौ इनाम दऔ जैंय।

समर्राबाई काकी कौ झांसी में बनवारी बैद के नां छै मईना नौ इलाज चलत रओ उर भगवान की कृपा सें छैई मईनां में पेट दिखान लगो। देखतनई रामकली फूलकें कुप्पा हो गईं। उर भगवान की ऐसी कृपा भई कै नौ मइना में काकी कें लरका हो परो। अब आनंद उर खुसयाली की का कनें खूब नाच गान बधाई भई। पंडितन खौं खूब दान दच्छना लुटाई गई। रामकली की जुक्ति कामैं आ गई। काकी पै भगवान पूरी कृपा हो गई। पंडितन नें भइया कौ नाव मनप्यारे धर दओ। भूक में भए ते कुंवर कनैया। अब उनकी सेवा खुशामद की का कनें। समर्राबाई काकी उर घनश्याम कक्का खूब हाले फूले दिखान लगे। लरका कौ नांव मनप्यारे धरो गओ। मनप्यारे शुरूअई सें हुनगारू तौ हतोई। बारा बरस में

हाती कैसों छौना दिखान लगो। माते की तरप सैं पढबे लिखबे कौ पूरी इंतजाम हो गओ। ऐसी कांनात कई जात कै होनहार विरवान के होत चीकने पात। मनप्यारे की बुद्धि भौतई तेज हती। वे इत्ते हुसयार कडे कै बीसई बरस की उमर में उनें सरकारी नौकरी मिल गई। मताई बाप अपनी जिमीं जायजात बैंच कैं लरकै पढ़ाऊत रये उर मनप्यारे पढ़ लिख कै बैंक कौ मैनेजर बन गओ। अब समर्राबाई की खुशी की काकनें रामकली के गरें में सोने कौ पैरादओ। भागवत पुरान करा कैं हजारन आदिमियंन के भोजन कराये। जौ सब रती कौ फेर है। आदमी के भाग की कछू कै नई सकत कै कबैं कीकौ का कैसो भाग पलट जाय। बताव जा को सोस सकत तो कै एक गांव कौ लरका मनप्यारे इतनें बड़े पद पै पौंच जैय। गांव भर के लोग ता करकैं रै गये तो करकैं।

अब मनप्यारे के व्याब के लानें बड़े बड़े पइसावारे समर्राबाई काकी की देरी खूंदंन लगे, घनश्याम कक्का अब कन्नों आदमियन खौं टारैं? अंत में एक अच्छी सी पढ़ी लिखी बिटिया देख कैं मनप्यारे कौ साके कौ व्याव हो गओ। उर दान दहेज सैं उनकौ घर भर गओ। दो तीन साल तौ लरका बऊ समर्राबाई के घरै बनें रये। अकेलैं ऊ पढ़ी लिखी बहू खौं सास ससुर की सेवा पुसा नई रईती। वा बात बात में सास ससुर कीं बींगें काड़न लगी उर एक की चार चार कैं मनप्यारे खौं सुना सुना कैं उनकौ दिमाग खराब करन लगी। मताई बाप सैं उनकौ दिल उचटावन लगी। बताओ हम उनें कांतक थोप थोप कैं खुआबैं। दादा खौं दस दसदार चाय उर पानी को दैवे,उर कजन कभंऊ हूकाँ में चूका पर गओ तौ फिर सासोबाई कौ मौ चौवर चलन लगत। वे सात पैरी नौ पौंच जातीं। ईसैं हम इनके संगै रैनई सकत। कविवर रहीम जा बात सोरा आना साँसी आ कै गये।

कहि रहीम कैसें निभैं, केर वेर कौ संग।
वे रस डोलें आपनें, वे फाटत हैं अंग।।

जाबात सोऊ सांसी कई जात कै रगड़त रगड़त पथरा में गढ़रा पर जात फिर आदमी की तौ बातई अलग है। वा चौबीसई घंटा मनप्यारे के कान भरत रई। ईसैं अपने मताई बाप सैं मनप्यारे कौमन उचाट हो गओ उर अपनें घर सैं सौ किलोमीटर दूर अपनौ तबादला करा लओ। देखौ बैंन हरो जौ होत पढ़ी लिखी बऊअंन कौ हाल। का उनके मताई बाप उनें ऐसई सिकन बुद्ध देत हैं कै जाब बेटा व्याव होतनई तुम अपनी अलग चूलो धरलिइयौ। अकेले अपनी बुंदेली लोक संस्कृति में बिटिया की विदा होती बेरां जा शिक्षा दई जात कै:-

जाव लली तुम फलियों फूलियों,
सदा सुहागिन रइयौ मोरे लाल।
सास ससुर की सेवा करियौ।
ननदी के ऐंगर रइयौ मोरे लाल।

बौ विचारौ मनप्यारे का करें? मनई मन गढ़ो जा रओतो। अब हम अपने मताई बाप सैं कौन मौसें कयें कै हम तुमें छोड़कै जा रये। दो तीन दिन तौ चिमानौ चिमानों बनो रओ उर बऊ धन उयै रोजऊ हुदयाऊत रई। एक दिनां करों जिऊ करकैं मताई के गोड़न नौ जा बैठो। उयैं देखतनई समर्राबाई ने मूंढ पै हांत फेर कैं कओ बेटा का कन चाऊत। मनप्यारे के मौसें बकनई फट रओ तो उर ऊकी आंखन सैं असुआ टप टप टपकन लगे। उयै देखतनई मताई डिड़यांपरी उर बोली कै बेटा सांसी बताव तुमें का तकलीफ है। हम अपने प्रान गानें धरकैं तुमाई अबेरा दूर करें। मनप्यारे बोले कै तुम रोव नई हमें कोनऊ तकलीफ नइयां। अकेलैं हमाव तबादलौ इतै सै सौ किलोमीटर दूर हो गओ। ईसैं हमें तुमन के छोड़बें कौ दुख हो रओ।

सुनतनई समर्राबाई चिंटा कैसी काटी रै गई उर उयें झमा सौ आगऔ उर सोसन लगी कै बुढ़ापे में खाबे पीबे कौ इंतजाम को करें? हम अंधन खौं जा एक लठिया मिलीती सो बेई हमें छोड़कैं जारई। मनप्यारे बोले कैं तुम चिंता नई करो हम तुमाओ पूरौ इंतजाम करकैं जैय। उर हमेंसई तुमाई खबर दबर लेत रैंय। इत्ती कै कैं मनप्यारे तौ उतै सैं मौंगे

चाले चले गये। इतेकई में क्यांऊ सैं। घनश्याम कक्का चौका में आ गये। आउतनई बऊधन नें उनें थारी परस दई उर वे भोजन करन लगे। जईसैं काकी ने उनें लरका कौ हाल सुनाब तौ सुनतनई उनके मौं कौ कौर मोई में रै गओ उर उन्नें थारी दूर सरका दई।

मनप्यारे तौ अपनौ सामान बांदे तैयारई बैठे ते उर अपने मताई बाप खौं वृद्धाश्रम में छोड़ कैं परदेसै चले गये। घनश्याम कक्का उर समर्राबाई काकी असुआ पोछत ठाढे रै गये। उर फिर उन्नें साल भरनौं इतै आबे कौ नांव नई लओ। ऐसई ऐसै उनें वृद्धाश्रम में डरें डरें कैउ सालैं कड़ कई। घनश्याम कक्का तौ भौतई कडाचून हते। उने तौ जा कहावत याद हती कै हंसा मौती चुनें कै लंघन मर जाय। उनें इतै डरो डरो मरबौ पसंद हतौ अकेलें बिना बुलांय अपने बऊ लरका नौ नई जानचाऊतते। उनें बाबा तुलसी कौ बौ दोहा अच्छी तरा सैं याद हतो कैं:-

आवत ही हरसे नहीं नैनंन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसै मेह।।
जाही विध राखैं राम, ताही विधि रहिए।।

घनश्याम कक्का उर समर्राबाई काकी ओई वृद्धाश्रम में डरे डरे संसार सांगर सैं पार उतर गये अकेलैं जा सोसकैं कैं छोड़े गांव कौ नाँव का लैंने। लरका बऊ नौं नईं गये। उर उनकौ इकलोतौ बेटा मनप्यारे बऊ धन की बातन में आकैं अपने मताई बाप नौं ढूंकबे नौ नई गओ। देखौ बैनें हरो घर-घर मटया चूले हैं। आजकाल जा हवई ऐसी चल गई कै व्याव होतनई लरका अपनें मताई बाप खैं भूल जात। घनश्याम कक्का उन समर्राबाई काकी ने मनप्यारे के लानें का का नई करो हुइयै अकेलें उनें संतान कौ सुख नई मिल पाव ऐसी कानात कई जात कै –

मनुस नहीं बलवान है, समय होत बलवान।
भीलन लूटीं गोपिका, बेई अर्जुन बेई बान।।

कुण्डलेश्वर (टीकमगढ़)
मो. 9009416020

बुन्देली कहानी

माँ की ममता

– शकूर मुहम्मद

जेठ मास की दुपरिया, उपनय पाँव, ताती धूरा में पाँव भुल भुला रय। जा लाल दुपरिया प्यास के मारे जीव तरुवा सैं चिपक रई मौ पै केवली फिर रई औइपै चिरई मूँड़ पै धरैं चीमरियँन कौ अनचलती पलवा।

चिरई कौ जो बंजी कौ काम रोज कौ आय, गाँवन गाँवन जाकै फल-फलाई बैचबो, गैबड़े, जाके जैसई चिरई ने टेर लगाई ये .... चीमरो लैलो ....। गाँव के मौड़ी मौड़न की भीर लग जावै हॉतन हॉतन चिरई की सौदा बिक जावे। आज दिन लौटइयाँ होरऔ सौदा बिक नई पाई, घर की चिन्ता होतई की आय।

चिरई ने तको कै पटैल के कुँवा पै रॉट चल रऔ, सोसी तनक पानी पी लेबै, भाग से पटेलन रॉट हॉक रईती, चिरई ने कई बैन तनक हॉत लगाइओ, पलवा नैचे उतरा दो। चिरई तनक सुस्ता कै वोली-लुगरॉयदों तको तौ आज भारी घाम है।

चिरई ने नीछर पै जाकै हॉत पाँव धोय फिर पानी सै कुल्ला करकै, घूँट लऔ गतकौ लग गऔ, गरौ रूंद गऔ, ऑखें वायरें कड़ आई, अंदयारौ लग गऔ। पटैलन ने जो तको सरपट दौरी आई, पीठ पै हाँत फेरन लगी। चिरई-चिरई का हो गऔ। चिरई की कुल्लक झेल में सांस लौटी।

चिरई अब नौनी हो, काय आज कलेवा नई करो, भूके पेट .....। जौ का आय घर सैं कड़ो तौ कछू खा पीलय गय भूँकी घर सैं न कड़बू करे, भला! चिरई फफक कै रोन लगी और पटेलन के कंदा सै लग ई। अपने मन की की सै कॅय उर कीसै न कवै।

पटैलन बोली ! ठैरौ चिरई। ढबुआ मे धरे कलेबा मैं सै कॉसे की बड़ी विलिया में से मयरौ काड़ो और चिरई खौं देकै बोली। लो बैन तनक कलेवा करलो, फिर पिइयो पानी। चिरई मयरौ खात जावै और ऑखन सै अंसुवा टप-टप गिरत जा रय। पटैलन बोलीं – काय बैन जब से मैं ई गांव में बियाई आई तुमें जेई बंजी करत देखत आ रय, पैले हल्के नन्नइयाँ खौं पींट पै बांदे और मूँड़ पै पलवा। कितनी मुशीबतें उठात आ रई। औरत औरत की पीरा नौनी तरां जानत और कौनऊँ नई। पटैलन ने चिरई की रंज की नश पै हाँत धर दऔ तो।

पटैलन बैन हम सोऊ ई घर मै सुकन मै आयते, घर में कौनऊ चीज की कमी नई हती। घर के काम काज पानी पंगल के लाने मान्स लगेते। इनकी गॉवन में अच्छी जान पैचान हती। दूर-दूर लौ गॉवन में पंचायते निपटावे जातते। कुसंगत में आकै पीवे खवे कौ चस्का लग गऔ। हमने जो कई सो कन लगत ते कै वे तौ दूसरे पिया देत हम थोरी अपने पैसा खरच करत। पीवे की आदत पर गई। दिन रात धुत्त रन लगे। एक दिना तौ बड़े लरका कौ कौल तक खा लऔ कै न पियें। अकेले फिर का घर की आमदनी घटन लगी। मैंने जो कई तो भैंसन कैसे लट्ठ हमपै परन लग, चीज बसत, बरतन भॉड़े सब कछू हरॉ-हरॉ बिलान लगे। मताई बैने एक होन लगी वे न्यारी।

बड़ो लरका स्कूले जाततो सो छूट गओ जमीदार के इतै सौ रूपट्टी पै भैसे चरावे जान लगो। जो हल्को चिन्तामन छः मइना पेट मै हता। भादौं कौ मइना चार दिना सै सरगधार लगीती नदी नरबा एक हो रयते। जे कऊँ सैं पीकै घरे आरये ते, नशा की हालत मैं गैवड़े की नरइया कड़ रय ते रिपट परे और पानी में मौके भर जा गिरे उतै को हतौ बचावे बारौ ....। चिरई डिड़या कैं रोन लगी। साल,दो साल में बड़ो लरका सौबत में आकै बिगर गओ। रोजऊँ अनुवॉ टंटे करन लगों। एक दिनां कउँ जावे की कै गओ उर आज दिना नौ पतौ नइयाँ।

बैन कन लगत के जी कौ बगरत बाई रूखौ खात।

भगवान नै जा मशीबत दई, जे दिन देखवे बदेते सो देख रय। रै गय ते हम दोऊ मताई बेटा। इनके हिराबे के तीन मईना बाद जौ चिन्तामन भऔ। बैन मुशीबत मैं कोउ काऊ कौ नई होत। सबने मौ फेर लओ। पेट तौ भरनै तो कैसे भरत ऊके लाने कछू जतन करने आय। भलो होय करीमन चाची कौ जिनने जा गली धराई और पुंजी पसारे खैं पैसा दय, हिम्मत बंदाई और पीट पै हॉत धरो तब से आज लौ जौ सब कर आ राय।

चिन्तामन स्कूल जान लगो, मैने तौ ऊकौ नाव सिरकारी स्कूल में चड़वा दऔ। मैने तो जा सोच राखी कै उयै भूंके प्यासे रैकें पढ़ाँय मोरौ सौ कछू हो जावै।

आसौ आठवीं जमात पास कर लई। बैन हम तो पड़ाई मड़ाई मै कछू नई जानत, संजा कैं ऊके मास्टर मिल गयते, कैरय ते चिरई तुमाव लरको नौने लम्बरन सै पास हो गऔ। उयै येसई मन कै पढ़ात रइयौ सो मैनें तो कै दई कै चाय जो कछू हो जावे जौलौ उये पढ़ने होवे सो मन लगाकैं पढ़वे फिर ऊकी मरजी। काल ताप चड़ आईती बंजी खौं नई कड़ पाई सो संजा खौं वियाई मैं तनक कनक बचीती सो रोटी पई, बियाई हो पाईती, दो रोटी बचीती सो भइया कलेवा खौंधर आयती, ईसैं जौ सब ......।

चिरई शांत होकै बोली बैन। भौत झेल हो गई। चिन्तामन स्कूल सै आ गओ हुइयै। लुगराँयदी आजई जा सौदा नई बिकी। पटैलन ने कई रुकौ चिरई। पटैलन ने ढबुआ में जाकै एक कांसे की थारी में सेरक ऑटो और दो भटा लैके आ गई। लो बैन बॉद लो और सकारूं घरै जाव। चिरई नैं बड़े होबे के नातै आशीष दई और घर खौं चल दई।

ओरी ....! ओरी ....! चिन्तामन छेबले पै चड़कैं चिल्लारओ तो। दूर सै चिरई खौं तक लऔ बस्ता उतई पटक कै दौरगऔ और ओंरी से लिपट गऔ। चिरई ने ममता भरौ हॉत धरो और कई कै नौने .... पलवा गिरजै। चिरई ने पलवा उतारो और भईया खौं गरे सैं लगा लऔ और दुलार करन लगी, मोरी बुढ़ापे की अन्दनकरिया मोरौ लाल .....। मताई की ममता देखतन बन रई ती।

चिन्तामन ओरी कौ घर गिरस्ती के काम काज में हॉत बंटावै। कुंआ पै सै पानी भर देवे, सपरबे खौं पानी धर दैबे ओरी की धुतिया फींच देबै। गॉवन गॉवन चरचा होवै कै लरका होवै तौ चिन्तामन जैसौ! ई सुख के आंगे चिरई खौ सब दुख बिसर गयेते।

हरॉ हरॉ दिन मइना कड़न लगे। आज पौ फटवे के पैलें चिन्तामन उठ परौ, पैलें पैल मताई के पॉव परे बौलौ कै ओरी .... आज हमॉव ग्यारा कौ रिजल्ट आ रऔ।

दुपरै दौरो-दौरो आव और चिरई के पावन पै मूँड़ धर दऔ और बोलो-ओरी ....! हम अच्छे लम्बरन सै पास हो गय। अब हमैं नौनी नौकरी मिल जै। तुमैं कछू काम काज नई करन दैय, अब तौ तुम आराम करियो।

चिरई ने चिन्तामन खौ गरे सै लगा लऔ तो। आँखन में डबइयॉ भर आई, तनक झोल में बोली। हऔ भईया। अब हमाव बुढ़पौ सोऊ आ गऔ, हम पै अब वजन सोऊ नई उठत, हम हार सोऊ गय। बेटा .....। हमाई तौ जेई आशीष है कै तुम दूद करुलां करियो।

चिन्तामन नौकरी के लानें पूंछ-परख करन लगो, जो दफ्तर फिर वो दफ्तर। पुलिस की भर्ती होनेती, दरखास लगा दई ये भइया .....! कन लगत कै जब भगवान देत तौ रोर बटोर कैं देत। ये भईया चिरई के भइया खौं पुलिस की नौकरी मिल गई। ऊकी खुशी कौ ठिकानौ नई हतो। सबरे दई देवता सुमर लय आज ऊकी तपस्या कौ फल ऊखौं मिल गऔ तो। आज पूरे असपेर में चिरई और चिन्तामन की चर्चा हो रई ती। भईया खौं वर्दी मिल गई ऊमै नौनो फबन लगो। अब चिरई खौ जेई धुनाबीदी लगीती कै कबै भइया को बियाव हो जाय।

कछू बिटिया बारे चिरई की माली हालत तक कैं बिचक जावे। कछू काऊ सै, येसई हरॉ-हरॉ साल छै मइना कड़ गय। कऊँ पन्त नई परो। एक दिना चिरई बंजी सै

लौटी, घरै खाट पै एक दरोगा खौ बैठो देखो। चिरई कॉप गई ती, पुलिस और हमॉय इतै। फिर दरोगा ने कई कै अम्मा घवराव नई हमतौ तुमाय लरका सै अपनी बिटिया कौ सम्बन्द करबे की मंशा सै आय। हमाई बिटिया हर काम काज में हुशियार है, पढ़ी लिखी है, अच्छी जोरी रैय। सो अपुन कऔ कछू अपुन के मन में होबै।

चिरई पैलां तो हिचकिचानी फिर बोली हमे का चानें हमाव ठैरो बुढ़ापो, हमाव तो चौथोपन सुदर जावे। बस और फिर ई घर में मोय सिवा को बैठो जी इस्कारौ होबै। जा चर्चा सुनकें मुहल्ला परोस की दो चार जनी आ गई। उनमें सें करीमन चाची ने कई कैं, साब.....। चिरई भली गरीब ठैरी पै मन की भौतई नौनी है। कौनऊँ गाँस गुड़ी मन मैं नइयाँ और इनकौ लरका चिन्तामन ई असपेर मैं दिया लैकें ढूँढ़ियौं तौ ढूँड़े सै न मिलै। हम सब मन सैं चाउत कै अपुन की बिटिया ई घर मैं आबै और इनकी बुढ़ापे की अन्दनकरिया बनकै इनकौ बुढ़ापै को सहारौ बनवै। ईसैं बड़ो सुख हम सब खौं और का चाने।

गाँव में आज भारी चहल पहल हती। सब जगॉ जेई चर्चा हती कै चिरई के दिन फिर गय। नौनी पुतरिया सी बहू घर में आ गई मइना दो मइना चिरई की खूब सेवा टाल भई। भईया तनखा लैके आबैं और ओरी के हॉत पै धर देवैं। भोजन की बेरा ओरी खौ संगै बिठार बौ कभऊँ न भूलें। नौकरी से आवें और मताई की पूंछ परख करबै बंजी करबौ तो पैलां छुटा दओ तो।

चिरई मनई मन में सोचै कै ई देश दुनिया मैं हमसैं सुखी कोऊ नइयाँ। हे भगवान ....! जे सुख सब मताईयॅन खौं दिइयो। चिरई के हॉत पै हर मइना की तनखा धरी जाबै। ऊखौं मन में डर लगबै के बहू के गरैं जा बात नौनी न लग रई होवै। बा जौ सब देखकैं चुपचाप रै जावै।

एक दिना रात में बहू लरका अपने येरैं बतया रय कै बहू नें कई कै हमैं तो जान परत कै हम तौ ई घर मैं ऊसई पूंछत-पूंछत आ गय हौबैं। तो सुनौं ....! यै सौ कछू नइयॉ हम सात भंवरन के ऑय हमाई कमाई और हमई ईघर में एक-एक टका खौं तरसैं। हमैं सोऊ कछू लैने दैने आउत तुमें का तुमैं तो अपनी मताई के आंगे कछू दिखावै तब ना।

ऊनै बड़े प्यार सैं अपनी जनीं खौं खुशामत करत भय समझाव। देखो हमाई ओरी से प्यारौ ई देश दुनियां में कोऊ नइयॉ। आज हम और हमाव जौ कछू है बौ सब उनकी ममता और आशीष कौ फल आय। आज लौ उननें हमें कैसी आफत मुशीबत सै पालो पौसों बड़ों करो और तुम ई घर में हौ सौ उनई की किरपा से।

तिरिया हट के आंगे चिन्तामन की एकऊ न चली बौ तो गुर भरो हंसिया हौंके रै गव। बहू ने कई कै अगर अबकी तनखा हमाय हॉत पै नई धरी तौ काल जमानौ तमासौ देखै।

चिन्तामन रात भर सो नई पाव जोई घुनीतौ लगो रओ और भुन्सरा सै बिना कलेवा करै नौकरी पै चलो गओ। औरी समज नई पाई और येई चिन्ता में बहू सैं पूछीं तौ ऊनै रूखौ ऊत्तर दऔ, मोय का पतौ काय कलेवा नई कर गय। तुमै हुइयै सब पतौ- येसौ सुनकै चिरई सनाखौ खा कै रै गई। ऊके मन में बुरय ख्याल आन लगे।

तनखा के दो-चार दिना कड़ गय चिन्तामन चुपचाप आबै और अपने घर मैं चलो जाबै। ओरी खौं खटका लग गऔ काय सै चिन्तामन पैले जैसौ नई लग रओतो। हरॉ-हरॉ येई उधेर बुन में चिरई जादां बूड़ी लगन लगी। एक दिना का भऔ चिरई बड़े भुन्सरा सै आंगन बखरी भाडू बुहार कै घूरे पै कूरा डारबे जा रईती, तौ करीमन चाची से सामनौ हो गऔ। चिरई की फूली फूली ऑखें जैसे रात कैं सोई न होंबे और बीमार होवें, चिरई सै पूंछ बैठी काय-जिज्जी ....। का बात है बैसई उदास सी लग रई। ऊकी आंखें डब डबा आई धोती के छोर सै अंसुआ पौछवे कौ जतन करन लगी और फिर अपनी राम कहानी रोउत-रोउत सुना दई। करीमन चाची नें मूँड पै हॉत धरो और कई कै घवराओ नई भगवान सब देखत सुनत सब नौनो हुइयै वो तौ सबकी चुटइयॉ पकरैं।

करीमन चाची सै बतयाबौ चिरई की बहू ने कऊँ सैं तकलऔ हुइयै। ऊनैं संजा कैं चिन्तामन सैं एक-एक की दो-दो जोरीं सुनाई। बे अपनी ओरी खौं भूलन से लगे। उनैं येसैं लगबै कै हमाई घर बाई के आँगैं सब झूटौ है। भुंसरा उठकें ओरी खौं चिन्तामन ने सतरा पकराई खबरदार ....! इतै उतै की खौ का सुनातीं कोनऊँ तुमाब पूरौ न करै हमाव तो जी ठकरायदौ हो गओ। रोजऊँ की चिक चिक सुनकैं। चिरई भईया ....! भईया .....! कत रई अकेलैं भईया खौ मताई की सुनवे की परी होवे तब ना।

एक दिना ओरी खौ वियाई मैं चार रोटी, अथाने की कली और गड़ई में पानी बऊधन ने दौरें में धर कैं लोट आई न कछू कई न सुनी। चिन्तामन जोरू के गुलाम बन गयते।

चिरई ने लामी सांस लई हे भगवान ! तुमई जानियो। ऊने तीन रोटी बरयाबतकैं खाई। रोजऊ एक एक रोटी कम आन लगी और आखिर मै। एक रोटी पै खुराक हो गई। भुन्सरा सै संजा लौं चैंचा रोरो होन लगो। चिरई सूक ठठेरो हो गई राते ताप चड़न लगी। लरका बहू ने सुद तक नई लई। उनकी सुख-दुख की संगी करीमन चाची ने तको कैं, चिरई जिज्जी तीन-चार दिना से दिखा नई रई। हिम्मत करकै डरात डरात उनकें दौरें पै पौंची, काय जिज्जी काय परी का हो गऔ, उननै परे परे मूँड उठा के कूलत भय कई कै वैनं ......! चार दिना सैं ताप चड़ी उतरत नइयाँ। चिरई की बहू ने करीमन चाची खौं अपनै घरै तकौ सो गाल फुला लय और तुनक कैं भीतर चली गई। करीमन ने कई कै उठौ जिजी अब चाय जो कछू होबे ई की फिकर हमें नइया हम पाप कौ काम नई कर रय। हम चलत सरकारी डाक्टर खौं दिखवा देवैं। उतैं पैसा टका कछू नई लगत और दवाई सैंत में मिल जैंय।

डाक्टर ने चिरई की जॉच परख करी, खून की जांच भई। डाक्टर ने सबरी जांचे बांची फिर बोले .....! काय बाई .....! कब सै जा हालत है? चिरई ने ऊतर दऔ - साब! साठ रोज हो गय। करीमन चाची ने कई कै काय साब का हो गऔ? डाक्टर ने चिरई खौं वायरैं बैठवे की कई और कई कै, चिरई खॉ टीबी को रोग हो गओ। घबरावे की कोनऊ बात नईया, लगातार तीन मइना तक दवाई लेने परै, तब कई जाकैं ठीक हुइयै।

करीमन चाची गली-गली चिरई खौं हिम्मत बंदाती आ रईती। डाक्टर की बताई बीमारी की बात चिरई खौ नई बताई, अपने घर में अपने लरका भर सै हरॉ सै जा बताई और कई कै काऊ से न कइयौ। भलॉ ......! कन लगत कै जे बातैं छिपाई नई छिपतीं।

संजा कै चिरई की बहू दौरे में बैठी अपने आदमी की बाट तक रईती। चिन्तामन ने साइकिल टिका नई पाई और झनकौर कै हॉत पकरो और भीतर लै जाकैं बड़े बड़े गटा काड़ कै कई कै सुनौ! अब ई घर में तुमाई मताई रैय या फिर हम। जौ फैसला अबई होवैं नांतर हम तुमाई मताई पै होकैं टका से प्रान दे दैंय। चिन्तामन ने जौ रुप पैली वार देखो, तो। हड़बड़ा गऔ बोलो कै का हो गओ कछू पतों तौ चलबै तब तौ। पत्नी ने पूरी कथा सुना दई। चिन्तामन गुर भरौ हॅसिया हो कै रे गव का करें का न करें। लौक लाज कौ डर और जा तिरिया हट।

भुन्सरा चिन्तामन ने ओरी सैं कई कै ओरी ......! जा रोज रोज की किल किल कोनऊ पै निजा जैय। हमाई हॉत जोर कै बिनती है तुम जानती हौ कै तुमैं का रोग हो गऔ। ईसैं यैसो करौ कै तुम हमाय संगें चलो तुमैं हम मंदिर पै बैठारैं आऊत। उतई भगवान के लिगां रइयो उतई तुमाऔं जों रोग ठीक हो जैय। कन लगत कै जियें जौ रोग हो जाबै वो भगवान की सेवा करवैं और परसाद पा पाकैं नौनो हो जात। चिरई ने करेजे के टूँका के मौसै जा सुनी ऊखौं लगौ जैसैं एक संगै कइयक बरछी छिद गई होवें। बेचारी लाचारी मैं का कैबे और का करबै। और फिर चिरई खैं मंदिर पै जा बैठारो और कई के काऊ सै हमाव नाव न बताइयौं कै तुम की की मताई आव।

हरॉ-हरॉ मइना पन्द्रा दिन कड़े हुइयैं चिरई खौं घर

की याद आल लगी। माँ की ममता जो ठैरी। एक दिन भुन्सरा सैं चिरई नकरिया टेकत घरै आ गई। चिरई घरै का आई जैसे भौडोल आ गओ होवै। चिरई की बहू ने लखत्तर सुनाई, चिन्तामन घर मैं सै बड़बड़ात कड़ आओ। गाँव के जनीं मान्स जुर गय करीमन चाची सोऊ आ गई। ये सौं बरताव होन लगो जैंसे कोनऊँ भड़या गाँव में घुस आव होवै। गाँव की भीर ने चिरई खौं घेर लऔ, सब जनै जौ सब सुन कै मनई मन चिन्तामन खौं धुत्कार रयतै। चिरई की आत्मा विलख रईती, अपराधन की नाई हाँत जोर कैं बोली– भईया हमें इतई एक कौनें में डरो रनदो नातर बायरैं एक फट्टा डार दो हम औइमैं डरै रैंय हम तुमाय भीतर न तौ जैंय और न तुमाई कछू चीज बसत खौं हाँत लगाँयै।

चिन्तामन की घरबारी ने गुस्सा सैं आँखें काड़ी, चिन्तामन समझ गय, फौरन बोले तौ येसौ करौ हम तुमें न्यारौ किराय सैं कोठा लय देत। तुम ओई में रईयो और तुमें उतई खाबें पीवे पौचत रैय। भोली भाली मताई जो नई समज पाई, कार्य भईया। काय भइया ....। इतनौ भर कै पाई, जोर जोर सै रोउन लगी। उतै ठाँड़े सबई जनी मान्सन की आँखे सोऊ डब डबा आई।

गाँव में चिरई के टीबी के रोग की चर्चा सै सबनै कोनऊँ न कोनऊ बहानों लैकें घर दैवे की नाई कर दई। करीमन चाची सोऊ कस मसा कै रै गई काय सै उनके दो घर और दोऊ भरैतै हाँ उनको खेत को घर भुसा के लानें खाली डरो तौ, उनके रैबे के लाने हामी भर दई।

बसकारौ लगो, छातन पुमार ठाँड़ी हो गऔ। घर चिचावै बौ न्यारौ उनके परबे के लानें दो ईंटन पै दो पटिया डरे जीपै बिछीं अनगिनते छेदन बारी कथरी और एक अरा में पानी पीबे के लानें फूटौ डबला, भगदरन कौ ऊपर सैं डेरा।

एक दिना कोनऊ बहानें सैं करीमन चाची दिन में चिरई को खबर दबर लैवे खौं पौची। उनकी रैबे की दशा देखकैं डिड़या कै रोउन लगी। जौ आय संतान कौ सुख। जा कन सुनन लगत कै मताई के पाँवन के नैंचे सरग होत है, सब झूटौ आय।

चिन्तामन की घरवारी नें करीमन चाची खौं देख लऔ और ऊनैं करीमन चाची खौं लऔ दऔ। तुमई हमाई सास खौं सिखातीं पड़ाती, काय खौं हमाय घर में फूट करा रईं। चिन्तामन ने सोऊ करीमन चाची खौं खरी खोटी सुनाई कै तुम हमाई मताई सैं न बोलबू करे बस, येई में हमाई तुमाई भलाई है।

करीमन चाची ने धुत्कारत भय कई कै ....। सुनरे चिन्तामन ....। तैं कौन से गरब में भूल गऔ, तोय जा चड़फार लुगाई का मिली तै तो बिलइया बन गऔ। चिरई जिज्जी हमाई जिठानी सैं बड़कैं हैं। तैं तो सबरे नाते रिस्ते भूल गऔ, अरे तो पै नई बनत तौ हम सैं कओ, हम करत अपनी जिठानी की सेवा, अकेलें अब चिरई जिज्जी खौं ई नरक मैं नई रन दैंय।

करीमन चाची के करेजे पै जेई उखरा बूड़ी होत रई कोनऊ काम काज में मन नई हतौ। का करैं का न करें, कन लगत कै भगवान सोउ नौनी गैल धराउत सो...।

संजा कैं करीमन चाची ने अथाई पै सतपौन की पंचायत जुरबा दई। अथाई जनीं मान्सन सैं भर गई, गाँव की जनी खोरन में लामें लामें घूंगट काड़ कैं जा पंचयात सुनबे खौं जुर गई। काय सै सबई जनैं, चिरई के दुख खौं देख सुन नई पा रयते। सबई जनैं अपनें येंरैं कैबें कै भलौ होबे करीमन चाची कौ जिननै हिम्मत करकै जा पंचयात जुरबा दई। पंचन में परमेसुर आउत हैं। अब जरूर चिरई खौं न्याय मिलै।

चाची बोली पंच राजा हो अपुन सबसैं चिरई की कौनऊ बात छिपी नइँया। हमतौ जेई विनती करबे के लानें अपुन सब खौं जोरौ कै चिरई के संगै उनके लरका बऊ अत्त कर रय। हम तौ अपुन औरन सैं जौ न्याय चाउत कै कौनऊ दूसरौ लरका बऊ, अपने मताई बाप के संगै जौ अन्याय न करबै। उनकौ दिया तौ ऊसई जुग जुगा रऔ, कबै का हो जाय ...! वे फफकन लगीं। हमाई तौ अपुन सब सैं विनती है कै पंचराज! हमें चिरई जिज्जी की चलती बिरियाँ

सेवा करबे कौ मौका दुवादऔ जाय।

पंचन में सैं बुजगंन में रामदीन कक्का ढाँड़े हो कैं बोले। चिन्तामन ...। तुमनें ओरी के संगै नौनो नई करो। जा बात सब पचन सैं छिपी नइया, सौ तैनें येसो काय करो तुमैं कछू कैनें होवें तो कऔ...।

चिन्तामन नैची मूंड करै नकरिया सैं धरती उकड़ीर रयते जैसैं उनने कछू सुनी न होवे। चिन्तामन की घरवारी नै सबरी लोक लाज विसार कैं ठाँड़ी हो गई और बोली...। उने येसी बिमारी है कै हमतौ उनै छुवा तक नई लगा सकत। जिये जो दिखाय सो कर लेवै और जिये जांदा बुरऔ लगै बौ उनै अपनै घर में काय नई राख लेत। हमें कोनऊ उजर नईयाँ। अथाई पै सन्नाटौ छा गऔं सब जनी मान्स खुसर-पुसर करन लगे कैं येसी ओछी औरत आज लौ न देखी हुइयै न सुनी हुइयै।

सब पंचनने सोसो विचारो फिर फैसला दऔ कै चिन्तामन नैं सब लोक मर्जादा टोर दई और मताई बेटा के रिस्ते पै कारौ टीका लगा दऔ। सो आज सैं चिन्तामन कौ हुक्का पानी बंद। और करीमन ने जा मानवता, भाईचारे और समाज के लानें जा मशाल दई जी में मानव प्रेम की नौनी वास आ रई।

करीमन खाँ सोस समज के विचार करकैं उनकी मन की अभिलाषा कौ ख्याल करत भय जौ अधकार देत कै बे चिरई खौं अपने घरै लुवा जावैं और जिन्दगानी भर सेवा करबैं। ई मैं हम सब खौं भारी खुशी हुइयै।

करीमन चाची ई फैसला की बाट तक रईती चिट पिटा कै उठीं अपने लरका और गाँव के दो मुन्सेलुअन खौं लुआ कैं चिरई खौं लेवै जा पौंची। अंदयारे लगी कुठइया में जाकैं तकौ, बोली! चिरई जिज्जी...! चिरई जिज्जी...! चिरई अनूतर हतीं। करीमन चाची ने उनपै हाँत धरो, चिरई ठंडी पर गईतीं। उनके प्रान पखेरू उड़ गयते। करीमन गतकौ देकें रै गई। गाँव में हाहाकार मच गऔ।

गाँव वारन ने मिल जुल कैं चिरई कौ क्रिया करम करो। चिन्तामन चिता सें दूर एक बेल के पैड़े के नैचें ठाड़े पछतावे के अंसुआ डार-डार ओरी खौं विदा कर रयतै। बैल पै बैठी चिरइयाँ भौतई चैंचया रईती यैसें लग रओ तौ कै ब्रे चिन्तामन की जा हालत पै ऊकी खिल्ली उड़ा रई होवैं। देखौ भइया हो ऐसी होत माँ की ममता उर आज के लरका बऊँयन कौ कर्तव्य।

- कुण्डेश्वर (टीकमगढ़)
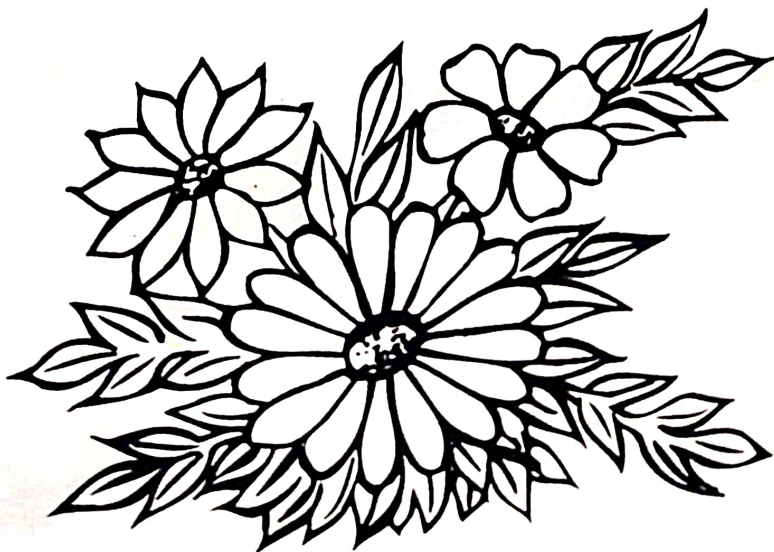
बुंदेली मेला 2011 के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गणेश वंदना की प्रस्तुति करते हुए कलाकार

बुंदेली मेला 2011 के अवसर पर राई नृत्य की प्रस्तुति करते हुए स्थानीय बाल कलाकार

बुन्देली - चौंतरा

बुंदेली दरसन के अंकों पर प्राप्त प्रतिक्रियायें हमें प्रोत्साहित करती हैं। हमें सोचने के लिये बाध्य भी करती हैं। हम चाहते हैं कि आपके पत्र हमारी पीठ जरूर ठोकें, लेकिन हमसे दृष्टि के विस्तार के लिये भी हमें और हमसे पाठकों को प्रेरित करें। पत्र-पंचायत के लिए ही हमने इस चौंतरा को झाड़-बुहारा है।

बुंदेली चौंतरा

परम आदरणीय डॉ. श्री पाण्डे जी

सादर नमस्कार

कुशलोपरांत, बुन्देली दरसन का अंक-4 (2011) प्राप्त हुआ। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। आपके कुशल संपादन में पत्रिका दिनो-दिन आकर्षक बनती जा रही है। इस बार नये रूप में बुन्देली बगीचा, बुन्देली वाटिका और बुन्देली कुंज पढ़कर आनन्द आ गया। आदरणीय पाण्डे जी एवं कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी के अथक प्रयास से हमें बुन्देली दरसन मिलती है। बुन्देली के लिए आपके प्रयास को मेरा शत्-शत् नमन। नगर पालिका परिसर हटा भी इस सफल आयोजन के लिए बधाई का पात्र है। बुन्देली एवं बुन्देली संस्कृति के संरक्षण में लगे रहे मेरी शुभकामनायें। सदा आपके साथ है। ईश्वर से आपकी दीर्घायु की कामना है।

आपका

राजीव नामदेव, 'राना लिधौरी'

संपादक- आकांक्षा पत्रिका

नई चर्च के पीछे, शिव नगर कालोनी,

टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

भाई पांडे जी,

अंक-4 मिला। निश्चय ही अंक सर्वश्रेष्ठ स्तर पर पहुंचा दिया है आपने। सम्पादकीय का यह अंश मागदर्शक है। कि छपने की जगहे वन जाने पर बुन्देली रचनाकार, स्तर सम्हाले रहें। अंक में डॉ. श्याम सुन्दर दुबे का आलेख बहुत वढ़िया रचना है। आपने पत्रिका में रिर्पोताज, प्रहसन, सत्यकथा जैसी चीजें जोड़कर अंक को बुन्देली भाषा के और विस्तार हेतु मार्ग प्रशस्त किया है। यह शुभ है। मेरा आग्रह है कि बुन्देली के लिये कुछ करने वालों जैसे गंगा प्रसाद गुप्त। जब में युवा था तव वे टीकमगढ़ में प्रोफेसर थे। बुन्देली कवि सम्मेलन भी कराये।

दिनेश चन्द दुबे,

पूर्व जज/अधिवक्ता 3 न्या.

68, विनय नगर-1, ग्वालियर-12 (म.प्र.)

आदरणीय पाण्डेय जी,

सप्रेम हरि स्मरण,

आशा है सपरिवार स्वस्थ और सानंद है। बुन्देली दरसन, अंक-4, सन्-2011 ई. प्राप्त हुआ। आभारी हूं। खण्ड विभाजन-बगीचा (बाग) वाटिका और कुंज शीर्षक बहुत पसंद आया। अंक संग्रहनीय और उपादेय है। यथा योग्य सेवा लिखै।

उदय शंकर दुबे, करेऊआ,

पो. खमरिया मिर्जापुर उ.प्र.

आदरणीय पाण्डे जी

सादर नमन,

'बुन्देली दरसन' देखी। सबई तरा से सिरे की है। अपुन सब जनै, जो जो ईसें जुरे-भौतई बधाई के जोग हैं। बुन्देलीखंड की संस्कृति के लाने अपुन 'बुन्देली दरसन' की संजीवनी दै कें ईखां चैतन्य कर रये। भौत-भौत बधाईयां।

डॉ. डी.आर. वर्मा 'वेचैन'

ग्राम व पोस्ट- स्यावरी,

वाया- मऊरानीपुर, जिला- झांसी (उ.प्र.)

आदरणीय श्रीमान पांडे जी

सादर नमन,

बुन्देली दरसन निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इतिहास, साहित्य लोक आदि पर समीक्षात्मक आलेख स्वागत योग्य हैं। शोधात्मक आलेखों में नवीन तथ्यों के उद्घाटन व प्रकाशन को अधिक महत्व देने की आवश्कता है। मुझे लगता है कि विस्तार की दृष्टि से व्यापक परिपेक्ष यथा बुन्देली वर्चस्व से आगे बढ़ कर देखना ज्यादा युक्ति संगत होगा। बुन्देली के अति मोह में बंध कर कहीं संकुचित दृष्टि के शिकार न हो जायें। कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकारें। आपके स्वस्थ जीवन तथा बुन्देली दरसन के निरन्तर विकास की कामना के साथ धन्यवाद।

कुं. शिवभूषण सिंह गौतम

कमला कालोनी, छतरपुर

आदरणीय पाण्डे जी,

सादर प्रणाम,

आपके द्वारा प्रेषित 'बुन्देली दरसन' की प्रति प्राप्त हुई, जिसे पढ़कर हृदय गदगद हो गया। इसके माध्यम से बुन्देली साहित्य को सहेजने का आपका अनूठा प्रयास सराहनीय है।

बुन्देली दरसन बनी, बुन्देलखण्ड की शान।
एम.एम. पाण्डे जी, डालें उसमें जान।।
डालें उसमें जान, संस्कृति सहेजकर।
इतिहास कला के मोती, छापें हैं चुन-चुनकर।।
खेलकूद व्यंजन बने, अनोखी चित्रकला रंगोली।
हटा दमोह के जन मन में, छाया रंग बुन्देली।।

डॉ. राम भरोसा पटेल 'अनजान'
बजरंग नगर कालोनी, छतरपुर (म.प्र.)

बुन्देली दरसन का अंक-4, 2011 मिला। यह अंक बुन्देलखंड की सांस्कृतिक विरासत को संजोये हुए हैं। बुन्देली मेला की झलकिया मन को बरबस अपनी ओर खींचती है। जिसमें तांडव नृत्य, कलश नृत्य, बधाई नृत्य, मयूर नृत्य एवं राई नृत्य की मनमोहक झांकियां उल्लास से भर देती है। निश्चित रूप से बुन्देली मेला के संयोजक एवं मेला से जुड़े सभी लोग बधाई के पात्र हैं।

बुन्देली बगीचा के अंतर्गत 'लोककवि ईसुरी के काव्य में, समाज की पीड़ा' डॉ. बहादुर सिंह परमार ने अपने लेख में ईसुरी के साहित्य पर समग्र रूप से चर्चा की है। अभी तक ईसुरी पर यह आक्षेप लगता रहा है कि ईसुरी ने स्वतंत्रता संग्राम पर अपनी कलम नहीं चलाई है। इस लेख में परमार जी ने पं. बाबूलाल पाठक द्वारा संकल्पित फागों को दिया है। इस तरह का प्रयास स्तुत्य कहा जायेगा। ईसुरी पर इस तरह के लेख आते रहने चाहिए। डॉ. कुंजी लाल पटेल का आलेख 'लोक कवि ईसुरी और उनकी रामभक्ति' पर विशद चर्चा की गई है।

डॉ. मंगला अनुजा ने 'बुन्देलखण्ड ने दिया मध्यप्रदेश को पहला दैनिक' अच्छी सामग्री इकट्ठी की है। डॉ. अनुजा के लेख में उनका श्रम झलकता है। लोगों के पत्रों को संकलित करना बहुत बड़ा काम है। साकेत सुमन चतुर्वेदी जी ने बुन्देलखण्ड के लोक खेल पर अच्छा प्रकाश डाला है। बगीचा में और भी लेख हैं, जो अच्छे बन पड़े हैं।

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया ने 'बदलाव' नाटिका में सामाजिक भेदभाव को ठोसपन एवं अकड़ के साथ प्रस्तुत किया है। मखनिया का चरित्र बुन्देली नारी का प्रतिनिधित्व करता है। बुन्देली में ऐसी यथार्थवादी रचनाएं बहुत कम पढ़ने को मिलती है। कु. सौम्या पाण्डेय में काफी संभावनाएं दिख रही है। भाषा और अभिव्यक्ति अच्छी है। मुझे लगता है कु. सौम्या पाण्डेय बुन्देली दरसन की खोज है। कु. सौम्या पाण्डेय को बुन्देली सृजन हेतु मेरी शुभकामनायें। 'ससरार की होरी' कविता में नवलकिशोर सोनी मायूस जी ने जीजा के भीतर के द्वंद को ठीक पहचाना है। बेचैन जी की बुन्देली प्रेम एवं वीरेन्द्र सिंह परमार की कहावतें और कविता अच्छी है।

डॉ. एम.एम. पाण्डेय जी मैं आपके द्वारा रचनाओं के चयन से बहुत प्रसन्न हूं। संपादकों की भी एक दृष्टि होनी चाहिए, जिससे पत्रिका में अच्छी रचनाओं को जगह मिल सके। वह दृष्टि आप में है। संपादक जब व्यापारी बन जाता है तो साहित्य बहुत पीछे छूट जाता है। विज्ञापन से पत्रिकाएं आराम से प्रकाशित होती रहती हैं। जब संपादक हाथोंहाथ पत्रिका बेचने लगे तो पत्रिका खरीदने वालों का कूड़ा करकट भी छापना पड़ता है।

बुन्देली दरसन साहित्य रच रही है, शुद्ध साहित्य। इसके लिये पूरा हटा बधाई का पात्र है। मेरी बधाई स्वीकारें और नये जोश और ऊर्जा के साथ अगले अंक की तैयारी करते रहें। मुझ जैसा पाठक अगले अंक का बेसब्री से इंतज़ार करता रहेगा।

डॉ. लखन लाल पाठक
कृष्णाधाम के आगे, अजनारी रोड,
नया रामनगर, उरई, (उ.प्र.)

आदरणीय पांडे जी
सादर नमस्कार

बुन्देली दरसन अंक 4, 2011 प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई कि आपने पत्रिका के माध्यम से बुन्देली संस्कृति को आगे बढ़ाने का जो कदम उठाया है, उसके लिए मैं आपका हृदय से अभिनन्दन करता हूं। बुन्देली मेले की मनोरम प्रस्तुती, बुन्देली की विविध विधायें, कवियों द्वारा रचित रचनायें सराहनीय हैं।

सुन्दर प्रकाशन एवं कुशल संपादन के लिए आपको कोटिशः बधाई। शुभकामनाओं सहित

परशुराम भास्कर 'विमल'
रेडियो वार्ताकार आकशवाणी झांसी/छतरपुर
ग्राम- सप्तवारा, पोस्ट- स्यावरी तह. मऊरानीपुर,
जिला- झांसी (उ.प्र.)

मानीय संपादक महोदय,
विनम्र अभिवादन

'बुन्देली दरसन' अंक 4, 2011 का अनुशीलन करते हुए मैं आनंद विभोर हो गया। आपने इस पत्रिका में बुन्देलखंड की परम्परा, संस्कृति एवं पुरातत्व आदि विषयों पर कई बारीक और गहन जानकारी देकर बुन्देलखंड की जनता और बुन्देली भाषा पर महती उपकार किया है। डॉ. आर.बी. पटेल 'अंजान' का आलेख 'बुन्देली संस्कृति में गाली-गलौच' मन को गुदगुदा गया। पत्रिका की अन्य रचनायें भी रुचिकर और स्तरीय लगीं। इन रचनाओं के बीच में डॉ. लखन लाल पाल की बुन्देली कहानी 'हंसना मोरौ सुभाव, बलम तुम बुरओ न मानो' ने विशेष ध्यान आकर्षित किया। यह बुन्देली में होते हुए भी हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा से जुड़ी कहानी है। इसमें नारी चेतना का स्वर मुखर है। 'में इत्ती नई डरात लला' रामरती निडर होखे बोली 'सात भांवरे गेर खें आई हौं, कछू पूंछत-पूछत नई आई' इसमें बुन्देली समाज की शालीन परंपरा का निर्वाह भी है और वह उग्र नारी चेतना नहीं है जो आज के मुख्य धारा के नारी विमर्श में आर्थिक स्वतंत्रता के रूप में दिखायी देता है। इसके लिए लेखक को साधुवाद।

सुरेन्द्र कुमार नायक
उपन्यासकार एवं आलोचक
प्रतापनगर, कोंच, जिला- जालौन (उ.प्र.)

आदरणीय पाण्डेय जी,
सादर प्रणाम

'बुन्देली दरसन' का अंक-4 प्राप्त हुआ। चित्राकर्षक कलेवर से सजी, उपयोगी जानकारियों से लवरेज, उत्कृष्ट आलेखों से युक्त अंक के प्रकाशन हेतु साधुवाद स्वीकारें। 'बुन्देली दरसन' इस अंचल के साहित्य, संस्कृति व इतिहास के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है। आदरणीय पुष्पेन्द्र हजारी जी, लोक संस्कृति संवर्धन हेतु अपनी टीम के साथ अनुपम कार्य कर रहे हैं। ऐसे आयोजनों और प्रयासों से ही हम सब भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति से परिचित करवा पाएंगे।

डॉ. बहादुर सिंह परमार
सहा. प्राध्यापक, शा. महाराजा स्वशासी
महाविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

"बुन्देली- चन्दन पाये"

मुख्य पृष्ठ की भव्यता, आकर्षणता है खूब।
नृत्यांगना की- क्या? कहें- दिखती सुख में डूब।।
'बुन्देली-दरसन' पाये।।2।।

'बुन्देली-बगीचा' है प्रथम, दूजा 'वाटिका' नाम।
'बुन्देली-निकुंज' तृतीय है, भरा है काव्य ललाम।।
'बुन्देली-चंदन' पाये।।2।।

कथा, शोध के संग निवंध, और ललित का ज्ञान।
'बुन्देली मेला' की झलकियां, करती है सम्मान।।
'बुन्देली-कंचन' पाये।।2।।

आंदर, श्रद्धा, नमन है, स्वीकारें श्रीमान्।
'सीकर' सम्पादकीय-क्षितिज, फैलाया यश गान।।
डॉ. पाण्डे पाये।।2।।

डॉ. एल.आर. सोनी 'सीकर'
ठंडी सड़क, दतिया (म.प्र.)

राजेश कुमार सेन ''राजू'' द्वारा प्रतिमाओं का सृजन

ग्वालियर में 1008 नारियलों के द्वारा श्री गणेश की प्रतिमा का सृजन किया।

वर्ष 2009 में ज्ञानोदय विद्या मंदिर नरसिंहगढ़ में मां सरस्वती की 11 फुट ऊंची प्रतिमा का सृजन।
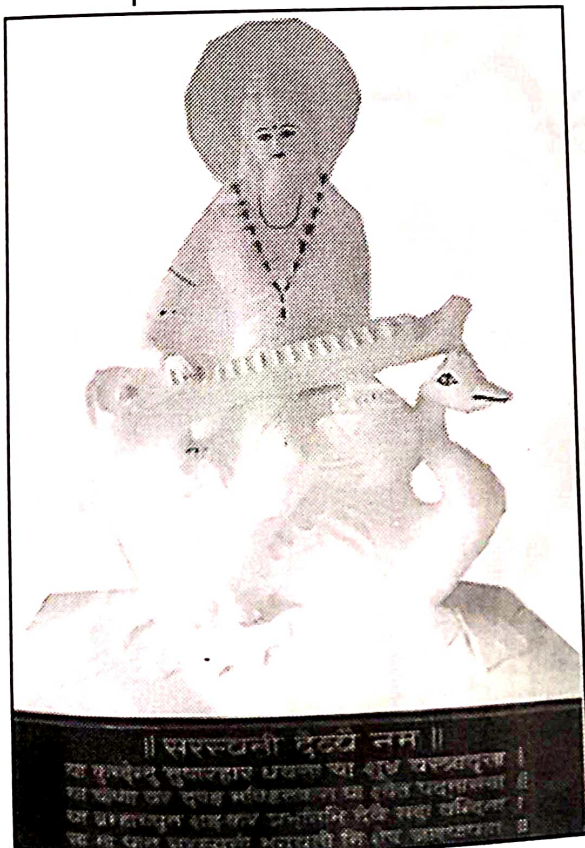
वर्ष 2003 में नवोदय विद्यालय ग्वालियर में 10 फुट ऊंची सीमेंन्ट की अर्जुन की प्रतिमा का सृजन।

96 ब्लाक हाइडल बर्ग सीमेन्ट, नरसिंहगढ़, दमोह (म.प्र.)

बुंदेली दालान

बुंदेली दालान

जय वीर बुन्देले ज्वानन की

– राजेन्द्र चतुर्वेदी, तालबेहट (साहित्य सम्पादक– राज एक्सप्रेस)

ख्यात कवि कैलाश मड़बैया रचित, खण्ड काव्य 'जय वीर बुन्देले ज्वानन की' की समीक्षा अगर एक शब्द में करनी हो तो कहना पड़ेगा- अद्वितीय। समीक्षा यदि एक वाक्य में करना हो तो कहना होगा कि यह कृति बुन्देलखण्ड की संस्कृति और इतिहास का समग्र दस्तावेज बन पड़ी है। यों तो बुन्देलखण्ड के इतिहास और संस्कृति पर अनेक पुस्तकें रची गई हैं- गद्य और पद्य दोनों में, मगर ऐसी कृति ढूंढ़ोगे तो भी नहीं पाओगे जिसमें संस्कृति, कला, धर्म, अध्यात्म, सामाजिक दशा और दिशा का समुच्चय हो। खास बात यह कि 'जय वीर बुन्देले ज्वानन की' में यह सब चीजें बुंदेलखंड के इतिहास की, वेत्रवती की धारा के साथ कल कल करती बहती चली आ रही हैं। जरा इस पर नजर तो डालिये कि कवि ने अपनी कृति में प्रकृति का चित्रण कितने प्रभावशाली ढंग से किया है-

'माटी से सौंधी वास उठी, उमड़े घुमड़े गरजे बादर,
पैले अषाड़ के पानी में, हरआये धरती के ऑचर।
और- गैलन गेंवड़न में किचकंदौ, दिन डूबें झिर थमतई नइयां...' प्रथम सर्ग

यह पंक्तियां पाठकों को बुन्देलखंड के गांवों में पहुंचा देती हैं। दरअसल बरसाल के मौसम में बुंदेलखण्ड के गांव-गांव में ऐसा ही प्राकृतिक नजारा होता है। इसकी कुछ तकलीफें होती हैं तो कुछ खुशियां भी हुआ करती हैं। ... गर्मी के मौसम का चित्रण भी देखिए-

'जे जेठमास कें घामें उर धरती बादर दो तवा भये,
फुटका रए पांव ततूरी में लपटन में लूगर हवा भये।...
बिरछा विरवा पीरे पर रए, छनको जल ताल तलैंयन कौ..

इसकी अगली पंक्ति में बुंदेलखण्ड की नारियों का दर्द फूट पड़ता है...

मोती सागर खों ओछो भव, जेव्रा बिल्ला वारी बऊ कौ... तीसरा सर्ग

खण्ड काव्य में शीतकाल का आगमन भी बेहद प्रभावशाली ढंग से हुआ है-

'नए फूल बगीचन में खिल गए, नए उन्ना सिमें शीत ऋतु के,
कड़ रए कथरीं, कमरा, पल्लीं, दिन तेली, बरीं- मंगौरन के।
छब रए लिप रए पोते जा रए, बखरी घर-दोर, अटारन के,
पक उठी स्याई कटवे ठॉडी, दिन आ गए दिया दिवारी के'... पंचम सर्ग

अब 'जय वीर बुन्देले ज्वानन की' काव्य में बुंदेलखण्ड के सांस्कृतिक चित्रण के नजारे भी देखिये। आप स्वयं को बुंदेली रंग में रंगा हुआ पायेंगे-

'मॉदी से हात पांव रच गए, गोरी गुइंयन संग गरयावें,
लो डार कंदेला फरके में, वे खेल चपेटा सन्नावें।'

वीर रस के काव्य में श्रंगार की यह पंक्तियां बेहद खूबसूरत हैं।

'आला अथाई पै होन लगे, अलगोजन पै सावन झूमें
साईं गावें बारामासी, नदियां-नरवा दोई ढ़ी चूमें।'... प्रथम सर्ग

'जे दिन डूबे की दोई बेरॉं, अकती खेलन बिन्नू निकरीं,
मिल गए लिबउआ बार तरें, घुर रई मनई मन में मिसरी।'... तृतीय सर्ग

'बैठे चिरौल पै नीलकण्ठ, लो सुआ अटा पै आउन लगे।
चौंतरिया बिन्नू छाब लीप, दिन कढ़ें नौरता गाउन लगे।
नौ दुर्गा बैठीं नई मूरत, लो करए दिनन कौ जाप भयौ।
दसरये खों सजी रामलीला, मैदान किले कौ साफ भयौ...।' पंचम सर्ग

बेतवा के बिना बुंदेलखण्ड की संस्कृति की चर्चा अधूरी है। सचमुच बेतवा है भी बुंदेलखंड की पहचान।

अत: खण्ड काव्य में वह भी जीवंत हुई है-

'जॉ ऑय बेतवा जिंदगानी, बुंदेलखण्ड की धरती खों
नदिया भर नदिया नौंइ ऑय, जे गंगा जू, बुंदेलन खों
ई माटी के जे प्यास आय, मौड़ी-मौड़न की आस आंय
विंध्याचल इनें पितर जैसे, औ माई बेतवा प्रान ऑय।'... अष्टम सर्ग

'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' में बुंदेलखण्ड की सामाजिकता का वर्णन भी अनूठा है-

'सब चमरौला पत्तन खों गओ, कछयानों लगो भटोई में
दउअन नें मूंग बिरा डारी, अगयानौं लगो चरोखी में'... तृतीय सर्ग

बुंदेलखण्डी कैसे होते हैं? इस पर भी गौर फरमायें-

'कविता संगीत कला अपनी, जा थाती वीर बुंदेलन की,
है धरम हमाऔ परस्वारथ, बारे की सीख चंगेरन की।
हम सदा लुटे हैं प्रेमई में, धोखे से सीस भले पुल गऔ,
न झुका पाऔ है हमें कोऊ, हालॉं कै मौत द्वार खुल गऔ।'... चतुर्थ सर्ग

तत्कालीन बुंदेलखण्डियों की परेशानियों का चित्रण भी देखिये, जो अब भी दूर कहां हो पाई। खण्ड काव्य में इनका वर्णन मार्मिक है और मानवीय संवेदनाओं को झकझोरने वाला है-

'भए नोंन तेल गल्लन मांगे, उन्नन में फसल चली जावै,
वेगारै जानें परत रोज, तौउ पापी पेट न भर पावै।
मंदिर में पंडज्जी लौंचें, खेतन में लट्ठ दाऊ जू कौ,
गोरन से जीवौ हलाकान, कॉ सें दयें व्याज साव जू कौ?'... सर्ग पांच

बानपुर के राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ के राजा बखतबली सिंह, बाँदा के नबाब और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से खूब लड़ी पर विजय की जगह शहादत क्यों इन लोगों की किस्मत में आई? इस सवाल का जबाब भी कवि ने दिया है-

'नदियां नारे न डुबो पाए, हम हारे नइं पहारन सें,
घर के कुरवा से आंख गई, हरदार लुटे गद्दारन से।'... सप्तम सर्ग

बुन्देली भाषा के लिए समर्पित समर्थ शब्दशिल्पी कैलाश मड़बैया विरचित खण्ड काव्य 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' वीर रस प्रधान तो खैर है ही, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का जैसा चित्रण इस कृति में किया गया है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। देखें एक झलक भी-

'लक्ष्मी चण्डी सी लफलफात, दुश्मन के प्रानन की प्यासी,
मर्दनसिंह मानौ महाकाल, परवान चढ़ी अब झांसी ती.।
तात्या तन तोप भरो जैसौ, नाना के हृदय हवा बरै,
बैरी खों बम से बखतसिंह, हर ज्वान बीस खों तीस परै।'... षष्टम सर्ग

कुल मिलाकर दस सर्गों में विभक्त यह कृति न केवल पठनीय है, बल्कि उन सब के लिए संग्रहणीय भी है जो बुंदेलखण्ड का इतिहास, भूगोल, समाज और संस्कृति को जानना चाहते हों। कवि की वह पीड़ा भी वास्तविक है जो उन्होंने कृति के आत्म निवेदन में व्यक्त की है। बुंदेलखण्ड के इतिहास के साथ न्याय वास्तव में नहीं हुआ है। महाराज छत्रसाल, वीरसिंह जू देव, लाला हरदौल, महाराज़ मर्दनसिंह, राजा बखतबली सिंह और महाराज मेदिनी राय आदि के बारे में कौन कितना जानता है? वह तो महारानी लक्ष्मीबाई थीं, जिनके त्याग, बलिदान और वीरता को नकारा नहीं जा सका, वरना आजाद भारत में तो यह भी मान लिया जाता कि बुंदेलखण्ड का कोई इतिहास ही नहीं रहा है। थोड़ा बहुत महाराज छत्रसाल के बारे में हम जानते हैं मगर उतना नहीं जितना जरूरी था। महाराष्ट्र के इतिहास में जो भूमिका शिवाजी की रही, राजस्थान में राणा सांगा ने निभाई थी, बुंदेलखण्ड के मेदिनीराय की भूमिका भी वैसी ही थी, पर पता किसी को नहीं है। इसके दो कारण है- एक तो बुंदेलखण्ड का एक औसत नागरिक अपनों से अपना हक मांगने में भी संकोच करता है। वह सोचता है जो उसका है वह बिना मांगे ही मिल जायेगा, लेकिन शर्मीलो मांगे नइं

और गर्वीलो देय नई।

दूसरा कारण यह है कि जिनके पूर्वज कभी मुगलों के, तो कभी अंग्रेजों के चरणों में बैठते रहे हैं, उनमें से अधिकतर आजाद भारत में हमारे भाग्यविधाता बन गए। यह सही है कि पूर्वजों की करनी का दण्ड उनकी वर्तमान पीढ़ी को नहीं दिया जा सकता पर सच यह भी है कि पूर्वजों की गलतियों पर वर्तमान पीढ़ी पर्दा डालने से बाज नहीं आती। जब वर्तमान इतिहास में स्वतंत्रता प्रेमी बुंदेलखण्ड के वीरों की चर्चा की जायेगी तो यह सवाल भी उठ खड़ा होगा कि यह वीर प्रवर किन लोगों के कारण शहीद हुये? पिटारे का ढक्कन खुले और उसमें से गद्दार के रूप में हमारा कोई पूर्वज निकल पड़े। इससे अच्छा यही है कि पिटारे को बंद ही रहने दो। देश भूल जाए तो भूल जाए, बुंदेल वीरों को महाराज मर्दनसिंह जैसे महापुरुषों को।

इस स्थिति में अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् को जैसी राष्ट्रीय/केन्द्रीय भूमिका निभानी चाहिये थी बिलकुल वैसी ही निभाई जा रही है। हो जानें दो दो-चार आदमकद बौनें, उतर जाने दो कुछ तथा कथित दिव्य मूर्तियों पर से सिंदूर, पर बुंदेलखण्ड का समग्र इतिहास सामने लाया ही जाना चाहिये। 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' जैसी अद्‌भुत कृति रचकर कैलाश मड़बैया ने यही कार्य किया है। जो देश और समाज खुली आंखों से अपना गुजरा हुआ कल यानी इतिहास नहीं देखता वह भविष्य की दिशा भी तय नहीं कर पाता।
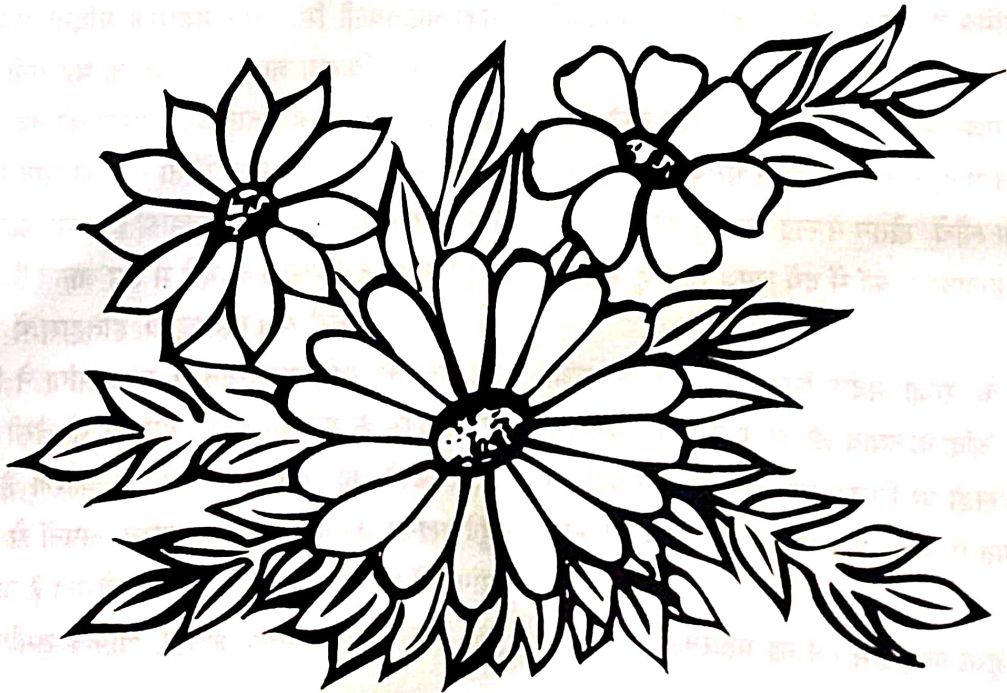
बुंदेली के इस अभूतपूर्व खण्ड काव्य पर कतिपय समीक्षात्मक प्रक्रियायें-

'साक्षात्कार', दिस.10 जन.11, पृष्ठ 104-108

'कैलाश मड़बैया बुंदेली के एक सिद्ध कवि हैं। भाषा, काव्य, प्रतिमाओं, प्रभावशाली छवि अंकन, भाषा के सधे प्रयोग, बुन्देली धरती और परिवेश का अत्यंत प्रभावशाली और सजीव चित्रण, बुंदेलखण्ड के सौंदर्य का- प्रकृति और गांवों तथा जीवन के विविधरूपों का अनूठा वर्णन उनके इस काव्य में मिलता है और उनसे बुंदेली साहित्य समृद्ध हुआ है।...' - प्रो. रामेश्वर मिश्र पंकज

कादम्बिनी, दिसम्बर 2010, पृष्ठ 50-

'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' भारत की प्रथम स्वातंत्र्य समर में बुंदेलखण्ड की पराक्रमी भागीदारी को खण्डकाव्य के जरिये कैलाश मड़बैया का ध्यान खींचने बाला एक रचनात्मक प्रयास है। आज के परिवेश में जहां नई पीढ़ी आधुनिकता के निद्रालु रसायन से उनीदी तंद्रा में लीन है, वहां 1857 के स्वातंत्र्य समर के तुमुलनाद से निद्राभंजन की रचनाकार की कोशिश प्रभूत प्रशंसा की हकदार है।... - सुरेश नीरव

'कलाश्री' अगस्त 10, पृष्ठ 31.33 एवं 'नीके बोल बुंदेली के' बुंदेली ग्रंथ अप्रैल 2011, पृष्ठ 60.64

'कवि कैलाश मड़बैया के खण्ड काव्य 'जय वीर बुन्देले ज्वानन की' की समीक्षा अगर एक शब्द में करनी हो तो कहना पड़ेगा- अद्वितीय। समीक्षा यदि एक वाक्य में करना हो तो कहना होगा यह कृति बुल्देली भाषा बुन्देलखण्ड की संस्कृति और इतिहास का एक समग्र दस्तावेज बन पड़ी है। यूं तो बुन्देलखण्ड के इतिहास और संस्कृति पर अनेक पुस्तकें रची गई हैं- गद्य और पद्य दोनों में, मगर ऐसी कृति ढूंढोगे तो भी नहीं पाओगे जिसमें संस्कृति, कला, धर्म, अध्यात्म, सामाजिक दशा और दिशा का समुच्चय हो।...'

- राजेन्द चतुर्वेदी,
साहित्य सम्पादक 'राज एक्सप्रेस'

दैनिक जागरण दि.3 अक्टूबर 10 रविवारीय पृष्ठ-

'दस सर्गों में विभक्त यह कृति न केवल पठनीय है बल्कि उन सबके लिये, संग्रहणीय भी है, जो बुंदेलखण्ड का इतिहास, भूगोल, समाज और संस्कृति को जानना चाहते हैं।...' 'यह एक मात्र ऐसी कृति है जिसमें कथ्य की प्रमाणिकता के लिए प्रत्येक रचना के साथ बॉयें पृष्ठ पर इतिहास सम्मत दस्तावेज प्रस्तुत हैं।...'- डॉ. उमेश कुमार सिंह, संचालक हिन्दी ग्रंथ अकादमी म.प्र.

रम्भा टाइम्स 30 अगस्त 10,-

साहित्य के सशक्त और शीर्ष कवि ने यह साहित्य जगत को अद्‌भुत कृति प्रदान की है....। यह बनावट और बुनावट में महाकाव्यात्मक आह्लाद प्रदान करती है।

- लखन खरे, विभागाध्यक्ष, कोलारस कालेज

शिवम् सितम्बर 10 एवं शुभ्र ज्योत्सना 2011

शिवम् सितम्बर 10 एवं शुभ्र ज्योत्सना 2011 ने अनेक समीक्षकों के प्रसंशात्मक मत इस कृति पर प्रकाशित किये हैं यथा डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैंया, इतिहासज्ञ शंभुदयाल गुरू, प्रो. कपिलदेव तैलंग आदि।

संकलन - मनीष प्रकाशन
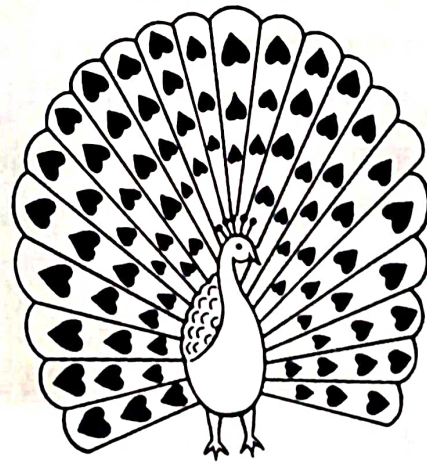
बुन्देली मेला-2011 प्रतियोगिता परिणाम

मैराथन दौड़- छात्र
प्रथम - कृष यादव
द्वितीय - बाबू लाल
तृतीय - सुन्दर पटेल

मैराथन दौड़- छात्रा
प्रथम - गनेशी यादव
द्वितीय - रानू यादव
तृतीय - राजकुमारी यादव

100 मीटर दौड़ - बालक (हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी वर्ग)
प्रथम - प्रदीप पटैल- स.शि. मंदिर हटा
द्वितीय - जयकांत सिंह लोधी- नवोदय विद्यालय
तृतीय - दीपक मेहरा एवं देवेन्द्र पटैल- नवोदय विद्यालय

100 मीटर दौड़- बालिका
प्रथम - कु. अभिलाषा रावत- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - कु. भूमित्रा राजपूत- नवोदय विद्यालय
तृतीय - कु. सुनिन्द्राराजे एवं पूजा- महारानी लक्ष्मीबाई कन्या शाला

100 मीटर दौड़- बालक (माध्यमिक)
प्रथम - जयकांत- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - इमरत- नवोदय विद्यालय
तृतीय - कृपाल- नवोदय विद्यालय

100 मीटर दौड़- बालिका (माध्यमिक)
प्रथम - कु. निशी प्रभा- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - कु. प्यारी अहिरवाल- नवोदय विद्यालय
तृतीय - कु. अनामिका/तनुजा- नवोदय विद्यालय

रस्सी दौड़- बालिका वर्ग (माध्यमिक)
प्रथम - कु. मेधा शर्मा- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - कु. लक्ष्मी रजक- अनमोल शिक्षा निकेतन
तृतीय - कु. दीपा अठया- महारानी लक्ष्मीबाई कन्या शाला

त्रिगड़ी दौड़- बालिका वर्ग (माध्यमिक)
प्रथम - कु. मेधा शर्मा / कु. निशी प्रभा- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - कु. मेघना मोदी / कु. गोल्डी आदर्श- महार्षि विद्या मंदिर
तृतीय - कु. मोहनी रैकवार / कु. वर्षा अहिरवाल- पुत्री शाला

त्रिगड़ी दौड़- बालक वर्ग (माध्यमिक)
प्रथम - इमरत सौर/उमराव अहिरवाल- नवोदय विद्यालय
द्वितीय - साहिल सिंघई/विनोद अहिरवाल- नवोदय विद्यालय
तृतीय - शिवम्/वीरेन्द्र- सरस्वती ज्ञान मंदिर हटा

आलू दौड़- बालिका वर्ग (प्राथमिक वर्ग)
प्रथम - कु. शिवानी राजपूत- सरस्वती शिशु मंदिर
द्वितीय - कु. ज्योति रैकवार- गौरीशंकर प्राथमिक शाला
तृतीय - कु. निधि चौरसिया- बजरिया बोर्ड

आलू दौड़- बालक वर्ग (प्राथमिक वर्ग)
प्रथम - शैलेन्द्र साहू- अनमोल शिक्षा निकेतन
द्वितीय - रामप्रसाद अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर
तृतीय - महेन्द्र दुबे- अनमोल शिक्षा निकेतन

सुई धागा दौड़- बालिका वर्ग
प्रथम - कु. महिमा गौड़- पुत्री शाला
द्वितीय - कु. मुस्कान खां- अनमोल शिक्षा निकेतन
तृतीय - कु. आर्या मिश्रा- लिटिल ड्राप शिशु मंदिर

लगड़ी दौड़- बालक वर्ग
प्रथम - हर्षित दुबे- सरस्वती शिशु मंदिर
द्वितीय - राजुल अग्रवाल- महावीर शिशु मंदिर
तृतीय - अक्षय सेलट/अर्पित सेलट- जी.एस. कान्वेंट/ स्वामी विवेकानंद

पुस्तक संतुलन- बालिका वर्ग
प्रथम - कु. विनीता रैकवार- पुत्री शाला
द्वितीय - कु. आरती साहू- अनमोल शिक्षा निकेतन
तृतीय - कु. रक्षा अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर

मेढक दौड़

प्रथम - अजय खान- अनमोल शिक्षा निकेतन

द्वितीय - आयुष चौरसिया- महर्षि विद्या मंदिर

तृतीय - गनेश अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर

चम्मच दौड़

प्रथम - कु. रवीना अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर

द्वितीय - कु. स्नेहा रावत- महर्षि विद्या मंदिर

तृतीय - विनय पांडे- अनमोल शिक्षा निकेतन

जलेबी दौड़

प्रथम - आयुष पटैल- परमहंस शिशु मंदिर

द्वितीय - रवीना अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर

तृतीय - सचिन प्रजापति- महावीर शिशु मंदिर

कुर्सी दौड़

प्रथम - रवीना अहिरवाल- परमहंस शिशु मंदिर

द्वितीय - अंकिता सोनी- महर्षि विद्या मंदिर

तृतीय - राज साहू- लिटिल ड्राप्ट पब्लिक स्कूल

खो-खो वालक वर्ग

नवोदय विद्यालय (विजेता)

सरस्वती शिशु मंदिर (उपविजेता)

खो-खो वालिका वर्ग

नवोदय विद्यालय (विजेता)

महारानी लक्ष्मीवाई कन्या शाला (उपविजेता)

तवा फेंक- वालक वर्ग

प्रथम - राजेन्द्र अहिरवाल- नवोदय विद्यालय

द्वितीय - अवधेश सिंह लोधी- नवोदय विद्यलाय

तृतीय - दशरथ पटैल- नवोदय विद्यालय

तवा फेंक- वालिका वर्ग

प्रथम - कु. हीरा अहिरवाल- महारानी लक्ष्मी वाई कन्या शाला

द्वितीय - कु. सुनीता पटैल- नवोदय विद्यालय

तृतीय - कु. नेंशी अवस्थी- नवोदय विद्यालय

गोला फेंक- वालक वर्ग

प्रथम - राजेन्द्र अहिरवाल- नवोदय विद्यालय

द्वितीय - राघवेन्द्र सौर- नवोदय विद्यालय

तृतीय - प्रदीप पटैल- नवोदय विद्यालय

गोला फेंक- वालिका वर्ग

प्रथम - कु. सारिका साहू- नवोदय विद्यालय

द्वितीय - कु. सुनिंद्रा राजे- महारानी लक्ष्मी वाई कन्या शाला

तृतीय - कु. हीरा अहिरवाल- महारानी लक्ष्मीवाई कन्या शाला

गोला फेंक- वालिका वर्ग

प्रथम - कु. प्रतिक्षा तिवारी- नवोदय विद्यालय

द्वितीय - कु. मोहिनी रैकवार- पुत्री शाला

तृतीय - कु. सोनाली- नवोदय विद्यालय

कवड्डी- वालक वर्ग

1. उत्कृष्ट हायर सेकेंडरी स्कूल (विजेता)
2. नवोदय विद्यालय (उपविजेता)

कवड्डी- वालिका वर्ग

1. महारानी लक्ष्मीवाई कन्या शाला (विजेता)
2. नवोदय विद्यालय (उपविजेता)

वालीवॉल प्रतियोगिता

वरौनी- विजेता

वंसौली- उपविजेता
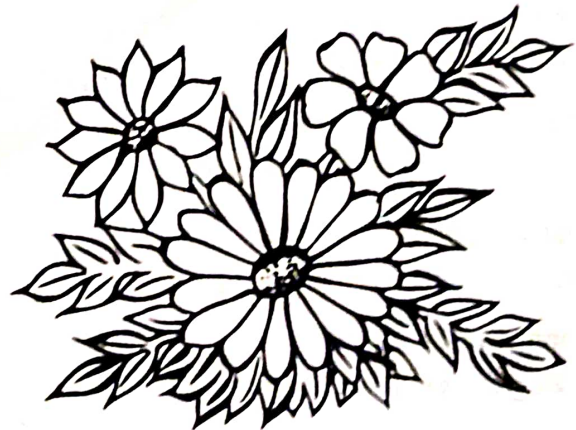
बुन्देली मेला आयोजन समिति वर्ष- 2012

आयोजक

नगर पालिका परिषद हटा-दमोह (म.प्र.)

संरक्षक मंडल

श्रीमती उमा देवी खटीक (विधायक, हटा)
श्री एच.के. जैन (जवाहर नवोदय विद्यालय, हटा)
डॉ. श्री श्यामसुन्दर दुबे (पूर्व प्राचार्य डिग्री कॉलेज हटा)
श्री आर.आर. साकेत
(तहसीलदार एवं अध्यक्ष गौरीशंकर मंदिर कमेटी हटा)
श्री गोविन्द प्रसाद असाटी
(सचिव गौरीशंकर मंदिर कमेटी, हटा)
श्री पं. राजकुमार दुबे
(सदस्य, गौरीशंकर मंदिर कमेटी, हटा)
श्री राजेश त्रिवेदी (पूर्व प्रशासक, न.पा. हटा)
श्री. जीवन तंतुवाय (पूर्व अध्यक्ष, न.पा. हटा)

संयोजक एवं सूत्रधार

कुँवर श्री पुष्पेन्द्र सिंह हजारी

स्वागत समिति

श्री बाबूलाल तंतुवाय (अध्यक्ष, नगरपालिका हटा)
श्रीमती सरोज मोदी (उपाध्यक्ष, नगरपालिका हटा)
श्री अनंतराम नामदेव (पार्षद)
श्रीमती रश्मि ताम्रकार (पार्षद)
श्रीमती सरोजरानी पाराशर (पार्षद)
श्रीमती सुधारानी साहू (पार्षद)
श्री जगन्नाथ पटैल (पार्षद)
श्रीमती शोभारानी अहिरवार (पार्षद)
श्री मनीष चौरसिया (पार्षद)

मेला अधिकारी

श्री संजेश नायक, नगरपालिका अधिकारी हटा

सहायक मेला अधिकारी

श्री रामशंकर व्यास, राजस्व निरीक्षक नगरपालिका, हटा

मंच संचालन समिति

श्री जय कुमार जैन 'जलज'
श्री शाह मुकेश जैन (एड.)
श्री दिग्विजय नेमा
श्रीमती भारती नेमा

मंच साज-सज्जा समिति

श्री विनोद अग्रवाल
श्री मनोज कुमार जैन, शिक्षक
श्री रामकुमार असाटी
श्री पन्नालाल साहू
श्री दिलीप शर्मा
श्री लक्ष्मी प्रसाद तंतुवाय

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

श्री चन्द्रकांत यादव, संगीत शिक्षक
श्री मनोज जैन, शिक्षक
श्री रतन सिंह, देवगांव
श्रीमती भारती नेमा
श्रीमती सुधा जैन
श्री रामनाथ राय
श्री भगत सिंह ठाकुर

प्रचार-प्रसार समिति

श्री कृष्णकुमार खत्री
श्री संजय जैन
श्री रवीन्द्र अग्रवाल
श्री कमलेश असाटी
श्री घनश्याम प्रजापति
श्री सुधीर सराफ
श्री मनोज चौरसिया
श्री रूप सिंह राजपूत
श्री नारायण सिंह लिधौरा
श्री हरिशंकर साहू
श्री अजीत अवस्थी
श्री अनिल ताम्रकार
श्री मुन्नालाल अहिरवार

निर्णायक समिति
पं. श्री नर्मदा प्रसाद पुरानी
पं. श्री कन्हैयालाल गौतम
पं. श्री नारायण प्रसाद व्यास
पं. श्री गणेश प्रसाद व्यास
पं. श्री मनोज दुबे
श्री श्याम सोनी
श्री बृजेश दुबे
पं. श्रीराम कुरेरिया
श्री गिरजाप्रसाद सेन

खेल समिति
श्रीमती शोभारानी (पार्षद)
श्री पी.एन. सिंह
(जवाहर नवोदय विद्यालय हटा)
श्री संदीप दुबे
(डाय. महर्षि हाई स्कूल हटा)
श्री सुशील सेलट
श्री अरविन्द सिंह हजारी
श्री अजयपाल सिंह
श्री लखन लाल मोदी
श्री रामेश्वर जड़िया
श्री हरिप्रसाद सोनी
श्री प्रदीप कुमार सोनी
श्री हरेन्द्र पाण्डेय
श्रीमती सी.के. सिंह
कु. योगेश्वरी राजपूत
कु. वर्षा राजपूत

बुन्देली व्यंजन मेला समिति
श्री प्रमोद जैन
श्रीमती सुधा सेन
श्रीमती राजकुमारी असाटी
श्रीमती निवेदिता दुआ
श्रीमती संध्या जैन
श्रीमती सिंधुबाला जैन
श्रीमती किरण सोनी
श्रीमती आशा बजाज
श्रीमती उर्बिजा बजाज
श्रीमती संजना बजाज
श्रीमती पुष्पा सिंह
श्रीमती कल्पना जैन

भोजन व्यवस्था
श्रीमती जुलेखा बी (पार्षद)
श्री जगदीश अग्रवाल
श्री शिवकुमार गुप्ता
श्री सरमनलाल मोदी
श्री सरमन ताम्रकार
श्री जुगल पटेल
श्री सुरेन्द्र अग्रवाल
श्री धनीराम साहू
श्री लटोरीलाल साहू

मेला कार्यालय समिति
श्रीमती अवधरानी (पार्षद)
श्री क्यू खान (पार्षद)
श्री मोहनलाल साहू
श्री बलराम साहू
श्री कंदीलाल साहू
श्री रहीम खान
श्री पूरनलाल साहू
श्री मोहन अहिरवार
श्री मोहन तंतुवाय

प्रदर्शनी समिति
श्री महेश अहिरवार (पार्षद)
श्रीमती अल्का सोनी (पार्षद)
श्री मनीष कुमार जैन (पार्षद)
श्री अफजल पठान (पार्षद)
श्री प्रहलाद व्या
श्री मोहन गंगेले
श्री पप्पू खान
श्री लक्ष्मी तंतुवाय
श्री हीरालाल साहू

पत्रकार
श्री नरेन्द्र बजाज
श्री संजय कुमार जैन
श्री भानूप्रताप सिंह
श्री हरिशंकर साहू
श्री घनश्याम प्रजापति
श्री अन्नू शर्मा
श्री वृजेश श्रीवास्तव
श्री रामकुमार राय
श्री महेन्द्र दुबे
श्री सुनील गौतम
श्री आजम खान
श्री अजित अवस्थी
श्री सत्येन्द्र श्रीवास्तव
श्री मुन्ना खान
श्री कमलेश गौतम
श्री मुजाहिद खान
श्री सुधीर सराफ
श्री रवीन्द्र अग्रवाल
श्री रवीन्द्र सुहाने

छायाकार
श्री संजय कुमार जैन
श्री घनश्याम प्रजापति

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहयोगी, प्रमुख सहयोगी
श्री बृजेश दुबे
श्री मनोज कुमार जैन
श्री मनोज दुबे
श्री झब्बू सेन
श्री श्रीराम कुरेरिया
श्री मुरारी सोनी
श्री नारायण प्रसाद व्यास
श्री जयकुमार जैन 'जलज'
श्री दिग्विजय नेमा
श्री मनीष कुमार चौरसिया

अन्य सहयोगी
श्री सर्वेश्वर नेमा
श्री अभिषेक ताम्रकार (पेंटर)
श्री बलराम रजक (पेंटर, लुहारी)
श्री राजकिशोर पांडेय
श्री अनंतराम पटेल
श्री भूपेश गर्ग
श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव
श्री रमेश कुमार श्रीवास्तव
श्री सौरभ कोष्टी
श्री अनिल कुमार सोनी (बबलू)
श्री अनिल कुमार सोनी (शिक्षक)

श्री पीताम्बरा पीठ, हटा (जिला दमोह)